महासमर

[प्रसिद्ध उपन्यास 'फाल आफ पेरिस' का अनुवाद,
लेखक की विशेष रूप से लिखित भूमिका के साथ]

लेखक
इलिया एहरेन्बुर्ग

अनुवादक
श्रीकान्त व्यास

किताब महल,
इलाहाबाद : बम्बई : दिल्ली

प्रथम संस्करण १९५८

प्रकाशक का वक्तव्य

इस विश्वप्रसिद्ध युद्धकालीन उपन्यास का अनुवाद हिन्दी पाठकों के समक्ष पहली बार प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। कुछ कारणवश इसे मूल से कुछ संक्षिप्त करना पड़ा है, हालांकि इसका अनुवाद पूरा हुआ है और हमें आशा है कि कभी हम इसे पूरा प्रकाशित कर सकेंगे। इसके वर्तमान रूप में भी इसके सौन्दर्य की पूर्ण रूप से रक्षा का प्रयास किया गया है और कुछ अनावश्यक अंश ही छोड़े गये हैं।

मूल लेखक श्री इलिया एहरेन्बुर्ग ने हमारी प्रार्थना पर पुस्तक के हिन्दी संस्करण के लिए विशेष रूप से भूमिका लिखने की जो कृपा की है उसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं और उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रकाशक—किताब महल, ५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।
मुद्रक—यूनियन प्रेस, इलाहाबाद।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मेरी पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद हुआ है। अपनी भारत-यात्रा के बाद मैं यह जान सका हूँ कि उस महान देश में कितनी बड़ी आध्यात्मिक सम्पत्ति छिपी पड़ी है। हम सब प्राचीन भारत के--उसके साहित्य, उसकी उत्कृष्ट कला और उसके ज्ञान-भंडार के बहुत ऋणी हैं। आधुनिक भारत आज पीछे नहीं, आगे की तरफ देख रहा है, वह भविष्य का निर्माण कर रहा है--अपनी रचनात्मक उद्भावनाओं में वह उन्हीं अप्रतिम विशेषताओं को प्रदर्शित कर रहा है जिनकी झलक हमें अशोक के शिलालेखों और कालिदास के नाटकों में, एलोरा की शिल्पकला और अजन्ता के चित्रों में देखने को मिलती है। यह एक सच्ची मानवता है, ऐसी मानवता जो किसी सस्ती सजावटी चीज के लिए नहीं बल्कि ऐसी वस्तु की प्राप्ति के लिए संघर्षरत है, जो मनुष्य के जीवन को गौरव प्रदान कर सकती है।

मेरे लिए यह बड़े गौरव की बात है कि मेरा उपन्यास भारतीय वाङ्मय की एक ऐसी भाषा में अनूदित हो रहा है जिसका साहित्य नवीन और बहुत समृद्ध है। इसके लिए मैं अनुवादक के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

Y Ehrenburg

(इलिया एहरेन्बुर्ग)

मास्को

३ अगस्त, १९५६

साठ साल का बूढ़ा था, लेकिन अब भी मुहब्बत के तराने छेड़ता रहता था और जूते सिलता रहता था। थोड़ी दूर आगे चलकर एक मालिन की दुकान थी, जहाँ गुलहवा, कार्नेशन और सितारा फूलों के ढेर लगे रहते थे। यह एक बड़ी साफ-सुथरी बुढ़िया थी और अक्सर सवेरे दरवाजे पर उस ऋषि या संत का नाम लिख देती थी जिसका उस दिन त्योहार होता था। उस सड़क की पटरियों पर अकसर खड़िया मिट्टी से 'स्वर्ग', 'नरक' 'इटली' और 'इथियोपिया' आदि शब्द खिंचाये हुए होते; यह एक प्रकार का बच्चों का खेल था। सवेरा होते ही फेरीवाली बूढ़ी स्त्रियाँ अपनी गाड़ी ढकेलती हुई निकल पड़तीं और चिल्ला-चिल्लाकर नारंगियाँ और टमाटर बेचती फिरतीं। पुराने कपड़े खरीदनेवाला एक कबाड़िया लोगों को आकर्षित करने के लिए बाँसुरी बजाता हुआ उधर से निकलता, और लोग अपने घरों से पुरानी जाकिटें और चादरें निकालकर उसे दे देते। शाम होते ही, बहुत से बूढ़े गवैये तथा बाँसुरी, बेला वगैरह बजानेवाले उधर से नाचते-गाते गुजरते और मकानों की खिड़कियों से उनके लिए पैसे फेंके जाते।

किन्तु मकानों के अन्दर की हालत बड़ी खराब थी। वहाँ हर समय सन्नाटा छाया रहता, कुर्सी-मेजों और ऐसी ही छोटी-मोटी चीजों से वे इतने भरे होते कि वहाँ दम घुटता था। हर चीज बिलकुल पुरानी हो चुकी थी लेकिन उसमें से किसी को भी मकानवाले अलग नहीं करना चाहते थे। आरामकुर्सियों के गद्दे फट-फटा गये थे फिर भी उनमें पैवन्द पर पैवन्द लग रहे थे। खाने-पीने के प्याले टूट चुके थे किन्तु उन्हें जोड़कर किसी तरह काम चलाया जा रहा था। आपको जरा छींक आई नहीं कि तुरन्त चाय या काढ़ा पेश किया जायगा, आपके लिए राई की पुलटिस तैयार की जायगी। दवाओं की दुकान में अर्क निकालने, सेंकने और लेप तैयार करने के लिए तरह-तरह की जड़ी-बूटियाँ मिलती थीं, यहाँ तक कि बिल्ली की खाल भी मिलती थी, जिसके बारे में विश्वास किया जाता है कि वह गठिया की अकसीर दवा है। आपको दर्जनों मोटे और खसी किये हुए बिल्ले इधर-उधर दुकानों में और पहरेदारों के पास, जो सुबह से शाम तक गोश्त पकाया करते हैं, दौड़ते हुए नजर आयेंगे। यह गली शाम को विशेष रूप से आकर्षक हो उठती है, क्योंकि उस समय प्रत्येक चीज एक नीले प्रकाश में नहायी हुई मालूम पड़ती है।

आंद्रे का स्टूडियो मकान की सबसे ऊपरी मंजिल में था। वहाँ से देखने में चारों ओर का दृश्य बड़ा ही सुहावना मालूम पड़ता था। दूर तक छप्पर के बाद छत फैले चले गये थे। लगता था जैसे खपरैलों का एक विशाल सागर लहरें ले रहा हो। छप्परों से थोड़ा-थोड़ा धुआँ ऊपर उठता रहता था और हल्की पीली रोशनी में दूर 'एफेल टावर' की ऊँची मीनार दिखाई पड़ती थी।

स्टूडियो में सारी चीजें इस तरह बिखरी पड़ी थीं कि वहाँ जरा हिलने-डुलने की भी जगह नहीं थी। तसवीरों के चौखटे, टूटी-फूटी कुर्सियाँ, रंग के डब्बे, फटे जूते और गर्द से लदे फूलों के गमले वगैरह वहाँ बिखरे पड़े थे। ऐसा मालूम पड़ता था मानो ये तमाम चीजें वहाँ पड़ी ही नहीं थीं, बल्कि जमीन में जम गई थीं। उन्हें देखकर अक्सर उन झाड़ियों की याद आ जाती थी जो वसन्त ऋतु के आते ही हर तरफ निकल आती हैं, विशेषकर उस समय और भी ऐसा लगता जबकि सूर्य की किरणें सारी रुकावटों को पार करती हुई छन-छनकर उसके स्टूडियो में पहुँचतीं और आंद्रे मारे खुशी के गाने लगता। कभी-कभी तो उसका स्टूडियो एक ऐसे सूखे जंगल की तरह मालूम पड़ता जिसकी हर चीज घुन लगी हुई और विकृत दशा में हो। आंद्रे स्वयं लम्बे कद का सुस्त और कम बोलने वाला आदमी—एक ऊँचे पेड़ के समान मालूम पड़ता था। सवेरे उठते ही वह अपने कार्य में व्यस्त हो जाता और दिन भर, कभी छप्परों की तसवीर बनाता तो कभी सितारा फूल, गोभियों या तरह-तरह के पौधों की। शाम को वह काम पर से उठता और अपना भारी पाइप सुलगाकर धुआँ उड़ाता हुआ सड़कों की हवा खाने निकल जाता। कभी-कभी वह कोई फिल्म देखने चला जाता और वहाँ 'मिकी माउस' की उछल-कूद से मन बहलाकर फिर घर लौट आता और सो जाता।

आंद्रे बहुत सुस्त काम करनेवाला था। उसका जीवन भी बहुत धीमी चाल से बीत रहा था। बत्तीस साल की उम्र में भी वह संसार को नौजवानी की आँखों से ही देखने का आदी था। सभी लोग उसे एक चतुर पेन्टर मानते थे, किन्तु स्वयं उसकी अपने बारे में राय थी कि उसने तो अभी काम सीखना शुरू किया है। उसका पिता, जो एक किसान था, भली-भाँति जानता था कि सेव के पेड़ के बढ़कर बड़े होने और गाय के दूध देने योग्य होने में कितना

समय लगता है। उसी धैर्य के साथ आंद्रे भी घटनाओं के घटित होने का इन्तजार किया करता था।

पेरिस की अनिश्चित वसन्त ऋतु के आरम्भ में उस दिन आंद्रे गुलहवा का एक गुच्छा पेंट कर रहा था। किसी ने दरवाजा खटखटाया। उसकी भौंहें चढ़ गईं। वह समझ गया कि यह उसका पुराना मित्र पियेरे आ पहुँचा, जिसने कमरे में कदम रखने से पहले ही बड़बड़ाना शुरू कर दिया। वह लगभग बच्चों की-सी बातें करता रहता। आंद्रे रह-रहकर मुसकरा देता और फिर अपने कैनवस की ओर देखने लगता। उसे अभी-अभी पता चला कि पीला रंग जरा कम चटकीला रह गया है।

आंद्रे के सामने पियेरे बिलकुल बच्चा-सा मालूम पड़ता। वह चिड़िया की तरह इधर-उधर फुदकता-फिरता। उसका चमड़ा जैतूनी रंग का पीलापन लिये हुए था, आँखें बड़ी-बड़ी और चमकदार, और लम्बी भुजाएँ। वह भर्रायी आवाज में जोर से बोलता और तसवीरों के ढेर में इधर-उधर उलझता रहता।

पियेरे, जो एक सिविल इंजीनियर था, नाटक-थियेटर में काफी दिलचस्पी रखता था। किसी समय उसने कविता करने की भी कोशिश की थी और अपनी कविताओं का एक छोटा-सा संग्रह भी किसी दूसरे नाम से प्रकाशित किया था। किसी न किसी के प्रेम-जाल में जा फँसना सदा उसका काम रहता और जब उसकी आशाओं पर पानी फिर जाता तो वह आत्महत्या करने की सोचने लगता। किन्तु वह मानव जीवन के मूल्य को भली-भाँति जानता था और उसके प्रत्येक पहलू से उसे प्रेम भी था। वह कुछ कमजोर तबीयत का आदमी था, और लोगों से तुरन्त प्रभावित हो जाता था। अकसर उसके मित्र उसे ऐसे कार्य करने पर उतारू कर देते जिनकी उससे आशा भी नहीं की जा सकती थी। किसी कॉफीहाउस में एक पियानो बजानेवाले से उसका परिचय हो गया। उन दिनों पेरिस में फ्रांसीसी पार्लमेंट के विरुद्ध एक आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। यह बात खुल गयी थी कि पार्लमेंट के बहुत से सदस्यों का स्ताविस्की वाले मामले में हाथ था। फ्रांस के 'आत्म-सम्मान' के प्रश्न ने पियेरे के मन में काफी उत्तेजना पैदा कर दी थी। उस रात को प्लासे द ला कोंकोर्द के पास गड़बड़ मचानेवाले बलवाइयों में वह भी सम्मिलित था। छः महीने बाद, एक फासिस्ट-विरोधी सभा में जहाँ समाजवादी नेता बिलार्द भाषण कर रहा था, वह

पियानोवादक मित्र से भी झगड़ पड़ा और उसने तब से सैनिकवाद के विरोध में प्रचार करना शुरू कर दिया। वह समाचारपत्र पढ़ता और किसी भी सभा या प्रदर्शन में भाग लेने से न चूकता।

सन् १९३५ का साल फ्रांस के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण था। फासिस्ट विद्रोहों के बाद ही देश ने अपने क्रोध तथा अपनी आशाओं का प्रदर्शन जनवादी मोर्चे को स्थापित करके किया था। १४ जुलाई को और बारबूस की अंत्येष्टि के दिन ७ सितम्बर को, पेरिस की सड़कें लाखों आदमियों की भीड़ से खचाखच भरी थीं। लोग मैदान में उतरने के लिए तैयार थे। घोषणा हो चुकी थी कि चुनाव होनेवाला है और उसमें सारी चीजों का फैसला हो जायगा। किन्तु लोग क्रोध से दाँत पीस रहे थे। उन्हें पहली बार स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा था कि अब युद्ध छिड़ने ही वाला है। जर्मन सेनाएँ राइनलैंड में प्रवेश कर चुकी थीं। इटली ने अबीसीनिया को हड़प लिया था। फ्रांस की किस्मत की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ में थी जो न केवल पड़ोसी देशों से ही डरते थे, बल्कि स्वयं अपने देशवासियों से भी डरते थे। वे अपने को बड़े कुशल राजनीतिज्ञ समझते थे। वे ब्रिटेनवालों से, जो बहुत कम भावुक होते हैं, मीठी-मीठी बातें करते और उधर इटलीवालों को उनके विरुद्ध उभाड़ देते। किन्तु अपनी बुद्धि पर गर्व करनेवाले फ्रांस के ये अधिनायक महामूर्ख सिद्ध हुए। युरोप के सारे छोटे देश एक एक करके फ्रांस का साथ छोड़ते जा रहे थे। फ्रांस अकेला पड़ता जा रहा था। किन्तु मंत्रीगण देश के भविष्य की अपेक्षा आनेवाले चुनाव में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे थे। उन्होंने जनवादी मोर्चे को तोड़ने में कोई कसर नहीं रखी। सूबों के गवर्नरों ने लोगों को घूस देना और डराना धमकाना शुरू किया। हर रोज नई-नई फासिस्टवादी संस्थाओं के बनने के समाचार आते रहते थे। ऊँचे घरानों के नवयुवक रोज शाम को शहर के धनी मुहल्लों में चिल्लाते घूमते थे, 'प्रतिबन्ध हटाये जायें! ब्रिटेन का नाश हो! मसोलिनी जिन्दाबाद!' वगैरह-वगैरह, मजदूर क्षेत्रों में आनेवाली क्रान्ति की चर्चा सुनाई पड़ रही थी। सारे नागरिक भयभीत थे। वे सोचते थे, गृह-युद्ध होगा, जर्मन आक्रमण करेंगे, भेदियों और राजनीतिक शरणार्थियों से देश भर जायेगा, न जाने कब तक फौजी भर्ती जारी रहेगी और कितनी हड़तालें होंगी। हर एक समझ रहा था कि नया वर्ष देश के भाग्य का निर्णय करने जा रहा है।

इन घटनाओं के भँवर में पड़कर, पियेरे भी चौकन्ने सिपाही की तरह हर समय तैयार रहने लगा था।

बचपन से ही, जब कि दोनों एक साथ स्कूल में पढ़ते थे, आंद्रे से उसकी मित्रता थी। लेकिन बहुत कम आपस में उनकी भेंट होती थी। पियेरे का जीवन सदा ही बड़ी सरगर्मी का रहा था जब कि आंद्रे हमेशा खुराफातों से दूर रहता था। जब कभी वे दोनों मिलते तो पियेरे अवश्य ही अपना कोई न कोई नया कारनामा छेड़ देता, एक नयी कार, आंद्रे ब्रेतों की कविताएँ, फासिस्ट विरोधी लेखकों की कांग्रेस इत्यादि-इत्यादि। आंद्रे सुनता और मुसकरा देता। तब वे उठकर उस सिगरेट पीनेवाले कुत्ते की दुकान में जा बैठते, वहाँ शराब पीते और फिर अपने-अपने घर को चल देते। इस तरह एक साल बीत जाता। तब फिर अचानक पियेरे को आंद्रे याद आता। वह दौड़ता हुआ स्टूडियो में पहुँचता और चिल्लाने लगता, 'कलवाली बात तुम्हें बतानी रह गई थी…' जैसे वे कल ही तो मिले थे!

इस बार भी ऐसा ही हुआ।

वह बोला, 'तुमने विलार की स्पीच पढ़ी? जर्मन सैनिकवाद की परवाह न करते हुए भी हमें निःशस्त्रीकरण का प्रचार करना है। जिसे देखो वही लड़ाई की चर्चा कर रहा है। लड़ाई होगी या नहीं? हमारी फैक्टरी का डायरेक्टर तो इस बारे में ज्योतिषियों की भी राय ले रहा है! आक्वारिअस से तो मालूम होता है कि लड़ाई होकर रहेगी और तोरस कहता है कि नहीं होगी। देखो तो सही, कैसा मजाक है! खैर, हिटलर तो पगला गया है। लेकिन अगर जनवादी मोर्चा सफल रहता है तो फिर लड़ाई की संभावना खत्म हो जाती है। तुम्हारी क्या राय है?'

'मैं नहीं जानता,' आंद्रे ने कहा, 'मैंने इस प्रश्न पर कभी ध्यान नहीं दिया।'

पियेरे झट दरवाजे की ओर लपका।

'कहाँ?…कहाँ जा रहे हो?'

'संस्कृति भवन को। वहाँ आज कोई नई घटना होनेवाली है। चलो तुम भी आओ, हम दोनों साथ चलें। इस भंगड़खाने में रहना तो असंभव हो रहा है। मैं तो अक्सर वहीं चला जाता हूँ। वहाँ मजदूर भी होते हैं और

इंजीनियर भी, और तुम्हारे ऐसे कलाकार भी! मेरा तो यही विश्वास है, और अपने डायरेक्टर से भी बिना पत्रा देखे हुए मैंने कह दिया है कि वह तो होकर रहेगी, हालाँकि वह इस पर बड़ा आग बबूला हुआ।'

'क्या होकर रहेगी?'

'अरे वही—क्रान्ति! देखो तो सही मेरी फैक्टरी में क्या हो रहा है। आओ, जरा मेरे साथ चलो!'

आंद्रे ने दुखी होकर अपने कैनवस की ओर देखा, लेकिन पियेरे उसे बाहर घसीट ले गया।

वे बड़ी कठिनाई से उस बड़े कमरे में दाखिल हुए जो तम्बाकू के धुएँ से भरा था। शीशे का झाड़ धुएँ के कारण धुँधला मालूम पड़ता था और लोगों के चेहरे ऐसे जान पड़ते थे जैसे किसी ने कूँची से उनपर रंग फेर दिया हो। वहाँ पर टोपियाँ पहने मजदूर, चौड़े किनारेवाले हैट लगाये इंजीनियर, विद्यार्थी, लड़कियाँ और दफतरों के बाबू—सभी प्रकार के लोग मौजूद थे। यहाँ पेरिस के नागरिक में जो अपनी शंकालुता के लिए बदनाम हैं उस समय बहुत उत्साहित थे। बहस पर बहस जारी थी, लोग गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते थे और तालियाँ बजाते थे। लगता था जैसे कोई हार मानने के लिए तैयार नहीं है। यहाँ भिन्न-भिन्न पेशों के लोग मौजूद थे और एक दूसरे से हाथ मिला रहे थे—संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और नोबुल पुरस्कार पानेवालों से लेकर एक साधारण शीशासाज़ तक, जिसने हाल में ही 'नवजीवन' शीर्षक एक कविता लिखी थी। यहाँ पर जनवादी मोर्चे का नारा जादू का असर रखता था। लोग कह रहे थे कि बस जनवादी मोर्चे की विजय भर हो जाय, फिर क्या, हर कुली-कबाड़ी के हाथ में कलाकार का ब्रश नजर आने लगेगा! यहाँ तक कि सुस्त से सुस्त तरकारी बेचनेवाला भी पिकासो की पेंटिंग की प्रशंसा कर सकेगा। कविता ही लोगों की भाषा हो जायेगी, विद्वानों का नाम अमर हो जायेगा और सीन नदी के किनारों पर, जिन्होंने जमाने के काफी उलट फेर देखे हैं, संसार की संस्कृति का एक नया केन्द्र बसेगा, नया एथेंस बसेगा।

आंद्रे ने अपने पास बैठे लोगों की ओर निगाह दौड़ाई। उसे एक मजदूर दिखाई पड़ा जो इतना एकाग्र होकर सुन रहा था मानो वह एक-एक शब्द को

इन घटनाओं के भँवर में पड़कर, पियेरे भी चौकन्ने सिपाही की तरह हर समय तैयार रहने लगा था।

बचपन से ही, जब कि दोनों एक साथ स्कूल में पढ़ते थे, आंद्रे से उसकी मित्रता थी। लेकिन बहुत कम आपस में उनकी भेंट होती थी। पियेरे का जीवन सदा ही बड़ी सरगर्मी का रहा था जब कि आंद्रे हमेशा खुराफातों से दूर रहता था। जब कभी वे दोनों मिलते तो पियेरे अवश्य ही अपना कोई न कोई नया कारनामा छेड़ देता, एक नयी कार, आंद्रे ब्रेतों की कविताएँ, फासिस्ट विरोधी लेखकों की कांग्रेस इत्यादि-इत्यादि। आंद्रे सुनता और मुसकरा देता। तब वे उठकर उस सिगरेट पीनेवाले कुत्ते की दुकान में जा बैठते, वहाँ शराब पीते और फिर अपने-अपने घर को चल देते। इस तरह एक साल बीत जाता। तब फिर अचानक पियेरे को आंद्रे याद आता। वह दौड़ता हुआ स्टूडियो में पहुँचता और चिल्लाने लगता, 'कलवाली बात तुम्हें बतानी रह गई थी...' जैसे वे कल ही तो मिले थे!

इस बार भी ऐसा ही हुआ।

वह बोला, 'तुमने विलार की स्पीच पढ़ी? जर्मन सैनिकवाद की परवाह न करते हुए भी हमें निःशस्त्रीकरण का प्रचार करना है। जिसे देखो वही लड़ाई की चर्चा कर रहा है। लड़ाई होगी या नहीं? हमारी फैक्टरी का डायरेक्टर तो इस बारे में ज्योतिषियों की भी राय ले रहा है! आक्वारिअस से तो मालूम होता है कि लड़ाई होकर रहेगी और तोरस कहता है कि नहीं होगी। देखो तो सही, कैसा मजाक है! खैर, हिटलर तो पगला गया है। लेकिन अगर जनवादी मोर्चा सफल रहता है तो फिर लड़ाई की संभावना खत्म हो जाती है। तुम्हारी क्या राय है?'

'मैं नहीं जानता,' आंद्रे ने कहा, 'मैंने इस प्रश्न पर कभी ध्यान नहीं दिया।'

पियेरे झट दरवाजे की ओर लपका।

'कहाँ?...कहाँ जा रहे हो?'

'संस्कृति भवन को। वहाँ आज कोई नई घटना होनेवाली है। चलो तुम भी आओ, हम दोनों साथ चलें। इस भंगड़खाने में रहना तो असंभव हो रहा है। मैं तो अकसर वहीं चला जाता हूँ। वहाँ मजदूर भी होते हैं और

इंजीनियर भी, और तुम्हारे ऐसे कलाकार भी! मेरा तो यही विश्वास है, और अपने डायरेक्टर से भी बिना पत्रा देखे हुए मैंने कह दिया है कि वह तो होकर रहेगी, हालाँकि वह इस पर बड़ा आग बबूला हुआ।'

'क्या होकर रहेगी?'

'अरे वही—क्रान्ति! देखो तो सही मेरी फैक्टरी में क्या हो रहा है। आओ, जरा मेरे साथ चलो!'

आंद्रे ने दुखी होकर अपने कैनवस की ओर देखा, लेकिन पियेरे उसे बाहर घसीट ले गया।

वे बड़ी कठिनाई से उस बड़े कमरे में दाखिल हुए जो तम्बाकू के धुएँ से भरा था। शीशे का झाड़ धुएँ के कारण धुँधला मालूम पड़ता था और लोगों के चेहरे ऐसे जान पड़ते थे जैसे किसी ने कूँची से उनपर रंग फेर दिया हो। वहाँ पर टोपियाँ पहने मजदूर, चौड़े किनारेवाले हैट लगाये इंजीनियर, विद्यार्थी, लड़कियाँ और दफ्तरों के बाबू—सभी प्रकार के लोग मौजूद थे। यहाँ पेरिस के नागरिक में जो अपनी शंकालुता के लिए बदनाम हैं उस समय बहुत उत्साहित थे। बहस पर बहस जारी थी, लोग गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते थे और तालियाँ बजाते थे। लगता था जैसे कोई हार मानने के लिए तैयार नहीं है। यहाँ भिन्न-भिन्न पेशों के लोग मौजूद थे और एक दूसरे से हाथ मिला रहे थे—संसार प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और नोबुल पुरस्कार पानेवालों से लेकर एक साधारण शीशासाज़ तक, जिसने हाल में ही 'नवजीवन' शीर्षक एक कविता लिखी थी। यहाँ पर जनवादी मोर्चे का नारा जादू का असर रखता था। लोग कह रहे थे कि बस जनवादी मोर्चे की विजय भर हो जाय, फिर क्या, हर कुली-कबाड़ी के हाथ में कलाकार का ब्रश नजर आने लगेगा! यहाँ तक कि सुस्त से सुस्त तरकारी बेचनेवाला भी पिकासो की पेंटिंग की प्रशंसा कर सकेगा। कविता ही लोगों की भाषा हो जायेगी, विद्वानों का नाम अमर हो जायेगा और सीन नदी के किनारों पर, जिन्होंने जमाने के काफी उलट फेर देखे हैं, संसार की संस्कृति का एक नया केन्द्र बसेगा, नया एथेंस बसेगा।

आंद्रे ने अपने पास बैठे लोगों की ओर निगाह दौड़ाई। उसे एक मजदूर दिखाई पड़ा जो इतना एकाग्र होकर सुन रहा था मानो वह एक-एक शब्द को

पी रहा हो। दूसरा, जो निस्संदेह कोई पत्रकार था, बैठा जँभाई ले रहा था। वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। हर एक के मुँह से धुआँ निकल रहा था।

मंच पर खड़ा एक नाटा बूढ़ा बोल रहा था। वह भौतिक विज्ञान का कोई प्रसिद्ध विशेषज्ञ था, किन्तु आंद्रे उसे नहीं जानता था। वह धीमे-धीमे बोलता था और रह-रहकर जोर से खाँसता भी जाता था। आंद्रे को उसके ये शब्द सुनाई पड़े, 'समाजवादी संस्कृति···नया समाजवाद···।'

आंद्रे कभी किसी राजनीतिक सभा में नहीं गया था। अचानक उसे अपने स्टूडियो को वापस लौटने और अपने अधूरे काम को पूरा करने की प्रबल इच्छा हुई। उसने आँख उठाकर मंच की ओर देखा और चिल्लाकर पियेरे से कहा, 'अरे! यह तो ल्युसियां है!'

तो, यह थी आज की आश्चर्यजनक घटना जिसकी आशा की गई थी। अब आंद्रे को याद आया कि यही ल्युसियां स्कूल में अपनी कविता सुनाया करता था, और कहा करता था कि मैं गाँजा पीता हूँ, और आज वह मजदूरों के साथ है! हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं। लोग बदलते हैं।

तुरन्त सब लोगों की नजर ल्युसियां पर जा पड़ी। वह कह रहा था, 'अब धरती के भाग्य का निर्णय वे करेंगे जो उसमें ऊपर रहते हैं, अर्थात् बमवर्षक वायुयान, या फिर वे लोग करेंगे जो उसके अन्दर काम करते हैं, अर्थात् पिकार्दी, रूर और साइलेशिया के खनिक। छः सौ सदस्य! जन्तु-विज्ञान के एक बड़े विशेषज्ञ ने मुझे बतलाया है कि एक प्रकार का भौंरा होता है जिसके शरीर में मक्खियाँ अंडे देती हैं। उसी के भीतर बच्चे बढ़ते रहते हैं। भौंरा चलता-फिरता दिखाई पड़ता है, यद्यपि वह मुर्दा होता है। वास्तव में चलने-फिरनेवाले तो मक्खियों के छोटे-छोटे बच्चे होते हैं, वह भौंरा नहीं···।'

ल्युसियां ने हिटलर, युद्ध और क्रान्ति आदि विषयों पर प्रकाश डाला। उसके भाषण के समाप्त होते ही सन्नाटा छा गया। उसकी आवाज अभी तक लोगों के कानों में गूँज रही थी। पियेरे तालियाँ बजाता रहा यहाँ तक कि उसके हाथ थक गये। आंद्रे के समीप बैठे हुए एक मजदूर ने एक तान छेड़ दी। स्वयं आंद्रे को मक्खियों और लड़ाई के बारे में ल्युसियां की सारी बातें भूल चुकी थीं। वह पास बैठे हुए इस मजदूर की तसवीर पेंट करना चाहता था।

मंच पर खड़े नाटे बुड्ढे ने जोरों से ल्युसियां से हाथ मिलाया। अचानक एक पीले, पतले दुबले चेहरे का नवयुवक उठ खड़ा हुआ। वह बिलकुल सादे और स्वच्छ कपड़े पहने था। उसने चिल्लाकर कहा, 'मुझे भी बोलने की इजाजत दी जाय!'

सभापति ने अनमनेपन से घंटी तक अपना हाथ बढ़ाते हुए पूछा, 'तुम्हारा नाम?'

'ग्रिसनेज़! मेरे नाम से आपको कुछ विशेष पता नहीं चलेगा। अभी-अभी जो सज्जन बोल चुके हैं, उनका नाम जानने की आवश्यकता है। जहाँ तक मुझे मालूम है उनके पिता मोसियो पोल तेस्सा ने उस धूर्त स्ताविस्की से अस्सी हजार पाया था! जाहिर है उस धन से...।'

इस पर इतने जोर का शोरगुल मचा कि उसकी बात सुन सकना असंभव हो गया। ग्रिसनेज़ ने लाठी घुमानी शुरू की, उसका चेहरा काँप रहा था। उसके पासवाले एक भारी भरकम आदमी ने किसी पर अपना स्टूल दे मारा। बस, आंद्रे को सिर पर पैर रखकर दरवाजे की ओर भागते ही बन पड़ा। बाहर सड़क पर पहुँचकर पियेरे ने उससे कहा, 'ठहरो! अभी हम दोनों ल्युसियां के साथ कहीं कॉफी पियेंगे।'

'मैं नहीं आ सकूँगा।'

'क्यों नहीं?' ल्युसियां ने, जो इतने में पीछे से आ पहुँचा था, कहा 'चलो, थोड़ी-सी शराब ही पी लें। वहाँ काफी गर्मा-गर्मी रही। मेरे लिए बोलना मुश्किल हो रहा था। मुझे पहले ही चेतावनी दे दी गई थी कि कोई गड़बड़ी होगी।'

पियेरे मुसकराने लगा। वह बोला, 'उन्हें आज एक अच्छा सबक मिल गया। मैं उस बदमाश ग्रिसनेज़ को खूब जानता हूँ। छः फरवरी को तो मुझसे और उससे झगड़ा ही हो गया था। उस पर मानों भूत सवार था। इसी से तो उन लोगों ने ऐसे आदमी को चुना है। लेकिन तुमने भी खूब भाषण दिया। अखबारों में क्या निकलेगा, यह मैं अभी से बतला सकता हूँ। पहले तो साहित्यिक लोगों में तुम्हारा बड़ा नाम है और फिर पाल तेस्सा का बेटा हमारे साथ! हाँ, तुम्हारे लिए अवश्य इस सब का मूल्य एक नाटक से अधिक नहीं।

लेकिन क्या धूम है ! इसी से तो उन्होंने सभा भंग करने की कोशिश की थी। तुमने बड़ी हिम्मत से काम लिया, समझे ! आंद्रे, अरे, तुम इतने चुप क्यों ?'

'मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि क्या बोलूँ।'

'क्यों ?'

'कुछ कहने के लिए सारी घटना को फिर से याद करना पड़ेगा। और फिर मैं ? तुम स्वयं कह चुके हो कि मैं बहुत सुस्त आदमी हूँ।'

घुँघराले बालवाली एक नवयुवती भी उनके साथ-साथ चल रही थी। उसके चेहरे से आश्चर्य टपक रहा था। आँखें उसकी पागल की सी दिखाई पड़ती थीं। वह चुपचाप चल रही थी। एकाएक वह रुक गई और बोली, 'ल्युसियां, क्या तुम्हारे पास ताली है ? काम पर जाने से पहले मैं घर जाना चाहती हूँ।'

ल्युसियां ने मुँह फेरकर पीछे देखा और उसे अब अपनी लापरवाही का पता चला। 'बड़ा दुख है, मैं तुम लोगों से इनका परिचय कराना तो भूल ही गया था। यह है जानेत लैम्बर्त, ऐक्ट्रेस। और यह मेरे दो सहपाठी हैं : आंद्रे कोर्नू और पियेरे दूब्वा। चलो, हम लोग कॉफीहाउस चलें। मैं बाद में तुम्हें स्टूडियो पहुँचा दूँगा।'

कॉफीहाउस में सन्नाटा था। परदे के पीछे कुछ लोग ताश खेल रहे थे। 'मगर यार, मेरे पास तो 'क्वीन' आ गई !' कोई बोला। आंद्रे को बड़ी प्यास लग रही थी। उसने शराब का गिलास मुँह से लगाया और खाली कर दिया। फिर वह कनखिओं से जानेत की ओर देखकर मन ही मन बड़ा पुलकित हुआ। वह सोचने लगा, क्या ही सुन्दर आँखें इसने पायी हैं। इसके बाद स्कूली जिन्दगी के किस्से छिड़ गये किन्तु बातचीत आगे न बढ़ पायी। पियेरे तक चुप पड़ गया। सभा के शोर-गुल और वहाँ की दम घुटानेवाली हवा ने उन्हें थका डाला था।

जरा कुछ नशे की हालत में दो आदमी आये और उन्होंने दो बोतल 'बियर' का आर्डर दिया। उनमें से एक, जिसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष रही होगी और जो हरकारे की टोपी पहने था, चिल्लाकर बोला, 'जैसे कि मान लो अगर उन्होंने हमारे पैर तले से ज़मीन ही खिसका दी तो फिर हम कहीं के नहीं रहेंगे, समझे !'

दूसरा जो उससे उम्र में कुछ छोटा था, बोला, 'अरे नहीं! दो और दो अब भी चार ही होते हैं।'

हरकारे ने पियानों के अन्दर एक सिक्का डाल दिया। उसकी खनखनाहट से हर एक को झुरझुरी-सी मालूम होने लगी।

पियेरे ने गुनगुनाना शुरू कर दिया फिर वह बोला, 'तुम्हें याद है, हम इस गाने को लड़ाई के बाद गाया करते थे, जब हमें क्रिया के रूप रटने पड़ते थे? कितनी व्यर्थ सी चीज है! उन दिनों कितनी बेकार की बकवास होती थी! 'सदा के लिए शान्ति!' कहने में तो बहुत आसान है! पहले तो जर्मनों से उनकी दुधारु गायें छीनीं गईं, फिर शान्ति की बात की गई। यह था पहला काम। तब कान्फ्रेंसें शुरू हुईं। गला फाड़-फाड़कर देश में खुशहाली का ऐलान किया जाता है और मैं देखता हूँ कि रोज रात को बहुतेरे आदमी मेरे मकान के पासवाले पुल के नीचे पड़े रहते हैं। काफी को आग में झोंक दिया गया, मछलियाँ समुद्र में फेंक दी गईं, और मशीनें तोड़ फोड़ डाली गईं। यह दूसरा काम किया गया। तब हिटलर मंच पर आता है। वह तुरन्त सारी संधियों को फाड़कर रद्दी की टोकरी में डाल देता है! चारों तरफ फिर शस्त्रीकरण होने लगता है। हम उनके पीछे पड़े हैं, वह हमारे, बस यही होता रहता है...। यह तीसरा अध्याय हुआ। चौथा क्या होगा स्पष्ट है। हिटलर चीख-चीखकर कहता है, मुझे बदले में स्ट्रासबर्ग और लीये चाहिये! फिर क्या था, हमें गैस के आक्रमण से बचने के लिए नकाब और खाने के बन्द टिन बँटने शुरू होते हैं, और हम मानव सभ्यता के सबसे बड़े रक्षक बन जाते हैं। एक बम इस मकान पर गिरता है और यह खत्म हो जाता है। मुझे अगर विश्वास है, तो यही कि लोग ऐसा होने नहीं देंगे। ऊपरी मध्यम वर्ग पर भी विलार का बड़ा प्रभाव है। चुनाव में वाम पक्षियों की ही जीत होगी।'

ल्युसियां मुसकरा रहा था। आंद्रे ने पियेरे की बातें तो नहीं सुनीं, हाँ उसको ल्युसियां की हँसी पर अवश्य चिढ़-सी मालूम होती थी। उसने मन में कहा, 'कमीना कहीं का!' फिर भी वह उसकी प्रशंसा किये बगैर न रह सका। क्या ही सुन्दर चेहरा है! हलके पीले रंग का मुलायम चेहरा, हलकी हरी आँखें और ताँबे के रंग के बाल। मालूम होता था जैसे किसी नाटक का पात्र हो और एक मध्यकालीन डाकू का पाट कर रहा हो।

'खूब !,' ल्युसियां बोला, 'अच्छा, तब क्या ! दूसरों की तरह विलार भी लोगों को सशस्त्र कर देगा। और भी मुश्किल यह है कि वह बहुत कमजोर दिल का आदमी है। लेकिन खैर, यह सवाल नहीं है। आजकल मेरे पिता तो दक्षिणपक्षियों के बहुमत के साथ हैं। वह फिर चुने जायेंगे और, इसमें संदेह नहीं कि पूरी ईमानदारी के साथ वह वामपक्ष के साथ होंगे। वह ऊपरी मध्यम श्रेणी के तो अवश्य हैं किन्तु ईमानदार हैं। यह भी ठीक है कि मौका आने पर कल फिर वह वही करेंगे जो कलतक उन्होंने किया था। इस प्रकार के आदमी बदलते नहीं। रास्ता बस एक ही है, और मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे क्या कहने जा रहे हो। लेकिन अगर क्रान्ति करनेवाली जनता होती है, तो उसकी तैयारी करने के लिए एक संगठन की भी आवश्यकता पड़ती है। क्रान्ति करना भी एक कला है। क्यों है न आंद्रे ?'

वह बोला, 'भाई, मेरी राय में तो कला कुछ और ही चीज है। तसवीरें पेंट करना और पेड़ उगाना कलाकार का काम है। लेकिन क्रान्ति एक दुर्भाग्य की चीज है जिसकी ओर लोग ढकेल दिये जाते हैं। हर उड़ती हुई चीज को पकड़ने की कोशिश होती है। तुम परिवर्तन चाहते हो, किन्तु मैं तो ऐसा जीवन चाहता हूं, जो बिलकुल शान्तिमय हो, जिसमें कोई विशेष घटना न हो, क्योंकि तभी मनुष्य इतमीनान से चीजों का अध्ययन कर सकता है और कुछ सीख सकता है। देखो न सेजां को। उसने अपनी सारी जिन्दगी सेब के फलों को देखते हुए बिता दी, और उसने कुछ देख लिया। यह है मेरी असली कला।'

यह सुनते ही पियेरे उछल पड़ा और बोला, 'हाँ, स्टूडियों में बैठकर ऊँघते समय तो यह कह देना आसान है। लेकिन उस समय क्या करोगे जब तुम्हें लारियों में मशीनगनों के साये तले इधर-उधर भेजा जाने लगेगा ? तब सोचने-विचारने का समय कहाँ होगा ? आंद्रे, तुम इस प्रश्न को जरा ढंग से सोचने की कोशिश क्यों नहीं करते ?'

आंद्रे बोलना तो नहीं चाहता था, किन्तु बोल ही उठा। जानेत अपनी बड़ी-बड़ी आँखें फाड़कर उसकी ओर देख रही थी। उसकी नजरों में वह बदलता हुआ जान पड़ता था, मालूम होता था जैसे वह आंद्रे नहीं रह गया है।

कहाँ हैं ?'...एक लड़का शाम का समाचार पत्र लिये हुए पहुँचा और चिल्लाने लगा, 'ताजी खबर ! लड़ाई होकर रहेगी !'

जानेत पियानो के पास जा खड़ी हुई। उसने पियानो के छेद में एक सिक्का डाल दिया और जब फिर वही झनझनाती हुई आवाज हुई, तो उसने मुड़कर आंद्रे से कहा, 'आओ-हम दोनों नाचें। पिछली लड़ाई के बाद हर कोई नाचा था। उस समय मैं छोटी बच्ची ही थी, लेकिन मुझे अभी तक सब याद है। हम उन लोगों से भी होशियार निकलेंगे। अभी नाच लेना ज्यादा अच्छा है, न जाने बाद में क्या हो !'

आंद्रे को वैसे तो नहीं कर देना चाहिये था, क्योंकि वह नाचना नहीं जानता था। इसके अतिरिक्त, उस छोटे से कॉफी हाउस में, जहाँ दुकानदार और दफ्तर के बाबू घंटों बैठे ताश खेला करते और जाड़े से काँपते हुए मोटर ड्राइवर जल्दी-जल्दी शराब के दो-चार घूँट पीने पहुँचते थे, वहाँ कभी किसी ने नाचा नहीं था। किन्तु आंद्रे खुशी से फूला न समाया। जानेत की पीठ का स्पर्श करते ही उसका भारी सुर्ख हाथ काँप उठा। काफी हाउस के मालिक ने उनकी ओर घृणा से देखा। मुश्किल से वे एक मिनट नाचे होंगे कि अचानक जानेत रुक कर धीमी, थकी हुई आवाज में बोली, 'मुझे अब जाना चाहिये। ल्युसियां, अब मैं टहलने जा रही हूँ।' जब वह जा चुकी तो पियेरे ने पूछा, 'यह किस थियेटर में काम करती है ?'

बड़ी अनिच्छा के साथ, ल्युसियां ने उत्तर दिया, 'आजकल वह रेडियो में काम करती हैं, 'पोस्त पेरिसिएँ' में। वह मामूली जगह है। कभी तमाशा दिखाया जाता है और कभी विज्ञापन सुनाये जाते हैं। लोग कहते हैं कि उसमें बड़ी विशेषताएँ हैं, लेकिन जानते हो इतने से निर्वाह करना कितना कठिन है......।'

ल्युसियां ने उन्हें अपने घर चलने का निमंत्रण दिया। 'वहाँ और भी पीने और बात करने का अवसर मिलेगा,' उसने कहा। पियेरे ने तुरन्त स्वीकार कर लिया किन्तु आंद्रे ने इनकार कर दिया। ल्युसियां ने नहीं छोड़ा और कहने लगा, 'अरे चलो भी ! न जाने फिर कब भेंट हो ! यदि कहीं लड़ाई छिड़ गई तो फिर...!'

आंद्रे को उठना पड़ा। वह बोला, 'लड़ाई तो होती नहीं। अच्छा, मैं चला। मुझे इतनी तमाम बातें करने के बाद थोड़ा सा टहलना चाहिये। ल्युसियां

बुरा न मानना, मैं उन लोगों में हूँ जिन्हें अपनी झोंपड़ी ही सबसे अच्छी लगती है। मैं एक अद्‌भुत प्राणी हूँ, जिसे न सभाओं में जाना अच्छा लगे, न थियेटर देखना और न......।'

वह कहने जा रहा था 'ऐक्ट्रेसें' किन्तु रुक गया और हाथ हिलाता हुआ बाहर चल दिया।

२

वह तेजी से कदम बढ़ाये जा रहा था। उसे शहर के बीच से गुजरना था। मोटरों की आवाज से सड़क गूँज रही थी। लाल, हरी, नीली बत्तियों की भरमार थी। कोई घूम-फिर रहा था, कोई अखबार बेच रहा था, कोई दूसरों को नाच-घर चलने की राय दे रहा था, खिड़कियों पर बैठी वेश्याएँ गला, फाड़-फाड़कर लोगों को बुला रही थीं। एक छोटी बन्द गली में एक लाउड स्पीकर बोल रहा था—'पुनः शस्त्रीकरण की आवश्यकता इसलिए पड़ गई है कि......।' आंद्रे इस शोरगुल से होकर इस तरह बढ़ता चला जा रहा था जैसे कोई पनडुब्बा पानी को चीरता हुआ निकल जाये। आगे चलकर थोड़ी देर के लिए वह एक पुल पर रुका। नीचे पानी में बत्तियों की धुँधली छाया पड़ रही थी और सीन का पानी कोयले की तरह काला मालूम पड़ रहा था। इतने में हवा चली और बूँदे पड़ने लगीं। आंद्रे को जानेत की आँखें याद आ रही थीं। क्या सुन्दर लड़की थी!

रु शेर्श-मिदी के कोने पर पहुँच कर वह कुत्ते वाली दुकान में कुछ तम्बाकू खरीदने गया। अन्दर बड़ी रोशनी थी और काफी शोरगुल मचा था। अचानक वह भी बैठ गया और एक गिलास सस्ती शराब मँगाकर पीने लगा। बदन में कुछ गरमाहट आयी और उसे कुछ आनन्द मिला। वह उन विचारों को भुला देना चाहता था जिनसे कोई लाभ न था। उसे एक नयी और आश्चर्यजनक स्फूर्ति का अनुभव हुआ।

फिर वह झटपट चलता बना क्योंकि उसे जानेत की याद सताने लगी थी। मालूम पड़ता था कहीं दूर से उसकी आवाज उस तक पहुँच रही है, जिससे साधारण से साधारण शब्द भी उसे महत्वपूर्ण जान पड़ने लगे थे। वह अँधेरे

में ही सीढ़ियों पर चढ़ता चला गया और झट जाकर उसने अपना रेडियो खोल दिया। किसी की टनटनाती हुई आवाज सुनाई पड़ी, 'बैल्डोल्फोग्नि मिक्स्चर सर के दर्द और जिगर की बीमारी को दूर करता है······!'

आंद्रे ने एक तिपाई पर बैठकर अपना चेहरा हाथ से ढँक लिया। वह थोड़ी देर इसी तरह बैठा रहा। फिर अचानक चौकन्ना हो बैठा। रेडियो से एक परिचित आवाज आने लगी थी। उसने जानेत की आँखों को अँधेरे में ढूँढ़ने की कोशिश की लेकिन सामने तो केवल रेडियो का डायल चमक रहा था। उसे ये शब्द सुनाई पड़े, 'तो जितना ही मैं अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश करती हूँ उतनी ही अधिक वे व्यक्त होती जाती हैं······।' लेकिन फिर रेडियो गरजने लगा, जर्मन वायु सेना···संयुक्त राष्ट्रसंघ की शोचनीय दशा··· वायुयान-विरोधी रक्षा प्रबन्ध···आदि आदि।

आंद्रे खुली हुई खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। मार्च की वह रात बड़ी तूफानी थी। चेनल के सागर में पड़ी नावें हवा के थपेड़ों से उलट-पुलट रही थीं। मछुए भयभीत होकर अपने गलों की ताबीजें पकड़े थे। समुद्र की ओर से जोर की हवा चल रही थी, जिससे मकानों की खिड़कियाँ खड़खड़ा रही थीं। सेब के पेड़ों को हवा के झोंके हिलाये डालते थे। उसने मन में सोचा··· नव मानववाद, भौंरे, विद्रोह, युद्ध! क्या इन शब्दों में कोई सत्यता भी है? उस जर्मन ने कहा था, 'अभी जब तक पेरिस बचा हुआ है···।' और जानेत? कहीं वह मोटरगाड़ी से दब-दबा न जाय या सर्दी न खा जाय। संसार भी कितना चलायमान है! लोग व्यर्थ ही बहस करते हैं। अगर प्यार के लायक कोई चीज है तो बस समुद्र तट पर उगे हुए और तूफानी झोंकों में झूलते हुए सेब के पेड़ या फिर जानेत! बाकी सब बेमतलब है।

३

ल्युसियां पियेरे को एक ठंडे, और सजे-सजाये कमरे में ले आया। देखने से ही मालूम पड़ता था कि उस कमरे के रहनेवाले बराबर बदलते रहे हैं, ल्युसियां अपने माता-पिता के साथ रहता था। उसने यह कमरा जानेत के लिए

ले रखा था। यद्यपि वह उसे अपना ही 'फ्लैट' बतलाया करता था। चौड़े सोफे पर एंगेल्स की एक पुस्तक और रंगीन सिल्क की एक गुड़िया पड़ी थी।

ल्युसियां ने कुछ बोतलें निकालकर गिलासों में कई तरह की शराब मिलाना शुरू किया। पियेरे थेयटर के बारे में बोल रहा था। वह शेक्सपियर का भारी प्रशंसक था। ल्युसियन ने उसे रोकते हुए कहा, 'अभी उसके लिए सौ वर्ष की देर है। कल मीटिंग में जानेत बोल रही थी, संभव है आज आप मुझे अपने में से एक न मानें। लेकिन मानिये चाहिए न मानिये, एक दिन आपको अपनी सेवा करने का अवसर मुझे देना ही पड़ेगा ·····। मिराँदा के लिए चुप रहना ही अच्छा है। अब कामरेड कालीवन के बोलने की बारी है।'

उसने अपनी सिगरेट, जो पूरी नहीं जली थी, बुझाकर रख दी और कुछ नरम स्वर में कहा, 'मुझे अपने पिता से सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ेगा। काम तो कुछ आसान नहीं होगा। आज ही का भाषण देखो न ·····। फिर मेरी पुस्तक भी निकलने वाली ही है·····मुझे अपना रास्ता चुनना ही पड़ेगा। किन्तु आंद्रे के ऐसे लोगों की बात मेरी समझ में नहीं आती। जब कि भारी से भारी दाँव लगा हो, आप नहीं कह सकते कि 'कोई खेल' ही नहीं हो रहा है।'

'आंद्रे को हम ठीक कर लेंगे', पियेरे बोला, 'तुम उसे नहीं जानते। वह वैसे तो बड़ा ही सज्जन है। केवल जरा देर में चीजों को समझ पाता है। भले ही इसे मजाक समझो, किन्तु मुझे तो विश्वास है कि हर एक हमारे साथ होगा। आजकल मैं 'सीन' वाले कारखाने में काम करता हूँ और देस्सर से मेरा झगड़ा भी हो चुका है। वह भी बड़ा मजेदार आदमी है। यदि तुम उससे सीधे-सीधे बातें करो तो वह तुम्हारी जान को हो आये। वह फ्रांस के सबसे बड़े पूँजीपतियों में से है। किन्तु मैं अपने अनुभव से जानता हूँ कि गलती करना कितना आसान होता है। देस्सर की समझ में अब बहुत सी बातें आ गई हैं। वह अब इतना चतुर हो गया है कि डूबती नाव पर पैर नहीं रखेगा। साल भर में ही तुम देखोगे कि वह हमारा आदमी है। हाँ, हाँ, तुम देख लोगे! विलार ने ठीक ही कहा था—'हम समाजवादी सभी फ्रांसीसियों का सहयोग प्राप्त कर लेंगे।'

ल्युसियां गुड़िया से खेल रहा था। उसने जँभाई लेते हुए कहा—'ठीक है। लेकिन उसके लिए पहले तुम्हें देस्सर को गोली मार देना होगा और विलार को भी फाँसी पर लटकाना पड़ेगा।'

यह सुनकर पियेरे का खून खौलने लगा। कमरे में तेजी से टहलते हुए वह बोला, 'इसी से तो हर मनुष्य भड़क जाता है। सभी लोग एक प्रकार के नहीं होते। वे भिन्न-भिन्न रास्तों से हमारे पास आना चाहते हैं, तुम यह बात क्यों भूल जाते हो? हमारे कारखाने में मिशो नाम का एक मिस्त्री है। है तो वह बड़ा ही बढ़िया आदमी, लेकिन अपनी राय का कट्टर है। उसके नजदीक देस्सर बस एक पूँजीपति हैं और कुछ नहीं। कम्युनिस्ट...।'

'व्यक्तिगत रूप से मैं तो विलार से कम्युनिस्टों को बेहतर समझता हूँ,' ल्युसियां बोला, 'वे बड़े साहसी होते हैं। हाँ, यह जरूर है कि राजनीतिक खिचड़ी पकानी भी उन्हें खूब आती है। इस जनवादी मोर्चे की बात को तो सोचो। तीन घोड़े की गाड़ी पर बूढ़ी माता मेरी को घसीटे लिए जा रहे हैं। दायीं ओर का घोड़ा तो है विलार बाईं ओर का हमारा वह मिस्त्री और दाहिनी ओर रहेंगे शायद मेरे पिता! सहनशीलता जरा देखो!' यह कहकर वह जोर से हँस पड़ा।

अब उन्होंने अपने बचपन के किस्से एक-एक करके याद करने शुरू किये। ल्युसिन शराब उड़ेलता गया। यहाँ तक कि पियेरे को हलका सा नशा मालूम होने लगा और वह अपनी नई प्रेमिका के बारे में बातें करने लगा।

'तुम उससे अवश्य मिलो और 'क्रान्ति' की चर्चा करो। गजब का जोश है। उसका पिता एक मजदूर है। वह थोरे को भली-भाँति जानता है और जेल भी काट चुका है। वह बेलविये में पढ़ाती है। अगर तुम देखो कि वहाँ के बूढ़े और बच्चे दोनों उसे कितना मानते हैं, तो तुम्हें आश्चर्य होगा। उसने तो वहाँ का सब कुछ बदल डाला है।'

ल्युसियां ने मुस्कराते हुए पूछा, 'सदा की भाँति यह भी तुम्हारा कोई ऐसा ही झपट्टा है, या इस बार सचमुच शादी कर डालोगे?'

'मजाक न करो। इस बार मैं तय कर चुका हूँ। अब मेरे लिए यह बहुत जरूरी हो गया है। लेकिन मेरे पास कुछ है तो नहीं। एग्नेस को जरा भी सन्देह नहीं कि...?'

'जूल लफार्ग ने एक बार कहा था—स्त्री एक रहस्यमय किन्तु आवश्यक वस्तु है।'

'आवश्यक तुम्हारे लिए होगी !' पियेरे ने बिगड़ कर कहा। लेकिन वह और कुछ नहीं कह पाया, क्योंकि इतने ही में जानेत आ गई।

उसने हैट और दस्ताने उतारे, खिसककर आइने के सामने पहुँची और एक सिगरेट पीने लगी। इस बीच उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। थोड़ी देर बाद बोली, 'तुम आंद्रे को भी क्यों नहीं ले आये ?'

ल्युसियां खिसिया गया लेकिन कुछ बोला नहीं। एक गिलास उठाते हुए, वह पियेरे की तरफ मुड़कर बोली, 'इन्होंने आपकी कैसी खातिरदारी की ? अभी तक अपने पिता की सम्पत्ति की ही चर्चा करते रहे होंगे ? या शराब के प्याले में ही 'क्रांति' कर रहे थे ?'

ल्युसियां उसकी ओर विस्मय से देखने लगा और बोला, 'आज मामला क्या है ? इतनी छींटाकशी क्यों ?'

'छींटाकशी ? इसे छींटाकशी नहीं कहते। सच पूछो तो मैं सुनते-सुनते तङ्ग आ गई हूँ।'

पियेरे हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ और बोला, 'अब मुझे चलना चाहिये। सबेरे छः बजे ही उठना है।'

४

मिशो ने बड़े जोश के साथ पियेरे से कहा, 'यह बेंच ठीक मिली !'

बेंच पर बैठते ही दोनों में राजनीतिक चर्चा छिड़ गई। सदा की भाँति आज भी पियेरे विलार की प्रशंसा करने में लगा हुआ था। मिशो चुपचाप सुन रहा था। उसका शरीर नाटा और गठा हुआ था और आँखें भूरी तथा सन्देह-पूर्ण थीं। जली हुई सिगरेट का टुकड़ा अभी उसके ओठों में दबा हुआ था। उसके सिर पर टोपी थी और रंगीन आस्तीन की कमीज से साफ झलक रहा था कि उसकी बाँह पर दिल तथा लंगर के आकार का गुदना गुदा हुआ है। वह कुछ दिनों तक नौसेना में रह चुका था। काम करने में वह बड़ा चतुर था और उसकी जबान भी कुछ कम तेज न थी। फैक्टरी के सभी मजदूर उसे आदर तथा भय की दृष्टि से देखते थे।

पियेरे ने मिशो को इस प्रकार सम्बोधित किया जैसे वह उससे बड़ा हो। वह यह जानना चाहता था कि विलार का सबसे ताजा भाषण उसे पसन्द आया या नहीं। किन्तु मिशो ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'शायद तुम उन नारों से सहमत नहीं हो?'

'क्यों नहीं? वे जनवादी मोर्चे के नारे हैं और फिर विलार का कहना ही क्या! भाषण देने में तो वह उस्ताद है।'

'तो इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हें उसकी बातों पर विश्वास नहीं!'

'अब तो 'जनवादी मोर्चा' बन चुका है। इसलिए मानना ही पड़ेगा। व्यक्तिगत रूप से भले ही मैं अपनी घड़ी या अपनी झोला उसे सौंप दूँ, किन्तु देश का हित उसके हाथों में देने के लिए तैयार नहीं हूँ।'

'मिशो, मैं तुम्हारी बात को ठीक से समझ नहीं पाया। यह बेंच तुम्हारी नहीं है। यह मेरी भी नहीं। इसका मालिक है 'सीन' कारखाना और उसका डायरेक्टर 'देस्सर' है। हम बमवर्षक वायुयानों के लिए एंजिन् तैयार कर रहे हैं अर्थात् लड़ाई का सामान इकट्ठा हो रहा है, और तुम एक ऐसे आदमी के बारे में, जिसने अपना सारा जीवन हमारे ही हित के कार्यों में व्यतीत किया है, इस प्रकार बातें करते हो जैसे वह हमारा शत्रु हो!'

'यह बेंच देस्सर की मिलकियत मात्र नहीं है,' मिशो बोला, 'वह एक अच्छी चीज भी है। ठीक है आज इसे हम अपना नहीं कह सकते, लेकिन हो सकता है कि कल ही हम इसके मालिक बन जायँ। इसी से इसका ख्याल रखना पड़ता है। बमवर्षक वायुयान सन्देहपूर्ण चीजें हैं। आखिर यह किससे लड़ने की तैयारी हो रही है? किससे और कब? जहाँ तक विलार का सम्बन्ध है, हर चीज स्पष्ट है। आज हम एक साथ हैं, इसमें उसका भी भला है और हमारा भी। इसके बाद या तो वह हमें नरक में भेजेगा या हम उसे। मैं अभी नहीं कह सकता कि कौन पहले कदम उठायेगा। एक बात तो निश्चित ही है कि यदि मौका पाते ही हम तुरन्त उसे नहीं खतम कर देते, तो वह हम सभी को एक दिन गोली से उड़वा देगा। और कैसे? खैर बहुत बात हो चुकी, अब मुझे अपना काम देखना है।'

काम से लौटकर ऐग्नेस के घर जाते समय पियेरे रास्ते भर इन्हीं बातों के बारे में सोचता गया। झुटपुटे का समय था, जब कि डूबते हुए सूरज के प्रकाश

में हर चीज हलकी-फुलकी और अद्‌भुत रंग की मालूम पड़ने लगती है। पुराने मकान, जो दिन की रोशनी में धब्बेदार दिखाई पड़ते थे, इस समय काले-नीले टीलों जैसे लग रहे थे।

पियेरे को मिशो के शब्द आवश्यकता से अधिक कटु मालूम पड़े।

वास्तव में पियेरे न तो मिशो की बात और न उसकी विचारधारा को ही समझ पाता था। पेरिस के बहुत से अन्य निवासियों की तरह मिशो भी कड़े और संदिग्ध स्वभाव का आदमी था।

बेलविये सड़क पर जब पियेरे पहुँचा तो बत्तियाँ जल चुकी थीं। कसाइयों की दूकानों में सुअरों के कटे हुए सर, जो पत्थर की तरह कड़े पड़ गये थे और कागज के फूलों से सजे थे, बैंगनी रंग की रोशनी में चमक रहे थे। सिनेमाघर के फाटक पर एक बड़ा पोस्टर लगा हुआ था, जिसमें एक सुन्दरी को एक मल्लाह का हाथ पकड़े आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें टपकाते दिखाया गया था। दर्जनों काफीघरों से गिलासों की आवाज आ रही थी और बिलियर्ड की मेजों पर गोलियाँ इधर-उधर लुढ़क रही थीं। शाम के समय इस सड़क पर एक अजीब सी चमक-दमक रहा करती थी। उससे फूटकर इधर-उधर तंग गलियाँ गई हुई थीं जिनमें सदा प्याज, लहसुन, नकली मक्खन और पेशाब की बदबू आया करती। बूढ़ी औरतें एक दूसरे को चीख-चीखकर कोसतीं और बच्चे 'चित और पट' का खेल खेला करते। जिसके कपड़ों पर नजर डालिये, पैबन्द पर पैबन्द लगे हैं। यहाँ रहने वाले इतने गरीब थे कि खाने को जो कुछ रद्दी-सद्दी मिलता उस पर टूट पड़ते थे और एक-एक पैसे को दाँत से पकड़ते थे।

इन्हीं गन्दी गलियों में से एक में अभी हाल में ही एक नया मकान दूकान-दारों, नौकरों और दफ्तर के बाबुओं के लिए बना था, उसके छोटे-छोटे 'फ्लैट' भड़कीले 'वालपेपर' से सजे थे। सबसे ऊपर मकान की सातवीं मंजिल में केवल नौकरों के रहने के कमरे थे, जैसा कि मँहगे किरायेवाले मकानों में होता है; लेकिन दूकानदारों और बाबुओं की स्त्रियाँ स्वयं अपना खाना पका लिया करतीं थीं। इसलिए सबसे ऊपर के कमरे कुछ गरीब लोगों को किराये पर दे दिये गये थे। इन्हीं में से एक में एक बेकार बूढ़ा मुनीम रहता था और यहीं रहती थी वह एग्नेस, जिसने पियेरे का मन मोह लिया था।

उसके कमरे में एक छोटी खाट और एक मेज थी, जिस पर स्कूली कापियाँ

का ढेर लगा रहता था, दो सादी कुर्सियाँ और एक हाथ धोने का बर्तन था। दीवारें बिल्कुल सादी थीं, उन पर कहीं कोई तसवीर या फोटो न था। आलमारी में भी स्कूली किताबें, एक शब्द-कोश, 'मादाम बोवैरी' और लुई माइकेल की जीवनी रखी थी। कमरे के किनारेवाली खिड़की से बाहर आकाश में कुहरे से ढँका हुआ चाँद नकली-सा लग रहा था।

एग्नेस को सुन्दर कहना कठिन था। उसका माथा सामने को उभरा हुआ था, आँखें भूरी और कमजोर थीं और नाक ऊपर उठी हुई थी। काम करते-करते उसके हाथ लाल पड़ गये थे। फिर भी उसके अन्दर भावनाओं का एक सागर लहरें मार रहा था। वह बड़ी परिश्रमी थी। उसमें कड़ा से कड़ा काम करने और बड़ा से बड़ा त्याग करने की हिम्मत थी। जब वह हँसती तो उसका चेहरा खिल उठता था। वैसे तो वह बहुत कम मुस्कराती थी, लेकिन जब उसे हँसी आती तो इसलिए नहीं कि उसे कोई ऊपरी खुशी होती थी, बल्कि इसलिए कि वह अपने अन्दर एक शान्ति का अनुभव करती थी। बहुत प्रसन्न होने पर तो वह चिल्ला पड़ती थी।

पियेरे ने एग्नेस को कभी पहले इतनी उदास नहीं देखा था। जब उसने उसे ल्युसियाँ के भाषण के बारे में बतलाया तो उसने अनसुने ही केवल यह कह दिया, 'उफ्! कितनी घृणा मालूम होती है। लोग उसके पिता के नाम से लाभ उठा रहे हैं।'

पियेरे ने उसे समझाने की कोशिश की, ल्युसियां कितना ईमानदार है। आज दो युगों के बीच संघर्ष का समय है, प्रचार की कितनी आवश्यकता है। किन्तु एग्नेस चुपचाप बैठी सुनती रही, फिर बोली, 'राजनीति बड़ी गन्दी चीज है। यह भी एक खेल है। और लोग भूखों मर रहे हैं।'

पियेरे ने अपने मन में सोचा, शायद यह किसी कलाकार से प्रेम करती है। आज पता लगाना ही पड़ेगा कि अपना यह प्रतिद्वन्दी कौन है?

'अच्छा यह तो बताओ,' उसने पूछा, 'कि वह कौन है जिनका नाम एक बार तुमने लिया था। तुम समझीं, मेरा किससे मतलब है? अवश्य ही वह कोई कवि होगा।'

'नहीं, एक केमिस्ट। खैर, उन भूली हुई बातों को याद दिलाने से क्या

काम, और फिर आज ही क्यों ? उसके बिना ही मेरे लिए दुःखों का कौन कम बोझ है ?'

'क्या तुम्हें उसकी याद आ रही है ?'

एग्नेस ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने पियेरे की ओर देखा और उसकी आँखें तुरन्त सख्त हो गईं। उसकी आवाज सर्द पड़ रही थी। वह बोली, 'आज मुझे पता चला है कि स्कूल से मेरा पत्ता काटा जा रहा है। इससे अधिक नीरस चीज विचार करने के लिए और क्या हो सकती है ?'

'तुम्हें स्कूल से निकाला जा रहा है ?' पियेरे क्रुद्ध होकर बोला। उसे लगा जैसे उस तंग कमरे में उसका दम घुटा जा रहा है। 'कौन तुम्हें निकाल रहा है ? किसकी हिम्मत है ? ऐसा हो नहीं सकता।'

एग्नेस ने उसे बतलाया कि पहले शिक्षा मन्त्री के कार्यालय से एक गश्ती चिट्ठी निकाली गई और तब एक बच्चे के पिता ने जिसकी दवा की दूकान है, यह शिकायत कर दी कि उसके बच्चे से स्कूल में एक अत्यन्त घृणित लेख लिखाया गया है। 'यह है लेख, इसे जरा पढ़ो तो ! बच्चा अभी आठ वर्ष का है।'

पियेरे ने जोर-जोर से उसे पढ़ना शुरू किया—हमारे पास कुत्ते के छः पिल्ले थे। माँ ने पाँच को पानी में डुबाकर मार डाला। वह कहती थी कि दूध की कमी है। रेने कहता है कि शीघ्र ही उसके बहन होनेवाली है। वह भी कहता है कि घर में काफी दूध नहीं। मैं समझता हूँ, लोग इसी प्रकार रेने की बहन को भी डुबाकर मार डालेंगे। जब मैं बहुत छोटा था तो पीने को बहुत दूध मिलता था। माँ कहती हैं कि जब मैं बड़ा हूँगा तो मुझे लड़ाई पर भेजकर मरवा डाला जायेगा। मुझे गेंद खेलना और 'चर्ख चूँ' पर चढ़ना अच्छा लगता है।

वह बोला, 'मैंने बच्चों से कहा था कि जिस प्रकार तुम रहते हो उस पर एक लेख लिखो। कुछ ने तो बहुत ही अच्छा लिखा। जरा उन पर एक नजर डालो। शिक्षा मंत्री अपनी चिट्ठी में 'देश-विरोधी भावनाएँ' फैलाने का आरोप लगाता है। आज मुझे हुक्म दिया गया कि मैं स्कूल इन्सपेक्टर के सामने हाजिर होऊँ। उन्होंने मुझसे कहा—तुम अपनी शिक्षा प्रणाली को बदलो, तभी मैं तुम्हारे लिए कोई सिफारिश कर सकता हूँ। मैंने झट इनकार कर दिया।'

'तब भी तुम मुझे राजनीति में भाग लेने पर बुरा-भला कहती हो ?'

'यह कोई राजनीति नहीं है। यह तो सच्चाई है। मैं सीना-पिरोना जानती

हूँ। कहीं जाकर नौकरी कर लूँगी, लेकिन मुश्किल तो यह है कि पढ़ाने-लिखाने में ही मेरा मन लगता है। मैं छोटी सी थी, लेकिन मुझे भली-भाँति याद है कि मेरे पिता को क्या-क्या कष्ट सहने पड़े थे। वे रेनो के कारखाने में काम करते थे। कुछ दिन के बाद वहाँ हड़ताल हो गई और काफी दिनों तक चलती रही। मेरी माँ रोती थी कि बच्चों को खिलाने के लिए घर में कुछ भी नहीं है लेकिन मेरे पिता ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने अपनी घड़ी तक गिरवी रख दी और उसके पैसे से हमें 'सासेज' खिलाते रहे। वे स्वयं हँसते और हमें भी हँसाते। उस समय लोग एक 'दरियाई घोड़े' के बारे में गाना गाया करते थे जो मौका पाकर 'सिनेट' का सदस्य बन गया था। खैर, हड़ताल टूट गई, किन्तु मेरे पिता को काम पर वापस नहीं लिया गया, क्योंकि वे हड़तालियों के अगुआ थे। पूरे जाड़े भर वे बेकार रहे। कभी इधर-उधर के काम जरूर मिल जाते, जैसे सिलाई की मशीन, या और इसी प्रकार की किसी चीज की मरम्मत करना। वे बराबर कारखाने में जाकर कहते कि यदि कारखानेवाले उन्हें वापस ले लें तो वे मुफ्त काम करने को तैयार हैं। वे मुझसे अक्सर कहते थे कि उन्हें अपनी मशीन की बड़ी याद आती है!'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। नीचे प्यानों पर कोई एक लोकप्रिय गीत बजा रहा था, और एक उँगली से ही सुर निकाल रहा था। पियेरे मेज के पास खड़ा किसी बच्चे की कापी देख रहा था, जिसमें उसने किसी के स्वप्न की तसवीर खींची थी—नीला समुद्र और उस पर छोटा-सा जहाज। पियेरे ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, 'ऐग्नेस!'

वह महीनों से इस अवसर की तैयारी कर रहा था। उसने सोच रखा था कि कैसे उससे बात कहेगा, और उसे कायल करेगा। लेकिन इस समय तो वह केवल उसका नाम ही ले सका। बाकी कुछ भी उसके मुँह से न निकल सका। किन्तु एग्नेस सब कुछ समझ गई। तुरंत उसके हाथ ने उचित जवाब दिया।

'प्रिये···! तुम्हें मालूम है मेरे दिल पर क्या गुजरी है!' पियेरे बोला, 'मेरी समझ में नहीं आता था कि कैसे तुम्हें बतलाऊँ।'

'और मैं समझती थी कि यह दशा मेरी ही है और तुम्हें कोई परवाह नहीं। ऐसा मालूम पड़ता था जैसे मेरा तुम्हारे रास्ते में आना कोई साधारण-सी

घटना हो और तुम्हारा मन और कहीं हो। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि तुम बराबर मुझसे मिलने क्यों आया करते हो।'

पियानो बन्द हो चुका था। मकान की सातों मञ्जिलों के लोग सोने की तैयारी में लगे थे। पास की तङ्ग और गन्दी गलियों में सन्नाटा छाया था। लोग, जो थोड़ी देर पहले सिनेमाघरों के पास शोर मचा रहे थे और ठट्ठा मार रहे थे, अपने-अपने घरों को जा चुके थे। केवल छतों के ऊपर चाँद अभी तक चमक रहा था, जैसे आकाश में लैम्प जलाकर कोई बुझाना भूल गया हो। कभी-कभी बिल्लियों के रोने की आवाज जरूर आ जाती थी अचानक पियेरे को याद आया, इसका तो एक और भी प्रेमी है! उसने अभी कहा था कि वह कोई केमिस्ट है। उसके खिलाफ रिपोर्ट करने वाला भी तो कोई केमिस्ट ही था। अच्छा तुक मिला! हो न हो वही आदमी है। वह बदला लेना चाहता है। कितना भयंकर आदमी है! और वह इसका प्रेमी है! पियेरे यह सोचकर ठिठक गया, उसकी जबान बंद हो गई, मानो उसके सिर में जोरों का दर्द हो।

'पियेरे, तुम किस सोच में पड़ गये?'

'उसके बारे में सोचने लगा था। तुमने कहा था न कि वह केमिस्ट है···।'

'हाँ, उसका नाम दुवाल है। उसी ने इन्सपेक्टर को खबर कर दी थी।'

'मेरा मतलब यह नहीं। मेरा मतलब तुम्हारे उस प्रेमी से है!'

'अरे मूर्ख! तुमने उसे सच मान लिया? जो चीज मुझे सबसे पहले सूझी, वही मैंने कह डाली। मेरे दिमाग में उस आदमी की बात थी, जिसने खबर पहुँचाई थी, इसीलिए मैंने एक केमिस्ट कहा था।'

'लेकिन वह है कौन?'

'तुम! तुम्हारे पहले मेरा कोई नहीं था।'

पियेरे ने उमगकर उसकी कमर में हाथ डाल दिया, और उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े।

'एग्नेस, अरे तुम रो रही हो!'

'नहीं! मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ।'

५

बड़े कमरे की खिड़कियाँ एक अँधेरे आँगन की ओर खुलती थीं। अक्सर सबेरे तड़के बत्तियों को जलाये रखना पड़ता था। बड़ी मेज पर फाइलों, अखबारों की कतरनों और पत्रों का ढेर लगा रहता था। कागजों के नीचे न जाने क्या-क्या चीजें पड़ी थीं, सिगरेट के टुकड़ों से भरी ऐश-ट्रे, जासूसी उपन्यास और एक दस्ताना भी पड़ा था। मेज का मालिक चाहता भी नहीं था कि उसकी मेज कभी साफ की जाय। फर्नीचर भी न जाने कितने प्रकार का था, बड़ी आलमारी, नये नमूने की धातु के पायोंवाली आरामकुर्सी, और न जाने कितने प्रकार की और भी कुर्सियाँ थीं। दीवार पर एक पेंटिंग लटक रही थी— कुछ हरा और भूरा- सा पानी था और उस पर एक पुरानी नाव तैर रही थी। बगल में एक नक्शा था, जिस पर जगह-जगह लाल पेंसिल से निशान बने हुए थे। गोलाकार निशानों का अर्थ था तेल और त्रिभुजों का अर्थ था कोयला। यहीं पर जूल देजेर का कारखाना था। जूल फ्रांस के उन इने-गिने पूँजीपतियों में था, जो वास्तव में फ्रांस पर राज करते हैं।

उसकी आयु पचास वर्ष की थी। शरीर भारी था। आँखें बहुत तेज, भौहें तनीं और बाहर की ओर निकली हुई थीं। कभी-कभी वह अपनी असली उम्र से भी अधिक बूढ़ा जान पड़ता था। साफ दिखाई पड़ता था कि रोग के कारण उसका शरीर फूल उठा है। आँखें फीकी पड़ गई हैं और कंधे झुक गये हैं। लेकिन कभी-कभी तो वह चालीस से भी कम मालूम पड़ता था। याददाश्त उसकी नवजवानों जैसी थी; आँखें कभी स्थिर नहीं रहती थीं। वेशभूषा की उसे अधिक परवाह नहीं रहती थी। शराब का वह बड़ा आदी था, और हर समय मुँह में एक छोटा-सा काला पाइप दबाये रहता।

अन्य बड़े पूँजीपतियों के विपरीत, उसे ठाटबाट पसन्द न था। वह प्रेस के संवाददाताओं और फोटोग्राफरों को तो कभी पास नहीं फटकने देता था। राज-

नीतिक बयान देने से सदा बचता और कहा करता कि राज्य के कामों से उसे कोई मतलब नहीं। हालाँकि वास्तविकता तो यह थी कि बिना उसकी मर्जी के कोई भी सरकार एक दिन नहीं टिक सकती थी। वह सदा पर्दे की ओट से ही कल घुमाने में विश्वास रखता था। गुप्त रूप से उसके रुपये न जाने कितने लोगों की, जो उसके अनन्य भक्त थे, जेब भरा करते थे। उसके इशारे पर कानून बनते-बिगड़ते, विदेश नीति का निर्णय होता, मन्त्री चुने जाते या निकाल बाहर किये जाते थे।

देजेर की सारी ताकत अंकों की जोड़-बाकी में थी। उसने अपनी पूँजी भिन्न-भिन्न देशों में व्यवसायों में लगा रखी थी, जैसे पोलैंड की रेलवे कम्पनियों में, अमेरिका के तेल के कुओं और हिन्दचीन के रबर के बगीचों में। उसके हिस्से थे हवाई जहाज बनाने वाली कम्पनियों में, जिनका हित ही देश को सशस्त्र रखने में था और सट्टे के बाजार में, जो हिटलर के प्रत्येक भाषण पर बाजार भाव में उलटफेर कर देता था। उसके साथी थे बक्साइट की खानों के बड़े-बड़े मालिक, जो धड़ाधड़ जर्मनी के हाथ कच्चा माल बेच रहे थे, जूते के बड़े-बड़े ट्रस्ट, जो संसार भर में जूते के व्यापार पर एकाधिकार रखनेवाले बाटा और बेनिश को भी मात करने की चेष्टा करते थे, सूती कारखानों के उदारपंथी मालिक, जो हब्शियों को नागरिक अधिकार दिलाने के लिए इसलिए प्रयत्नशील थे कि वे उनके सूती कपड़े खरीद सकें और बड़े-बड़े कट्टरपंथी डायरेक्टर, जो मजदूरों की मजदूरी घटवाने के लिए रोम से पोप का भी आदेश प्राप्त कर सकते थे। उसकी महान शक्ति का रहस्य निहित था रेलों और सड़कों की आपसी होड़ में, खाली ट्रेनों और मोटर बस कम्पनियों के दिवाले निकलाने में, कनाडा का गेहूँ पीस-पीस कर रकम काटनेवाली चक्कियों में, ब्यूनोसआयर्स के उन लड़ाकू जमींदारों की सहायता करने में, जो बाहर से आये हुए माल पर भारी चुंगी और कर लगे देखना चाहते थे। गरज़ यह कि वह अनन्त हितों और स्वार्थों का पुलिंदा था, जो देखने में इन्सान लगता था।

खतरों में पड़ना और उनका सामना करना उसे स्वभाव से बहुत पसन्द था। यदि वह चाहता तो एक निपुण वायुयानचालक, अन्वेषक, भारी क्रान्तिकारी या फिर छँटा हुआ षड्यंत्रकारी बन सकता था। अपने व्यवसाय में भी सदा वह ऐसे ही काम करता जिनमें खतरा होता था। वह लंदन और न्यूयार्क

के सट्टे बाजारों के भावों में क्षण क्षण होनेवाले उतार-चढ़ाव को किसी नायिका के नखरों से अधिक नहीं समझता था। अभी कल तक जो मित्र थे, उन्हें छोड़कर कल तक के दुश्मनों से भी तुरन्त दोस्ती गाँठ लेने में उसे कोई संकोच न होता। बड़ी-बड़ी राजनीतिक कान्फ्रेन्सों की सफलता या असफलता पर वह बड़े-बड़े दाँव लगा देता। वह हर ऐसे काम को दिल से पसंद करता था जिसमें अनुमान के गलत निकल जाने की सम्भावना होती थी।

ऐसे मनुष्य के लिए स्वाभाविक था कि वह फासिस्टवादी विचारधारा का समर्थक होता और उसके भाग्यवादी दर्शन, वैभव पूजा, खतरों में पड़ने की प्रबल प्रवृत्ति और उसके झंडे को अपनाता। वास्तविकता भी यह थी कि छः फरवरी तक वह फासिस्टवादी संघ क्रोआ द फ्यू के नेताओं को भारी-भारी रकमें देता रहा था। दाँव उसने लगा दिये थे और मंत्रिमंडल का पाँसा उलटनेवाला ही था। अपना स्वार्थ पूरा होते ही उसने अपने हाल तक के एक परम मित्र से कह दिया, 'बेहतर होगा कि आज से तुम मुझे भूल जाओ।' अब वह वामपक्ष की ओर झुक रहा था, जिससे सरकारी क्षेत्रों में काफी खलबली मच गई थी। यहाँ तक अफवाह फैल गई थी कि वह प्रसिद्ध समाजवादी विलार से गठबन्धन कर रहा है। वास्तव में अब उसने रैडिकल सोशलिस्टों को फाँसना शुरू किया था। यह खिचड़ी पार्टी अपने को साधारण फ्रांसवासियों की पार्टी कहती थी, जिसमें बहुत से व्यवसायी, अंगूर के बगीचों के मालिक, कालिजों के विख्यात अध्यापक और मामूली लिखे-पढ़े दूकानदार, सभी तरह के लोग सम्मिलित थे। धुआँधार भाषण करनेवालों की कमी न थी। यह ऐसी उग्रवादी पार्टी थी जिसे उग्रवादी कार्यक्रम से जितना भय था उतना और किसी चीज से नहीं था। न तो अपने गुणों और न सामाजिक स्थिति से देजेर एक साधारण फ्रांसवासी कहला सकता था। फिर भी उसे इन सीधे-सादे 'उग्रवादियों' की बातें इतनी ही प्रिय मालूम पड़तीं जैसे फ्रांस की भूमि पर निवास करना और उसकी हवा में साँस लेना। वह अपने बचपन के फ्रांस के सामाजिक ढाँचे को ज्यों का त्यों कायम रखना चाहता था—उसके धन को, उसके सामाजिक विकास क्रम को, पुराने घरानों की बुनियाद और रोज के घरेलू झगड़ों को तथा पैत्रिक सम्पत्ति के लिए चलनेवाली मुकदमेबाजी को वह चिरस्थायी बनाना चाहता था। फ्रांस के नगरों को, उसके अनुपम वातावरण को, गृहिणियों की बेफिक्री, मितव्ययिता और

कंजूसी तक को, तरकारियाँ बोने और मछली के जालों की मरम्मत में लगनेवाले श्रम को, क्यारियों में लगे संसार प्रसिद्ध स्वीट पी के फूलों को, हर गढ़े में मछलियाँ पकड़ने के शौक, राजभवन के कमरों में होनेवाले भारी षड्यंत्रों को, इस विवाद को कि मेदे के लिए सबसे अच्छी दवा कौन सी होती है, उस जाति-भावना को जिसने राजनीति पर भी अपनी छाप लगा रखी थी, कटु आलोचना के उस अधिकार को, जिसके सामने न ईश्वर बच पाता, न राष्ट्र, न औषधियाँ और न अपनी या परायी स्त्री ही—इस सभी को बचाना वह अपना धर्म समझता था।

वह पेरिस के निकट एक छोटी-सी जमींदारी में रहता था। सबेरे तड़के उठते ही वह रसोईघर में जा घुसता और अखबार पढ़ने के बाद पेरिस के लिए रवाना हो जाता। रास्ते में स्कूली बच्चों और इधर-उधर दौड़ते हुए कुत्तों को देखकर मुसकरा देता, किन्तु फिर शीघ्र ही उसका मस्तिष्क संख्याओं से गूँजने लगता और उसे हर चीज धुँधली दिखाई पड़ने लगती। वह दस बजे तक सबेरे की डाक देखता, पत्रों, तारों और गुप्त रिपोर्टों के उत्तर देता, उसके बाद आनेवालों से भेंट करता। राज्य के मन्त्री, बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ और पेरिस के बड़े-बड़े पूँजीपति उसके सुसज्जित, किन्तु कष्टदायक वेटिंग रूम से उसी प्रकार परिचित थे जैसे किसी दन्दानसाज की दुकान से दाँत के रोगी होते हैं।

जिस दिन पियेरे उसके यहाँ पहुँचा उस रोज दो बैंकर और रूमानिया के राजदूत का एक सलाहकार अन्दर बुलाये जाने का इन्तजार कर रहे थे। पियेरे ने काँपते हाथों से एक अखबार लपेटा और ऐसा बहाना बनाया जैसे वह किसी लेख को पढ़ रहा हो। किन्तु उसे ऐसा प्रतीत होता था कि वहाँ उपस्थित सभी लोग यह तड़ गये थे कि उसके आने का क्या अभिप्राय था।

नौकर ने धीरे से गम्भीरतापूर्वक पुकारा—'मस्यो पियेरे दुब्वाय!' देजेर ने सबसे पहले पियेरे ही से भेंट करने का निश्चय किया। वह पियेरे को बहुत पसन्द करता था। उसे उसका चंचल स्वभाव, उसकी बकबक और विशेषकर उसकी धनहीनता पसंद थी। एक निपुण इन्जीनियर होते हुए भी अपनी जीविका के लिए उसे इतना कष्ट उठाते देखकर, देजेर को स्वयं अपनी जवानी के दिन याद आ जाया करते थे। इसके अतिरिक्त वह दोनों बैंकरों और

रूमानियन कूटनीतिज्ञ को दिखाना चाहता था कि वे उसके पास अतिथि नहीं, बल्कि भिखारी बनकर आये हैं।

उसने इतने विनम्र ढंग से पियेरे का स्वागत किया कि वह चकित रह गया, उसकी समझ में ही नहीं आया कि बात कैसे शुरू की जाय। टूटे-फूटे, लड़खड़ाते हुए शब्दों में उसने यह बतलाने की कोशिश की कि कैसे शिक्षा मंत्री ने एग्नेस को नौकरी से अलग कर दिया है।

'मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि वह मेरी मित्र है। यह ठीक है कि मुझे उसकी हालत से दिलचस्पी है, किंतु आप ही देखिये न कैसा घोर अन्याय हो रहा है।"

देजेर मुस्करा दिया और बोला, 'न्याय तो कहीं है ही नहीं, मित्र! फिर भी मैं इस स्त्री के मामले को ठीक कर दूँगा।'

उसने टेलीफोन मिलाया और कहा, 'मैं मस्यो तेस्सा से बातें करना चाहता हूँ। मैं देजेर बोल रहा हूँ। क्या हाल है, मित्र? तुम्हारी पत्नी कैसी हैं? ठीक हैं? अच्छा सुनो, एक काम है। आज कमेटी की बैठक में शिक्षा मंत्री से तुम्हारी भेंट होगी ही......हाँ, हाँ मामला एक युवती अध्यापिका का है। उसका नाम है एग्नेस लजांद्रे। उसे 'देश विरोधी' शिक्षा देने के अपराध में नौकरी से अलग कर दिया गया है। यह कैसी बेहूदी हरकत है! तुम समझते ही हो, कहीं ऐसी बातों के लिए यह समय है, जब कि चुनाव सर पर आ गया है? फिर मामला भी बड़ा उलझा हुआ है। यदि यही हाल रहा तो हमें भी कुछ दिनों बाद अराजकतावादी कहा जाने लगेगा या काब्लेंज से भागे हुए देश-द्रोही। खूब रहे! अच्छा यह तो बताओ, आज भोजन के समय तुम्हें फुर्सत है? तुमसे बहुत सी बातें करनी है। ओ हो! मैं स्वयं तुम्हें लेने आऊँगा।'

पियेरे की ओर मुड़कर उसने कहा, 'सब ठीक हो गया। अब मदाम लजांद्रे से जाकर कहो कि वह अपने बच्चों को चाहे साम्यवाद की शिक्षा दें या टाल्स-टायवाद की अथवा जंगलीपन की, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। क्या तुमने शादी का निश्चय कर लिया है?'

'नहीं...हाँ, मैं कह नहीं सकता। लेकिन आपके मन में यह विचार आया कैसे?'

'आज शाम को तो तुम्हें कोई काम नहीं? तो फिर यहीं शाम को आ

जाना। रात में मैं शहर ही में ठहरूँगा। हम दोनों जरा कुछ बातें भी करेंगे और इधर उधर की हवा भी खायेंगे। अच्छा, अभी तो बाहर बैठे उन तीन मूर्खों से से भी मिलना है। बैंक का डायरेक्टर पोलिश कर्जे के बारे में बातें करने आया है। मुझे उससे कह देना है कि वह गलत घोड़े पर दाँव लगाये हुए है। पहली बात तो यह है कि डान्जिग हमारे लिए जरा भी महत्व नहीं रखता; फिर पोलैंड-वालों से ही क्या बचेगा? तुमने उस कूटनीतिज्ञ को देखा? यह है छोटे राष्ट्रों का हाल? इटली ने अबीसीनिया को हड़प कर लिया अब शायद हमें बाल्कन प्रदेश भी उसके हवाले करना पड़े। और हो ही क्या सकता है—हम शांति चाहते हैं! अच्छा, तो आज शाम को आना जरूर!'

६

पार्लमेंट का सदस्य पोल तेस्सा खाने-पीने के मामले में बड़ा तेज था। देजेर उसे एक रेस्तोरां में ले गया, जो देखने में तो इतना सुन्दर और शानदार नहीं था किन्तु जहाँ पेरिस के अच्छे से अच्छे कटलेट और अच्छी से अच्छी शराब मिलती थी। पशुओं के बड़े-बड़े व्यापारी, जो गोश्त की परख करने में बड़े निपुण होते हैं, वहाँ भोजन करने आते थे। दीवार पर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर रेस्तोरां का मालिक रोज खड़िया मिट्टी से लिख दिया करता था कि बाजार में आज कितने मवेशी बिके हैं और किस दर से।

खानों की सूची को ध्यानपूर्वक पढ़कर देजेर ने घोंघे और ईल मछली का शोरबा और कटलेट लाने का हुक्म दिया। तेस्सा ने ओंठ चाटते हुए वेटर से पूछा, 'क्या कटलेट के साथ-साथ तुम्हारे यहाँ का बना हुआ रोगन-मग्ज भी मिल सकता है?'

'हाँ, हाँ, मस्यो तेस्सा', वेटर ने उत्तर दिया।

तेस्सा पश्चिमी जिलों से रैडिकल टिकट पर चुनाव में खड़ा हुआ। बिना किसी कठिनाई के उसने चुनाव जीत लिया। उसके विरोधियों में एक तो था कम्युनिस्ट, जो रेलवे क्षेत्र में रहता था और ताले बनाया करता था। वह कभी अपने ग्राहकों से लम्बे-चौड़े वादे नहीं करता था। दूसरा था एक रिटायर्ड जेनरल जो बच्चों को भी कोड़े की सजा देने के पक्ष में था। तेस्सा शायद ही

कभी चेम्बर में बोला हो। दो बार तो उसने मंत्रिमंडल में पद लेने से इनकार कर दिया था। रैडिकल पार्टी के भविष्य के बारे में कुछ निश्चित न होने के कारण, वह इधर-उधर भी हाथ बढ़ाता रहता था। पार्लमेंटी क्षेत्रों में यह खबर जोरों पर थी कि वह रैडिकल पार्टी छोड़कर दक्षिण पंथियों मे मिलनेवाला है।

पार्लमेंट का सदस्य होने से उसे आमदनी का एक अच्छा साधन मिल गया था। वह ठेकेदारों से बड़ी-बड़ी रकमें वसूल करता और भारी फीस मिलने पर ही लिमिटेड कंपनियों का डायरेक्टर बनना स्वीकार करता तथा अपने नाम को बहुत से सन्देहपूर्ण व्यवसायों को छिपाने के लिए काम में लाता था। वह लालची नहीं था, किन्तु बड़े ठाट-बाट से रहना चाहता था। अपने घरवालों या अपनी रखेल स्त्रियों की किसी माँग को वह ठुकराता नहीं था, इसीलिए बड़ी आसानी से उस पर भारी कर्ज हो जाता था।

तेस्सा ने एक कौर मुँह में रखकर थोड़ी सी शराब पीते हुए पूछा, 'जिस अध्यापिका के बारे में अभी तुम कह रहे थे, क्या वह कम्युनिस्ट है?'

'मैं नहीं जानता। लेकिन इतना तो निश्चित ही है कि उससे फ्रांस की वर्तमान प्रजातंत्रवादी व्यवस्था को कोई भय नहीं।"

'तुम पागल हो। देखो न इस रेस्तोरां की 'शाब्ली' कितनी स्वादिष्ट होती है! अच्छा, तो तुम्हारे नजदीक खतरे की कोई बात नहीं। तुम गलत सोचते हो। मैं तो समझता हूँ कि अगले चुनाव का बड़ा घातक परिणाम होने जा है। रैडिकल इस चुनाव में भाग लेकर आत्महत्या कर रहे हैं। यदि जनवादी मोर्चे की विजय होती है तो वे हड़प कर लिये जायेंगे, इस तरह से'—और उसने झट एक कौर निगल लिया। 'फ्रांस ऐसे प्रजातांत्रिक देश में भी यह होता है। व्यक्तिगत रूप से मैं इसका विरोधी हूँ। मैं नैशनल रैडिकल टिकट पर खड़ा हो रहा हूँ, लेकिन मुझे भय यह है कि······।' उसने दूसरे घोंघे पर नीबू निचोड़ते हुए दुखी स्वर में कहा, 'मुझे बड़ा डर है कि शायद मैं चुनाव में सफल न हो सकूँ।'

'क्या तुमने अपने चुनाव का प्रचार आरम्भ कर दिया?' देजेर ने पूछा।

'पहली मीटिंग इसी शनिवार को है। आज रात को मैं जा रहा हूँ।'

'तब तो सब ठीक ही है।'

'क्या कहा ? सब ठीक है ।'

'हाँ, हाँ, बहुत सीधी-सी बात है । तुरन्त जनवादी मोर्चे के पक्ष में ऐलान कर दो ।'

गुस्से से लाल होकर तेस्सा ने अपना रूमाल दूर फेंका और गरज कर कहा, 'नहीं, यह कभी नहीं हो सकता । नष्ट हो जाना, मिट जाना स्वीकार है, किन्तु गद्दारी सम्भव नहीं । ये लोग फ्रांस के कट्टर शत्रु हैं । इन पर नजर तो डालिये—ब्लूम, एक ऐसा आदमी है, जिसका नाम भी फ्रेंच नहीं, जो परले दर्जे का चालाक है और सदा लोगों के खून का प्यासा रहता है; दोर्मोंय जो भारी षड़यंत्रकारी है; मॉश, जो यातायात के साधनों को ही नष्ट कर डालने पर तुला हुआ है; मॉने, जो किसानों का पक्का दुश्मन है और सबसे अन्त में विलार, जो हिटलर के मौजूद होते हुए भी देश से निशस्त्र रहने के लिए अपील करता है, यही विलार जो......।'

'विलार तो केवल बड़बड़ाता है । उसे बस मन्त्रिमण्डल में स्थान दे दिया जाय, उसकी जबान तुरन्त बन्द हो जायगी ।'

'किन्तु कम्युनिस्ट ?'

'फ्रांस व्यक्तिवादियों, किसानों, महाजनों और दूकानदारों का देश है', देजेर बोला, 'क्यों कोई फ्रेंचमैन कम्युनिस्टों को वोट देता है ? इसीलिए न कि उसे जितना कर देना चाहिये उससे सैकड़ों फ्रैंक अधिक वसूल किया जाता है । उसके लड़के को 'वेटरनरी इन्स्टीट्युट' में भरती करने से इनकार कर दिया जाता है । उसका कम्युनिस्टों को वोट देना एक प्रकार से अपने दिल का गुबार निकालना है और कुछ नहीं ।'

'तो इसका अर्थ यह हुआ', तेस्सा बोला, 'कि मैं अपने ही शत्रुओं को विजयी बनाने का प्रयत्न करूँ ?'

'तुम इस कहावत को तो जानते ही हो कि 'जब शराब उँड़ेल दी गई तो उसे पीना ही पड़ेगा ।' कभी-कभी शराब को हल्का करने के लिए उसमें पानी भी मिलाना पड़ता है ।'

इसके बाद मुर्ग की तश्तरियाँ सामने आयीं । क्षण भर के लिए तेस्सा राजनीति के सारे झमेलों को भूल गया और खाने में जुट गया ।

'लेकिन यह सब तो हवाई बातें हैं', तेस्सा ने कहा, 'मैं चुना ही नहीं जाऊँगा। उपयुक्त प्रचार के लिए मेरे पास न समय है और न साधन।'

'समय तो तुम्हें निकालना ही पड़ेगा, इसलिए कि तुम्हें देश की सेवा करनी है। जहाँ तक साधन का सम्बन्ध है, उसके बारे में तुम्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। मैं सारा खर्च बर्दाश्त करूँगा......।'

तेस्सा ने देजेर की चाल को पसन्द नहीं किया, लेकिन उसका प्रस्ताव उसे आकर्षक मालूम हुआ। क्षण भर के लिए उसका चेहरा खिल उठा, किन्तु फिर तुरन्त काला पड़ गया। वह सोचने लगा, आखिर स्वाभिमान भी तो कोई चीज है। लेकिन सामने रखे कटलेट और रोगन मग्ज़ ने फिर उसको प्रसन्न कर दिया। तेस्सा का चेहरा, जो साधारण तौर से सूखा और फीका रहता था, गुलाब की तरह लाल हो रहा था। अब वह किसी सुन्दरी के बारे में बात करना चाहता था, लेकिन देजेर से अपनी असली दशा को छिपाने के लिए, वह अपने घरेलू झगड़ों के बारे में बातें करने लगा। उसने आँखों में आँसू भरकर कहा, 'मेरे पुत्र ने एक अत्यन्त अनुचित भाषण दे डाला है। सारे समाचारपत्रों में मेरी छीछालेदर हो रही है। मैंने उससे इस सम्बन्ध में जब बात करने की चेष्टा की तो जानते हो, उसने क्या कहा? उसने कहा, यह वर्ग-संघर्ष है। क्या आफत है, मेरा ही पुत्र मेरा ही शत्रु!'

'तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं। ल्युसियां अपनी राह में काँटे बो रहा है। वर्ग-संघर्ष कैसे हो सकता है जबकि वह तुम्हारे ही धन से मौज उड़ा रहा है? तुम देखोगे कि पार्लमेंट में पहुँचते ही वह 'नैशनल रैडिकल' बन जायगा। अभी-अभी मैं उसको 'मैक्सिम' की दूकान पर एक अत्यन्त सुन्दर लड़की के साथ देख आया हूँ।'

'ल्युसियां और मैक्सिम की दूकान पर! कितना बेकार आदमी है वह! वह तीस वर्ष का हो चुका और अभी तक एक पैसा नहीं कमाता। वह किसी मामूली थियेटर के लिए थोड़ा बहुत लिख दिया करता है। मैं तुमसे कहता हूँ, ऐसा आदमी किसी समय भी अराजकतावादी या भारी डकैत हो सकता है। उसके लिए नैतिकता जैसी तो कोई चीज ही नहीं। मेरी तमाम आशाओं की केन्द्र अब मेरी प्यारी पुत्री देनीजे ही रह गई है। वह तुम्हारे लिए एक अच्छी कार्यकर्ता सिद्ध होगी। वह किसी ऐसे ही नीरस विषय का अध्ययन कर रही है, मेरे

विचार से शायद रोमन शिल्पकला। वह बड़े गंभीर स्वभाव की लड़की है। तुमने इस पनीर को चखा? बिलकुल पुराना है। एक अजीब सी महक है। अगर कहीं इस वर्ष भर शान्ति रह जाय तो क्या कहना! लेकिन मुझे तो मालूम पड़ता है किसी समय भी आफत आ सकती है। यदि 'जनवादी मोर्चे' की जीत हुई तो युद्ध का छिड़ना निश्चित समझो।'

'मुश्किल है। बिना दूसरों को साथ लिये हम लड़ भी तो नहीं सकते। हम जर्मनों को धमकाना चाहते हैं और उधर इटलीवालों की हाँ में हाँ भी मिलाना चाहते हैं। ब्रिटेनवाले मसोलिनी की सरकार पर तो आर्थिक प्रतिबंध लगा रहे हैं और उधर हिटलर को बढ़ावा दे रहे हैं। सब ले-देकर हम को ही झुकना पड़ेगा।'

'यह असंभव है। कौन-सा ऐसा फ्रांसीसी है जो अल्सासे से हाथ धोने के लिए तैयार होगा?"

'अल्सासे क्यों? छोटे राष्ट्र भी तो हैं। हम अभी तक उन्हें खिला-पिलाकर मुफ्त ही में तगड़ा करते रहे हैं? अगर कोई बात पैदा होती है तो हम तुरंत चेक लोगों का बलिदान चढ़ाने के लिए तैयार हैं। और फिर पोलैंड! वह भी तो घूस में दिया जा सकता है।'

'लेकिन यह सब कब तक चलेगा? पाँच वर्ष या अधिक से अधिक दस वर्ष तक।"

'इतनी दूर तक देखने की जरूरत ही क्या? इस समय तो जिस तरह भी हो, हमें फ्रांस की, उसके धन और शान्ति की रक्षा करनी है।'

'तुम्हारे लिए तो यह सब कहना ठीक है। तुम्हारे कोई बाल-बच्चे नहीं। लेकिन मैं तो यह सोचकर कि न जाने ल्युसियन और देनीजे की क्या दशा होगी, भय से काँप उठता हूँ,' तेस्सा ने केवल प्रभाव डालने के लिए कहा। काफी पीते हुए वह मन ही मन मुस्कराया और सोचने लगा देजेर ने मेरे चुनाव का सारा खर्च बर्दाश्त करने की जिम्मेदारी ले ली है, इसका मतलब यह हुआ कि मुझे एक बार फिर पार्लमेंट का सदस्य बनने का अवसर मिलेगा।

देजेर ने नजर उठाकर उसकी ओर देखा। तेस्सा की आँखें धुँधली पड़ गई थीं, उसकी लम्बी नुकीली नाक पर पसीने की बूँदें चमक रही थीं और चेहरे से मालूम पड़ता था कि वह सन्तुष्ट है। देजेर को सूझी कि उसे थोड़ा-सा

दिया जाय। वह बोला, 'तुम जानना चाहते हो कि तुम्हारे बच्चों की क्या दशा होनेवाली है? हो सकता है, उन्हें इसी संसार में स्वर्ग मिले और सैर करने को हवाईजहाज या फिर वही मारकाट, वही कैदखाने, लम्बी सजाएँ और अन्त में मौत। अधिक संभावना तो दूसरी ही दिखाई पड़ती है। लेकिन तुम्हें निराश नहीं होना चाहिये। तुम अब 'जनवादी मोर्चे' की ओर से उम्मीदवार हो जाओ। अब सभाओं में मुट्ठी तानकर भाषण देते हुए तुम्हें देखने में कितना आनन्द आयेगा!' देजेर यह कहकर जोर से हँसा और तब अपने इस मजाक के प्रभाव को कम करने के लिए वह तेस्सा की पीठ ठोंकते हुए बोला, 'बस, खत्म करो इस राजनीति के झगड़े को! कल मैं पोलेत से मिला था। तुम बड़े भाग्यवान मालूम होते हो! सचमुच वह पेरिस की सबसे अधिक सुन्दर लड़की है।'

७

दिन का भोजन समाप्त करके, देजेर ने शहर के एक बड़े समाचार पत्र 'ला वाय नूबेल' (नई आवाज) के सम्पादक और प्रकाशक जोलियो को बुलवा भेजा। मोटा और भारी भरकम जोलियो हाँफता हुआ अन्दर दाखिल हुआ। उसे लगा कि आज उससे कोई बड़ी गंभीर बातचीत होने जा रही है।

जोलियो का सारा जीवन बड़ा तूफानी रहा था। न जाने कितनी बार उसे अदालत का मुँह देखना पड़ा था, कभी तोड़-मरोड़ कर शब्दों का अर्थ लगाने के लिए और कभी किसी को झूठ ही बदनाम करने में। लेकिन वह सदा साफ-साफ बच निकलता था। कहा जाता था कि वह देश के सभी राजनीतिज्ञों के भीतरी रहस्यों का कच्चा चिट्ठा बड़े मजे में जानता है।

जोलियो दक्षिणी फ्रांस का रहने वाला था। उसका पिता मार्साई का मछुआ था, जिसने मछली के बड़े-बड़े व्यापारियों से संबंध स्थापित कर रखे थे। जोलियो सट्टेबाजों के बीच बड़ा हुआ था। नैतिकता से उसे घृणा थी, लेकिन कई अंध-विश्वास पालता था, जैसे सरकारी वकील से ज्यादा वह काली बिल्ली से डरता था। जवानी में वह पेरिस आया और वहाँ एक छोटी इश्योरेंस कंपनी का एजेंट बन गया। इस कंपनी का यह हाल था कि वह चल ही इस ढंग से रही थी कि अपनी पालिसियों पर उसे कभी एक कौड़ी भी किसी को नहीं देनी पड़ती

थी ? कुछ दिनों बाद वह पत्रकार बन गया और फ्रांस के रद्दी से रद्दी अखबारों में बड़े-बड़े पूँजीपतियों और सिनेट के सदस्यों की पोल खोलने लगा। लेकिन लिखने से उसे इतनी आमदनी नहीं होती थी जितनी कि न लिखने से होती थी –लोग उसे खरीद लेते थे। फिर उसने शेयर बाजार सम्बन्धी एक समाचार-पत्र प्रकाशित करना शुरू किया, जिसका नाम था 'ले फिनांस'। एक दिन उसमें एक बड़ा सा विज्ञापन छापा। दूसरे ही दिन बैंक के डायरेक्टर ने टेलीफोन पर जोलियो से पूछा, 'क्यों यह विज्ञापन छाप रहे हो ? हमने तो तुमसे कभी कहा भी नहीं।' 'मैं जानता हूँ कि आपने नहीं कहा, किन्तु मेरा कर्त्तव्य है कि मैं अपने पाठकों को राय दूँ कि वह विश्वसनीय बैंक से ही आपना सम्बन्ध रखें।' 'हमारे ऊपर दया करो ! तुम्हारे अखबार में विज्ञापन देखकर हमारे ग्राहकों ने अपना रुपया निकालना शुरू कर दिया है।' 'क्या किया जाय, मजबूरी है ! मुझे सबसे पहले अपने पाठकों के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करना है।' एक घंटे बाद ही डायरेक्टर ने जोलियो के हाथ में पचास हजार फ्रांक रख दिये और वह विज्ञापन तुरन्त बन्द हो गया। अब क्या था, जोलियो की बन आई। तुरन्त 'वाय नूवेल' निकल पड़ा। पहले तो कुछ दिनों तक पत्र के सामने जिंदगी और मौत का प्रश्न रहा। जोलियो स्वयं सारे लेख लिखता। उधर प्रिन्टर पैसे की अदायगी के लिए आफत मचाता। धीरे-धीरे दशा सुधरने लगी। प्रसिद्ध लेखकों के नाम से लेख निकलने आरंभ हुए, तहलका मचानेवाली खबरें आने लगीं और विज्ञापनों के कालम के कालम आने लगे। यह अखबार कभी तो रैडिकलों की प्रशंसा के पुल बाँध देता और कभी उन पर गंदगी उछालता। अबिसीनया पर इटली का आक्रमण होने के समय उसने उस देश के सम्राट के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की। अचानक एक रोज सबेरे उसने एक लम्बा लेख निकाला, जिसका शीर्षक था 'इटली द्वारा सभ्यता का प्रचार' और जिसमें मुसोलिनी की सरकार की प्रशंसा के गीत गाये गये थे।

देजेर के कमरे में पैर रखते ही उसने अपने अखबार का राग अलापना शुरू किया। उसे आशा थी कि शायद वह इस प्रकार देजेर से भी दस-बीस हजार ऐंठ लेगा। 'चारों ओर फैली हुई इस गड़बड़ और अशान्ति के बीच,' वह बोला, 'हमारा ही समाचार-पत्र है जो शान्ति का प्रचारक है। क्या आपने लेब्बेफ का वह लेख नहीं पढ़ा, जिसमें उसने मार्क्सवाद के विनाशकारी प्रभावों

का भंडाफोड़ किया है ! चुनाव के अवसर पर देखियेगा, हम कैसी-कैसी अनोखी चीजें पेश करते हैं। मैंने फांतेनाय को कह रखा है कि वह सोवियत रूस की तबाहहाली पर एक लेखमाला तैयार करे। हम उन्हें मास्को से भेजे हुए तार के रूप में प्रकाशित करेंगे। मुझे उसे वार्त्ता भेजने का खर्च भी देना पड़ा है। इसके अतिरिक्त विलार के संबंध में भी एक जरूरी कागज मेरे हाथ लग गया है। एक मालिक मकान यह गवाही देने को तैयार है कि विलार ने अपनी जवानी में एक डाकिये की लड़की पर बलात्कार किया था। इस सब में दस हजार का खर्च बैठेगा, लेकिन कैसी हलचल मचानेवाली चीज होगी ! सचमुच दूशेन की कलम में बड़ा जोर है……।'

'लेकिन, उसे तो अपनी कलम दूसरी ओर मोड़नी पड़ेगी,' देस्सर तुरन्त बोल उठा, 'ये नई फाउन्टेनपेनें भी क्या अजीब होती हैं। उनकी निबें उलट-पुलटकर दोनों प्रकार से लिख सकती हैं। वह मोटा तो लिखती हैं किन्तु कागज नहीं कुरेदतीं। अच्छा, सुनो, 'ला वाय नूबेल' को अब 'जनवादी मोर्चे' का समर्थक होकर सामने आना पड़ेगा।'

जोलियो यह सुनकर उठ खड़ा हुआ और बड़े नाटकीय ढंग से हाथ फैलाकर, घबरायी हुई आवाज में बोला, 'नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं जानता हूँ राजनीति क्या चीज है। मैंने भी अपने जीवन में एक नहीं, कई पैंतरे बदले हैं। लेकिन फ्रांस के साथ गद्दारी मैंने कभी नहीं की। सुनते हैं आप, मस्यो देजेर ! ऐसा नहीं हो सकता।'

"खामोश। याद रखो, तुम किसी सभा में नहीं बोल रहे हो। मैं कारोबार की बातें कर रहा हूँ। अगर तुमसे यह लम्बी-चौड़ी बात किये बिना नहीं रहा जाता, तो सुनो। 'जनवादी मोर्चे' की विजय में ही आज फ्रांस का हित है। वायुमण्डल में क्रान्ति के बादलों ने मँडराना आरंभ कर दिया है। यदि इस दबी हुई भाप को निकलने के लिए हम 'सेफ्टी वाल्व' इस समय नहीं खोल देते तो 'ब्वायलर' फट जायगा। मुझे यह जानने से क्या फायदा कि विलार ने किसी डाकिये की लड़की पर बलात्कार किया था या नहीं। वैसे मुझे स्वयं इस बारे में संदेह है। मैं तो यहाँ तक संदेह करता हूँ कि वह शायद अपनी ही स्त्री के साथ कभी नहीं सोया। वह जनखा है; लेकिन अगर वह किसी का विरोधी हो जाता

है तो बड़ा खतरनाक साबित होता है। वह शेर की तरह दहाड़ता है। बस, उसे मन्त्रिमण्डल में स्थान दे दो और वह मेमने की तरह मिमियाने लगेगा।'

'लेकिन यह तो बड़ा ही खराब होगा। इसका अर्थ तो फ्रांस को ऐसे लोगों के हाथों में सौंप देना होगा जो कल तक उसके साथ गद्दारी करते रहे हैं।'

'जरा ठहरो,' देजेर बोला, 'तुमने एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। वास्तव में, इसी बारे में मैं तुमसे बातें करना चाहता था। लो, सिगार जला लो। मुझे इसमें तो संदेह नहीं कि तुम्हारा अखबार 'जनवादी मोर्चे' का समर्थन करेगा। तुम इतने अनुभवी और बुद्धिमान हो कि मेरी बात को समझ गये होगे। और फिर यदि कोई आवश्यकता हो तो मैं तो मौजूद ही हूँ।'

'किन्तु……।'

'अच्छा अब मुख्य प्रश्न को लो। वे लोग देशभक्ति के पीछे पागल हैं और फासिस्टवाद से घृणा करते हैं। यहाँ तक बात समझ में आ सकती है, यद्यपि वे भी कम खतरनाक नहीं हैं। तुम्हारे समाचार-पत्र का काम आज से यह हो जाना चाहिये कि वह शान्तिवादियों का समर्थन करे। राष्ट्रों में मेलभाव बढ़ाने, यूरोप की आर्थिक एकता कायम रखने, हजारों आदमियों का खून बहने से रोकने का प्रचार करे। जिस तरह भी हो शान्ति कायम रहनी चाहिये।'

'लेकिन इस सब में फ्रांस का क्या पार्ट रहेगा……?'

'हमें अपने छोटे-छोटे किन्तु सुखी और सम्पन्न देहात कार्थेज के खंडहरों की अपेक्षा कहीं अधिक प्रिय हैं। मुझे फ्रांस की विजय जैसी किसी चीज में विश्वास नहीं रह गया है। हम थक कर चूर हो चुके हैं। इश्क करते-करते, दूसरों से ईर्षा करते-करते, उनसे लड़ते-लड़ते हम थक गये हैं। फिर यह तो स्वाभाविक भी है। देजेर ऐसे लोग ही साठ वर्ष की उम्र में भी वसन्त ऋतु के बिल्ले की तरह बावले बने फिर सकते हैं। तुम कहोगे कि फ्रांस वाले बड़े साहसी होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं। एक बार उन्होंने 'मार्साई' गाया और सारे यूरोप को रौंद डाला था। आज भी स्कूलों में बच्चों को उस युग की कहानियाँ पढ़ाई जाती हैं। किन्तु अब हम लोग बड़े कोमल स्वभाववाले हो गये हैं। आराम से जिन्दगी कटती है, खतरों में पड़ने से डर लगता है। किसे गरज है कि न्याय या आत्मसम्मान के लिए लड़ने जाय? लवाल? मारिस शेवालिये? या तुम? खैर, संक्षेप में यह कहना है कि यदि 'रेमार्क' फिर कोई

उपन्यास लिखें तो तार द्वारा उसके सारे अधिकार खरीद लो। तुम्हें रुपये के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।'

जोलियो थोड़ी देर तक तो सोचता रहा, फिर बोला—'कोई संदेह नहीं, आप बड़ी कुशाग्र बुद्धि वाले हैं! ईश्वर ही जाने इसका क्या परिणाम होगा, किन्तु शान्ति की कल्पना मुझे कितनी आकर्षक मालूम पड़ती है। तलवारों को बदलकर हल के फल बना दिये जायँ। क्या कहना······!'

देजेर मुस्कराया और बोला, 'शायद तुम यह भूल जाते हो कि युद्ध की सामग्री तैयार करनेवाले कारखानों से भी मेरा सम्बन्ध है। हजारों और लाखों आदमियों की उनसे जीविका चलती है। इसके अतिरिक्त यदि हम लड़ाई के सामान तैयार करना कम कर दें, तो शत्रु तुरन्त हम पर आक्रमण कर देगा। हमें तो केवल सनातनी के तापक्रम को कुछ नीचा कर देना है। मैं फिर कहता हूँ, लोग आजादी के नाम पर पागल हो रहे हैं। जाओ और अपने समाचार-पत्र में लिखो कि किस प्रकार युद्ध-सामग्री तैयार करनेवाले 'दो सौ घराने' फ्रांस को लड़ाई के गढ़े में ढकेलना चाहते हैं।'

जोलियो ने चुपके से चेक अपनी पाकेट बुक में रखा और बोला, 'मैं एक हलचल मचा देनेवाला लेख लिखूँगा, जिसका शीर्षक होगा, 'देजेर दो सौ घराने का विरोधी।'

'मूर्ख! महामूर्ख! अरे लिखो कि दो सौ अन्य घरानेवालों की तरह देजेर भी लोगों का खून बहाने का इच्छुक है ताकि लोगों को विश्वास भी हो जाय। शायद यह ज्यादा ठीक भी होगा।' यह कहकर वह मुस्कराने लगा।

जोलियो दौड़ता हुआ ऊपर अपने दफ्तर में पहुँचा और अपने टाइपिस्ट को पुकार कर बोला, 'ल्युसिये, आज से मैंने तुम्हारी तनख्वाह तीन सौ, नहीं नहीं, पाँच सौ फ्रांक कर दी!' वह चाहता था कि वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति इस खुशी में उसका साथ दें। सारे दिन वह कर्मचारियों को आज्ञा देता रहा, 'जाओ, कुछ प्रसिद्ध वामपंथियों की किताबें खरीद लाओ। मुसोलिनी का कार्टून बनाओ। मजदूरों की दुखभरी कहानियाँ इकट्ठी करो। युद्ध से होने-वाली बरबादी का हाल लिखो। फांतेवाय से कहो, अब उसे कष्ट सहने की आवश्यकता नहीं··· नहीं, जरा रुको, उससे कहने की जरूरत नहीं! उसे

अपना काम करने दो। वह कभी न कभी काम आयेगा। आज नहीं, तो साल भर बाद सही !'

उस रोज शाम का भोजन उसने एक अच्छे होटल में किया और देर में घर लौटा। आते ही उसने अपनी स्त्री को जगाया और उसे कुछ गुलाब के फूल दिये, जो उसने एक नाइट क्लब में खरीदे थे। फूल आधे मुरझाये हुए थे और उन्हें सूँघने से मतली-सी आने लगती थी। जोलियो ने चुपके से कान में कहा, 'चार लाख ! ईश्वर की कसम, भाग्य खुल गया !'

इसके बाद उसने अपने बूट उतार कर स्लीपर पहन लिये, एक ग्लास सोडा वाटर पीया और तब न मालूम क्यों कुछ दुखित होकर, वह बोला, 'लेकिन अब फ्रांस का अन्त ही समझो। कुछ देर नहीं। आज ही मुझे दो पादरी मिले थे। सर्वनाश का यह निश्चित लक्षण है।'

८

उस रोज शाम को सर्वशक्तिमान देजेर उस गरीब इन्जीनियर पोल दूब्वाय के साथ चुपचाप सीन के किनारे टहल रहा था। पेरिस का हलका धुँधलका उसकी एक विशेषता है। नदी के तल पर छाया सन्नाटा, नावों में टिमटिमाते हुए दिये, और 'नोत्र दाम' के गिरजाघर की पत्थर की इमारत—सब पर एक खामोशी छायी थी। जब वे दोनों अँगूरी शराब के कारखाने के पास से गुजरे तो हवा में शराब की खट्टी महक मालूम होने लगी। मोटरें तेज बत्तियाँ जलाये पुल पार स्टेशन की ओर भागी चली जा रही थीं। नीला मटमैला कोहरा बैठता हुआ मालूम पड़ता था।

देजेर, जिसने सारा दिन तेस्सा, जोलियो और आँकड़ों के बीच तथा झूठ बोलने में बिताया था, चुपचाप सिर झुकाये चल रहा था। शाम का सन्नाटा उसे उस समय की याद दिला रहा था जब किसी के यात्रा पर जाने के पहले उसके बंधे बिस्तर और ट्रंकों के आसपास बैठे उसके मित्र बिदाई के कष्ट को भुलाने के लिए शब्द ढूँढ़ते हैं और उन्हें शब्द मिल नहीं पाते। दूसरी ओर इस अनुपम संध्या वेला में गिरजे के पत्थरों को देखकर पियेरे को उतना ही आनन्द आ रहा था जितना कि एग्नेस के रहस्यमय सौन्दर्य को देखकर। अपने

ओवरकोट के बटन खोलकर, उसने जी भरकर 'हवा में फैली इस सुगंध का आनन्द उठाया। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उसके पूरे जीवन में पहली बार बसन्त आया हो। इससे पूर्व कभी उसने इतना सुख नहीं अनुभव किया था। उसके मन में आ रहा था कि बगलवाली सड़क की ओर मुड़ जाय और वहाँ सारी रात अजायबघर के जानवरों को तथा सड़क पर जलनेवाले लैम्पों को एग्नेस के सौन्दर्य, उसके मधुर स्वभाव और उसकी बुद्धिमत्ता की कहानी सुनाता रहे।

लेकिन उसका सिर केवल प्रेम के किस्सों में ही चक्कर नहीं खा रहा था। अन्य लोगों की तरह उसे भी विश्वास था कि इस वसन्त में फ्रांस का मानो एक नया जन्म होगा। पियेरे का पिता समाजवादी रह चुका था। एक दिन उसका पिता खून में नहाया हुआ घर पहुँचा। एक स्पेन निवासी क्रांतिकारी को, जिसे गोली से उड़ा देने का हुक्म था, पुलिस के कब्जे से छुड़ाने का प्रयत्न किया गया था। फलस्वरूप प्रदर्शन करनेवालों पर खूब मार पड़ी थी। उस समय पियेरे सात वर्ष का था। वह रात में सोते-सोते जाग उठा और अपने पिता के चेहरे पर खून देखकर चिल्ला उठा। बाद में उसका पिता लड़ाई में मारा गया। किन्तु मरने से थोड़ी देर पहले उसने अपनी स्त्री को लिखा था, 'इस तमाम खून-खराबी का परिणाम भोगना ही पड़ेगा—देश में क्रान्ति होकर ही रहेगी।'

ज्योंही दोनों उधर से गुजरे, उन्हें मेट्रो स्टेशन के बाहर एक लड़की खड़ी दिखाई दी। वह कभी दरवाजों और कभी घड़ी की ओर चिन्तित नजरों से देख रही थी, जैसे वह किसी का इन्तजार कर रही हो।

अचानक देजेर ने कहा, 'तो तुम एक अध्यापिका से विवाह करोगे?'

इस बार पियेरे ने जवाब देने में न आनाकानी की और न यही पूछा कि उसे यह कैसे मालूम हो गया। उसे लगा जैसे वह उस लड़की का नाम लेकर जोरों से चिल्ला पड़ेगा। 'हाँ,' वह बोला, 'एग्नेस से।'

देजेर रुक गया और पियेरे की बड़ी-बड़ी काली आँखों और मुसकराते हुए ओठों की ओर देखने लगा। 'मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है,' उसने चुपके से कहा।

'लेकिन क्यों,······पियेरे ने लड़खड़ाती जबान से पूछा। वह कहने ही वाला था कि· तुम खुद क्यों नहीं शादी कर लेते ? लेकिन यह कहते-कहते रुक गया।

'क्या बताऊँ, बात तो छोटी-सी है,' देजेर बोला, 'लेकिन हो ही क्या सकता है ? प्रेम करनेवालों की कमी नहीं रही। मेरे लिए आत्महत्या तक कर लेने की धमकियाँ दी गईं। लेकिन आज तक जो भी प्रेम किया गया वह मुझ से नहीं, बल्कि मेरे धन से किया गया। तुम्हीं बतलाओ, मैं क्या करूँ ? अपने को छिपा लूँ ? कोई ऐसा लबादा पहन लूँ कि दूसरे मुझे न देख सकें ?'

'धन-दौलत से तुम्हें छुटकारा मिल सकता है। तुम कोई सट्टेबाज तो हो नहीं, तुम एक इन्जीनियर हो। अगर तुम्हें बोझ मालूम होता है तो ·····।'

'नहीं, धन से मुझे प्रेम है। पूछोगे, क्यों ? शायद इसलिए कि उसमें बड़ी शक्ति है। इससे केवल ख्याति ही नहीं प्राप्त की जा सकती, बल्कि हाथों में वास्तविक शक्ति भी आ जाती है। जिस तरह चाहें हम दूसरों के भाग्य का निर्णय कर सकते हैं। मुझे उनकी क्यों आवश्यकता है ? यही तो मैं भी समझने की चेष्टा कर रहा हूँ। क्या धन एक बोझ है ? हाँ है तो, लेकिन आनन्द-दायक भी है। इसके अतिरिक्त वह कोकीन की तरह ऐसा जहर है जो घुला-घुला कर मारता है। वह खून में गर्मी की तरह घुस जाता है !'

अब वे दोनों एक अँधेरी सड़क से होकर गुजर रहे थे। पुलिस चौकी का किसी लाल आँख की तरह चमक रहा था। एक स्त्री कूड़े के ढेर को कुरेद रही थी। पानी की बूँदें भी पड़ने लगी थीं।

'हर एक के अन्दर यह जहर भरा है,' देजेर कहता गया, 'यह संसारव्यापी रोग है। कोई भी उसे छोड़ना नहीं चाहता, न 'दो सौ धनी घराने' और न दो करोड़ गरीब जनता। सभी लड़ने के लिए तैयार हैं, फ्रांस के लिए नहीं बल्कि अपनी सम्पत्ति के लिए, उस समय तक जब तक जान में जान है। लोगों के पास जो भी होता है उसे खोते हुए वे डरते हैं। उस स्त्री को ही देखो, उसके पास कुछ नहीं है। इसीलिए उसे कोई भय भी नहीं। किन्तु संसार में ऐसे कितने मनुष्य हैं ? वे लोगों को डरायेंगे, धमकायेंगे, और यदि आवश्य-कता पड़ेगा तो गोली से भी उड़ा देंगे। लेकिन इसकी आवश्यकता ही नहीं

पड़ेगी। हमारे देशवासी खूब समझने लगे हैं। वे मूर्ख नहीं! वह सब कुछ भली भाँति जानते हैं।'

'मेरी समझ में नहीं आता कि दूसरों के प्रति इतनी घृणा रखकर तुम्हारा काम कैसे चलेगा,' पियेरे बोला। 'पहले अवश्य लोग बेवकूफ बने थे, लेकिन अब सारी बातें उनकी समझ में आ रही हैं। उन्हें किसकी आशा है? क्रान्ति की। मेरे ही कारखाने में हजारों अच्छे से अच्छे आदमी हैं। जिनके पास खोने के लिए कोई चीज ही न हो उन्हें आवारा नहीं कहा जा सकता। वे मेहनत करते हैं, उनके घरबार और बाल-बच्चे हैं। उनमें से बहुतों के पास थोड़ी बहुत सम्पत्ति भी जमा होगी। लेकिन उसी सम्पत्ति का अन्त करने के लिए वे सब कुछ त्यागने को तैयार हैं—' उसने कूड़े के ढेर के पास बैठी हुई स्त्री की ओर संकेत करते हुए कहा, 'कभी कभी तो मुझे ऐसा मालूम होने लगता है कि लोग जैसे मिट्टी के पुतले हैं। प्राचीन समय में लोग देवताओं और जानवरों की मूर्तियाँ बनाते थे, अब हम आदमी का खिलौना बनाने की कोशिश करते हैं।'

'मिट्टी के नहीं!' देजेर ने कहा, 'मिट्टी के नहीं बल्कि 'च्यूइंग गम' के (चुगलने वाले गोंद के।) यही कारण है कि प्रत्येक वस्तु बदलती रहती है और फिर भी वही मालूम पड़ती है। आखिर वह क्या है जो बदलता है? केवल नाम। वास्तविक परिवर्तन का नाम तो मृत्यु है। वही प्रत्येक वस्तु में वास्तविक परिवर्तन लाती है। इसी से मैं उससे डरता हूँ। मेरी समझ में नहीं आता, लोग आत्महत्या कैसे कर लेते हैं। खैर, जो बात मुझे कहनी थी, वह यह नहीं है। तुम लगातार क्रान्ति-क्रान्ति-चिल्लाते हो, लेकिन देखते नहीं, उसमें न सिर्फ मेरी बल्कि लाखों की मौत है!'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। उस तंग सड़क की दोनों पटरियों पर खड़े मकानों की बन्द खिड़कियों में से कुछ-कुछ प्रकाश बाहर आ रहा था। वे एक ऐसे मकान के पास से होकर गुजरे जिसकी नीचे की मंजिल की तमाम खिड़कियाँ खुली हुई थीं। अन्दर कुछ लोग एक मेज के चारों तरफ बैठे थे और बीच में दीया रखे भोजन कर रहे थे। प्रकाश एक स्त्री के चेहरे पर पड़ रहा था, जो बिल्कुल थकी हुई लेकिन बहुत सुन्दर दिखाई पड़ रही थी।

'मुझे यह सोचकर भय मालूम होता है कि न जाने क्या-क्या चीजें नष्ट

होंगी,' देजेर बोला। 'इमारतों, नोत्र दाम के गिरजाघर या 'लूव्र' की चित्र-गैलरी की परवाह मुझे इतनी नहीं। निस्सन्देह वह अत्यन्त सुन्दर हैं, किन्तु और भी कोई चीज है जिसे सोचकर मुझे दुख होता है। वे है इन घरों के अन्दर पाया जानेवाला सुख। इनका शान्तिपूर्ण वातावरण—इतना शान्तिपूर्ण कि तुम दूसरे कमरेवाले को भी साँस लेते सुन सकते हो, यह सब कहाँ बचा रहेगा! अफसोस, ये दृश्य कहाँ देखने को मिलेंगे जब कि बच्चों के नामकरण के समय चीनी में लिपटे हुए बादाम बँटते हैं, शादियाँ होती हैं और वर-वधू के पैरों तले फूल बिछाये जाते हैं, या जब कि मुर्दे को दफन करके लोग घर लौटते हैं और ग़म गलत करने के लिए एक टुकड़ा रोटी और एक गिलास शराब मुँह में डालते हैं! आज दिन तो ये तमाम बातें होती हैं। लेकिन हो सकता है, देखते ही देखते—पहला बम फटते ही, पहली गोली चलते ही, हिटलर के तने हुए घूँसे के साथ फौज को कूच करने का हुक्म मिलते ही—यह सब खत्म हो जाय। यह ठीक है कि सौ वर्ष बाद लोग इसे एक 'ऐतिहासिक आवश्यकता' कहेंगे······अच्छा, अब मैं जाता हूँ।'

देजेर ने दस्ताना पहने हुए ही पियेरे से हाथ मिलाया और तेजी से नदी के पुश्ते के बराबर चलने लगा। इतनी अधिक बातचीत कर डालने से अब उसे कुछ चिढ़-सी मालूम पड़ने लगी थी। व्यर्थ ही में वह इतना सब बक गया था—उसने अपने मन में सोचा, प्रेम जाल में फँसा एक इन्जीनियर और उस से मनुष्य जाति के भविष्य के बारे में बातें करना!

वह शहर के मध्य में, जहाँ सड़क की पटरियाँ रोशनी से जगमगा रही थीं, पहुँचा। दुकानों की खिड़कियों में नाना प्रकार की रंग-बिरंगी चीजें रखी थीं। इमारतों के सामने वाले हिस्सों पर तरह-तरह की शकलें बनी थीं, इश्तिहार लगे थे जिनमें मराकश की सुहावनी धूप का आनन्द लेने के लिए लोगों को आनिमन्त्रित किया गया था। लोगों की भीड़ खचाखच थी, मानो उसे और कहीं जाना ही न हो। तालाब की मछलियों की तरह लोग घूम-फिरकर फिर उसी ठिकाने पहुँच जाते। दूकानों में बीसियों भाषाओं के समाचार-पत्र लगे हुए थे। देजेर ने जरा ठहर कर उनकी सुर्खियाँ पढ़ीं तो लिखा दिखाई पड़ा, 'जनवादी मोर्चे की माँग करो! सशस्त्र मुठभेड़ का भय!' आदि आदि उसने एक जँभाई ली। हर अखबार मानो उसी की जबान में बोल रहा था। सभी

चीजें उसके कब्जे में थी—इमारतों की जमीनें, मोटरें, अखबार यहाँ तक कि लोगों को मुसकान भी। अपने इस साम्राज्य से होकर वह गुजर रहा था; उसे उनमें से किसी की आवश्यकता नहीं थी। वह एक जादूगर मालूम पड़ता था, जिसने थोड़ी देर के लिए अपने आपको अपनी कठपुतली बना लिया हो। क्या इन सब चीजों की रक्षा करनी आवश्यक नहीं? निस्सन्देह है, किन्तु ऐसा करना कितना भारी काम है······!

६

उस रोज शाम को प्वातू की रोमन स्थापत्यकला पर प्रोफेसर मालेत का भाषण होनेवाला था। जन-साधारण को भी आमन्त्रित किया गया था। हाल में विद्यार्थियों के साथ-साथ बहुत से बड़े-बूढ़े भी बैठे थे, जो शिल्पकला के प्रेमी थे और इस विषय पर होनेवाले प्रत्येक भाषण को सुनने आये थे।

मिशो मिस्त्री नियमपूर्वक मालेत का भाषण सुनने पहुँचता था। बचपन से ही उसे स्थापत्यकला से प्रेम था। वह इमारत बनाने के सारे सामानों, उनके उचित अनुपातों और अनुमानों से भली-भाँति परिचित था। वह जानता तो बहुत कुछ था, किन्तु जब कभी उसकी नजर ऐसी इमारतों पर पड़ती जिन्हें वह पसन्द करता, तो तुरन्त उसके मन में विचार उठता कि बनावट की सफाई के साथ-साथ, जिससे निस्सदेह एक इन्जीनियर होने के नाते वह बड़ा प्रभावित होता, शिल्पकला में कुछ और भी गुण हैं जो दर्शक पर वैसा ही प्रभाव डालते हैं जैसा एक लहलहाता हुआ खेत या मनुष्य का सुन्दर चेहरा। उसे आशा थी कि स्थापत्यकला के इतिहास का अध्यन करने से उसे इस आकर्षण का भेद मालूम हो जायगा।

मिशो की ज्ञान की भूख कभी तृप्त होनेवाली नहीं थी। वह नई खोज के लिए पृथ्वी के टुकड़े करने के लिए भी उसी प्रकार तैयार रहता जैसे कोई बालक अपने खिलौनों को चूर-चूर करने के लिए तैयार रहता है। कुछ थोड़ी सी प्रारंभिक शिक्षा पा लेने और नैतिक आचरण के सम्बन्ध में दो-चार वाक्य याद करने के बाद ही उसने स्कूल छोड़ दिया था। इसके बाद ही उसे जीवन की विशाल प्रयोगशाला में प्रवेश करना पड़ा था। मिशो का पिता हैट

बनाया करता था। लड़ाई समाप्त होने के बाद उसके व्यवसाय पर भारी संकट आया। लोगों ने हैट पहनना भी छोड़ दिया और अब उसे कोई व्यवसायी काम सिखाने के लिए भी लेने को तैयार न था। तब उसने तीन/पहिये की गाड़ी पर लाद कर जमा हुआ दूध घरों में पहुँचाना शुरू किया। इसके बाद उसने एक चमड़े के कारखाने में, काम करना आरंभ किया। जहाँ कच्चे चमड़े की गंध से नाक फटती थी, वह पढ़ने का तो बड़ा शौकीन था किन्तु नियमित रूप से नहीं पढ़ पाता था। जलसेना में एक पनडुब्बी के अन्दर भी उसने कुछ दिनों काम किया था। यहाँ एक दफतरी क्वेरिये से, जो बाद में कम्युनिस्टों की ओर से चुनाव में खड़ा हुआ, उसकी मित्रता हो गई। क्वेरिये ने जल्द ही मिशो को अपने विचारों का समर्थक बना लिया। दोनों साथ-साथ 'सीन' के जहाज बनाने-वाले कारखाने में काम करने लगे। मिशो ने सभाओं में जाना आरंभ किया। उसने अर्थशास्त्र और मजदूर आन्दोलन के इतिहास पर किताबें पढ़ी और साथ ही गणित का भी परिश्रमपूर्वक अध्यन किया। परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही दिनों में वह एक कुशल मिस्त्री बन गया और काफी कमाने लगा। किन्तु उसे तब भी लगता था कि वह कुछ भी नहीं जानता। उसे यह सोचकर बड़ा दुख होता, जैसे उसने कोई अति सुन्दर अवसर हाथ से निकल जाने दिया हो। लेकिन उसके पास समय की बड़ी कमी थी। कभी उसको पार्टी कान्फ्रेंस में जाना होता तो कभी किसी सभा में।

मिशो की उम्र इस समय उन्तीस वर्ष की थी। वह अच्छा खासा हट्टा-कट्टा नवयुवक था, किन्तु उसके शरीर के अंग अनुपातहीन मालूम पड़ते थे। सिर तो बहुत बड़ा और भारी था। चेहरा उसका जाड़े में भी चित्तियों से ढँका रहता था उसकी आँखें सुन्दर और भूरी थीं, उनसे शरारत टपकती। और दाँत उसके बड़े-बड़े और सफेद थे। वह सदा मुसकराता ही दिखाई पड़ता। उसके हाथ हरदम चलते ही रहते और बात-बात में वह कहता, 'वाह, क्या कहना है!'

मिशो बड़े ध्यानपूर्वक प्रोफेसर मालेत का भाषण सुन रहा था और कभी-कभी अपनी फटी हुई नोटबुक में कुछ दर्ज भी करता जाता था। उसकी बगल ही में एक अत्यन्त सुन्दर लड़की बैठी थी। भाषण के आरंभ होते समय मिशो ने उसे ध्यानपूर्वक देखा था, विशेषकर उसकी लम्बी काली पलकों को, जो

किसी फिल्म स्टार की पलकों की तरह मालूम पड़तीं थीं। इसके बाद उसे उसका कोई ध्यान नहीं रहा था।

किन्तु जब मालेत ने स्तम्भों का वर्णन करते हुए एक ऐसे अपरिचित शब्द कर उच्चारण किया जिसे मिशो सुन न पाया, तो लड़की की ओर मुड़कर उसने धीरे से पूछा, 'किस बनावट का नाम लिया उन्होंने ?'

'नकाशीदार,' लड़की बोली।

भाषण समाप्त हुआ। वे दोनों हाल की सब से पीछे वाली बेंच पर बैठे थे, इसलिए पहले दूसरे लोगों के निकल जाने का इन्तजार करने लगे। मिशो ने लड़की की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे आशा है, भाषण के बीच एक प्रश्न कर बैठने पर आप ने बुरा नहीं माना होगा। आप शायद स्थापत्य विद्या की छात्र हैं, किन्तु मैं तो वैसे ही एक साधारण गृहस्थ हूँ। मेरा विषय इन्जीनियरिंग है।'

'मैं तो इन्जीनियरिंग के बारे में कुछ भी नहीं जानती, एक शब्द भी नहीं।'

'हाँ, वह भी एक विशिष्ट विषय है,' मिशो बोला। 'किन्तु यदि आप कला से अनभिज्ञ हों तो आपको ऐसा मालूम पड़ेगा मानो किसी चीज की भारी कमी है। उसे समझना भी कठिन है। मैं एक कला को दूसरी कला के रूप में परिवर्तित करने की चेष्टा किया करता था। उदाहरण के लिए, जब कभी मैं कोई गाना सुनता तो उसे शब्दों का रूप देने की चेष्टा करता और सोचता इस गाने का क्या अर्थ है, प्रेम करना या कोई सैनिक विजय, अथवा समुद्र में तूफान ? किन्तु निराशा के सिवा कुछ हाथ न आता। भाषा ही बिल्कुल गलत थी। स्थापत्यकला का भी यही हाल है। मुझसे आप कहीं अधिक जानती होंगी।'

दोनों साथ-साथ हाल से बाहर निकले। दो दिन तक वर्षा होने और तेज हवा चलने के बाद शहर बदला हुआ मालूम पड़ रहा था। चारों ओर वसन्त ऋतु का आगमन दिखाई पड़ता था, अखरोट की कलियाँ फूल उठी थीं। जाड़े के भारी ओवरकोटों की जगह लोगों ने हलकी बरसाती का प्रयोग आरंभ कर दिया था। कहवाखानों में अन्दर से निकल-निकलकर लोग अब बाहर के चबूतरों पर बैठने लगे थे। सड़कों पर लोग-बाग फिर दिखाई पड़ने लगे थे।

'मैं तो राजनीति से तंग आ गई हूँ,' लड़की बोली। 'मेरे घर में दिन रात इसी की चर्चा रहती है। मेरे पिता तो......।'

यह कहते-कहते वह रुक गई। उसने अपने मन में सोचा, मैं कितनी मूर्ख हूँ। एक अनजान आदमी से इस प्रकार बातें करने से क्या लाभ? वह हमेशा लोगों से दूर भागती रही थी, और आज एक ऐसे पुरुष से बातें कर रही थी जिसके बारे में वह इसके सिवा कुछ भी नहीं जानती थी कि वह एक इन्जी-नियर है। कितनी बड़ी मूर्खता है। कैसा लड़कपन है! किन्तु साथ ही, उसके हृदय में यह सोचकर वेदना उत्पन्न हो रही थी कि अब वसन्त की इस शाम को उनका साथ छूटने वाला है, क्षण भर में ही उसे बस में सवार होकर चल देना पड़ेगा। बड़े रूखेपन से उसने कहा, 'मेरे पिता पार्लमेंट के सदस्य हैं। तुमने उनका नाम सुना होगा। उनका नाम है, तेस्सा।'

मिशो बड़े ज़ोर से हँसा और कहने लगा, 'बड़े आश्चर्य की बात है। बताऊँ, कैसे? तुम्हारे पिता से इससे क्या संबंध! मैं उनसे तो बातें कर नहीं रहा। मैं तो तुमसे बोल रहा हूँ। क्या तुम समझती हो उनकी उलटी-सीधी बातें मेरी समझ में आ सकती हैं? बड़ी टेढ़ी खीर है। मैं तो किसी और ही विषय पर बात कर रहा हूँ। मैं कहता हूँ, कहाँ जाओगी? चलो, जरा हम लोग और थोड़ा टहलें। कम से कम बस के अगले अड्डे तक तो। कितनी सुहानी शाम है......।'

देनीजे राजी हो गई। उसे फिर अपने ऊपर आश्चर्य हुआ। आखिर वह उस पुरुष के साथ कहाँ चली जा रही है, उसकी बातें क्यों इतने ध्यानपूर्वक सुन रही है और सब से मुख्य बात तो यह है कि क्यों आज इतना सुख अनुभव कर रही है!

'मैं राजनीति को बिलकुल दूसरी तरह देखता हूँ,' मिशो ने कहा। 'मेरे लिए राजनीति का अर्थ है संसार का नवनिर्माण। संसार में कितनी बुराई भरी है! कितनी व्यर्थ की तकलीफ है! कभी-कभी तो मुझे लोगों को देखकर लज्जा आने लगती है। फिर भी सुखी और शान्तिपूर्ण जीवन असंभव नहीं। मेरे लिए क्रान्ति का अर्थ है एक प्रकार का निर्माण कार्य। यदि तुम्हें कला से प्रेम है तो तुम्हें उससे भी सहानुभूति अवश्य होगी।'

'क्या तुम कम्युनिस्ट हो?'

'और हो ही क्या सकता हूँ!'

'मेरा भाई भी तुम्हारे जैसी बातें करता है। लेकिन मुझे उस पर विश्वास नहीं। मुझे शब्दों में कोई विशेष चीज नहीं दिखाई पड़ती।'

'यह इसलिए कि तुम्हारे पिता एक वकील हैं,' मिशो ने उत्तर दिया। 'मुझे भी संदेह होने लगता है जब लोग बड़ी लच्छेदार बातें करने लगते हैं। लेकिन हम लोगों की बात दूसरी है। आज रात को चुनाव के पहले एक सभा है। चलो, आध घण्टे के लिए वहाँ भी हो आयें। तुम्हें अन्तर साफ दिखाई पड़ जायगा। नजदीक ही है। हाँ, यदि तुम्हारा मन न कहता हो तो तुम जा सकती हो। लेकिन वहाँ जाने से लाभ ही होगा। आओ, चलो, आदमी को जिज्ञासु होना चाहिए।'

देनीजे ने सिर तो हिला दिया, लेकिन वह जानती थी कि जाना ही पड़ेगा। उसने अपने मन में सोचा. अच्छा कोई बात नहीं, घर लौटकर सारे प्रश्नों पर विचार कर लूँगी। तब सब समझ में आ जायगा। इस समय चित्त प्रसन्न है और इससे बढ़कर हो ही क्या सकता है।

सभा में ऐसे बहुत से लड़के-लड़कियाँ उपस्थित थे, जिनका नाम वोट देने वालों की फेहरिस्त में नहीं था। उस सुहावनी शाम को ऐसी ही हजारों सभाएँ हो रही थीं, जिनसे जनवादी मोर्चे की जोश भरी आवाज उठकर हवा में फैल रही थी। हाल में गर्मी मालूम पड़ती थी। बहुत से लोगों ने तो अपने ओवर-कोट उतार डाले थे, और अपनी टोपियाँ पीछे सरकाये बैठे धुँआ उड़ा रहे थे। देनीजे ने अपने चारों ओर के लोगों पर निगाह दौड़ायी। उनके चेहरों से कितनी उदासीनता, गरीबी और निराशा टपक रही थी! एक स्त्री बच्चे को थप-थपा कर सुला रही थी क्योंकि उसके घर पर ऐसा कोई न था जिसके पास वह बच्चे को छोड़ आती। एक बूढ़े की फूली हुई आँखों से पानी टपाटप गिर रहा था जैसे वह रो रहा हो। इनमें से कोई किसी को नहीं जानता था। ये लोग शहर की गन्दी, अँधेरी गलियों के रहनेवाले थे, आज एक नये भाई-चारे की भावना उन्हें यहाँ खींच लाई थी। जब कोई वक्ता न्याय के लिए मर मिटने का नाम लेता तो उनकी मुट्ठियाँ तन जातीं और हजारों गलों से एक ही आवाज निकलती। उनके भाषण का ढंग तेरसा से बिल्कुल भिन्न था। ये लोग झटके के

साथ किन्तु कुछ कठिनाई से बोलते, मानों उन्हें अपने भाव व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द न मिल रहे हों।

इसी तरह आधा घंटा बीत गया, फिर एक घंटा और तब दो, किन्तु देनीजे वहाँ से हटी नहीं। वह बड़े ध्यान से लोगों की बातें सुनती रही। वहाँ लोग क्या क्या कह रहे थे, इसे दोहराना उसके बस की बात न थी। मालूम पड़ता था जैसे वह उनके दिलों की धड़कन सुन रही हो, या किसी ऐसी नई दुनिया की सैर कर रही हो जो उसके लिए बिल्कुल नई और आश्चर्यजनक थी। ऐसा उसे तब अनुभव हुआ था जब उसने पहली बार अपने बचपन में ब्रिटैनी के किनारे समुद्र की उठती हुई लहरों की आवाज सुनी थी। सभा रात को बारह बजे समाप्त हुई। देनीजे ने अचानक देखा कि उसके मुँह से भी 'अन्तरराष्ट्रीय' गीत निकल रहा है, यद्यपि वह नहीं जानती थी कि वह क्या और क्यों गा रही है।

एक लम्बा बूढ़ा मजदूर, जिसकी आँखें धँसी हुई थी और जिसके गालों पर जख्म का निशान था, मिशो के पास आकर बोला, 'आज हमने तुम्हारे कारखाने से चार आदमी पार्टी में भरती किए। चार्ल्स से कह देना कि पर्चों को कारखाने की वर्कशापों के हिसाब से बाँट दिया जाय। घेरे के डंडों पर पोस्टर चिपकाये जा सकते हैं।' फिर देनीजे की ओर मुड़कर उसने पूछा, 'कामरेड तुम कहाँ से आई हो?'

देनीजे ने शर्म से आँखें नीची कर लीं। मिशो ने उत्तर देते हुए कहा, 'यह अभी पढ़ती है।' देनीजे ने अपने मन में सोचा, इस बूढ़े ने मुझको भी अपने साथियों में से समझा है, और न जाने क्यों उसे यह सोच कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

अब दोनों बाहर सड़क पर आये। पेरिस के नीले आकाश और मन्द-मन्द चलती हुई गरम हवा ने एक बार उन्हें फिर वसन्त के आगमन की याद दिला दी।

'कहो, कैसा लगा?' मिशो ने पूछा।

'समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ। केवल अच्छा कहना काफी नहीं। मेरे तो रोयें फड़क उठे।'

'अब समझ में आया। जानती हो, क्यों? वह बिल्कुल इस सुहानी शाम

और पेरिस की इस हल्की गरम हवा की भाँति है। इसके लिए केवल एक शब्द है—आशा, संसार को बदलने की आशा!'

'मुझे अपने भाई की बातों पर तो विश्वास नहीं होता था, किन्तु मैं उस बूढ़े की बातों पर, जो तुम्हारे पास आ खड़ा हुआ था, विश्वास किये बिना न रह सकी। वह ठीक ही कहता था, यह मैं नहीं कह सकती। किन्तु उसकी ईमानदारी में तो मुझे कोई सन्देह ही नहीं। खैर, अब इन बातों की चर्चा बन्द करनी चाहिए। एक ही बार में सब नहीं हजम हो सकता।'

मिशो फिर से आशा--अपनी और दूसरों की आशा—के बारे में बोलने लगा। अब उसे मुश्किल से ही कुछ सुनाई पड़ता था, शब्दों की इतनी भरमार थी।किन्तु फिर भी उसकी बातों में उसको आनन्द आता रहा। जब वे एक दूसरे से विदा हुए तो मिशो की भूरी, शरारत से भरी, आँखों की ओर देखकर वह मुसकराई। वाह, 'क्या कहना!' मिशो ने बड़े जोश के साथ कहा।

देनीजे ने मुसकराते हुए उत्तर दिया, 'हम एक दूसरे से मिलते रहेंगे। जब कभी मालेत का भाषण हो या कोई और सभा हो तो मुझे लिखना, मैं अवश्य आऊँगी। अच्छा......।'

वह अपने घर पहुँच चुकी थी। मकान के बरामदे में उसके पिता के जीते हुए प्रसिद्ध मुकदमों की तसवीरें टँगी हुई थीं। बड़े-बड़े नामी डाकू और चोर-बदमाश अदालत के घेरे में खड़े थे और सामने अपना निरा हड्डीदार दुबला-पतला हाथ आकाश की ओर उठाये हुए तेस्सा एक वकील की पोशाक में खड़ा था।

उसका फ्लैट उस तालाब के स्थिर जल की भाँति जान पड़ता था, जिसके तल पर तो बिल्कुल शान्ति हो किन्तु नीचे लहरों का तूफान मच रहा हो। देनीजे का पिता अभी घर नहीं लौटा था। शायद वह देजैर की चालबाजियों के फंदे से निकल कर पालेत के दामन में जा छुपा था। उसकी माँ अपने कमरे में बैठी 'पेशेंस' खेल रही और अपने पति की राह देख रही थी। मदाम तेस्सा को वरम गुर्दे की शिकायत थी। उसे मृत्यु और नर्क के नाम से बड़ा भय लगता था। वह धार्मिक विचारों की महिला थी। कभी उसका समय घर के काम-काज देखने, कपड़े सीने और गप लड़ाने में कट जाता था। लेकिन अब जब कि वह बीमार पड़ी हुई थी तो उसे ईश्वर ही ईश्वर सूझता था।

उसे लड़कपन के वे दिन याद आया करते, जब वह मिशन स्कूल में पढ़ने जाया करती थी। अब उसके अन्तिम दिन निकट आ चुके थे। अब उससे उसके सारे कर्मों के लिए जवाब तलब किया जाने वाला था। पार्लियामेंट भवन में तेस्सा के धर्म विरोधी भाषणों, बाजारू औरतों से उसके सम्बन्धों और अपने लड़के ल्युसियां के कुकर्मों तथा अधर्मों के लिए भी उसे सजा मिलेगी। हाय, उसे अब कौन बचायेगा? देनीजे? किन्तु वह तो कभी बात ही नहीं करती, वह तो कभी गिरजाघर की शकल भी नहीं देखती और न माँ की बातों का उत्तर देती है, शायद वह भी अपने पिता का ही अनुकरण कर रही थी।'

'देनीजे, तुम हो? मैं समझी थी, तुम्हारे पिता हैं। यहाँ तो आओ। कहाँ थी अभी तक?'

'ऊल मिश के काफी हाउस में बैठी थी। बड़ी सुहावनी रात है।'

जो कुछ उसको सूझा उसने कह डाला। वह अपनी माँ को सभा की बात सुनाकर नाराज नहीं करना चाहती थी।

लेकिन मदाम तेस्सा ने यह सुनते ही रोना आरंभ कर दिया और बोली, 'अरे वही, सेंट मिशेल सड़क में जो है! तू भी अपने पिता का अनुसरण कर रही है। है न?' देनीजे ने माँ को ढाँढस बँधाने की चेष्टा की कि वह वहाँ अपनीं सहेलियों के साथ गई थी और अपने साथ मंत्रा हुआ पानी लायी है जिसको उसकी माँ रात को सोते समय पीया करती थी। किन्तु ताश के पत्तों पर उसके आँसू टपकते ही गये।

देनीजे ने अपने कमरे में आकर कपड़े उतारे और चारपाई पर लेट गई। उसने बत्ती गुल कर दी। किन्तु उसे नींद नहीं आई। घड़ी में दो, ढाई और फिर तीन भी बज गये। उसे कमरे के पास ही किसी के पैरों की आहट मालूम पड़ी। उसका पिता आ गया था और दबे पैर चल रहा था। वह धीमे-धीमे गा भी रहा था। थोड़ी देर में फिर सन्नाटा छा गया।

देनीजे को यह घर एक मकबरे जैसा लगने लगा था। उसे अपने बचपन के दिन, जो उसने ब्रिटैनी में बिताये थे और तरह तरह के खेल जो वह खेलती थी याद आ रहे थे। समुद्र का जल लहरें मारता था, सड़कों पर ऊँघते हुए लाल पायजामे पहने मछुए ऐसे मालूम पड़ते जैसे बड़ी बड़ी झींगा मछलियाँ पड़ी हों। जब कभी तूफान आता तो सारा मकान हिल उठता, आलमारी का

शीशा खड़खड़ाने लगता, लेकिन लड़कियों के दिल खुशी से उछलने लगते थे।

जब देनीजे शिक्षा समाप्त करके घर लौटी, तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वहाँ के वातावरण में उसका दम घुट जायगा। घरवाले एक साथ घनिष्ट, दैनिक संपर्क में रहते थे। देनीजे अपने पिता के कर्मों और ल्युसियाँ तथा जानेत के किस्सों से भलीभाँति परिचित थी।

देनीजे को वास्तव में स्थापत्यकला के इतिहास से बड़ा प्रेम था। प्राचीन समय में लोग दिल जान से अपने विश्वासों पर जमे रहते थे। वे उसकी माँ की तरह नहीं थे। अपने पिता के व्यर्थ के कामों, अपनी माता के बाहरी आडम्बर और भाई की निरुद्देश्य बकवास से बचकर देनीजे प्राचीन वस्तुओं की शरण लेना चाहती थी।

किन्तु आज एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण घटना हो गई थी। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि वह उस बात की गहराई तक जाये बिना न मानेगी। उसने प्रश्न को हर पहलू से देखा और यह जानने का पूरा प्रयत्न किया कि आखिर उसका अर्थ क्या है। उसे बहुत सी बातें याद आ रही थीं, उस बुढ़िया की बँधी हुई मुट्ठियाँ, वह मजदूर जिसके गाल पर जख्म के निशान थे और जिसने उसे 'कामरेड' कहकर पुकारा था, मिशो की सुन्दर भूरी-भूरी आँखें......। इन सब चीजों की याद वसन्त ऋतु की उस रात की हवा और शान्ति के साथ मिलकर एक अद्भुत प्रभाव डाल रही थी। इसी दशा में सवेरा होने लगा, कमरे की चिलमनों से कुछ-कुछ रोशनी छनकर आने लगी और बाहर भी वस्तुएँ कुछ धुँधली-धुँधली सी दिखाई पड़ने लगीं। देनीजे को मिशो का 'वाह, क्या कहना!' याद आया। वह मुसकराई और सो गई।

१०

एक कम्युनिस्ट समाचार-पत्र में अपनी पुस्तक की आलोचना पढ़कर ल्युसियाँ बड़ा झल्लाया। उसे आलोचना का अन्तिम वाक्य विशेष रूप से बुरा लगा, क्योंकि उसमें कहा गया था, 'पुस्तक में कुछ आवश्यकता से अधिक 'क्रान्तिकारी' भावना में रंगे अंश हैं जिनको पढ़कर संदेह उत्पन्न होने लगता है।' उसने

अपने मन में कहा, 'गधा कहीं का ! सभी ऐसे हैं। सामाजिक विश्लेषण करना तो उन्हें आता ही नहीं। बस टीपटाप करके काम चलाना जानते हैं। दक्षिण पक्षीय समाचार-पत्रों ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक पुस्तक का स्वागत किया था। लेकिन एक जनवादी समाचार-पत्र ने, जिसे ल्युसियाँ को अपने हितों के समर्थक के रूप में समझना चाहिये था, केवल थोड़े से ही शब्द प्रशंसा में कहे थे। और अन्त में संदेह और अविश्वास प्रकट किया था।

एकाएक ल्युसियाँ को हँसी आ गई। शायद आलोचना ठीक थी। अभी कुछ ही दिन हुए, उसने कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बनने की चेष्टा की थी और अपने साथियों को अब दिखलाना चाहा था कि पार्टी का अनुशासन मानने का अर्थ है उच्चतम प्रकार का आत्मत्याग, जैसा कि कवि गेटे ने भगवान के बारे में कहा है। ल्युसियाँ ने भी यही निश्चय किया था, चाहे आँधी आये या तूफान !

धनी बाप का बेटा होने के कारण, ल्युसियाँ को जीविका कमाने की फिक्र न थी। कालेज से निकलने के बाद उसने संसार में कदम रखा। पहले उसने चिकित्साशास्त्र पढ़ना आरम्भ किया, तब फिर एक साल बाद चीर-फाड़ से तङ्ग आकर उसने अपना विषय अन्तरराष्ट्रीय विधान चुना। तब उसे अचानक सिनेमा से दिलचस्पी पैदा हुई और वह एक फिल्म डाइरेक्टर का सहकारी बन गया। वह मशीन युग के विनाश के बारे में एक अद्भुत फिल्म तैयार करना चाहता था, किन्तु विवश होकर उसे एक ऐसी व्यर्थ की फिल्म पर परिश्रम करना पड़ रहा था, जिसकी नायिका अपने पति और अपने प्रेमी में भेद नहीं कर पाती थी, क्योंकि वे एक दूसरे से बहुत ही मिलते-जुलते थे। अन्त में ल्युसियाँ फिल्मी संसार से भी तङ्ग आ गया और अब उसने एक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति के रूप में काफीहाउसों में जाकर बैठना शुरू किया, जहाँ बराबर साहित्य-चर्चा हुआ करती थी।

पेरिस लौटकर ल्युसियाँ ने फिर उसी प्रकार जीवन बिताना शुरू किया। वह 'सुररियलिस्ट' चित्रकारों की नुमाइशों और उनकी शाम की सभाओं में जाता और वहाँ अधिकतर चुपचाप ही बैठा रहता, जब कि उसके मित्र खूब गपशप लड़ाते। उसे तो हर समय मौत का भूत सवार रहता था।

यह थी उसके उपन्यास की उत्पत्ति, जिसमें उसे बड़ी सफलता प्राप्त हुई थी। वह एक असंबद्ध, क्रमहीन, डींगों से भरी हुई पुस्तक थी, यद्यपि उसमें कहीं-कहीं बड़ी सारगर्भित बातें कही गई थीं, जो भावनाओं की गहराई तक पहुँचती थीं। उसमें एक ऐसे मनुष्य के अन्तिम दिनों का वर्णन किया गया था जिसने बर्फ के बीच गलकर जान दी थी, जो गणित तथा अपनी चार साल की पुत्री को संसार में सबसे अधिक प्यार करता था। ल्युसियाँ देखते-देखते एक बड़ा उपन्यासकार बन गया। जब पत्रकारों ने उसकी भावी साहित्यिक योजनाओं के बारे में पूछताछ की तो उसने बतलाया कि मैं गृहस्थ जीवन पर एक उपन्यास लिख रहा हूँ। वास्तव में वह कुछ भी नहीं लिख रहा था। उसकी दशा तो निचोड़े हुए नींबू की तरह हो रही थी।

वर्षों गुजर गये और लोग यह भी भूलने लगे कि ल्युसियाँ कभी लेखक भी रहा था। पोल तेस्सा ने जिसे आरम्भ में अपने पुत्र के साहित्यिक जीवन से बड़ी आशाएँ थीं, फिर उसे उसकी बेकारी और फिजूलखर्ची के लिए डाँटना शुरू किया। ल्युसियाँ बिना पैसे के नहीं रह सकता था। वह लाखों फ्रांक बिना संकोच लुटा दिया करता था। वह अकसर ऐसे रेस्तराँ में जो देखने में तो अधिक ठाठदार नहीं मालूम पड़ते थे किन्तु जहाँ चीजें बड़ी मँहगी थी। अपने मित्रों की दावतें करता। वह ऐसी शराबें मँगवाता जो कठिनाई से मिलती थीं। किसी भी स्त्री को, जो उसकी निगाह में चढ़ जाती, वह बड़ी-से-बड़ी भेंट पेश कर देता। ताश खेलने की उसे जैसे बीमारी थी और ऊँचे से ऊँचा दाँव लगने में ही उसे आनन्द आता। जुआरियों के हर अड्डे में लोग उसके पीले सुन्दर चेहरे और भूरे बाल से परिचित थे। ल्यूसियाँ हँसते-हँसते रात भर में बीस-तीस हजार फ्रांक हार जाता। अन्त में वह दिन आ ही गया जब उसको महाजनों के पास जाने की आवश्यकता पड़ने लगी। वह एक से कर्ज लेकर दूसरे को चुकाता। वही अरुचि पैदा हो गई, जिसने चार वर्ष पहले उसे दक्षिणी ध्रुव की ओर भगाया था, जहाँ उसे पेंगुइन चिड़ियों की शकल देख कर और डिब्बों में भरे बासी खाने से घृणा होती थी।

ग्रीष्म ऋतु में वह कुछ यात्रियों के साथ सोवियत यूनियन की सैर करने गया। यह चीज अचानक ही हुई थी, क्योंकि पहले उसका इरादा एक मित्र के साथ मिस्र जाने का था। किन्तु रवाना होने के ठीक पहले उससे झगड़ा हो

गया। ल्युसियाँ एक सप्ताह मास्को में रहा। उसकी मंडली ने प्राकृतिक दृश्यों, प्राचीन खंडहरों, अजायबघरों और शिशु-शालाओं का निरीक्षण किया। इन सबका तो ल्युसियाँ पर कोई अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। सबसे अधिक प्रभाव जिस चीज ने उस पर डाला वह थी, वहाँ की जनता की अद्भुत इच्छाशक्ति तथा उसका आत्मबल। एक दिन जब वह बहुत से मजदूरों को भूगर्भ-रेलें बिछाने के काम में लगा देख रहा था तो उनमें उसे भारी बूट पहने एक लड़की दिखाई पड़ी, जिसका चेहरा तो पीला था किन्तु आँखों से बड़ी दृढ़ता टपक रही थी। अचानक उसके मन में विचार आया कि यह लड़की एक भूगर्भ रेलवे बनाने के अतिरिक्त और भी किसी बहुत बड़ी चीज का निर्माण कर रही है। उसके मस्तिष्क में एक बार फिर वैसी ही खलबली उठी, जैसी लांगराज की मृत्यु पर उठी थी। एक बार फिर वह बिल्कुल बदला हुआ पेरिस लौटा।

लोत्रमां की जगह मार्क्स ने ली। अपने जीवन में पहली बार उसमें अपने आसपास के लोगों के जीवन में दिलचस्पी पैदा हुई। उसे हर तरफ झूठ, मक्कारी और दुख दिखाई पड़ने लगा। अपने जीवन-नाटक में उसे समाज की तस्वीर नजर आती थी। इस भावना ने उसे एक हल्की किस्म की हास्यपूर्ण पत्रिका निकालने को प्रेरित किया, जिसमें उसने धनिक वर्ग के दार्शनिक तथा नैतिक विचारों और सौन्दर्य रुचि का जी खोल कर मजाक उड़ाया। उसके पिता को उसके लक्षण अच्छे नहीं दिखाई दिये और उसने पुत्र से सारे सम्बन्ध तोड़ लेने की धमकी दी। लेकिन वे नवयुवक जो 'संस्कृति-गृह' में एकत्र होते थे, आने वाली क्रान्ति पर ल्युसियाँ के भाषणों को बड़े चाव से सुनते थे। वह जुआ खेलना भी भूल चुका था, क्योंकि यह जो खेल उसने अब खेलना शुरू किया था वह कहीं अधिक रुचिकर था।

छः महीने भी नहीं बीते कि उसके मन में संदेह पैदा होने लगा। उसने सोचा कि यह कम्युनिस्ट पार्टी भी ऐसी-वैसी ही एक राजनीतिक पार्टी है। इसके सदस्य अपने घरेलू सुखों के पीछे पड़े रहते हैं और मारिस शेवालियेर के रोमांचकारी गीत गाया करते हैं। ल्युसियाँ ने, जो अपने को सदा दूसरों से अधिक चतुर और साहसी समझता था, सोचा, 'मैं एक बार फिर बेवकूफ बन गया। हो सकता है, ताश के इसी पत्ते की जीत हो, लेकिन वह मेरा पत्ता तो नहीं हो सकता।'

उसके जीवन-नाटक का अगला अंक था जानेत के प्रेम में बँधना। वह अपनी भावनाओं को, बिना बढ़ाये-चढ़ाये, खोलकर अपने मित्रों के सामने रख दिया करता था। शायद उसे यह आशा थी कि वह इस प्रकार प्रेम का तिरस्कार करने में सफल होगा। किन्तु वह भूल रहा था। प्रेम ने उसे इतना विवश कर रखा था कि जिस ढंग से वह जानेत का नाम लिया करता था उसी से उसके मन का भेद खुल जाता था।

आचरण में जानेत और ल्युसियाँ एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे, यद्यपि उनके अनुभवों में बहुत कुछ समानता थी।। दोनों संसार भर की खाक छानते फिरे थे। जानेत वैसे तो तीस ही वर्ष की थी, किन्तु अक्सर ऐसा अनुभव करती जैसे वह बुढ़ा गई हो। वह लायों नामक नगर के एक वकील की लड़की थी। कट्टरपंथियों के उस नगर में, जहाँ बहुत ही कम मनोरंजन की वस्तुएँ थीं, और कड़े स्वभाव तथा संकुचित विचारोंवाले अपने माता-पिता के साथ रहकर, जानेत जानती ही नहीं थी कि लड़कपन क्या होता है। सबेरे से लेकर शाम तक वे लोग पैसे की ही हाय-हाय किया करते—पैसे को बेकार नहीं खोना चाहिये! उनकी बातों के विषय होते, उपयुक्त शादियों की आवश्यकता, उन स्त्रियों के घृणित आचरण की निन्दा, जो अपने आराम पर भारी रकमें उड़ा डालतीं और दूसरे पुरुषों से चोंचलेबाजी करतीं या अपने चरित्र को ही नमस्कार कर बैठतीं थीं। उसे अभी तक वह पतला-दुबला आदमी याद था, जिसकी आँख में फूली थी और जिसके माता-पिता उसकी बड़ी प्रशंसा किया करते थे। वह एक बड़े कारखाने का मालिक था और अपनी स्त्री के प्रेमी को गोली मारकर हत्या करके भी साफ बच गया था, क्योंकि वह बड़ा प्रभावशाली था। इसके लिए मशहूर किया गया कि मरने वाला चोर था और रात को घर में घुस कर चोरी करने की चेष्टा कर रहा था। जानेत के घर में मेज-कुर्सियाँ सदा कपड़ों से ढँकी रहतीं क्योंकि उसकी माँ को डर लगा रहता था कि कहीं उसका पति मेज-पोश पर शराब की बूँदें न गिरा दे।

जानेत अट्ठारह वर्ष की थी जब उसने उस डाक्टर से प्रेम शुरू किया था, जो चेचक की बीमारी में उसे देखने आया करता था। अब उसकी शादी हो चुकी थी और जानेत को उसका कोई ध्यान भी नहीं रह गया था। उसके पिता को कहीं इसका पता चल गया और उसने तुरन्त उसे घर से निकाल बाहर

किया था। तब डाक्टर ने चार सौ फ्रांक देकर बड़े दुख के साथ जानेत को पेरिस के लिए विदा किया था। उस रात ट्रेन में बैठी वह सोचती रही कि ऐसा मैंने क्यों किया? किन्तु कोई उत्तर न मिला। डाक्टर एडोनिस की भाँति कोई रंगीला-बाँका भी तो न था! उसका कंठा काफी बाहर निकला हुआ था और वह सदा गन्दी-गन्दी कहानियाँ सुनाया करता था।

पेरिस पहुँचकर, जानेत ने एक दूकान में नौकरी कर ली। आँखों के नीचे काला घेरा लिये हुए वह रोज तड़के काम पर जा पहुँचती। दूकान में काम करनेवाली दूसरी लड़कियाँ आपस में कहतीं कि यह बड़ी व्यभिचारिणी मालूम पड़ती है, किन्तु वास्तव में बात यह थी कि रात में वह बहुत देर तक पढ़ती थी। उसने पहले आधुनिक लेखकों की पुस्तकें पढ़नी शुरू कीं कि शायद उसे अपना चित्रण भी कहीं मिल जाय। किन्तु शीघ्र ही उसे स्टेन्डाल, दोस्तोवस्की और शेक्सपियर का शौक हुआ। उनको पढ़कर अब उसे अपने चारों तरफ के लोगों के कार्यों में एक क्रम और अर्थ निहित जान पड़ने लगा। वे तमाम बातें जो पहले समझ में नहीं आती थीं, इसलिए विरोधी जान पड़ती थीं, अब स्पष्ट जान पड़ने लगीं और यह पता चला कि ये सारी बातें भी कुछ नियमों के अनुसार होती हैं। यद्यपि उसे सांसारिक जीवन का अनुभव न था और वह लोगों से दूर रहने की कोशिश करती थी, फिर भी उसने इन अमर कलाकारों की कृतियों से बहुत-कुछ सीख लिया था और जीवन का एक अधिक परिपक्व तथा अनुभवपूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त कर लिया था।

रेस्तराँ में जहाँ वह भोजन करने जाया करती थी, एक बार एक अधेड़ उम्र के ऐक्टर, फिजेत, से उसकी भेंट हो गई और दोनों ने साथ-साथ रहना आरम्भ किया। वे तनिक भी एक दूसरे से प्रेम नहीं करते थे, किन्तु दोनों का जीवन अत्यन्त दुखी और असहाय था। फिजेत जानेत की शक्ल-सूरत से आकर्षित हुआ था। वास्तव में बात यह थी कि वह जहाँ भी जाती, लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेती थी। उसकी बड़ी-बड़ी डरावनी आँखें देखकर मालूम होता था, जैसे उसके ऊपर भूत सवार है। ऐसा जान पड़ता मानो उसने अभी-अभी कोई अत्यन्त ही दुखपूर्ण समाचार सुना है, या प्रेम से पागल हो रही है, या उस सुख का अनुभव कर रही है जो जीवन में केवल एक बार प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त, चाहे जिस प्रकार वह फिजेत की ओर देखती वही उसको

मुग्ध करने के लिये काफी होता। यह मनचला बड़े ही कोमल हृदय का आदमी था। वह उस असफल, असंतुष्ट और मलीन ऐक्टर को ऐसी आँखों से देखती मानो वह एक नन्हा-सा बच्चा हो, न कि उसके पिता की उम्र का बड़ा बूढ़ा। वह उससे प्रेम नहीं करती थी। लेकिन उसे कभी यह विचार भी तो नहीं आया कि वह किसी से प्रेम कर भी सकती है।

उसने कभी अपने जीवन की तुलना पुस्तकों के पात्र-पात्रियों अथवा नाटक के पात्रों से करने की चेष्टा नहीं की। चन्द महीनों के बाद उसने दूकान की नौकरी भी छोड़ दी। फिजेत ने उसे एक थियेटर में काम दिला दिया। उसे वहाँ बहुत छोटे और साधारण पार्ट अदा करने पड़ते थे, जैसे किसी भयभीत नौकरानी या ऐसी ही गाँव की किसी साधारण छोकरी का। वह कोई बड़ी नायिका बनने की इच्छुक भी न थी, किन्तु थियेटर का वातावरण उसे अच्छा लगता था और इसलिए अपने जीवन-क्रम में इस परिवर्तन के लिए वह फिजेत की आभारी थी।

एक वर्ष बाद फिजेत ने भी उसे छोड़ दिया। उसने एक प्रसिद्ध 'हास्य-नाटक करने वाली अभिनेत्री से संबंध जोड़ लिया। बहुत दिनों तक तो उसकी हिम्मत न हुई कि जानेत को इसके बारे में बताये क्योंकि वह डरता था कि वह ईर्ष्या की आग में जलने लगेगी, रोयेगी, चिल्लायेगी और उसकी निन्दा करेगी। लेकिन जानेत ने इस बेरुखी से उसकी सारी बातें सुनीं कि उसे विवश हो स्वयं ही कह देना पड़ा, 'मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम्हें मुझसे कभी प्रेम भी था!' जानेत ने भी इनकार कर दिया।

संस्कृति-गृह के मैनेजर मारशल ने प्रगतिशील थियेटर चलाने की बात सोची और नायक और नायिकाओं की खोज शुरू की। पेशेवर ऐक्टर तो उसके यहाँ आने को तैयार नहीं थे, क्योंकि उन्हें भय था कि उसकी सारी योजना चार दिन से अधिक नहीं चलेगी। थियेटर की सीढ़ियों पर जानेत से उसकी भेंट हो गई, उसे उसमें बड़ी संभावनाएँ दिखाई पड़ीं। उसने तुरन्त जानेत से फिर मिलने को कहा और उसे विश्वास दिलाया कि वह दुखान्त नाटक के लिए अत्यन्त ही उपयुक्त होगी। 'कैसी आँखें हैं! क्या आवाज है! कहीं तुम अपनी आवाज को स्वयं सुन सकतीं!' उसने कहा। उसने नाटक में जानेत को मुख्य पार्ट दिया। पहले ही अभ्यास में उसकी ऐक्टिंग देखकर सभी लोगों ने प्रशंसा

की और बोले कि उसमें हद दर्जे की सादगी है और उसके हृदय में मानो भावनाओं का समुद्र लहरें ले रहा है'। दुर्भाग्यवश, इसी समय जावोगे, जोएक प्रसिद्ध ऐक्ट्रेस थी, 'ओडियन' के मैनेजर से झगड़ पड़ी और गुस्से में अलग होकर मारशल की ओर आ गई। वह दूसरी श्रेणी की ऐक्ट्रेस थी, किन्तु उसके नाम से ही काफी प्रचार हो सकता था। उसे जानेत का पार्ट मिला। जानेत ने इस हार पर कोई आपत्ति नहीं की; उसने तुरन्त एक छोटा पार्ट स्वीकार कर लिया। पहली रात के बाद, रोज अपने छोटे से कमरे में वह उन संवादों को दोहराती, जिन्हें मंच पर दोहराने का अवसर उसे नहीं मिलने वाला था।

वह 'प्रगतिशील थियेटर' शीघ्र ही खत्म हो गया। जानेत एक अर्ध स्थायी थियेटर कम्पनी की मुख्य नायिका के रूप में प्रान्तों का भ्रमण करने निकली। दो महीने उसने इस तरह बिताये। जब वह इस तरह बहुत ही परेशान हो गई तो उसे पोस्त पेरीजियां रेडियो में नौकरी मिल गई।

ल्युसियाँ एक बार उसी 'प्रगतिशील थियेटर' में उससे मिला था। वह तुरन्त उसके मोहजाल में फँस गया। उस समय उसका क्रान्तिकारी जीवन अपने शिखर पर था। जानेत की मधुर वाणी ने उनमें वह भाव तथा गंभीरता पैदा कर दी थी जो उसे राजनीतिक भाषणों और लेखों में ढूँढ़े नहीं मिलती थी।

हो सकता है, जानेत के हृदय में प्रेम उत्पन्न हो गया हो, किन्तु उसने इस विचार को दूर ही रखने की चेष्टा की। उसके सामने वह जैसे पागल-सा हो जाता था। दिन रात ल्युसियाँ की आह भरी बातें सुनते-सुनते उसे संदेह होने लगा कि वह सचमुच उससे प्रेम भी करता है या नहीं। किन्तु ल्युसियाँ का प्रेम दिनों दिन बढ़ता ही गया। जानेत के प्रति उसके मन में न जाने क्या-क्या भावनाएँ उठती थीं। उसका प्रेम भी अनोखा था। वह जानेत को प्रकृति की एक अद्‌भुत लीला, एक सुन्दर कविता के रूप में पूजता था। अगर उसके लिए जान देने की भी आवश्यकता पड़ती तो ल्युसियाँ पीछे हटने वाला न था। लेकिन जब जानेत बीमार पड़ी और उसने उससे रात भर अपने यहाँ ही ठहर जाने के लिए अनुरोध किया, तो वह बहाने बनाने लगा कि घर पर सब लोग उसकी राह देख रहे होंगे और यदि वह न जायगा तो उसकी माँ बड़ी चिन्तित होगी। किन्तु बात केवल यह थी कि वह अपनी नींद नहीं खराब करना चाहता था।

जानेत अक्सर अपने मन में कहती, यह भी मुझे उसी प्रकार छोड़ जायगा, जैसे फ्रिजेत ने छोड़ा था। कभी-कभी वह सोचती कि वह स्वयं उसे छोड़कर अलग हो जाये, किन्तु उसमें इतना साहस कहाँ था। इस प्रकार की स्त्रियाँ पुरुषों को तब तक नहीं छोड़तीं जब तक कि कोई दूसरा उनको घसीट न ले जाय। शायद उसे अब भी ल्युसियाँ के साथ रहकर सुख प्राप्त करने की आशा थी—शान्ति और सुख, जैसा कि दूसरी स्त्रियों को प्राप्त था।

उस रोज के बाद, जब कि शाम को जानेत की भेंट आँद्रे और पियरे से हुई थी, आज तक ल्युसियाँ उससे नहीं मिल पाया था। उसने टेलीफोन पर जानेत को बुलाया, किन्तु उसने तबीयत खराब होने का बहाना कर दिया। थोड़ी देर के बाद जानेत ने स्वयं ल्युसियां को फोन किया और कहा कि मैं तुमसे कुछ बातें करनी चाहती हूँ। आवाज से मालूम पड़ता था कि वह बड़ी उत्तेजित है। तुरन्त ही ल्युसियां को आंद्रे का नाम खटका। वह चौकन्ना हो गया। उसने फोन पर ही जानेत से कहा कि मैं स्टूडियो में आकर तुमसे मिलूँगा और हम दोनों साथ चलकर होटल में खाना खायेंगे।

जानेत घर से बाहर नहीं निकलना चाहती थी। उसने उत्तर दिया, 'मेरी तबीयत कुछ खराब है, और मैं अकेले में तुमसे बातें करनी चाहती हूँ।' किन्तु ल्युसियाँ ने अपनी जिद् कायम रखी।

अनेक ऐक्टर और लेखक शाम को 'फ़ूके' के होटल में जमा थे। जानेत पर उनकी ललचाई हुई नजरें पड़ती देखकर ल्युसियाँ फूला न समाया। अपनी पुस्तक की कटु आलोचना पढ़ने के बाद भी उसका मिजाज नहीं बिगड़ा था। उसने बड़ी शान के साथ ओयेस्टर और शराब का आर्डर दिया। जानेत चुप थी। ल्युसियाँ ने उसे अपनी पुस्तक की आलोचना के बारे में बताया। 'अविश्वास —मैं तुम्हीं से पूछता हूँ!' वह बोला।

जानेत फिर भी चुप रही। मालूम होता था वह किसी चीज के बारे में सोच रही है। ल्युसियाँ कम्युनिस्टों के संदेहों और दूसरी मेजों पर बैठे इधर ताकते हुए लोगों को भूल गया। उसे आंद्रे की याद करके इतनी ईर्ष्या हो रही थी कि उसने तय कर लिया कि आज इस बात का निपटारा होकर ही रहेगा।

'आँद्रे की नुमाइश सोमवार को खुल रही है,' वह बोला। 'लोग कहते हैं कि उसकी बनायी हुई तसवीरें बहुत सुन्दर हैं। क्या तुम उन्हें देखने जाओगी।'

'नहीं, शायद मैं नहीं जाऊँगी। जाने का मेरा मन नहीं।'

उसने यह बात इतने स्वाभाविक तौर से कही कि ल्युसियां सुनकर बड़ा चकराया। उसने सोचा शायद आँद्रे का कोई हाथ नहीं। एक बोतल खाली करके वह मस्त हो रहा था। उसके सारे संदेह दूर हो गये थे। अब उसने फिर उसी विषय को छेड़ा जिस पर वह दिन भर बकवास करता रहा था।

'मैं समझता हूँ। वे लोग क्यों अविश्वास की बातें करते हैं,' उसने कहा। 'अभी कुछ दिन हुए मैं एक कम्युनिस्ट से भेंट करने गया था जो 'ला यूमानिते' के संपादक मंडल में है। उसके रहने के कमरे को देखा, जो क्या ठाट-बाट से सजा था! दीवालों पर प्राचीन तसवीरें, रोडिन की 'थिंकर' नामक मूर्ति और ऐसी ही बहुत सी चीजें दिखाई दीं। उसकी स्त्री ने बेकार-सा खाना सामने ला रखा, फिर भी उसे गर्व था कि उसकी स्त्री बड़ा अच्छा खाना पकाना जानती है। चार बच्चे थे, सबसे बड़ा बच्चा अपने स्कूल का काम कर रहा था और पिता काम में उसकी सहायता कर रहा था। ऐसा आदमी वोट भले ही दे सकता हो, किन्तु उससे और कुछ नहीं हो सकता। जब कि ऐसे मध्यम वर्गी लोग......।'

जानेत का जरा भी मन नहीं था कि वह बहस में पड़े, किन्तु यह सुनकर उससे रहा न गया और वह बोल उठी, 'क्या स्त्री और बच्चे रखना कोई पाप है? मैंने तुमसे पहले भी कहा था कि इस विषय में मैं बराबर सोचा करती हूँ। स्त्री का सारा सुख इसी में है। तुम्हारी समझ में नहीं आता? कभी-कभी तो मुझे मालूम पड़ता है कि तुम्हारी भी यही इच्छा है, केवल तुम कहते नहीं...... ल्युसियां, बिना इसके जीवन भारी हो जायगा। न मालूम कितना निराशा-पूर्ण, कितना डरावना होगा!'

'यह तो अपने-अपने स्वभाव की बात है,' ल्युसियाँ ने उत्तर दिया। 'और युग की बात है, जिसमें हम और तुम पल कर बढ़े हैं। यदि मुझसे कहा जाय कि घर-बार का झंझट सँभालो, तो मैं तो आत्म हत्या कर लेना अधिक उचित समझूँगा। मैं तो ऐसी चीजों के लिए जीता हूँ जिनके लिए शायद कल मुझे अपनी जान देनी पड़े। घर-बार, बाल-बच्चों की बात करना मूर्खता नहीं तो क्या है? कहो, तुम्हारी तबियत अब कैसी है?'

'कुछ नहीं। मैंने तुम्हें फोन पर ही कह दिया था कि मेरी तबियत ठीक नहीं है। सिर दर्द कर रहा है। एक गिलास पानी मँगाओ, मैं एस्पिरिन की एक गोली खा लूँ।'

ल्युसियाँ कहता जा रहा था, 'आज वक्त का तकाजा यह है कि त्याग किया जाय, साहस और वीरता से काम लिया जाय। आज घर-बार के चक्कर में पड़ना देश के साथ गद्दारी करना है।' जानेत ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका जोश ठंडा हो चुका था।

दोनों चुपचाप होटल से निकले और एक तङ्ग गली के अन्दर जिसमें एक दीया टिमटिमा रहा था, मुड़ गये। एकाएक जानेत मोड़ पर पहुँचते ही एक केमिस्ट की दूकान के सामने रुक गई। मकान की खिड़की से एक बड़े हरे लैम्प की रोशनी आ रही थी। उसकी हरी रोशनी में जानेत का चेहरा उतरा हुआ मालूम पड़ता था। उसने चुपके से कहा, 'मैं गर्भवती हूँ। अब मुझे एक डाक्टर की खोज करनी पड़ेगी······।'

ल्युसियाँ का हृदय दया और दुख से पीड़ित हो उठा। 'शायद इसकी जरूरत न पड़े,' वह बोला।

जानेत जोर से हँस पड़ी और बोली, 'नहीं, तुमने सब कुछ समझा दिया और मुझको कायल कर दिया है—यह समय ऐसा नहीं है कि······।'

ल्युसियाँ फिर चुप हो गया। इससे जानेत को कुछ बुरा-सा लगा। उसी बनावटी तेज स्वर में उसने कहा—'उत्तेजित न हो। उसके लिए तुम जिम्मेदार नहीं।'

'तुम्हारे कहने का क्या मतलब ? मैं नहीं समझा।'

'जब मैं यात्रा पर गई थी तो विशी में एक रात मेरे बगलवाले कमरे में एक ऐक्टर सोया था। मेरे कमरे का दरवाजा बन्द नहीं हो सका था, उसका ताला टूट गया था। और बस······अब तुम समझे ?'

वह दौड़ती हुई सड़क पर पहुँची और एक गुजरती हुई टैक्सी को रोकने लगी। ल्युसियाँ ने चिल्लाकर कहा—'रुको ! मैं भी आ रहा हूँ।'

'कोई जरूरत नहीं। एकान्त और साहस—यही तो तुमने अभी कहा था न ? अच्छा नमस्कार !'

ल्युसियाँ को तुरन्त ही ऐसा अनुभव हुआ जैसे जानेत उससे झूठ बोल गई

थी। एक एक्टर ! टूटा हुआ ताला ! अजीब बात है। किन्तु क्या वह आंद्रे नहीं हो सकता ? शायद वही हो। कहवाखाने में वह आंद्रे की ओर से आँखें नहीं हटा सकी थी और वह लगातार उसी की ओर घूरता रहा था। इसके अतिरिक्त उसने यह भी पूछा था कि आंद्र को फिर क्यों नहीं निमंत्रित किया गया। निसंदेह वह आंद्रे ही होगा।

वर्षा समाप्त होने पर 'प्लास द-ला कोन्कोर्द' ऐसा चमक रहा था जैसे राज-महल का पालिश किया हुआ फर्श। मोटरों के गुजरने से भींगे रास्ते पर नीले और बैंगनी रंग के धब्बे पड़ गये थे। सड़क के बड़े-बड़े लैम्प ऊष्ण कटिबन्ध के पौधों के समान जगमगा रहे थे और तूलेरी बाग से भींगी मिट्टी की सोंधी महक और वसन्त ऋतु में लदे हुए पेड़ों से फूलों की सुगन्ध आ रही थी। मालूम पड़ता था कि किसी कार्निवल की तैयारियाँ हो रही हैं, किन्तु वातावरण में एक प्रकार की निराशा तथा अनिश्चितता-सी छायी थी। मुँह पर लाल पाउडर थोपे एक बूढ़ी वेश्या ने आगे बढ़ कर ल्युसियां का स्वागत किया। उसे देखते ही ल्युसियां ने अपने कदम तेज किये। नदी के बंद के पास पहुँचकर वह अचानक रुक गया, उसे केमिस्ट की दूकान के सामने खड़ी जानेत की आँखें याद आ रही थीं। लागराज़ की आखें भी उसे इसी तरह लगी थीं; जब उसने ल्युसियां से कहा था 'बहस मत करो। मुझे मालूम है कि यह गैंग्रीन हुआ है।' यह सोचते ही, वह कदम बढ़ाता हुआ चौक पहुँचा और एक टैक्सी लेकर जानेत के घर की ओर चल दिया।

जानेत तकिये में सिर गड़ाये पड़ी थी। उसकी आँखों से आँसू जारी थे। बगल में एक गुड़िया रखी थी। आज उसके हृदय को भारी ठेस लगी थी— ल्युसियां ने कैसे उसकी बिल्कुल झूठी कहानी को सच मान लिया ? वह इसलिए रो रही थी कि उसे ल्युसियां के निर्मम व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था और इसलिए कि उसे अकेलापन महसूस हो रहा था। इससे भी बड़ा एक दुःख था जो उसके अन्दर था किन्तु उसके लिए वह नहीं रो रही थी। इस दुख का वर्णन शब्दों में असंभव था; उसी ने उसके चेहरे को इतना भयानक बना दिया था जिसे देखकर ल्युसियां भी सहम उठा था। आज सबेरे तक उसे आशा थी कि उसके सुख के दिन दूर नहीं हैं।

ज्यों ही ल्युसियां ने कमरे में प्रवेश किया, जानेत ने रोना बन्द कर दिया। वह तुरन्त उठ बैठी और चेहरे को मलते हुए बोली, "देखो ल्युसियां! सब से बड़ी बात यह है कि मुझे तुम से कोई प्रेम नहीं।"

११

सुनसान पुराना नगर, जिसके प्राचीन स्मारकों के बारे में एक दिन प्रोफेसर माले का भाषण हुआ था, इतना बदला हुआ था कि पहचानने में भी नहीं आ रहा था। सड़कों पर, जिन पर कभी बड़े-बड़े धनी घरों की महिलाएँ गप लड़ाती हुई सैर करने निकलती थीं, या पादरी लोग धर्म-पुस्तकों को पढ़ते हुए जाते दिखाई पड़ते थे और छोटे बच्चे खेल खेला करते थे, वहाँ अब जन-साधारण की भीड़ लगी रहती थी। लोग बहस करते और हवा में हाँथ फेंकते दिखाई पड़ते थे। चारों ओर जनवादी मोर्चा, फासिस्टवाद, युद्ध, शान्ति और विधान जैसे अनेक शब्द गूँजते रहते थे। मकानों की पुरानी और बदशकल दीवारों पर, भिन्न भिन्न पार्टियों के चुनाव घोषणा-पत्र चिपके थे। तमाम दिन लोग पेशाबखानों के पास भीड़ लगाये उस गाली-गलौज को पढ़ा करते, जो विरोधी उम्मीदवारों की ओर से पेशाबखानों की दीवारों पर लिखी रहती थीं। पास के प्राचीन गिरजाघरों के बाहरी बरामदों में खड़े लम्बूतरे चेहरेवाले सन्तों की मूर्तियाँ पापियों को आशीर्वाद दे रही थीं और अबाबीलें उड़-उड़कर उनकी उँगलियों पर आ बैठती थीं।

प्रातिये के निर्वाचन क्षेत्र से चैम्बर के लिए पोल तेस्सा के अतिरिक्त तीन और उम्मीदवार खड़े थे। उनमें से दो ने चार वर्ष पहले पिछले चुनाव में भी तेस्सा का विरोध किया था। उनमें से एक था कम्युनिस्ट दिदियर और दूसरा था ग्रांदमेजां, जो एक रिटायर्ड जनरल था और जिसे नगर के अनुदार-दली रईसों और पादरियों ने 'राष्ट्रवादी' टिकट पर खड़ा किया था। उस चुनाव में तेस्सा को अपने विरोधियों को हराने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी। किन्तु इस बार यह बिल्कुल निश्चित तौर से नहीं कहा जा सकता था कि वह जीत ही जायगा, यद्यपि देजेर ने अपना वचन पूरा किया था। 'नई आवाज' ने तेस्सा का बड़ा प्रचार किया था। इसके अतिरिक्त रैडिकलों ने नगर के तीन में से

दो अन्य समाचारपत्रों को भी अपनी ओर कर लिया था। पिछले चन्द सालों में कम्युनिस्टों के भी पैर जम गये थे। वैसे तो दिदियर कोई अच्छा वक्ता नहीं था, फिर भी उसकी सभा में लोगों की अच्छी खासी भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। इसके अतिरिक्त एक और प्रतिद्वन्दी मैदान में आ चुका था। यह था दुगार, जो एक नौजवान कृषक था और जो 'क्रोआ द फिउ' से सम्बन्ध रखता था। वह बड़ा ही जोशीला था, और घर-घर पूँजीपतियों और यहूदियों के 'षड्यंत्रों' का भंडाफोड़ करता और अपने समर्थन के लिए प्रचार करता फिरता था। दूकानदार, जिनकी रोजी बहुत-से 'नियत दामों पर चीजें बेचनेवाले' स्टोरों के खुल जाने से मारी जा रही थी, कारीगर, जो करों के बोझ से कराह रहे थे; अन्य पेशेवर लोग जो समझते थे कि विदेशियों के कारण वे बेकार हो रहे हैं, तथा सूदखोर महाजन, जो स्ताविस्कीवाले मामले से, जिसमें तेस्सा का हाथ रह चुका था, काफी घबराये हुए थे, ऐसे लोग दुगार की बातों को बड़े चाव से सुनते।

सभाओं में काफी हुल्लड़ मचा करता था, और तेस्सा भी, जो सरकारी वकील की हैसियत से कठघरे में खड़े कैदियों का मखौल उड़ाने का आदी था, अकसर ऐसा अनुभव करता मानों वह भी अपराधी हो! दुगार, अकसर बड़ी होशियारी से, एक बैंक चेक का वर्णन करता जिसे स्ताविस्की ने भुनाया था। तेस्सा को अब तक याद भी नहीं रहा कि उसने वह हराम के अस्सी हजार फ्रांक कैसे खर्च किये थे, किन्तु वह सामने वाली मेज पर जोर से घूँसा मार कर चिल्लाता, 'वह रकम उन फौजी सिपाहियों पर खर्च की गई थी, जो लड़ाई में बेकार हो गये थे!' ग्रांद मेजां तेस्सा के आचरण पर आक्रमण करता और उसके समर्थन में ल्युसियां की पुस्तक से हवाले देता, जिसका नाम था—'मैंने अपने पिता के घर में क्या देखा?' दिदियर को तेस्सा के व्यक्तिगत जीवन से कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी। वह अपने भाषणों में प्रायः इसी बात पर जोर देता कि कैसे प्रेस रुपये के बल पर खरीद लिये गये हैं और कैसे 'फ्रांस के दो सौ घराने' घृणित षड्यन्त्रों में लगे हुए हैं। किन्तु तेस्सा सोचता था कि वह कम्युनिस्ट लुहार उसी की ओर इशारा कर रहा है। और भीड़ के नारे भी उसके इस संदेह की पुष्टि करते मालूम पड़ते थे। जहाँ दिदियर ने बतलाया कि कैसे धनियों ने प्रेस को भी फोड़ लिया है, वैसे ही लोग चिल्ला उठते, 'जैसे नई

ज्यों ही ल्युशियां ने कमरे में प्रवेश किया, जानेत ने रोना बन्द कर दिया। वह तुरन्त उठ बैठी और चेहरे को मलते हुए बोली, "देखो ल्युशियां! सब से बड़ी बात यह है कि मुझे तुम से कोई प्रेम नहीं।"

११

सुनसान पुराना नगर, जिसके प्राचीन स्मारकों के बारे में एक दिन प्रोफेसर माले का भाषण हुआ था, इतना बदला हुआ था कि पहचानने में भी नहीं आ रहा था। सड़कों पर, जिन पर कभी बड़े-बड़े धनी घरों की महिलाएँ गप लड़ाती हुई सैर करने निकलती थीं, या पादरी लोग धर्म-पुस्तकों को पढ़ते हुए जाते दिखाई पड़ते थे और छोटे बच्चे खेल खेला करते थे, वहाँ अब जन-साधारण की भीड़ लगी रहती थी। लोग बहस करते और हवा में हाँथ फेंकते दिखाई पड़ते थे। चारों ओर जनवादी मोर्चा, फासिस्टवाद, युद्ध, शान्ति और विधान जैसे अनेक शब्द गूँजते रहते थे। मकानों की पुरानी और बदशकल दीवारों पर, भिन्न भिन्न पार्टियों के चुनाव घोषणा-पत्र चिपके थे। तमाम दिन लोग पेशाबखानों के पास भीड़ लगाये उस गाली-गलौज को पढ़ा करते, जो विरोधी उम्मीदवारों की ओर से पेशाबखानों की दीवारों पर लिखी रहती थीं। पास के प्राचीन गिरजाघरों के बाहरी बरामदों में खड़े लम्बूतरे चेहरेवाले सन्तों की मूर्तियाँ पापियों को आशीर्वाद दे रही थीं और अबाबीलें उड़-उड़कर उनकी उँगलियों पर आ बैठती थीं।

प्रातिये के निर्वाचन क्षेत्र से चैम्बर के लिए पोल तेस्सा के अतिरिक्त तीन और उम्मीदवार खड़े थे। उनमें से दो ने चार वर्ष पहले पिछले चुनाव में भी तेस्सा का विरोध किया था। उनमें से एक था कम्युनिस्ट दिदियर और दूसरा था ग्रांदमेजां, जो एक रिटायर्ड जनरल था और जिसे नगर के अनुदार-दली रईसों और पादरियों ने 'राष्ट्रवादी' टिकट पर खड़ा किया था। उस चुनाव में तेस्सा को अपने विरोधियों को हराने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी। किन्तु इस बार यह बिल्कुल निश्चित तौर से नहीं कहा जा सकता था कि वह जीत ही जायगा, यद्यपि देजेर ने अपना वचन पूरा किया था। 'नई आवाज' ने तेस्सा का बड़ा प्रचार किया था। इसके अतिरिक्त रैडिकलों ने नगर के तीन में से

आवाज को ! दो सौ घरानों के विरुद्ध वह जो जहर उगलता उसके समर्थन में सभा से आवाज आती, 'देजेर देजेर !'

तेस्सा को जीतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी। वह हजारों वोटरों से तरह-तरह की बातें करता, उनकी स्त्रियों के हाल-चाल पूछता और पूछता कि लड़के परीक्षा में पास हुए या नहीं, लड़कियों का विवाह कब होने जा रहा है वगैरह। नागरिकों से वह वादे करता कि यदि वह चुनाव में सफल हुआ तो एक नया पुल और कई बड़े चौक बनवायेगा, उन्हें पेन्शन, पदवियाँ और सरकारी नौकरियाँ दिलायेगा। शराबखानों में वह दलादियर और हेरियो के साथियों के साथ 'प्रजातंत्र' और 'जनवादी विजय' के नाम पर गिलास के गिलास खाली करता। सभाओं में चिल्लाते-चिल्लाते उसका गला बैठ जाता। उसे इश्तहार लिखने पड़ते, अखबारों के लिए रिपार्टों का संपादन करना पड़ता और तरह तरह के कार्टून दिमाग से सोचकर निकालने पड़ते। सोलह-सोलह रोज तक उसे ठीक से नींद नसीब नहीं होती थी। दावतों में शरीक होते-होते पाचन-शक्ति भी खराब हो गई थी। अपनी प्यारी पोलेत के प्रेमालिंगन तो मानो उसे भूल ही गये थे। एक बड़े कहवाखाने के सामने इश्तहार लगा हुआ था, 'पोल तेस्सा की उम्मीदवारी के उपलक्ष में हर समय भोजन उपस्थित।' यहाँ पर तेस्सा अपने समर्थकों को तरह-तरह की भेंटें दिया करता। किसी को घड़ी, किसी को फाउन्टेनपेन और किसी को सौ फ्रांक का नोट ! पेरिस से वह सिनेट के दो-एक सदस्यों को पकड़ लाया था, जो उसके समर्थन में भाषण देते। इस अवसर पर किसी ने एक गाना भी बनाया था।

तेस्सा ने अपना सब से बड़ा अस्त्र अन्तिम क्षण के लिए छिपा रखा था। वह थी मदाम आंत्वाने, जिसके पुत्र को, जो एक छोटा अफसर था, गबन के सिलसिले में दस वर्ष की सजा हुई थी। वास्तव में उसके साथ अन्याय किया गया था। तेस्सा ने उसके मुकदमें में फिर से जाँच करने के लिए सरकार पर दबाव डाला था और उसकी बात स्वीकार हो गई थी। जिस भारी सभा में इस बात की घोषणा की गई, वहाँ मदाम आंत्वाने उपस्थित थी। उसने आखों में आँसू भर जोर से चिल्ला कर, कहा, 'पोल तेस्सा महात्मा हैं !'

शाम के समय, जब वोट गिने जा रहे थे, तेस्सा के लिए खड़ा रहना भी कठिन हो गया। स्नायुओं को शान्त रखने के लिए नारंगी का जो रस दिया

गया उसे भी वह ठीक से नहीं पी सका। थकान से चूर-चूर, वह खिसक कर खिड़की के पास जा बैठा। नीचे लोगों की भीड़ लगी हुई थी और बड़ी उत्सुकता से मुँह बाये चुनाव का नतीजा सुनने की प्रतीक्षा कर रही थी। तेस्सा की नजर एक लड़की पर पड़ी जो देनीजे की तरह जान पड़ी। उस पर निराशा की एक लहर दौड़ गई—वह इस गंदी राजनीति के चक्कर में पड़ा ही क्यों? उसे इससे क्या मतलब कि कौन जीतता है—दुगार या जनवादी मोर्चेवाले?

सब कुछ व्यर्थ ही जान पड़ता था। इससे तो यही अच्छा था कि वह घर पर आराम से अपनी स्त्री और अपने बच्चों के पास होता और कभी-कभी अपनी प्रेमिका पोलेत से भी घंटे आध घंटे प्रेम की बातें कर आता। उसने सोचा, जीवन का आनन्द तो बस इसी में है। ये सारे भाषण और नारे तो व्यर्थ हैं, इनमें जान खपाने से कोई लाभ नहीं!

भीड़ को यह सुनकर निराशा हुई कि किसी उम्मीदवार को पूर्ण बहुमत नहीं मिला और इसलिए एक सप्ताह बाद फिर से चुनाव होगा। पिछले चुनाव के मुकाबले में इस बार तेस्सा को लगभग तीन हजार वोट कम मिले थे। ग्रांद-मेजां को भी पहले से कम ही वोट मिले थे। कम्युनिस्टों को पहले से अधिक मिले थे। तीनों उम्मीदवारों में दुगार के वोट सबसे अधिक थे।

लोग अब हिसाब लगाने लगे, यदि जनरल क्रोआ द फिउ के पक्ष में अपना नाम वापस ले ले, तो दुगार के जीतने की संभावना बढ़ जाती है। क्या दिदियर तेस्सा के पक्ष में चुनाव से हट जाने के लिए तैयार होगा? उदार दल-वाले किसको वोट देंगे? कहवाखानों में बैठे लोग इसी प्रकार खयाली घोड़े दौड़ाने लगे।

उस रोज शाम को एक सभा थी। रैडिकलों ने उसमें कम्युनिस्टों को भी आमंत्रित किया था। हाल लोगों के शोर से गूँज रहा था। हर एक बड़ी उत्सुकता से पूछ रहा था, 'दिदियर क्या कहेगा?'

तेस्सा ने सभा का उद्घाटन करते हुए कहा, 'नागरिको! उस विश्वास के लिए मैं आप को धन्यवाद देता हूँ जिसका पात्र आप ने मुझे समझा है। मैं उन सभी सज्जनों से निवेदन करता हूँ, जिन्हें प्रजतंत्र की रक्षा प्रिय है, जो समाज में शान्ति तथा न्याय देखना चाहते हैं, जो धार्मिक बन्धनों से छुटकारा पाना चाहते हैं, कि वे मुझे ही अपना उम्मीदवार समझें और वोट दें!'

इसके बाद दिदियर के बोलने की बारी आई। उसने कहना शुरू किया, 'कम्युनिस्ट पार्टी के पास न तो घूस देने के लिये पैसा है और न आपका वोट माँगने के लिए उसे धोखा देना आता है। वह तो आप की बुद्धि और अन्तरात्मा से अपील करती है। पिछले चुनाव में हमें कुल छः सौ वोट मिले थे और इस बार दो हजार तीन सौ सत्तर! आप स्वयं ही अनुमान लगा सकते हैं कि हमारी शक्ति कितनी तेजी से बढ़ रही है। हमें और आपको दुगार और ब्रांदमेजाँ जैसे फासिस्टों का मुँह बन्द कर देना है। मस्यो तेस्सा ने अभी आपके सामने वादा किया है कि वह जनवादी मोर्चे के प्रति वफादार रहेंगे। आज फ्रांस के सामने एक संकट का समय है। बाहरी खतरा बढ़ता जा रहा है और देश के भीतर देशद्रोहियों की कमी नहीं है!' बँधी हुई मुट्ठियाँ तुरन्त उसके समर्थन में हवा में तन गईं।

•

तेस्सा ने उठकर बड़े नाटकीय ढंग से झुक कर लोगों को धन्यवाद दिया। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि रोये या गाये। वह दुगार और दिदियर दोनों को ही घृणा की दृष्टि से देखता था। अपने मन में वह कहता, 'मूर्ख कहीं के! कमीने कहीं के!' कम्युनिस्टों ने उसे वोट देने का निश्चय किया था। यह उसकी एक बड़ी विजय थी, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन कौन जाने मजदूर उनकी बात मानेंगे भी?

बिना सभा समाप्त हुए ही वह उठकर अपनी होटल को चल दिया। दर्द के मारे उसका माथा फटा जा रहा था। बेयरे ने उसे रोक कर कहा, 'मस्यो तेस्सा, एक सज्जन आप से मिलना चाहते हैं। वे उधर कमरे में बैठे हैं।'

तेस्सा ने भारी साँस ली। फिर कोई मदद चाहनेवाला आ पहुँचा! लेकिन दरवाजा खोलते ही उसने देखा कि चैम्बर का सदस्य लुई ब्रेतील बैठा है।

•

लोग ब्रेतील का नाम सुनकर घबराते थे। वह बड़ा ही कट्टर रूढ़िवादी था। देखने में वह कोई खिलाड़ी-सा जान पड़ता था। उसका कद छः फुट था, कमर बिल्कुल सीधी, चेहरा धूप में झुलसा हुआ, बाल भूरे और मूछें छोटी और तराशी हुई। पिछली लड़ाई में वह घायल हो गया था, उसके दायें हाथ की दो उँगलियाँ गायब हो गईं थीं। वह बड़ी नपी-तुली बातें करता, शब्द उसके मुँह

से इस प्रकार निकलते जैसे वह किसी को हुक्म दे रहा हो। जब कभी किसी सभा में कोई कम्युनिस्ट बोलने को खड़ा होता तो वह चुपचाप उठकर चल देता। वह कहता था, 'मैं इन लोगों की बात भी नहीं सुनना चाहता!' वह किसी कम्पनी का न तो डायरेक्टर था और न सट्टेबाजी में भाग लेता था। वह सीधा-सादा जीवन व्यतीत करता था। कहा जाता था कि अपनी आमदनी का एक अंश वह केवल प्रचार-कार्य में खर्च करता था। नवयुवकों को ट्रेनिंग देने में उसे बड़ी दिलचस्पी थी। वह लड़कों के दस्ते बनाता, उन्हें फौजी ड्रिल करना सिखाता और उनके सामने 'राष्ट्रीय रक्षकों' और पुलिस की बड़ी प्रशंसा किया करता था। बहुत-से लड़कों को उसने धूप और वर्षा में चलना और हुक्म पाते ही तैयार होना सिखाया था। काफी उम्र में उसने एक कुरूप स्त्री से विवाह किया था, जिसके पास कोई धन न था। वह हमेशा अपने पाँच साल के दुबले-पतले लड़के के पीछे परेशान रहा करता था। बस, यही उसकी एक कमजोरी मालूम पड़ती थी।

तेस्सा दरवाजे पर खड़ा सोच रहा था कि क्या कहे। इतने में ब्रेतील ने कुर्सी से उठते हुए पूछा, 'क्या हाल है पोल? तुम्हारी तबियत कुछ अच्छी नहीं जान पड़ती। मालूम होता है बहुत थक गये हो।'

'बहुत, लेकिन तुम यहाँ कैसे आये? कहीं जा रहे थे क्या?'

'नहीं, मैं पेरिस से आ रहा हूँ। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि दुगार मेरा शिष्य है? वह कम उम्र तो है लेकिन मूर्ख नहीं है। उसे बस साहस दिलाने की जरूरत है।'

'क्षमा करना,' उसने कहा।, 'मैं सोने जा रहा हूँ। थककर बिलकुल चूर हो गया हूँ।'

'जरा रुको तो सही। कुछ बातें करनी हैं, किन्तु यहाँ नहीं। मैं तुम्हारे कमरे में ही आ रहा हूँ।'

तेस्सा ने अपने कमरे में जाकर टाई खोली, जूते उतारे और बिस्तर पर लेट गया। जब ब्रेतील ने आकर दरवाजा खटखटाया तो उसने उत्तर दिया, 'बेहतर होगा कि आज की बातचीत किसी और दिन के लिए टाल दी जाय। मैं बिल्कुल थक गया हूँ। चुनाव के बाद—।'

ब्रेतील ने कुछ नहीं सुना। वह कमरे में घुस आया और बोला, मैं जानता हूँ,

तुम थके हो। मैं तुम्हारा पाँच मिनट से अधिक समय नहीं लूँगा। हमें किसी न किसी निर्णय पर पहुँचना ही है। तुम स्वयं जानते हो कि दुगार के जीतने की पूरी सम्भावना है। उसे पाँच-छः सौ वोट अधिक मिलना निश्चित है। किन्तु मैं इसका विरोधी हूँ कि—'

'किसके विरोधी हो?' तेस्सा ने पूछा।

'मैं चाहता हूँ कि चुनाव में जीत तुम्हारी हो। दुगार बड़ा ही चतुर आदमी है। वह बाद में बहुत काम आ सकता है। लेकिन चैम्बर में पहुँच कर वह केवल एक कठपुतली बन जायगा। भला तुमसे उसकी क्या तुलना हो सकती है। तुम एक अनुभवी राजनीतिज्ञ हो, दुनिया को तुमने देखा-भाला है। तुम एक अच्छे वक्ता भी हो। फिर तुम्हारा नाम भी है। तुम्हारा हारना देश के लिए एक दुर्भाग्य होगा।'

'देखो लुई,' तेस्सा ने कहा, 'मेरी समझ मे नहीं आता कि आखिर तुम्हारा मतलब क्या है? क्यों तारीफों के पुल बाँधे जा रहे हो? क्या तुम अभी तक दुगार की सहायता नहीं करते रहे हो? आज तक कौन-सा ऐसा दिन गया है जब उसने मुझ पर कीचड़ नहीं उछाला?'

'शब्दों को इतना महत्व क्यों देते हो, और फिर चुनाव की सभाओं में? क्या तुम अभी तक जनवादी मोर्चे का प्रचार नहीं कर रहे थे? मैं खूब जानता हूँ कि कम्युनिस्टों के बारे में तुम्हारी क्या राय है। शीघ्र ही मालूम हो जायगा, कि उन्हें सब से अधिक कौन चाहता है—तुम या मैं? अच्छा, पोल अब सुनो, मेरी इच्छा है कि तुम्हीं चुने जाओ। कोई हर्ज नहीं, अगर लोग यह समझते हैं कि तुम जनवादी मोर्चे के समर्थक हो। मतलब तो हमें आदमी से है न कि उसके नाम पर लगी मुहर से। तुम्हें बस एक वादा करना होगा…।'

'अभी एक घंटा पहले मैं कह चुका हूँ कि मैं जनवादी मोर्चे का समर्थन करूँगा।'

'जनता के सामने वक्तव्य देने का प्रश्न नहीं है। सुनो, मैं फिर कहता हूँ। तुम्हारा बस एक शब्द काफी होगा। मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सोच समझ कर कह रहा हूँ। तुम मेरा विश्वास करो। पोल तुम्हें जानना चाहिये कि आज देश के लिए पार्टीबाजी का समय नहीं। राष्ट्र की रक्षा किसी प्रकार भी करनी है। अच्छा, दुगार को चुनाव से हटना ही होगा। वह लोगों से तुम्हें वोट देने के

लिए तो नहीं कहता फिर सकता, लेकिन इतना ही क्या कम होगा कि वह बैठ जाय! तुम्हें दो-तीन हजार वोट मिल जायँगे।'

'लेकिन दुगार के अनुयायी ग्रांदमेजां को वोट देना अधिक पसंद करेंगे', तेस्सा ने कहा।

'क्या? उस बूढ़े जनरल को? मैं उसे खूब जानता हूँ। वह निरा मूर्ख है, हालाँकि वैसे काफी भला आदमी है। कल ही मैं उससे बात करूँगा। अच्छा, तो ग्रांद मेजां भी बैठ जायगा और केवल तुम्हीं उम्मीदवार रह जाओगे। तुम उस एकता के प्रतीक होगे, जो फ्रांस की रक्षा के लिए इस समय आवश्यक है!'

यह इतना बड़ा लालच था और सारी बात इतनी अचानक हुई थी कि तेस्सा की समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। लड़खड़ाते शब्दों में वह बोला, 'प्रतीक! मैं फ्रांस की एकता का प्रतीक।...... अच्छा, तुम तो पेरिस से आ रहे हो, वहाँ भी ऐसी ही गरमागर्मी है? मैं तो इस भागदौड़ से थक गया हूँ—'

ब्रेतील चुप रहा। तेस्सा ने स्वयं अक्ल दौड़ाई, किन्तु कुछ सोच न पाया। जो विचार आते वे गन्दे तालाब की मछली की तरह धुँधले और ऊटपटाँग होते। उसे यह तो निश्चित मालूम पड़ने लगा था कि वह फिर एक बार चैम्बर का सदस्य हो जायगा। उसने एक गिलास पानी पिया और अपने माथे को भींगे तौलिये से पोंछ लिया। धीरे-धीरे उसका दिमाग ठंडा हुआ। तब उसने सोचा, फ्रांस खतरे में है! दुश्मन ताक में है! देश के अन्दर देशद्रोहियों की कमी नहीं। मैं राष्ट्रीय एकता का प्रतीक हूँ! व्यक्तियों का प्रश्न है न कि लेबेल का! कभी वह अपने मन में ब्रेतील के शब्द दोहराता और कभी दिदिबर के। अन्त में वह उस बच्चे की भाँति जिसे एक सुन्दर खिलौना मिलने की आशा हो, लड़खड़ाती जबान से बोला, 'लेकिन मैं कहूँ तो क्या कहूँ?'

'बस यही कि तुम मेरी बात से सहमत हो।'

'अच्छा, तो यही सही। मुझे इनकार करने का अधिकार ही क्या?'

ब्रेतील ने लपककर तेस्सा से हाथ मिलाया और कहा, 'मैं जानता हूँ

तुम कितने ईमानदार आदमी हो। अच्छा, अब जाओ और सुख की नींद सोओ। नमस्कार!'

दूसरे रोज सबेरे तेस्सा देर से सोकर उठा। सूर्य की किरणें झिलमिलियों से छन-छनकर आ रही थीं और उनकी रोशनी में हरे मखमल की पुरानी आरामकुर्सियाँ ऐसी मालूम पड़ती थीं जैसे घास की छोटी-छोटी क्यारियाँ हों। होटल के बाहर तेस्सा को एक पोस्टर दिखाई पड़ा जो हाल में लगाया गया था। उसमें लिखा हुआ था, 'जैक दुगार की ओर से मतदाताओं को धन्यवाद! देश-भक्ति के नाम पर अब वे अपना नाम वापस ले रहे हैं। फ्रांस जिन्दाबाद!' उसे पढ़कर तेस्सा को हँसी आ गई। उसने एक जवान मालिन को आँख मारी और गौर से उसकी ओर देखने पर उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे उसकी प्यारी पोलेत ही समाने खड़ी हो। उसे फिर जीवन आनन्दमय प्रतीत होने लगा।

तेस्सा हर उस जगह ठहरता गया जहाँ पोस्टर लगा हुआ था। लोग इस घोषणा की ही बातें कर रहे थे। एक टैक्सी-ड्राइवर ने अपनी टैक्सी से उतर कर पोस्टर को जोर से पढ़ा और जमीन पर थूक दिया, 'कितना भारी मक्कार है!' उसने कहा। लेकिन फिर भी तेस्सा की खुशी में कोई कमी नहीं आई। उसने सोचा कि दो-एक रोज के लिए पेरिस ही क्यों न चला जाऊँ। एक शाम पोलेत के साथ भी बिताने को मिलेगी। वह एक दूकान में गया और देनीजे के लिए चाकलेट का डब्बा खरीद लाया। फिर उसने एक छोटे काफे में बैठकर 'ब्रान्डी' लाने का हुक्म दिया। पासवाली मेज पर एक आदमी बैठा था जो इतने सबेरे भी शराब के नशे में चूर मालूम पड़ता था। अखबार में लिपटी हुई पावरोटी से टुकड़े तोड़-तोड़ कर वह चिड़ियों को खिला रहा था। तेस्सा की ओर उसने मुड़कर कहा, 'चिड़ियों से बातचीत करने में कितना आनन्द आता है! चुनाव! जिधर देखो वही बात...मैं तो तंग आ गया!'

'तुम किसके पक्ष में हो?' तेस्सा ने वैसे ही पूछ दिया।

'मैं! मैं अपने पक्ष में हूँ और उन चिड़ियों के! मैं तो वोट ही नहीं डालने जा रहा हूँ! सब व्यर्थ है, पाखंड है!'

तेस्सा हँस पड़ा। 'बहुत खूब!' वह बोला, 'अच्छा बताओ तो सही क्या पीना पसन्द करोगे? खर्च मेरे जिम्मे!'

तेस्सा चार बजेवाली ट्रेन से पेरिस के लिए रवाना हो गया। एक घंटे

बाद, ब्रेतील भी मारक्विस द नियो के घर चल दिया। वहाँ हर मंगलवार को प्वातिय के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग इकट्ठे हुआ करते थे। उनमें अधिकतर बिगड़े हुए जमींदार होते थे, जो रहते तो थे सादगी से लेकिन तौर-तरीके सारे पुराने ही कायम रखे हुए थे। यहाँ आने वालों में दो कारखानेदार, पुरातत्व विद्यालय के एक प्रोफेसर और कुछ पादरी भी थे। एक नौकर हल्की चाय और 'सैंडविचें' लोगों को पेश करता फिरता था। मारक्विस अपनी कंजूसी के लिए मशहूर थी। होता यह था कि पाँच मिनट वैदेशिक राजनीति पर और प्राचीन स्थानों की खुदाई पर (यह नगर अपने प्राचीन भग्नावशेषों के लिए प्रसिद्ध था और सभी स्थानीय रईस पुरातत्त्व विद्या के बड़े प्रेमी थे।) बातें करने के बाद इधर-उधर की गप शुरू हो जाती थी। किन्तु आज की बहस दुबारा होनेवाले चुनाव के बारे में थी। ग्रांदमेजां आज का हीरो था। वह चिड़चिड़े स्वभाव का आदमी था, किन्तु उससे किसी को हानि पहुँचने का खतरा नहीं रहता था। खोपड़ी उसकी ऐसी थी जैसे किसी नवजात शिशु की होती है। गठिया से पीड़ित पैरों में वह स्लीपरें पहने रहता था। जब कभी वह बिगड़ता था तो अपने गठिया से पीड़ित पैरों को तान कर चिल्लाता, 'ऐसा कभी नहीं हो सकेगा!'

ब्रेतील ने जोर से अपना प्याला हिलाया और कहा, 'मित्र, आज जैसी परिस्थिति उत्पन्न हो गई है, उसमें तुम्हारा बैठ जाना ही सबसे अच्छी बात होगी।'

'कभी नहीं! मैं दुगार थोड़े ही हूँ। मैं जानता हूँ कि जीत तेस्सा की ही होगी, लेकिन ऐसे अवसरों पर हार जीत से अधिक सम्मानपूर्ण होती है!'

'खफा होने की कोई बात नहीं,' ब्रेतील बोला। 'तुम्हें दो हजार वोट मिलने का क्या परिणाम होगा? जानते हो, तेस्सा हमारे दुश्मनों के खेमे में जा पहुँचेगा, हलाँकि वह है बड़े ही काम का आदमी!'

उसका इतना कहना था कि चारों ओर से क्रोधभरी आवाजें आने लगीं।

'वह तो शोतें का आदमी है! स्ताविस्की वाले मामले को भूल गये!'

'वह तो फ्रीमेसन है! वह 'ग्रैंड ओरियेंट लॉज का मेम्बर है!'

'और फिर देजेर के पैसे को भूल गये?'

'वह ठीक किस्म का आदमी है!' ग्रांदमेजां गरजा। 'तुम्हें मालूम है, उसने

क्या-क्या लिखा है! वह तो निरा अधर्मी है।' नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।'

ब्रेतील ने बहुत उत्तेजनापूर्वक स्वर में, जैसा कि उसे पहले कभी नहीं देखा गया था, कहा, 'अच्छा, तो सीधी बात अब सुनो! हमारा देश क्रान्ति के निकट जा पहुँचा है। जनवादी मोर्चे से, हो सकता है देश लड़ाई में खिंच जाय। और यदि देश की विजय होती है तो भी हमारी हार ही है। तेस्सा धार्मिक शिक्षा का विरोधी है, यह बात ठीक है। लेकिन किसी के जुकाम से पीड़ित होने पर इतनी चिंता करने की क्या आवश्यकता, जबकि वह क्षय रोग की अन्तिम मंजिल पर पहुँच चुका हो! इसमें संदेह नहीं कि तेस्सा कम्युनिस्ट नहीं है। कल ही मैंने उससे बातें की थीं और उसने मुझे पूर्ण विश्वास दिलाया है। जल्द ही 'जनवादी' मोर्चे के हाथ में ताकत आनेवाली है। अगर हम उसे बाहर से नहीं रोक सकते तो अन्दर से ही घुसकर क्यों न उसे नष्ट कर दिया जाय। तेस्सा ऐसे लोग हमारा काम करने के लिए तैयार हैं। फ्रांस की रक्षा के लिए मैं तो न केवल तेस्सा से ही बल्कि जर्मनों से भी हाथ मिलाने को तैयार हूँ। हाँ, हाँ, जरा रुको, मुझे कह लेने दो! अगर कल मुझसे कहा जाय कि क्रान्ति होनेवाली है, तो मैं तो तुरन्त कहूँगा कि 'बुलाओ हिटलर को!'

चारों ओर सन्नाटा छा गया। मारक्विस द नियो ने चुपके से कहा, 'बात तो आपने मार्के की कही, मस्यो ब्रेतील! लेकिन बड़ा ही दुखदायी मामला है। ईश्वर जानता है, सारी बातें सोचकर मेरा तो दिल बैठ जाता है!' यह कहते-कहते उसने चीनी का चम्मच फर्श पर गिरा दिया।

१२

भोजन के समय तेस्सा के मन में आया कि वह अपने घरवालों को भी अपनी विजय का समाचार सुनाये। सामने रखे हुए स्वादिष्ट भोजन को देखकर जिससे भाप निकल रही थी, उसका मन हुआ कि राजनीतिक चर्चा छेड़े।

'परिस्थित बड़ी गम्भीर हो चुकी थी,' वह बोला। 'दुगार मुझे बदनाम करने पर तुला हुआ था—वही स्ताविस्कीवाला मामला—! हाँ, ल्यूसियां, तुम्हें तो

खुशी मनानी चाहिये कि तुम्हारी किताब की बेहद माँग है—और यह सब मेरे कारण है। ग्रांदमेजां रोज उसमें से नया मसाला निकालता है और कहता है—देखो, उसका अपना पुत्र क्या खिलता है!' अच्छा, आज इतनी अच्छी बतख कहाँ मिल गई? अमेरिकन झींगा मछली तो सबसे अच्छी प्वातिये में खाने को मिली थी। हाँ, तो मैं कह रहा था कि कम्युनिस्ट भी पीछे नहीं रहे। आजादी और शान्ति का वही अपना पुराना गैरजिम्मेदारी से भरा नारा लगाकर मुझे पछाड़ने की फिक्र में थे। नतीजा यह हुआ कि अब दूसरा चुनाव होने जा रहा है। मुझे तो लगता था कि मैं मारे थकावट के मर जाऊँगा। सिर दर्द का तो कहना ही क्या······। देनीजे, आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ क्यों है? तुम्हें प्वातिये घूम आना चाहिये। रोमन नमूने के गिरजे स्वयं एक अद्भुत चीज हैं। मैं सोच रहा था कि अगर कम्युनिस्ट अपने उम्मीदवार को हटा लें तो दोनों के जीतने की सम्भावना बराबर-बराबर हो सकती है। लेकिन, ऐसी अफवाह है कि कम्युनिस्ट फिर दिदियर को वोट देने जा रहे हैं। तुमने देखा, ल्युसियां के मित्र मुझे पसन्द नहीं करते। खैर, मैंने खड़े होकर ऐलान कर दिया है कि मैं जनवादी मोर्चे की ओर से खड़ा हो रहा हूँ। इतना कहना था कि बड़े जोरों की तालियाँ बजीं। लोगों ने मुट्ठियाँ तान दीं। मैं सच कहता हूँ, मुझे यह तरीका बिल्कुल पसन्द नहीं। भई, आज की यह बतख बड़ी जायकेदार है। पहली अड़चन तो हमने दूर कर ली। कम्युनिस्टों ने एलान किया है कि वे मुझे वोट देंगे। लेकिन अब दक्षिण पंथियों ने शोर मचाना शुरू किया है। वे हर एक को घसीटना चाहते हैं। तो मैं कह रहा था कि जीतने की सम्भावना बराबर-बराबर है, लाल और काले दोनों की······।'

इतना कहकर वह बतख के एक बाजू का गोश्त चिचोड़ने लगा।

'कुछ भी हो, आपके मुकाबले में फासिस्टों की अवश्य हार होगी,' ल्युसियां बोला। 'देश भर में लोगों का यही अनुमान है कि—'

'लेकिन ठहरो! तुम्हें नहीं मालूम कि हुआ क्या? बिल्कुल तमाशा था! प्रिये, मुझे कुछ सलाद तो दो। तुम्हारा क्या हाल है? तुम्हें सलाद भी खाने को नहीं मिलती? डाक्टरों की राय भी बड़ी बेढंगी होती है। अच्छा, ल्युसियां, मालूम होता है तुम अभी तक नहीं सोच पाये। दुगार बैठ चुका है और मैं ही अकेला उम्मीदवार रह गया हूँ। इसे कहते हैं राष्ट्रीय एकता!'

ल्युसियां अपने को रोक न सका। वह बोला, 'आपने इसे स्वीकार कर लिया ? कितना खराब हुआ !'

तेस्सा को उसकी बात कुछ अच्छी न लगी। उसने कहा, 'इसमें क्या खराब हुआ ? सभी पार्टियों ने मुझे वोट देना स्वीकार कर लिया है। यह तो गर्व करने की बात है। क्या राष्ट्रीय एकता कोई खराब चीज है ? वह तुम्हारा कम्युनिस्ट कुफुलसाज भी लगातार फ्रांस-फ्रांस का ही दम भरता था। मालूम होता है कि तुम वक्त से काफी पीछे रहते हो !'

भोजन का सारा मजा किरकिरा हो गया। स्वयं तेस्सा के घरवाले उसकी बात को नहीं समझ रहे थे। उसकी स्त्री ठण्डी साँसें ले रही थी, देनीजे का ध्यान बिल्ली के बच्चों की ओर था और वह नमकहराम आवारा ल्युसियां मखौल उड़ाने की कोई और ही तरकीब सोच रहा था। तेस्सा कॉफी पीकर उठ गया और काम का बहाना करके चल दिया। सभी जानते थे कि वह खाने के बाद सोता है, लेकिन वह इसे 'काम' कहा करता था।

ल्युसियां को अब पश्चात्ताप हो रहा था कि उसने व्यर्थ ही जबान खोली। वह तो इस इरादे से बैठा था कि अपने पिता से पाँच हजार फ्रांक की माँग करेगा। जानेत का आपरेशन हुआ था और दूसरा कोई ऐसा था नहीं जिससे वह रुपया उधार माँग सकता। इसलिए अब वह सोच रहा था कि पिता को नाराज करके मैंने कितनी मूर्खता की। अगर अब माँगूंगा तो तुरन्त इनकार कर देंगे। उसे जानेत की आँखें याद आ गईं, और सब कुछ भूलकर वह अपने पिता के कमरे में घुस गया। उसने कहा, 'मुझे पाँच हजार फ्रांक की जरूरत है।'

तेस्सा चुप रहा।

अचानक ल्युसियां बोला, 'मेरा अभिप्राय आपको नाराज करने का नहीं था। बिगड़ने की कोई जरूरत नहीं।'

तेस्सा सोफे पर लेटा हुआ था। मारे गुस्से के उसके चिड़िया जैसे चेहरे की रेखाएँ उभर आई थीं और पसीने की बूँदें दिखाई दे रही थीं। पीला, मुर्झाया-सा हुआ वह इस प्रकार लेटा था जैसे कोई लाश पड़ी हो।

'किस लिए चाहिए, पाँच हजार ? फिर कोई खुराफात करने का इरादा होगा…?'

ल्युसियां ने कोई उत्तर नहीं दिया। तेस्सा ने उसकी ओर देखा और मुँह फेर लिया। उसने सोचा कि ऐसा आदमी कुछ भी कर सकता है। तेस्सा के चाचा के बाल भी उसी रंग के थे जैसे ल्युसियां के। घर में कोई उसका नाम भी नहीं लेता था। उसने एक जाली चेक बनाकर रुपया वसूलने की कोशिश की थी और जिसका नतीजा यह हुआ था कि उसे सात वर्ष की कैद ठुक चुकी थी।

उसने उठकर चेक लिख दिया। ल्युसियां उसे लेकर बाहर चला गया।

ल्युसियां देनीजे से कह रहा था, 'तुम चाहे जो भी कहो, बात बड़ी अजीब है। वे कम्युनिस्टों के साथ भी हैं और फासिस्टों के साथ भी! इसमें गर्व की कौन-सी चीज है?'

'मुझे भी उनकी दशा पर अफसोस होता है,' देनीजे बोली। 'वे पिछले एक साल में, लगता है, सठिया गये हैं!'

'आश्चर्य की कोई बात नहीं। इस उम्र के आदमी को बरबाद करने के लिए पोलेत काफी है!'

'ल्युसियां!'

उस रोज शाम को तेस्सा ने कुछ पुराने ढंग से दिल बहलाने की कोशिश की। वह पोलेत के घर गया और फिर वहाँ से दोनों होटल में भोजन करने पहुँचे। नाचती हुई लड़कियों के पैरों को उठते और गिरते हुए वह देखता रहा। उसने अपने मन में कहा, इसका नाम है जीवन। उसने शैम्पेन के गिलास के गिलास पी डाले। लेकिन उस पर कोई असर न हुआ। एक प्रकार की चिन्ता का बोझ उस पर लदा ही रहा।

वह दो बजे घर लौटा। उसकी स्त्री पेट पर गरम पानी की बोतल बाँधे रोज की तरह 'पेशेंस' खेल रही थी। तेस्सा को देखते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी और बोली, 'धन्य है भगवान, तुम वापस तो आये। मेरे पेट में कितना भयानक दर्द है!'

'कोई डर नहीं, अमेली! डाक्टर ने कहा है, वह जल्द ही जाता रहेगा!'

'नहीं, मैं जानती हूँ, नहीं जायगा। मैं तो अब मर जाऊँगी।'

'क्या बेकार की बातें करती हो? डाक्टर तो कहता है कि ठीक हो जायगा। मैं उससे कह आया हूँ, तुम सब के बाद मरोगी।'

'ऐसे जीने से लाभ ही क्या? मैं तुम्हारे किसी काम की तो रही नहीं।

आज मैं तुम्हारे ही लिए उठी थी और देखो, यह दशा हो गई। मुझे मौत से डर नहीं। डर तो और ही किसी चीज से है। मुझे मालूम है तुम्हें किसी चीज में विश्वास नहीं···लेकिन कयामत का दिन तो निश्चित है ही···मैं बच्चों के सामने कुछ कहना नहीं चाहती ··तुम कम्युनिस्टों से मेल-जोल बढ़ा रहे हो! मेरी समझ में नहीं आता, तुम ऐसा कर कैसे पाते हो? आजकल उनकी क्या हरकतें हैं यह मैंने कल ही अखबार में तो पढ़ा था। मालगा में उन्होंने आठ गिरजे जला डाले! कितने बड़े पिशाच हैं! और मेरा ही पति उनके साथ दोस्ती करता फिरे। उफ्, कितने दुःख की बात है!'

तेस्सा कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट गया। उसने कहा, 'शायद तुम यह समझती होगी कि ऐसा करना मुझे स्वयं घृणित नहीं मालूम पड़ता। किन्तु ऐसी बात नहीं, मैं भी नहीं चाहता। लेकिन किया क्या जाय? राजनीति ही गन्दी चीज है। इससे तो सट्टेबाजी कहीं अच्छी! लेकिन तुम्हें चिन्ता किस बात की? रुपये की हमें कोई कमी तो है नहीं। किसी न किसी तरह हमारा काम चलता ही रहेगा। हाँ, ये बच्चे जरूर एक समस्या हो गये हैं। ल्युसियां आज फिर मुझसे पाँच हजार ले गया। अगर जो कुछ वह माँगे वह उसे न दिया जाय, तो वह चोरी-डाका करेगा। और देनीजे, कौन जाने वह भी किसी प्रेमी के जाल में किसी रोज फँस जाय। मैं नहीं चाहता कि वह कभी अपने पति के ऊपर आश्रित रहे। अभिमान भी तो उसमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। बिना पैसे के उसका काम चल नहीं सकता। देखती हो न तुम, अभी से मेरी दशा खराब है!

उसकी पत्नी ने उसका चुम्बन लिया और रोशनी गुल कर दी गई।

तेस्सा चित लेटा अँधेरे में ऊपर ताक रहा था। वह जानता था कि नींद तो आने से रही। छोटे-छोटे चमकीले कण, शैम्पेन के गिलास में आनेवाले बुलबुलों की तरह, उसकी आँखों के सामने नाच रहे थे। उसने धीरे से पुकारा 'अमेली!' किन्तु उसने उत्तर न दिया। वह नींद में कराह रही थी। तेस्सा को डर लगने लगा। उसने सोचा अमेली शीघ्र मर जायगी, मैं भी मरूँगा ही, तब क्या होगा? उसे याद आया कि कैसे लारोश को जिसने पुलिस के एक सिपाही को मार डाला था, कतल कर दिया गया था। पतझड़ का मौसम था, सड़कों पर पेड़ों की पत्तियाँ बिखरी थीं, तेज धूप निकली थी। फाँसीवाले दिन

लारोश ने रम पी थी और उसका चसका लेकर कहा था, 'खूब !' लोग समझते थे कि वह चुपचाप जान दे देगा, लेकिन जब उसे फाँसी के तख्ते के .पास ले जाया गया तो उसने ऊधम मचानी शुरू की। नतीजा यह हुआ कि उसे घसीट कर छुरे तक पहुँचाया गया और उसके गिरते ही वह चीख मारकर चिल्लाया था। तेस्सा इस दृश्य को देखकर काँप उठा था। अब भी उसे लारोश की चीख सुनाई दे रही थी, अब भी उसकी नजरों के सामने छत के पास छोटे चमकदार कण नाच रहे थे। उसने सोचा, अमेली का हिसाब-किताब तो ठीक है ! उसे स्वर्ग और नरक में विश्वास है। यह भी जान बचाने का एक तरीका है। लेकिन नरक जैसी कोई चीज तो है ही नहीं। सिर्फ कब्र है और उसका ठण्डा एकांत है ! इन विचारों को सहन न कर सकने के कारण वह चिल्ला पड़ा। उसकी स्त्री जाग उठी। उसने पूछा, 'पोल, क्या हो गया ?'

'मैं सपना देख रहा था,' उसने अपराध स्वीकारते हुए कहा।

१२

आगस्त विलार, जिसके बारे में जोलियो तरह-तरह के किस्से गढ़ा करता था और पियेरे जिसकी पूजा करता था, एक शान्त स्वभाव प्रोफेसर-सा लगता था। वह सदा विचारों में खोया रहता था। उसकी हर चीज जैसे किसी गुजरी हुई दुनिया से सम्बन्ध रखनेवाली मालूम पड़ती थी। उसका चश्मा, चौड़े किनारे वाली काली हैट, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर उसकी रुचि, अलंकारों की भाषा में बोलने का उसका तरीका, सभी कुछ।

विलार का जन्म शैलों में हुआ था, उसी साल जिस साल देश में हाहाकार मचा हुआ था और जर्मनों की गोलियाँ सनसनाती हुई विलार के पालने के पास से होकर निकल जाती थीं। उसका पिता पक्का जनतन्त्रवादी था, जिसे 'छोटे नेपोलियन' पर आक्रमण करने के कारण दो वर्ष की सजा भी हुई थी। बचपन ही से आगस्त विद्रोहियों के नाम सुनने और समाजवाद पर गरमागरम बहस करने का आदी था।

पेरिस में रहकर उसने इतिहास में डिग्री प्राप्त की। चाहता तो वह था राज-नीति के अखाड़े में कूदना, लेकिन अपने समकालीन बहुत से दूसरे नवयुवकों

की भाँति उसे भी शुरू-शुरू में साहित्य और कला का चस्का लगा। विद्यार्थी-जीवन में अक्सर वह कहवाखानों में वृद्ध कवि वर्लेन से भेंट करने जा पहुँचता था, जो शराब के नशे में कभी-कभी दो-चार सुन्दर वाक्य इस तरह कह जाता जैसे टेलीग्राफ के तारों पर न मालूम कहाँ से आ बैठने वाली कोई चिड़िया चहचहा उठती है। विलार ने अपनी कविताओं का एक संग्रह भी प्रकाशित किया था। दूसरों की नकल तो उनमें बहुत थी लेकिन कहीं-कहीं उसकी अपनी अद्भुत बुद्धि की झलक भी दिखाई पड़ती थी। वह अखबारों के लिए कला-प्रदर्शिनियों के परिचय लिखता और एक समालोचक बनने की कोशिश करता। किन्तु वह एक मामले में फँसकर ज़ोरे का शिष्य बन गया था। अत्यन्त ही शील स्वभाव होने के कारण वह हर प्रकार का काम करने के लिए तैयार रहता था। वह छोटे-मोटे अखबारों में लेख भेजता, पादरियों की धज्जियाँ उड़ाता और देहातों में घूम-घूमकर अपनी काँपती हुई आवाज में शस्त्रीकरण के विरुद्ध प्रचार करता और स्त्रियों के लिए समानाधिकार की माँग करता। अवकाश मिलने पर वह काफी अध्ययन करता, साहित्य में उसकी दिलचस्पी बनी रही। मित्रों ने मजाक में उसे 'हमारा एथेन्सवासी' कहना आरम्भ कर दिया था। लड़ाई से कुछ पहले वह चेम्बर का सदस्य चुना गया। उन्हीं दिनों उसने एक डाक्टरनी से विवाह भी कर लिया। चेम्बर में उसे महत्व-पूर्ण विषयों पर भाषण करने का काम नहीं सौंपा जाता था। वह अधिकतर भिन्न-भिन्न सरकारी कमेटियों में रख दिया जाता। उसे सांस्कृतिक समस्याओं का विशेषज्ञ माना जाता था। उसने कई अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों में भी भाग लिया था, जहाँ लेनिन, बेबेल और प्लेखानोफ से उसकी भेंटें हुई थीं। उसे पूर्ण विश्वास था कि चुनाव में बहुमत से जीतने पर समाजवादी दल देश में मौलिक परिवर्तन कर सकता है।

किन्तु इसी बीच लड़ाई छिड़ गई। विलार को इससे एक बड़ा धक्का पहुँचा। उसके सारे सुहावने सपने देखते-देखते चकनाचूर हो गये। फिर भी उसने जिमरवाल्ड कान्फ्रेंस में यह कहकर भाग लेने से इनकार कर दिया कि श्रमिक वर्ग को राष्ट्र के विरुद्ध उभारना असंभव है। उसका काम अब केवल यह रह गया था कि वह समाचारों पर प्रतिबन्ध लगाने और बिना मुकदमा चलाये लोगों को गोली मारने की नीति के विरोध में आवाज उठा दिया करे।

फिर युद्ध के बाद का तूफानी दौर आया। विलार ने रूसी क्रान्ति का तो स्वागत किया, किन्तु कम्युनिस्टों की निन्दा की। वह कहता था, 'हमें अपने रास्ते पर ही चलना चाहिये।' लड़ाई ने रक्तपात के प्रति उसकी घृणा और बढ़ा दी थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि यदि मानव-समाज उन्नति की ओर बढ़ सकता है तो केवल शान्तिमय तरीके से ही।

अपनी उम्र तथा अपने विस्तृत ज्ञान के कारण वह समाजवादी पार्टी का एक बड़ा नेता बन गया था। मानसिक प्रगति के दृष्टिकोण से तो वह बूढ़ा हो चुका था और उसका ज्ञान-स्रोत सूख चुका था। उसकी स्त्री मर चुकी थी। बच्चों का विवाह हो गया था। वह एक बड़े फ्लैट में अकेला रहता था जो एक पिक्चर गैलरी-सा लगता था। पेन्टिंग का वह अब भी उतना ही प्रेमी था। अब उसे दिनोदिन एकान्त की आवश्यकता अनुभव हो रही थी। अवालो में उसका एक छोटा-सा बँगला भी था, जो वेस्टेरिया की लता से ढँका रहता था। वहाँ वह अकसर जाकर रहता और बाग की टूटी हुई कुर्सी पर बैठ कर कौओं की काँव-काँव या मेंढकों की टर्र-टर्र सुना करता था। चेम्बर के अधिवेशनों से लौट कर वह अपनी पुत्री की तसवीर के सामने, जो रेन्वा की पेन्ट की हुई थी, जा बैठता और तसवीर के गुलाबी पेंट की मन ही मन प्रशंसा करता; क्योंकि वह ताजे मुरब्बे के ऊपर के फेन की तरह बिल्कुल ताजा और अत्यन्त आकर्षक लगता था। यह भय कि कहीं कोई चीज उसके शान्तिमय जीवन में विघ्न न डाल दे, उसके राजनीतिक कार्यों पर भारी प्रभाव डाले हुए था। विलार, जिसे दक्षिणपंथियों ने अपने कार्टूनों में दाँतों में चाकू दबाये हुए दिखाया था, वास्तव में वह बहुत ही सज्जन था, और पुराने क्रान्तिकारी वाक्य बार-बार दोहराने में केवल अपनी आदत से लाचार था।

अचानक, समुद्र पर चलनेवाली तेज हवा की तरह, देश में एक तूफान उठा। संसार में अपने लिए कोई स्थान न पाकर, नवयुवकों ने गरम दलों की ओर झुकना शुरू किया। फरवरी में जो बलवे हुए, उन्होंने विलार को डरा दिया। वह ब्रेतील के अनुयायियों से घृणा करता था, क्योंकि वे लोग देश की शान्ति को भंग करना चाहते थे। विलार जनवादी मोर्चे का समर्थक बन गया। उसने कम्युनिस्टों के प्रति अपने पुराने वैमनस्य को भी किसी प्रकार दबा दिया।

वह इस प्रकार अवालो वाले अपने घर की तसवीरों और चैम्बर में अपनी सीट की रक्षा कर रहा था।

चुनाव होने के कुछ दिन पहले, वह एक सभा में एक ही मंच से कम्युनिस्टों के साथ बोलने के लिए खड़ा हुआ और दस हजार उपस्थित जनता ने बड़े जोर की तालियों से उसका स्वागत किया। उसने प्रजातन्त्रवाद, तनखाहों सहित छुट्टी, नागरिक शान्ति आदि-आदि विषयों पर व्याख्यान देना आरम्भ किया, लेकिन एक जन्मजात वक्ता होने के नाते उसने शीघ्र ही भीड़ की नब्ज पहचान ली। उसने भाषण का रुख बदला; उसकी आवाज जोर पकड़ती गई। अब वह स्पेन के बारे में बोल रहा था जहाँ जनवादी मोर्चे की विजय हो चुकी थी। उसने कहा, 'एस्त्रामादुरा के किसानों ने वहाँ के जमींदारों की जमीनें जोत डाली हैं। मठों में पुराने धार्मिक चिन्हों की जगह अब भूगोल संबंधी यन्त्रों ने ले ली है। मजदूरों ने अपनी आजादी की रक्षा के लिए गोली चलाना सीखना शुरू कर दिया है।'

इतना कहना ही था कि दस हजार की भीड़ से नारा आया, 'जनवादी मोर्चा जिन्दाबाद!' मिशो और देनीजे सबसे ऊपर की गैलरी में बैठे थे। मिशो ने जोर-जोर से तालियाँ बजानीं और नारे लगाने शुरू किये।

विलार के बाद एक कम्युनिस्ट लेग्रे बोलने उठा। देनीजे बोली, 'अरे इसे तो मैं जानती हूँ!' यह वही मजदूर था, जिसके चेहरे पर जख्म का निशान था और जिसने उससे पूछा था कि वह कहाँ से आई थी।

वह कम्युनिस्ट कह रहा था, 'साथियो, यह केवल वोट देने भर का प्रश्न नहीं। हमें जनवादी मोर्चे की सरकार के लिए, यदि जरूरत पड़े तो सीने पर गोलियाँ भी खाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। अब केवल बातें बनाने का समय नहीं रहा, हमें रणक्षेत्र में उतरना पड़ेगा। आपका काम इतना आसान नहीं। आज आपको प्रण करना है कि विजय आपकी ही होकर रहेगी!'

बिलार ने खुश होकर लेग्रे से हाथ मिलाया। सभी को यह चीज अच्छी मालूम हुई। ऐसा प्रतीत होता था कि प्राचीनकाल के काल्पनिक समाजवादी तथा स्वप्नदर्शी आज जनता का अभिनन्दन कर रहे हैं जो न केवल त्याग ही कर सकती है, बल्कि विजय भी प्राप्त कर सकती है।

देनीजे और मिशो निकलकर बाहर पहुँचे। सड़क पर काफी गर्मी थी।

वाह भी रुकी हुई थी। जैसे आँधी आने वाली थी। काफे के चबूतरों पर बैठे लोग शराब पीते जाते थे और चेहरे पर से पसीना पोंछते जाते थे।

अभी केवल छः सप्ताह ही बीते थे लेकिन लगता था जैसे मिशो और देनीजे वर्षों पुराने साथी हैं। 'विलार बोलता खूब है,' देनीजे ने कहा। 'लेकिन उसमें मुझे कहीं कोई कमी मालूम पड़ती है।'

'वह जो कुछ कहता है उसमें उसे स्वयं विश्वास नहीं।'

'मेरा तो अनुमान है कि विश्वास तो उसे है, लेकिन आधा है! मैं उसकी यह चीज समझ सकती हूँ, क्योंकि मेरा भी तो यही हाल है। मैं कोई बात बड़े निश्चय के साथ कहती हूँ किन्तु दूसरे ही क्षण मुझे स्वयं उसमें सन्देह होने लगता है।' वह मुसकरायी। 'मैं केवल सभाओं में बोलती नहीं। मुझे लेग्रे पसन्द है। कम से कम वह जो कुछ कहता है उसमें विश्वास तो करता है।'

'शब्दों के पीछे काम भी होना चाहिये,' मिशो बोला।

'क्या यह संभव भी है?'

'हाँ, हाँ, क्यों नहीं। खून से……।'

इतने में बिजली कड़की और पानी बरसने लगा। उन्होंने भाग कर एक छज्जे के नीचे पनाह ली। वे पानी बरसने तक एक-दूसरे से सटे खड़े चुपके-चुपके बातें करते रहे, हालाँकि कोई पास में सुनने वाला न था।

देनीजे ने उसे अपनी जीवन-कथा सुनानी शुरू की, 'संसार में कितना झूठ भरा है। मैं अपने पिता के बारे में तुमसे क्या कहूँ। कुछ कहना उचित भी न होगा। किन्तु इस प्रकार कब तक चल सकता है! कभी-कभी तो मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे मैं पानी से निकाल कर बाहर फेंकी हुई मछली की तरह बेबस और लाचार हूँ। कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारी राय नहीं माँगती। मुझे तो तुम्हें केवल बतलाना था।'

'तरीका बहुत ही आसान है…'

'नहीं, मेरे लिए आसान नहीं, तुम्हारे लिए भले ही आसान हो। तुम्हारी क्या बात, तुम इस प्रकार के जीवन के आदी हो चुके हो। शायद तुम्हारे वंश में भी यही चला आया है, कम से कम बचपन से तो तुम इसे देखते ही रहे हो। लेकिन मैं और ही किसी वातावरण में पली हूँ। तुम्हारे साथ मेरा क्या

सम्बन्ध है, इसका अनुभव वैसे तो मुझे कुछ नहीं होता, लेकिन कभी-कभी सभाओं में बड़ा महसूस होता है। मुझे कोई भी बात पहले सात बार दिमाग में सोचनी पड़ती है, तब मैं उसे कहती हूँ। यदि ऐसा न करूँ तो मेरी भी वही दशा हो जो मेरे भाई की हो चुकी है। वह बुरा नहीं, लेकिन थोड़ा-सा बेवकूफ किस्म का आदमी जरूर है। जब देखो किसी न किसी के प्रेम-जाल में फँसा रहता है और फिर कुछ ही दिनों बाद उसका नाम तक भूल जाता है। उसके विश्वासों का भी यही हाल है। लेकिन मेरी बुद्धि भी तो तेज नहीं!'

मूसलाधार पानी में ही वे बाहर निकल पड़े। सब लोग आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। वे भींगते जाते थे और हँसते जाते थे। देनीजे के पास उस समय कोई हैट न था, वह जूड़ा बाँधे थी और एक भूरा कोट और साया पहने थी। सुन्दरता उसकी साधारण और कुछ पुराने नमूने की थी। मिशो की आँखें आज रोज से अधिक चमक रही थीं। दोनों चुपचाप टहलते हुए देनीजे के घर तक पहुँचे और खुशी-खुशी एक दूसरे से विदा हुए। वर्षा अभी हो रही थी। पानी के बड़े-बड़े बुलबुले सड़क की पटरियों पर नाच रहे थे। हवा में भींगी हुई घास और खुले हुए मैदानों की सुगन्ध थी।

जब विलार अपने फ्लैट में वापस पहुँचा तो मंच पर दिखलाया हुआ अपना सारा जोश उसे आवश्यकता से अधिक मालूम पड़ने लगा। उसे स्वयं अपने ऊपर लज्जा आने लगी। उसने मन में कहा, मैंने ऐसा भाषण दिया ही क्यों! कल ही मेरे इस भाषण के कारण उथल-पुथल हो सकती है। मेरे भाषण का प्रत्येक शब्द नापा-तौला जायगा। अगर मैंने इसी प्रकार के नाटकों में भाग लेना जारी रखा तो फिर मन्त्रीपद मिलना कठिन है।

उसने अपने विचारों का रुख कुछ पलटना चाहा और एक आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसके सामने वाली दीवार पर बोनार की एक पेन्टिङ्ग लटकी हुई थी—हरे-भरे पेड़ों के बीच से छन-छनकर आनेवाली सूर्य की रोशनी जैसे शहद से रंगी जान पड़ती थी। कैनवास से एक गरम दिन की स्तब्धता टपकती था। तब विलार निश्चलता तथा स्वप्न के उस संसार की सैर करने लगा जिसमें अकसर वह अपना समय बड़े सुख से बिताया करता था।

लेकिन उसका यह सुन्दर सपना टूट गया, क्योंकि बाहर से नौकर शाम

की डाक लिये दाखिल हुआ। कुछ संकोच के साथ, विलार ने पहला पत्र खोलकर पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ते ही उसका रंग जैसे उड़ गया। उसमें टाइप किया हुआ था—'अगर तुमने फ्रांस पर शासन करने की कोशिश की तो कुत्ते की मौत मारे जाओगे! जनवादी मोर्चे का नाश हो! एक फ्रेंच देशभक्त।'

यह गुमनाम पत्र पढ़ते ही विलार के होश उड़ गये। उसे मौत से तो इतना भय नहीं था, जितना किसी बात की जिम्मेदारी से। वह सोचता था अभी थोड़े ही दिन बाद उसे फैसले करने पड़ेंगे, हुक्म जारी करने होंगे और शायद लोगों को सजाएँ भी देनी पड़ेगी। और वह इस काम के सर्वथा अयोग्य था। उसकी आदत तो थी विश्लेषण करने की, दूसरों की आलोचना करने की और स्वयं अपने विचारों पर डटे रहने की। पैंसठ वर्ष की उम्र में आज उसका वही हाल था, जैसे कि किसी लड़की को अपने पहले प्रेमानुभाव के समय कँपकपी आती है। एक समय था जब उसे हर चीज आसान मालूम होती थी। तब वह सोचता था कि बस चुनाव में बहुमत से जीतने भर की देर है। फिर क्या है समाजवाद की स्थापना की घोषणा कर दी जायगी। शायद, उन दिनों मामला इतना कठिन भी नहीं था। लड़ाई के पूर्व लोगों के दृष्टकोण इतने कड़े नहीं पड़े थे, उन्हें आसानी से बदला जा सकता था। उन्होंने न यहूदियों के कत्लेआम के किस्से सुने थे, न बहुमूल्य पुस्तकों के जलाये जाने और न फासिस्ट बन्दीगृहों में होनेवाले अत्याचारों के बारे में ही। आज इस आदमी ने उसे लिखा था—हम तुम्हें कुत्ते की मौत मारेंगे!······हाँ इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे लोग दूसरों को भड़कायेंगे, लुक-छिपकर गोलियाँ चलायेंगे—ठीक उसी प्रकार जैसे मेड्रिड में हो चुका है। ये लोग 'जनवादी मोर्चे' का खून करना चाहते हैं! वरना विलार के साथ थे ही कौन लोग? कम्युनिस्टों के लिए तो वह देशद्रोही था। कम्युनिस्ट तुरन्त माँग करेंगे कि 'जनवादी मोर्चे' के विरोधियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाये। इसके लिए वह जनता से दबाव डलवायेंगे। और रैडिकल? तेस्सा की नजर में, विलार और लेग्रे दोनों ही एक थाली के बैंगन थे! उफ, वह कितनी घृणा प्रकट करते हुए 'मार्क्सवादी' शब्द का उच्चारण करता था! विलार तो अकेला था। वह सोचता कि आज लोग प्रशंसा करते हैं तो केवल इसीलिए कि मैंने भी लेग्रे की तरह

गरमागरम भाषण दिया है। जब मैं कार्य-क्षेत्र में उतरूँगा तो ये ही लोग मेरे विरुद्ध एक तूफान उठाकर खड़ा देंगे।

आखिर इस बात से लाभ क्या? अब उसे कितने दिनों और अधिक जीना ही है? अधिक से अधिक पाँच साल और! शायद इससे भी कम। क्या उसके लिए बेहतर नहीं होगा कि बोनार की पेंटिंगों का आनन्द उठाये, अच्छी-अच्छी पुस्तकें पढ़े और सुन्दर पक्षियों और फूलों के बीच जाकर अवालों वाले अपने बँगले में रहे··प्रत्येक चीज कितनी कष्टकर और रहस्यपूर्ण जान पड़ती है। और कमरा भी कितना ठंडा है। उसे अपनी जवानी में लिखी हुई एक कविता याद आ रही थी।

मई के इस गरम मौसम में भी लगता था जैसे उसे जूड़ी सवार थी। उसने घंटी बजाई। और कहा, 'राबर्ट, मेरा कम्बल तो लाओ!'

नौकर ने रसोइये से मुसकराते हुए कहा, 'चुनाव की भीड़-भाड़ का नतीजा है यह—हवा का तो नाम तक नहीं, फिर भी सर्दी मालूम होती है!'

१४

इतवार की शाम को पियेरे एग्नेस से मिलने पहुँचा।

'आओ, जरा बाहर सड़क की हवा खायें,' उसने कहा। 'आज चुनाव का नतीजा निकलनेवाला है।'

चुनाव के नतीजों का विचार आते ही उसने जोश में जोर-जोर से चिल्लाना और हाथ फेंकना शुरू कर दिया। एग्नेस का मन बाहर निकलने का नहीं था। उसकी तबियत ठीक नहीं थी। इसके अलावा उसे चुनाव में विशेष दिलचस्पी भी नहीं थी, फिर भी उसने साथ चलना स्वीकार कर लिया।

तंग अंधेरी गलियों से लोगों की भीड़ शहर के मध्य की ओर चली जा रही थी। लोगों में भी वही जोश देखने में आ रहा था, जो पियेरे में था। तरह-तरह की खबरें उड़ रही थीं, लोग प्रश्न कर रहे थे, हवाई घोड़े दौड़ाये जा रहे थे। बड़ी सड़क में मजदूरों की टोपियाँ ही टोपियाँ नजर आ रही थीं।

साधारण लोगों का कहीं पता नहीं था। केवल विदेशी यात्री और कुछ वेश्याएँ कहवाखानों के चबूतरों पर बैठी दिखाई पड़ती थीं।

पियेरे और एग्नेस शाम को प्रकाशित होनेवाले एक अखबार के दफ्तर के सामने खड़े हो गये। बड़े त्रिकोणाकार चौक में लोगों की भीड़ इतनी उत्सुकता के साथ चुनाव के नतीजे के घोषित किये जाने का इन्तजार कर रही थी, जैसे थियेटर हाल में पर्दा उठने का लोग इन्तजार करते हैं। थोड़ी ही देर में पर्दे पर नाम और संख्याओं के प्रकाशित होते ही फ्रांस के भाग्य का निर्णय हो जायगा। हो सकता है, दक्षिण पक्ष की ही जीत हो···। चिन्ता ने तरह-तरह की अफवाहों को जन्म दे रखा था—किसान जनवादी मोर्चे के नाम से भयभीत हैं। प्रान्तों में फासिस्टों को ही अधिक वोट मिले हैं! यहाँ तक कि शहर के आसपास की मजदूर बस्तियों ने भी वामपक्षियों को धोखा दिया है। पर्दे पर कई नाम दिखाई पड़े। ये पेरिस से चुने जानेवाले प्रतिनिधि थे। अखबारों की बिक्री धड़ल्ले से हो रही थी, हालाँकि अभी उनमें चुनाव के नतीजे नहीं घोषित किये गये थे। चौक में मानो एक मेला लगा था। समय काटने के लिए किसी ने गाना शुरू कर दिया था। कुछ लोग दाना खा रहे थे। वहाँ जो अरब थे वे बकरी के बालों के बने अपने गलीचे बेंच रहे थे। आज की शाम कुछ गरम थी और पास के शराबखाने आज जोरों से चल रहे थे।

इतने में लाउडस्पीकर से आवाज आई—

'मारिस थोरे! निर्वाचित।'

इतना सुनते ही जोर का हुल्लड़ मचा। थोरे बड़ा ही जनप्रिय था। सारा चौक 'थोरे, जिन्दाबाद' के नारों से गूँज उठा। हालाँकि किसी को भी शक नहीं था कि थोरे नहीं चुना जायेगा, फिर भी इस पहली विजय ने लोगों में एक जोश-सा भर दिया। उन्होंने 'अन्तरराष्ट्रीय' गीत गाना शुरू किया। आस-पास की सारी सड़कें लोगों से खचाखच भरी थीं। पुलिस ने मोटरों के गुजरने के लिए रास्ता बनाने की कोशिश की, किन्तु असफल रही। उसने कोई जबरदस्ती भी नहीं की। चूँकि यह कहा नहीं जा सकता था कि किस पक्ष की विजय होगी, इसलिए उसने भी चालाकी से काम लेना बेहतर समझा।

'फ्लांदीं पियेरे ! निर्वाचित ।'

'फासिस्टों का नाश हो !' नारा लगा ।

'गद्दारों को गोली से उड़ा दो !'

'लियो ब्लूम ! निर्वाचित ।'

'जनवादी मोर्चा, जिन्दाबाद ।'

रह-रहकर तालियाँ बजतीं और सीटी की आवाजें आतीं । खुशी के नारे और तेजी से लगने लगे । असंतोष की आवाज कम सुनाई पड़ने लगी । दस बजते-बजते साफ हो गया कि जनवादी मोर्चे की विजय हो गई । जहाँ देखिये लोगों के चेहरे खिले हुए थे । दक्षिण पक्षियों की जीतों की खबरें सुनकर लोग आवाजें कसने लगते । जनवादी मोर्चे का इतनी आसानी से जीत जाना आश्चर्यजनक लगता था । तोप-बन्दूकों ने नहीं बल्कि छोटे-छोटे पर्चों ने लोगों को बचा लिया था । पचीसों साल से वोट देने जाने को लोग एक भार समझते थे—उन्हें क्या पड़ी कि कोई रैडिकल सोशलिस्ट जीते या वामपक्षी रिपब्लिकन ! किन्तु इस चुनाव का तो कुछ और ही महत्व था । उसके पीछे ६ फरवरी को बहनेवाला खून था और लाल झंडों के विशाल प्रदर्शन थे । मई की उस रात को हरएक का हृदय इस आशा से भरा हुआ था कि अब न केवल सरकार में बल्कि स्वयं उसके अपने तुच्छ जीवन में भी परिवर्तन होने जा रहा है । पेरिस के दूसरे भागों में और दूर के नगरों में—जैसे कारोबारी लील और चहलपहल वाले मरसाई में, शांतिमय लियो में, अटलान्टिक के किनारे और आल्पस् पहाड़ के दामन में—सभी जगह लाखों लाख व्यक्ति खुशियाँ मना रहे थे । लाखों मनुष्यों के दिल उत्साह से भरे हुए थे ।

'आगस्त विलार ! निर्वाचित !'

यह सुनते ही पियेरे इतनी जोर से चीख पड़ा कि एग्नेस ने हँसते हुए अपने कान बंद कर लिये । उसकी चीख का साथ दूसरों ने भी दिया, किन्तु शायद पियेरे को इतना काफी नहीं लगा । 'यदि कोई कम्युनिस्ट जीत जाये तो लोग गला फाड़कर शोर मचायेंगे !' उसने ईर्ष्या से कहा ।

'पोल तेस्सा ! निर्वाचित ।'

इस पर कुछ ही लोगों ने और वह भी अनमने ढंग से नारा लगाया, 'जनवादी मोर्चा, जिन्दाबाद ।'

'चलो, अब चलें,' एग्नेस ने कहा। 'अब मुझसे यहाँ खड़ा नहीं रहा जाता।'

सड़क पर जाकर वे एक छोटे काफे के चबूतरे पर बैठ गये। उनके चारों तरफ गिलासों की आवाज आ रही थी। लोग एक दूसरे को बधाइयाँ दे रहे थे।

'तुम कुछ अधिक प्रसन्न नहीं जान पड़तीं,' पियेरे ने कहा। 'तुम भी औरों की तरह क्यों नहीं खुशी मनातीं?'

'किसलिए? इसलिए कि चुनाव में तेस्सा सफल रहा। यह ठीक है कि उसने एक बार मेरा बड़ा काम किया था। लेकिन मैं उसकी जीत पर खुशी नहीं मना सकती।'

'यह कोई तेस्सा का सवाल नहीं। वह तो एक छोटी-सी बात है। मुख्य चीज तो यह है कि जनवादी मोर्चे की विजय हुई है।'

'तुम जानते ही हो कि उसके बारे में मेरी क्या राय है,' एग्नेस ने उत्तर दिया। 'मेरे लिए जीवन इन्हीं छोटी-छोटी बातों से मिलकर बना है।'

'तेस्सा?'

'नहीं। सच्चाई, ईमानदारी!'

दिन भर की इस भीड़-भाड़ से पियेरे इतना थक गया था कि बहस करने की उसे इच्छा नहीं हुई। उसने केवल सिर हिलाया और आने जानेवालों के शोर-गुल और मौजमस्ती का मजा लेने लगा।

इतने में अखबारवाले चिल्लाते हुए गुजरे, 'विशेष संस्करण! जनवादी मोर्चे की पूर्ण विजय!'

'पियेरे,' एग्नेस बोली, 'क्या राय है तुम्हारी, अब हम लोग एक टैक्सी पकड़ लें और चल दें। मैं घर पहुँचना चाहती हूँ।'

जैसे ही वे घर पहुँचे, एग्नेस लेट गई।

'क्या हाल है?' पियेरे ने पूछा। 'क्या तुम्हें ठंड लग गई?'

उसने एक हलकी मुसकराहट के साथ कहा, 'नहीं तो। लेकिन तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं। मैं ठीक हूँ। अकसर ऐसा हो जाता है। अभी तुम्हारी समझ में नहीं आया? कैसे भोले-भाले आदमी हो!'

पियेरे आखिर समझ गया। वह उस छोटे से कमरे में नाचने लगा। 'क्या कहना! और फिर आज ऐसे शुभ दिन पर यह समाचार! तुम देख लेना वह बड़ा अनोखा आदमी होगा। मुझे संदेह नहीं लड़का होगा। क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ लाऊँ? दवा? नारंगी?'

एग्नेस उसकी ओर देखकर मुसकरायी और बोली, 'मुझे कुछ नहीं चाहिए। यहाँ आकर बैठो। हाँ, इस तरह।'

उसने पियेरे के चेहरे को अपने दोनों हाथों में लेकर उसकी आँखों में आँखें डाल दीं और फिर अपनी उँगलियों से उनको मूँदने लगी। 'आज हम साथ हैं,' वह बोली। उसके ओंठों पर मुसकराहट थी। आज उसे कितना आनन्द था।

खिड़की से 'अन्तर्राष्ट्रीय' गाने की आवाज आई। बाहर कोई गा रहा था—'यह जंग है हमारी आखिरी, उठो......!' वेलवीये के गरीब मजदूर सड़कों में ठोकर खाते हुए अपने घरों को जा रहे थे, जहाँ बिल्कुल अँधेरा रहता था और बराबर बदबू आती थी। उस रोज वहाँवालों ने जैसे एक मनोहर कहानी सुनी थी—किसी अमेरिकन सुन्दरी के बारे में नहीं और न किसी रद्दी सिनेमा के खेल के बारे में। किसी ने वेलवीये के नाम पर चुनाव लड़ा था और वह सफल हुआ था। अब वहाँवालों को आशा हो चल थी कि उनकी भी दशा में सुधार होगा।

'मानव जाति की एकता के लिए......'

एग्नेस को तुरन्त कहवाखाने वाले कुछ सिपाही याद आ गये। जिस सिपाही ने स्ट्रासबर्ग जाने की बात की थी, उसका चेहरा कितना सुन्दर और मुलायम था। उसे कुछ सोचकर क्रोध-सा आया। उसकी कमजोर आँखों से और भी बेबसी टपकने लगी।

'पियेरे बतलाओ, लड़ाई तो नहीं होगी?'

'नहीं।'

'बाद में कभी?'

'न अभी, न बाद में। कभी नहीं।'

१५

जनवादी मोर्चे की विजय से कुछ लोग भयभीत हो चुके थे। वे हड़ताल, विद्रोह और आर्थिक संकट की बातें करने लगे। घबराई हुई औरतें एक दूसरे से कहतीं, 'मेरी नौकरानी ने अभी से गुस्ताखी शुरू कर दी!'

दूकानदारों ने अपना सामान छिपाना आरम्भ कर दिया। बड़े-बड़े सरकारी अफसर कहते फिरते कि वे नये मंत्रियों की आज्ञा मानने को तैयार नहीं। वे कहते, 'इनका क्या, यह तो चार दिन के सुल्तान हैं! आज आये कल चले जायेंगे!' ब्रेतील ने तमाम ईमानदार नागरिकों से अपील की कि वे जनवादी मोर्चे की विजय के विरोध में अपने घरों पर राष्ट्रीय झंडा फहरायें। कुछ मुहल्लों में कुछ मकानों पर तो तिरंगे झंडे लगे थे और कुछ पर लाल। ऐसा मालूम पड़ता जैसे आदमी ही नहीं, बल्कि घरों के ईंट-पत्थर भी एक दूसरे से टकराने के लिए व्याकुल हो रहे हैं। धनी क्षेत्रों में गड़बड़ी मची हुई थी। अफवाह फैल रही थी कि पूँजी पर भारी कर लगने वाला है और सारे बैंक राष्ट्र की सम्पत्ति बना दिये जायँगे। पूँजीपतियों ने जल्दी-जल्दी अपनी पूँजी अमेरिका भेजनी शुरू कर दी थी।

केवल देजेर चुपचाप रहा। जब उसका कोई साथी बैंकर पूछता, 'तुम ऐसे समय पर काम कैसे कर रहे हो?' तो वह उत्तर देता, 'अच्छा, तुम्हीं बतलाओ, ब्लूम और सरो में अन्तर ही क्या है? मुझे इतना सूक्ष्म अन्तर नहीं दिखाई पड़ता।'

यह सुनकर कि विलार को भी कोई मंत्री पद मिला है, देजेर ने तय किया कि जाकर उससे खूब बातें करे। 'कुछ भी हो ये लोग बच्चे ही तो हैं। कहीं कुछ गड़बड़ न कर डालें।' उसने विलार को फोन किया और कहा, 'मैं बहुत दिनों से तुम्हारी तसवीरें देखने को उत्सुक हूँ।'

सभाओं में बोलते हुए, विलार ने कई बार देजेर का नाम लिया था और उसे एक पक्का निर्लज्ज व्यापारी बताया था। लेकिन जब देजेर ने कहा, 'मैं

तुम से मिलने आ रहा हूँ।' तो उसने सोचा कि कुछ भी हो, मेरी जीत तो देजेर की बदौलत ही हुई है, वह बिल्कुल भूल गया था कि अपने भाषणों में उसने देजेर को क्या-क्या कहा था।

देजेर की जिसने भी निन्दा या प्रशंसा की थी, वह सब उसे याद था, हालाँकि वह उनकी अधिक परवाह नहीं करता था। उसे शब्दों से चिढ़ थी। विलार को उसकी सफलता पर बधाई देते हुए, उसने कहा, 'प्रिय मित्र, क्या बताऊँ, तुम्हें इस पद पर देखकर मैं कितना प्रसन्न हूँ!'

जो भी थोड़ी बहुत कटुता उसकी बातों में थी, वह तसवीरों को देखते ही जाती रही। विलार को आज मालूम हुआ कि देजेर अच्छी पेंटिंग की भी कदर कर सकता है। दोनों ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक, पिकासो और मातिसे की चित्रकला के बारे में बातें कीं।

'अब तुम्हें यह सब छोड़ देना पड़ेगा,' वह बोला। 'कुछ चारा नहीं। यह पेशा तो तुमने स्वयं चुना है। मैंने तुम्हारे ऊपर दाँव लगाया, हालाँकि उसमें कम खतरा न था। लेकिन तुम्हें खतरे मोल लेने का हक नहीं। प्रत्येक कला के अपने अलग-अलग नियम होते हैं। राजनीति में जो चीज काम आती है वह है लम्बी-चौड़ी स्पीचें देने की योग्यता और कुछ नहीं। चुनाव में मैंने तुम्हारा साथ दिया था और आगे भी देने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मेरे ऐसे लोग हैं ही कितने? स्टाक एक्सचेंज वाले तुमसे घृणा करते हैं। वेन्देल के ख्याल से तुम लुटेरे हो। दूसरे तुम्हें चोर समझते हैं। तुमने बिना सोचे-समझे कोई कदम उठाया कि वे सब तुम्हें फाड़ खायेंगे। षड्यन्त्रों या चेम्बर के अन्दर गुटबन्दी की जरूरत ही नहीं होगी। बस, फ्रांक की दर गिरा देना काफी होगा। तब तुम देखोगे कि यही तुम्हारे मजदूर समर्थक कैसी उधम मचाते हैं—महाजनों को तो जाने दो। वे चिल्लाना शुरू करेंगे—विलार को फाँसी पर लटका दो! अच्छा, यह ब्राक की पेंटिङ्ग कितनी सुन्दर है? मुझे ब्राक अधिक पसन्द नहीं। लेकिन यह उसकी बहुत अच्छी तसवीरों में है। ब्राक ने ही तो कहा था कि कलाकार को अपनी प्रेरणा की पुष्टि एक मापक से करनी चाहिये। तुम्हें भी अपनी इन समाजवादी योजनाओं की यथार्थता की पुष्टि फ्रांक की दर से करनी पड़ेगी......।'

विलार यह सब सुनकर बड़ा भिन्नाया। कहना तो वह चाहता था कि

'हम पूँजी का निर्यात ही बन्द कर देंगे। हम फ्रांक की एक दर नियत करेंगे और तुम्हें जेलखाने की हवा खिलायेंगे!' किन्तु उसका सारा क्रोध बस एक क्षण तक रहा। तुरन्त उसको अपनी भारी जिम्मेदारियाँ याद आ गईं।

'हमारी चलती गाड़ी के रास्ते में रोड़े अटकाने की जरूरत ही क्या!' उसने कहा। 'सरकार के स्थायित्व में ही तो शान्ति कायम रह सकती है और सारे झगड़े का फैसला शान्तिपूर्वक हो सकता है।'

'बिल्कुल ठीक। यही बात अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के बारे में भी कही जा सकती है। हाँ, मैं यह कहना भूल गया था कि इस बारे में तुम हम दोनों के परम मित्र तेस्सा के अनुभवों का भी लाभ उठा सकते हो।'

विलार ने तेस्सा का नाम सुनते ही नाक-भौं सिकोड़ी। वह उसे अपना दुश्मन समझता था। किन्तु देस्सर ने बिना कुछ देखे कहना जारी रखा, 'मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम शान्ति कायम रखने में सफल रहोगे। इसमें संदेह नहीं कि हिटलर की ज्यादतियाँ असह्य होती जा रही हैं। लेकिन लड़ाई से तो फिर भी अच्छा ही है कि उसे कुछ दे-दिला कर पीछा छुड़ाया जाय।'

विलार का चेहरा खिल उठा। उसे डर था कि कहीं देश के सामने खतरा होने का बहाना लेकर वह उसे लड़ाई घोषित करने के लिए न बाध्य करे। उसे यह सोचकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आखिर देजेर भी शान्ति स्थापित रखने के पक्ष में है। उसने बड़े जोश के साथ देजेर से हाथ मिलाया और कहा, 'मुझ पर विश्वास रखो, जब तक मेरे हाथ में ताकत है, किसी प्रकार का उतावलापन नहीं होने पायेगा! मैं फ्रांस के किसानों का खून काले हबशियों या चेक लोगों के लिये नहीं बहने दूँगा।'

जब देजेर चला गया तो विलार की जान में जान आई, जैसे कोई स्कूली लड़का कठिन परीक्षा देकर अभी निकला हो। उसने सोचा, निस्सन्देह देजेर अपने हितों की रक्षा चाहता है। लेकिन अब तो सभी कुछ मिला-जुला है, देजेर के हित में मजदूरों का भी तो हित है। वह एक ईमानदार आदमी था, इसलिए उसे मालूम पड़ा कि देजेर किसी पार्टी या वर्ग का आदमी नहीं है, बल्कि पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

उसका सेक्रेटरी एक हुक्मनामे पर उससे हस्ताक्षर कराने आया ताकि एक अफसर को, जिसने ब्रेतील के संगठन में प्रमुख भाग लिया था, बर्खास्त कर दिया जाये।

विलार ने कागज को उठाकर अलग रखते हुए पूछा—'हर एक को अपना विरोधी बनाने से क्या फायदा ?' इसके बाद उसने मजाक में कहा, 'मेरे दोस्त, चार करोड़ आदमियों पर राज्य करना कोई आसान काम नहीं। मार्क्स के जमाने में मजदूरों के पास खोने के लिए कुछ नहीं था और जीतने के लिए था सारा संसार। आज खाने के लिए हमारे सामने है शान्ति और जीतने के लिए कुछ नहीं, सिवाय गुलामी की जंजीरों के !'

बाहर सड़क पर पहुँच कर, देजेर ने कंधे हिलाये और अपने मन में सोचा, कितनी आसानी से काम हो गया। और फिर भी पियेरे विलार ऐसे लोगों पर विश्वास करता है ! वही नहीं लाखों, करोड़ों आदमी करते हैं। ईश्वर जाने, ये लोग कितने बड़े मूर्ख हैं ! शायद उनके लिये ठीक भी यही है।'

देजेर को आर्थिक विशेषज्ञों की एक सभा में जाना था, किन्तु उसने इरादा बदल दिया। विलार की इस बुजदिली से उसे घृणा-सी होने लगी थी। वह रिवोली की लम्बी सड़क पर चलता गया और पुराने किले के पास पहुँच कर वह एक तंग गली में मुड़ गया। सामने एक नाचघर का बोर्ड लगा हुआ था, जो रोशनी में चमक रहा था। बिना किसी संकोच के वह अन्दर घुस गया। थोड़ी देर के लिए वह अपने दिमाग से सब कुछ भुला देना चाहता था।

एक जगह 'अकार्डियन' बजानेवाले एक प्राचीन अमेरिकन नाच की बड़ी सुन्दर नकल कर रहे थे। कागज की लालटेनों और रुई की मालाओं ने उस स्थान को एक थियेटर का रंग दे दिया था। नाविक, मजदूर, छोटी-मोटी सिलाई करनेवाली औरतें और होटलों की नौकरानियाँ—सभी खूब नाच रहे थे।

देजेर ने बाजेवालों को पाँच सू थमाये और एक मोटी लड़की को, जिसके शरीर पर झाइयाँ पड़ी हुई थीं, लेकर नाचने लगा। उस लड़की के चेहरे से सस्ते पाउडर की महक आ रही थी और जब वह नाचती तो अपनी आँखें अजीब तरीके से मटकाती थी।

नाच हो जाने के बाद देजेर ने उसे 'चेरी' की शराब पिलायी।

'क्या तुम्हें नाचने का शौक है?' उसने पूछा।

लड़की बड़ी बातूनी निकली। उसने उत्तर दिया, 'बहुत! बात केवल इतनी है कि अकसर मुझे नाचने का अवसर नहीं मिलता। मुझे शाम को ६ बजे तक काम करना पड़ता है और तब मैं घर के लिए भी कुछ काम ले जाती हूँ। जानते हो, मुझे कितनी तनख्वाह मिलती है? महीने में पाँच सौ पचास! भला इतने में गुजारा कैसे हो सकता है? सुनाई देता है कि अब हालत बिल्कुल बदलनेवाली है। हमारे साथियों ने मालिक को चेतावनी दे दी है कि यदि हमारी तनख्वाहें बढ़ाई नहीं जातीं तो हम हड़ताल कर देंगे। अब तो जनवादी मोर्चे की सरकार है, अब कौन उसी पुराने ढंग से रहना पसन्द करेगा, है न?'

देजेर ने पाइप की तम्बाकू नीचे गिराई और अपनी घनी भौंहें सिकोड़ कर बोला, 'इसमें क्या शक है! हर चीज अब पहले से भिन्न होगी। उदाहरण के लिए पर अभी तक सुनहरे बालवाले भूरे बालोंवालों के साथ नाचा करते थे; अब विलार भूरे बालवालों को सुनहरे बालवालों के साथ नाचने का हुक्म देगा। अच्छा मदाम, फिर मिलूँगा, अब मेरे घर जाने का समय हो गया।'

१६

हवाई जहाज बनानेवाले 'सीन' कारखाने में शनिवार से हड़ताल आरम्भ हो गई। इसके पहले, सप्ताह भर मजदूरों ने हर तरह कोशिश की थी कि कारखाने के अधिकारियों से मिलकर मामला तय हो जाय। देजेर ने तनख्वाहें बढ़ानी तो स्वीकार कर ली थी किन्तु उसने मजदूरों की और माँगों को तुरन्त ठुकरा दिया। वह सामूहिक प्रतिनिधित्व और तनख्वाहों समेत छुट्टियों की माँग का खासतौर से विरोधी था। उसने बड़े रूखेपन से कहा था, 'कोई भी बातचीत नहीं की जायेगी।'

वह जानता था कि कभी-कभी हड़ताल के अतिरिक्त मजदूरों के पास कोई दूसरा रास्ता नहीं रह जाता। इन छोटी-छोटी झड़पों में कभी मजदूरों की जीत

होती और कभी उसकी। साथ ही हारनेवाले पक्ष के मन से बदला लेने का संकल्प एक क्षण के लिए भी न हटता था। हड़तालियों की माँग अन्त में जाकर केवल यह रह जाती थी कि 'काम के घंटे कम किये जायें और तनख्वाह बढ़ाई जाये।' देजेर उनकी इस माँग को बिल्कुल स्वाभाविक समझता था। उसके पास तो धन कमाने के सैकड़ों तरीके थे, किन्तु मजदूर तो केवल हड़ताल द्वारा ही अपनी मजदूरी बढ़वा सकते थे। बाकी सब कुछ इस बात पर निर्भर होता था कि कैसी उस समय परिस्थिति है और कब तक वे डटे रह सकते हैं। यदि कारखाने के पास फौटी आर्डर बहुत होते और होशियार कारीगरों की कमी होती तो तुरन्त देजेर मजदूरों की बातें मान लेता। यदि आर्डर कम होते और हड़ताल तोड़नेवाले मजदूर काफी मिल जाते, तो उसके रवैये में कोई अन्तर न आता। दो एक सप्ताह में ही मजदूर भूखों मरने लगते, वह भीख माँगते वापस आते, या वह उनकी तनख्वाहें देकर उन्हें अलग कर देता और नये मजदूर रख लेता। देजेर इस निरन्तर चलनेवाले युद्ध को जीवन का एक नियम समझता था, और इसलिए अपने विरोधी पक्ष के प्रति न तो कोई सहानुभूति रखता था और न उससे कोई वैमनस्य ही।

'नहीं, मस्यो मिशो!' उसने कहा, 'मैं तो इसमें विश्वास करता हूँ कि प्रत्येक मनुष्य को स्वतन्त्रता हो। आप लोग इस बात के लिए स्वतन्त्र हैं कि यदि चाहें तो मेरे कारखाने में रहें और न चाहें तो न रहें। यह सब कुछ आप पर निर्भर है। इसी प्रकार मुझे भी इसकी स्वतन्त्रता होनी चाहिए कि मैं जिसे चाहूँ रखूँ, जिसे चाहूँ निकाल बाहर करूँ।'

उस शनिवार को लोग काम पर वापस नहीं गये। धातु गलाने की वर्क-शाप के सामने वाले मैदान में अट्ठारह हजार मजदूरों की भीड़ इकट्ठी हुई। लेग्रे ने चीख कर कहा, 'जो लोग हड़ताल के विरुद्ध हों, वे हाथ उठा दें।'

मजदूरों में कुछ ऐसे कमजोर दिलवाले भी थे जो दूसरों को समझा रहे थे कि हड़ताल न की जाये। उन्हें डर था कि घर पर उन्हें फटकार पड़ेगी, वे और उनके बाल-बच्चे भूखों मरेंगे और हड़ताल असफल रहेगी। लेकिन इस समय उन्हें दूसरों के सामने अपनी कमजोरी दिखलानी पड़ती, इसलिए वे चुप ही रहे। किसी ने भी हाथ नहीं उठाया।

अब भीड़ कारखाने के फाटक की ओर बढ़ी। मिशो ने जोरदार शब्दों में कहा—'साथियो, ठहरो···जाओ मत !'

एक लारी पर खड़े होकर उसने लाउडस्पीकर से कहना शुरू किया, 'जाओ मत !' और चारों ओर 'जाओ मत' की आवाज गूँज उठी।

'साथियो,' उसने कहा, 'यदि हम चले जाते हैं तो अधिकारी हड़ताल तोड़ने के लिए दूसरे गद्दार मजदूरों को ले लेंगे। हमें यहीं कारखाने के अन्दर ही रात गुजारनी है—रात ही क्या, दिन, हफ्ते और महीने भी। जब तक हमारी जीत नहीं हो जाती।' लोग हैरत में रह गये। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि मिशो के कहने का अर्थ क्या है।

'आपको मालूम होना चाहिये हम लोग हड़ताल कर रहे हैं।'

'लेकिन हम खायेंगे क्या ?'

'खैर, पुलिस हमको निकाल बाहर करेगी !'

मिशो लाउडस्पीकर में चिल्ला रहा था, 'खाने का प्रबन्ध हमारी कमेटी करेगी। हम रुपया अपनी यूनियन से लेंगे। यहाँ से हमें कोई नहीं निकाल सकता—कोई आसान काम नहीं ऐसा करना ! फाटकों पर हमें धरना देना चाहिये। आप लोग अपने बीच दुश्मन के एजेन्टों को न आने दीजिये ! अधिकारी अपने-अपने घर जा सकते हैं लेकिन हम उन्हें वापस नहीं आने देंगे। साथियो, यह ठीक है कि इससे पहले कभी ऐसी हड़ताल नहीं हुई थी। किन्तु इस बार हम दिखला देंगे कि···।'

मिशो का दोस्त जानो, जो एक ढलैया था, कारखाने की छत पर चढ़ गया और वहाँ उसने लाल झंडा फहरा दिया। उसने चिल्लाकर कहा, 'किले पर लाल झंडा लग गया !'

इस प्रकार वह असाधारण हड़ताल आरम्भ हुई जिसने देश भर को हिला दिया। तमाम दिन नदी के घाट और कारखाने को जानेवाली सड़कों पर लोगों की भीड़ लगी रही। लोहे के टोप पहने और बगल में 'गैस मास्क' लटकाये तीन हजार पुलिसवाले कारखाने पर हल्ला बोलने के लिए तैयार खड़े थे। सरकार अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाई थी कि ऐसी परिस्थिति में क्या करे। पुलिस वाले अपना गुस्सा हड़तालियों की स्त्रियों और आने-जाने

वालों पर निकाल रहे थे। शाम तक स्त्रियाँ कारखाने के अन्दर हड़तालियों को रोटी, 'सासेज,' पनीर, शराब इत्यादि पहुँचाती रहीं। कोई-कोई तो फुटबाल, शतरंज, किताबें और गिटार भी उठा लाईं। जानो की माँ उसके लिए कुछ अन्डे और एक तकिया लाई। दूसरों के साथ वह भी चहारदीवारी पर चढ़ गया और उसकी माँ ने नीचे से चिल्लाकर कहा, 'मूर्ख कहीं के, यह क्या बेवकूफी सूझी है! चल घर!' जानो बड़े संकोच में पड़ गया किन्तु फिर उसने मुसकरा दिया।

प्रबन्धकारी इन्जीनियरों में पियेरे ही एक आदमी था जिसने हड़तालियों का साथ दिया था। 'सँभल जाओ,' मैनेजर ने उससे कहा, 'धोखा देनेवालों को कोई पसन्द नहीं करता, समझे!'

'आपको पता होना चाहिये जनाब, कि मेरा पिता एक मजदूर था।'

पियेरे को देखकर जानो बड़ा ही प्रसन्न था। मानो उसे विश्वास हो गया कि अब मजदूरों की विजय अवश्य होगी। जानो उन्नीस वर्ष का था और मोर्चे-बन्दियों, गोलियों और झंडों का स्वप्न देख रहा था। थोड़ा बहुत रोमांच तो पियेरे में भी था।

रात होते ही सारा कारखाना मानो एक फौजी कैम्प बन गया। जगह-जगह सन्तरियों का पहरा बिठा दिया गया। पियेरे और जानो बड़े फाटक के पास जा कर खड़े हुए। पियेरे को लगता था जैसे वह लड़ाई के मोर्चे पर है और शत्रु किसी भी क्षण आक्रमण कर सकता है।

'अगर उन लोगों ने आक्रमण कर दिया तो!' जानो ने चुपके से पूछा। 'तुम्हारे पास रिवाल्वर है?'

'है तो मेरे पास, लेकिन उसे प्रयोग करने की आज्ञा नहीं जब तक कि मैं मिशो से पूछ न लूँ।'

मिशो जो केवल कम्युनिस्टों और अपने वर्कशाप के मजदूरों में परिचित था, हड़तालियों का नेता बन गया। जिसे देखो वही कहता फिरता, 'मिशो से पूछो···मिशो ने यह हुक्म दिया है······मिशो यह नहीं पसन्द करता···।'

मिशो बहुत मेहनत कर रहा था। उसने रसोईघर का प्रबन्ध किया, एक बैंड जुटाया, जिला कमेटी से सम्पर्क स्थापित किया। इसके अतिरिक्त उसे

'यूमानिते' के लिए रिपोर्टें लिखानी पड़तीं। कमजोर दिलवालों को वह यह कहकर जोश दिलाता कि 'विजय हमारी होगी!' वह मशीनों को भी देखने जाता कि कहीं किसी ने उन्हें तोड़-फोड़ तो नहीं डाला।

इस भय से कि कहीं रात को आपस में टक्कर न हो जाय, सरकार ने पुलिस हटा ली थी। इतवार के दिन लोग घाट के किनारे-किनारे कारखाने के फाटक तक जा सकते थे। लेकिन कारखाना फिर भी एक बड़े किले के समान मालूम पड़ता था जिसको दुश्मन घेरे पड़ा था। उसे घेरनेवाले कौन थे? देजेर? हड़ताल तोड़ने वाले गद्दार मजदूरों का डर? भूख की पीड़ा? जरूरी था कि जब तक विजय न हो जाय डटे रहा जाय।

सोमवार की शाम को मिशो ने ज्यों ही अखबार के पन्ने उलटे, उसके मुँह से एक चीख निकल गई, 'दूसरों ने भी! सभी ने? यह कैसे......!'

वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि मुँह से बोली भी नहीं निकल सकी। 'नई आवाज' की खबर थी कि वह असाधारण हड़ताल जो 'सीन' के कारखाने से आरम्भ हुई थी, सारे पेरिस में फैल चुकी थी। तमाम बड़े-बड़े कारखानों में हड़ताल हो चुकी थी और लाखों मजदूर हाथ पर हाथ धरकर बैठ गये थे। बाज़ारू स्टोरों में भी हड़ताल हो गई थी। रात में वहाँ बड़ी रोशनी थी और वहाँ भी माल बेचनेवाली लड़कियों ने काम करने से इन्कार कर दिया था। कहवाखानों और रेस्तराँ में बेयरों ने काम रोक दिया था। एक सरकारी दफ्तर के छोटे मुलाजिमों ने भी हड़ताल घोषित कर दी थी और इमारत खाली करने से इनकार कर दिया था। इस सनसनी फैलाने वाली हड़ताल का समाचार जोजियो ने स्वयं अपने प्रभावशाली शब्दों में लिखकर भेजा था। पेरिस की जनता हटकर पीछे अवेन्ताइन हिल को चली गई है......। रिपोर्ट में कहा गया था, पेरिस की सारी मजदूर बस्तियाँ खाली हो चुकी हैं। सड़कों पर केवल स्त्रियाँ और बच्चे दिखाई पड़ते हैं। अन्त में उसने अपनी कहानी इस ढंग से समाप्त की थी—'आज महायुद्ध के उन दिनों की याद आती है जब एक बार पहले भी लोग अपने-अपने घरों से दूर लड़ाई के मोर्चे पर पड़े थे...।'

देजेर ने दो एक दिन अपनी देहातवाली कोठी में बिताये। हड़ताल का समाचार पाते ही उसने अपनी सारी व्यापार सम्बन्धी मुलाकातें रद्द कर दीं, टेलीफोन के तार कटवा दिये और 'ओविद' पढ़ने बैठ गया। वह थोड़ा

इन्तिजार करना चाहता था। फैक्टरी पर जबरदस्ती कब्जा कर लेने का विचार उसे इतना व्यर्थ-सा मालूम पड़ा कि उसे विश्वास-सा हो गया कि इस गुत्थी का सुलझाव जल्द ही हो जायगा--या तो हड़तालियों की अक्ल ठिकाने लग जायगी और वे अपने-अपने घर चल देंगे या फिर पूरा विद्रोह हो जायगा, उसने सोचा। सोमवार को देजेर के पास सूचना पहुँची कि हड़ताल दूसरे कारखानों में भी फैल गई है। दूसरे रोज सबेरे ही वह पेरिस के लिए रवाना हुआ और नौ बजते-बजते उसकी कार कारखाने के फाटक के पास जा खड़ी हुई। एक जवान मजदूर जो पहरा दे रहा था, रास्ता रोककर बोला, 'बाहर के लोगों को अन्दर जाने की इजाजत नहीं!'

'मैं कोई बाहरी नहीं। मैं मैनेजिंग कमेटी का सभापति देजेर हूँ।'

मजदूर मुसकराया। उसने कहा—'नाम तो कुछ परिचित-सा मालूम पड़ता है। लेकिन देखिए, मस्यो देजेर, यदि हम आपको अन्दर जाने भी दें, तो आप फिर वापस नहीं आ पायेंगे। आप यहीं ठहरिये जब तक कि···!'

'जब तक कि क्या···!'

'जब तक कि मस्यो देजेर हार नहीं मान लेते।'

दोनों को हँसी आ गई। किन्तु मन ही मन देजेर बड़ा क्रोधित हुआ। अच्छी धांधली है! यह भी खूब स्वतन्त्रता रही! यदि हड़ताली महाशयों को भी घर जाने से रोक दिया जाये तो क्या हो? किन्तु उसने अपना क्रोध प्रकट नहीं होने दिया। उसी तरह मुसकराते हुए, उसने कहा—'कही तो तुमने खूब, लेकिन तुम्हें मुझे जाने ही देना पड़ेगा।'

मजदूर ने अपने एक साथी को हुक्म लेने के लिए मिशो के पास भेजा और पाँच मिनट गुजर जाने पर देजेर से कहा, 'अब आप अन्दर आ सकते हैं। आप जा भी सकते हैं जब आप चाहें। लेकिन आप वर्कशापों में न जाएँ ताकि कहीं कोई घटना न हो जाय।'

देजेर ने मजदूर की पीठ ठोकते हुए कहा, 'अच्छा तो तुम अभी सीख रहे हो कि प्रबन्ध कैसे किया जाता है? खूब!'

देजेर प्रबन्धकों के खाली दफ्तरों से होकर गुजरा। उसका पुराना नौकर जो उसके पीछे-पीछे चल रहा था, ठंडी साँसें भर रहा था।

'क्या यहाँ कोई भी नहीं ?' देजेर ने पूछा।

'सब लोग पिछले शनिवार को ही चले गये। सिर्फ मस्यो दूब्वा ठहरे रहे और, क्षमा कीजियेगा, वह भी मजदूरों के साथ हैं।'

'क्या वह मशीनों की देखभाल करते हैं ?'

'हुजूर, वह हड़ताल पर हैं।'

देजेर जोर से हँस कर बोला, 'अच्छा! पियेरे ने भी कारखाने पर कब्जा करने की बात सोची है! बुलाओ मस्यो दूब्वा को!'

देजेर ने उससे बैठने को कहा और एक सिगरेट पेश करते हुए बोला, 'इस कष्ट के लिए क्षमा कीजियेगा। मैं आपसे केवल एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूँ। वह भी बिल्कुल व्यक्तिगत है। क्या आपने हमेशा हमेशा के लिए कारखाने पर कब्जा करने की बात सोची है या केवल थोड़े दिनों के लिए ? मैं यह केवल इसलिए जानना चाहता हूँ कि अपने समय का ठीक-ठीक उपयोग करने की बात सोच सकूँ।'

'कारखाने पर तो कब्जा किसी ने नहीं किया।' पियेरे ने कहा, 'यह तो हड़ताल है और मेरी राय में मजदूरों की माँगें उचित भी हैं।'

'खूब! आपकी राय में यह हड़ताल है ? नहीं, मेरे दोस्त, यह मार्ग हिंसा का है। यह न सोचो कि मुझे अपनी सम्पत्ति के जाने का भय है। मुझे तो भय यह है कि न जाने फ्रांस की क्या दुर्दशा होगी। एक हिंसा के बाद दूसरी हिंसा का होना अनिवार्य ही है।'

'आप स्वयं कह चुके हैं कि आप दूसरों को सुखी देखना चाहते हैं। यह लोग भी तो जीवित रहना चाहते हैं। हाँ, जरा सुख और स्वतन्त्रता के साथ! इसमें आपको कौन-सी आपत्ति हो सकती है ?'

'मैं तुमसे कह चुका हूँ,' देजेर ने उत्तर दिया, 'कि हमारा देश नष्ट हो सकता है—केवल एक आकस्मिक घटना से! स्थिति इतनी नाजुक हो रही है। प्रत्येक चीज विनाश की ओर जाती हुई मालूम पड़ती है।'

'किन्तु सब कुछ तो आप पर निर्भर है। आप बस, समझौते पर हस्ताक्षर कर दीजिये। मजदूर अभी कारखाना खाली करके निकल जायँगे।'

'तुम्हारा मतलब है मैं अपनी हार मान लूँ। यह मेरा तरीका नहीं रहा। यह

मेरे स्वभाव के भी विरुद्ध है। मैं तो अभी और कुछ इन्तजार करना पसन्द करूँगा। मैं पुलिस की सहायता नहीं लूँगा। सरकार से भी मैं नहीं कहूँगा कि वह मेरे अधिकारों की रक्षा करे। क्यों? शायद इसलिए कि मैंने चुनाव में जनवादी मोर्चे की सहायता की है। किन्तु तुम अपने को देखो, क्या कर रहे हो? सारा बना-बनाया खेल बिगाड़ रहे हो। तुम बिलार को कोई अवसर ही नहीं दे रहे हो कि वह अपनी योजनाओं को कार्य रूप में परिणित कर सके।'

'इसके विपरीत,' पियेरे ने कहा, 'हम तो उसकी सहायता कर रहे हैं। अब उसके पीछे जनता की शक्ति होगी। इसमें सन्देह नहीं कि वह हमारे इस काम के विरुद्ध नहीं। उसने······!'

पियेरे ने फोरमैनों की कमेटी के सामने उन सारी बातों की रिपोर्ट पेश की जो उसके और देजेर के बीच हुई थी। मिशो से उसने कहा, 'मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि वह ऐसा निकलेगा··!' उसके मुँह से बात निकलना कठिन हो गया। मिशो मुसकरा दिया।

'तुम्हारे कहने का अर्थ है कि तुम्हें यह यकीन नहीं था कि देजेर देजेर ही रहेगा!'

शाम को उन्होंने हड़तालियों के मनोरंजन के लिए एक गान मंडली का प्रबन्ध किया। मिशो ने 'संस्कृति गृह' वालों से फोन पर पूछा कि क्या वे इस मामले में कुछ सहायता करेंगे। मारेशल ने एक्टरों को घेरने की कोशिश की। कुछ ने कहा कि उन्हें फुर्सत नहीं, किन्तु जानेत तुरन्त तैयार हो गई, यद्यपि आपरेशन के बाद अभी-अभी वह बिस्तर से उठी थी।

मैनेजर के दफ्तर के सामने वाले बगीचे में एक स्टेज तैयार हुआ। हवा में चमेली की महक फैल रही थी। बिजली के बल्बों के ऊपर चीनी लालटेनें रख दी गई थीं। आर्केस्ट्रावालों ने अपने बाजों के सुर मिलाने आरंभ किये। कारखाने का मैदान ऐसा मालूम पड़ रहा था जैसे किसी नगर के मध्य लोग त्योहार मनाने इकट्ठे हुए हों।

प्रोग्राम में कई चीजें शामिल थीं। मारेशल ने किसी सिपाही की मृत्यु पर लिखी हुई रिम्बों की एक शोकपूर्ण कविता सुनाई, शब्दों में वह जादू था कि श्रोतागण मुग्ध हो गये। चारों ओर सन्नाटा छा गया। तब एक गायिका ने सवेल का एक रोमांचकारी गीत सुनाया। लाल झंडों और लोहों की चद्दर की

अपना एकान्त जीवन और अपना छोटा-सा गंदा कमरा याद आया, जिसमें अब वह रहने लगी थी। साथ ही साथ उसे रेडियोघर और इश्तेहारों के नीरस शब्द भी याद आये। अचानक फिर कहीं से गाने की आवाज आई। मजदूर अपना एक गीत गा रहे थे। हजारों हाथ एक साथ इस प्रकार ऊपर उठे जैसे किसी वन के पेड़ों की उठी हुई टहनियाँ या बन्दरगाह में खड़े जहाजों के मस्तूल हों। अपनी ही आवाज और अपने ही आँसुओं से मुग्ध होकर उसने भी अपनी नन्हीं-सी मुट्ठी तान दी। तब वह एक आह भरती हुई और बिना किसी की ओर देखे फाटक की ओर चल पड़ी।

जब मिशो कारखाने की गश्त लगाने गया, उसने बत्तियों को जलते हुए पाया।

१७

जिस रात जानेत कारखाने में गाने गई थी, उसी रात ल्युसियाँ ने जुए में चौदह हजार फ्रांक गँवाये। उसकी किस्मत ने उसका साथ ऐसा छोड़ा कि दूसरे खिलाड़ियों को भी आश्चर्य हो रहा था। 'कलाभवन' जुआड़ियों का एक छोटा-मोटा अड्डा था। धोखाधड़ी के उस्ताद, सूदखोर महाजन, वेश्याएँ वगैरह सभी वहाँ खिलाड़ियों के साथ आ बैठते। हजार फ्रांक का अपना आखरी नोट भुनाते समय ल्युसियां को ऐसा लगा जैसे उसका दम घुटा जा रहा है। वह उठकर खिड़की के पास जा खड़ा हुआ।

पीछे से किसी ने धीमे से कहा, 'आकाश के तारे गिन रहे हो?'

ल्युसियां ने कोई उत्तर नहीं दिया। नीचे तपती हुई सड़क थी, जिस पर एक पेशाबखाना था। उसकी मीनार पर एक साइनबोर्ड चमक रहा था, जिस पर लिखा हुआ था, 'सबसे अच्छा पनीर—हँसने वाली गाय!' ल्युसियां ने बाहर से आती हुई हवा में साँस ली तो उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे वह किसी आपरेशनघर में है। उसने इधर-उधर देखा तो उसे बर्गर का हँसा देने वाला चेहरा नजर आया। उसने तुरन्त ताड़ लिया कि यह प्रोमेसरी नोट के बारे में बात करने आया है।

बर्गेर ने बिगड़ते हुए कहा, 'मुझे तुम्हारे पिता से सारा हाल कह देना पड़ेगा।'

तब ल्युसियां को महसूस हुआ कि अब उसे तुरन्त देश से बाहर कहीं चला जाना पड़ेगा। इधर कुछ दिनों से उसका जीवन बड़ा निराशापूर्ण हो चुका था। उसकी महत्वाकांक्षा उसे खाये डालती थी। उसके दिमाग पर इधर हर समय मौत का भूत सवार रहता था। आवाजें उसे भयानक जान पड़तीं, चीजों का आकार उसे धुंधला दिखाई पड़ता और हर समय यह जान पड़ता जैसे वह बेहोशी की दवा सूंघ रहा है। रात को अक्सर वह किसी औरत के पीछे यह समझकर चल पड़ता कि यह जानेत है। अँधेरे में उसे उसकी आँखें दिखाई पड़तीं और वह पागलों की तरह बकता, 'मेरा कसूर नहीं, मेरा कसूर नहीं!' मानो जानेत की आत्मा उसे किसी बात के लिए धिक्कार रही हो। उसे विश्वास हो गया था कि जानेत अब आंद्रे के साथ रहने लगी है। वह उस आलसी पेन्टर को दिल से घृणा करने लगा था। देश से बाहर चले जाने का विचार उसके मन में एकाएक आया था और उसे ऐसा लगा जैसे अब इसी में उसका कल्याण है। उसने सोचा, इस प्रकार एक ही साथ मैं एक बीती हुई प्रेम-कहानी को भुला सकूँगा और 'संस्कृति गृह' के लोगों और अपने महाजनों से भी छुटकारा पा जाऊँगा।

लेकिन उसने सोचा कि बाहर जाने के लिए काफी पैसे की भी जरूरत होगी। उसने अपनी तकदीर आजमाना चाही। इस बार उसे ताश के पत्तों का नहीं, अपने पिता की कृपादृष्टि का भरोसा था। उसने अच्छी तरह सोच लिया कि कैसे वह पिता के हृदय को प्रभावित करेगा, लेकिन मौके पर वह सब-कुछ भूल गया और मनमाना बकने लगा।

'आप अपने धन को इस प्रकार पकड़े बैठे हैं, जैसे कुत्ता किसी हड्डी को—' वह कह गया।

तेरसा ने अपनी छोटी-छोटी आँखें ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं। 'मैं विदेश जाना चाहता हूँ,' ल्युसियां ने कहा। 'यहाँ पर अब मेरा कोई काम नहीं। हो सकता है, मैं जाकर अमेरिका में बस जाऊँ। किन्तु उसके लिए पैसा चाहिये, कम से कम पचास हजार फ्रांक।'

तेस्सा ने जँभाई ली और फिर अचानक कहा, 'चलो मैक्सिम के यहाँ चलें।' वहाँ उन्होंने अपने को खूबसूरत औरतों के एक जमघट में पाया—सुन्दर, मुलायम चेहरे, सुखद शरीर, भड़कीली पोशाकें और कीमती सेंट की गंध। अब दोनों जैसे एक दूसरे के और निकट आ गये। एक-एक गिलास शैम्पेन पीने के बाद यह घनिष्ठता और भी बढ़ गई। तब तेस्सा को अचानक पुत्र की माँग याद आई और उसने कहा, 'तुम क्यों जाना चाहते हो? अब तो तुम्हारे लिए अवसर आया है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि क्रान्ति होने ही वाली है।'

'नहीं, केवल मंत्रिमंडल में हेर-फेर होकर रह जायगा। क्रान्ति करने के लिए आदमियों की भी तो जरूरत होती है। लेकिन यहाँ है कौन? मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि फ्रांस की जनता क्या है। जब मैं कम्युनिस्टों के साथ था तो मुझे कुछ आशा थी।'

'अच्छा तो यह बात है? मैं समझता था, तुम कम्युनिस्ट हो गये हो। शाबाश, मेरे ल्युसियां!'

'इसमें आप के प्रसन्न होने की क्या बात है? आपकी दुनिया को तो मैं कम्युनिस्टों से भी अधिक घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। इस मामले में मैं कोई समझौता नहीं कर सकता।'

तेस्सा के सीने में दर्द हो रहा था। उसने सोडावाटर का गिलास पीया, और धीरे से बोला, 'तुम बत्तीस वर्ष के हो चुके हो, लेकिन बात ऐसी करते हो जैसे बच्चे हो। अट्ठारह वर्ष की उम्र में मैं भी अराजकतावादी था। कुछ भी हो तब भी मैं तुमसे अच्छा ही था।'

'तो आप मेरी निन्दा करते हैं, इसलिए कि...।'

'मैं तुम्हारी निन्दा नहीं करता। जब मैंने तुम्हें अपने चुनाव के बारे में बतलाया था तो तुम बोले थे, कि कितना बड़ा कमीनापन है। फिर भी तुम मुझ से आशा करते हो कि मैं सारे घर का—तुम्हारी माँ, देनीजे और तुम्हारा भी खर्च चलाऊँ? जानते हो, तुम्हारे इस जिद्दीपन का नतीजा किसे भुगतना पड़ता है?'

जोर से ठट्ठा मारकर ल्युसियां बोला, 'आपको!'

'फिर भी तुम उस प्रकार की सरकार के विरोधी हो जिसे हम स्थापित करना चाहते हैं ? यह ठीक है कि कोई भी उसे पसन्द नहीं करता, लेकिन दूसरा रास्ता ही क्या है ? और कोई भी तरीका इससे कहीं खराब होगा। विश्वास रखो, एक पुरानी टूटी-फूटी चारपाई जेल के गद्दे से कहीं बेहतर है चाहे वह कितना ही नया क्यों न हो। तुम कहते हो मेरी दुनिया से तुम्हें घृणा है, किन्तु यह नहीं जानते कि तुम उसी में पाले-पोसे गये हो। मैं मानता हूँ कि तुम में एक प्रचारक के गुण हैं, किन्तु हमारे समाज के अन्दर रह कर ही उस पर आक्रमण क्यों नहीं करते ? कम्युनिस्ट भले ही तुम्हें सिर चढ़ायें, लेकिन उनमें और तुममें समानता ही क्या है ? यह तुम अभी स्वयं ही स्वीकार कर चुके हो। देखो, बस एक ही रास्ता है। समय आ गया है कि अब तुम कोई निश्चित राय कायम करो।'

'मैंने एक बड़ी अजीब स्थिति में अपने को डाले रखा है।'

'कोई बात नहीं। हम तो चाहते ही हैं कि प्रत्येक मनुष्य कुछ अनोखेपन से शुरुआत करे। लड़ाई के जमाने में लवाल भी तो कट्टर वामपन्थी था। वह मुझसे बात करना भी पसन्द नहीं करता था। अच्छा, तो तुम बाहर जाना चाहते हो ? ख्याल तो कोई बुरा नहीं। लेकिन मेरे पास पैसा नहीं। देजेर ने जो कुछ दिया था वह चुनाव में खर्च हो गया। अब मैं कह नहीं सकता कि कब तक पैसा हाथ में आयेगा। मैं तुमसे साफ-साफ सारी बातें बतलाये देता हूँ। लेकिन मैं तुम्हें एक राय दूँगा। लेखक अकसर छोटे-मोटे कूटनीतिक पद पसन्द करते हैं। यदि तुम्हें पसन्द हो तो अभी एक सेकेन्ड में मैं ठीक करा दूँ।'

'आपका अर्थ है, मैं ब्लूम और विलार का प्रतिनिधित्व बनकर जाऊँ ?'

'हर्ज ही क्या है ?...तुम अपने विचारों का खून थोड़े ही करोगे। तुम जो भी चाहोगे, लिख सकोगे। फिर रुपये-पैसे की भी तुम्हें कोई तकलीफ नहीं रह जायेगी।'

ल्युसियां ने ऐसा मुँह बनाया जैसे उसे बड़ी कड़वी चीज निगलनी पड़ रही हो। जीवन की दूसरी चीजों की तरह, यह बात भी उसे कितनी घिनौनी लग रही थी। लेकिन क्या यह उसका दोष था ? वह तो क्रान्ति का साथ देने के

लिए तैयार था, लेकिन दूसरे लोग उसको समझ ही नहीं पा रहे थे। यही हाल जानेत का था। उसका सुख तो जा ही चुका, जब से जानेत आंद्रे के पास चली गई थी।'

'अच्छी बात है,' उसने अनमने ढंग से कहा। मुझे मंजूर है।'

'मैं तो जानता ही था कि तुम मेरी बात मान लोगे। आखिर तुम मेरे ही तो बेटे हो। इस समय मुझे कितना आनन्द है!' तेस्सा ने मेजपोश से अपना चेहरा पोंछते हुए चुपके से कहा, 'क्या हर्ज है, अगर उस लड़की को अपनी मेज पर बुलाया जाये।'

दूसरे रोज दिन भर ल्युसियां अपने कमरे में बैठा सिर दर्द की गोलियाँ खाता रहा और दीवाल की ओर निराशा से देखता रहा। वह जीवन से निराश हो चुका था।

खाते समय तेस्सा ने अपनी पत्नी से कहा,' 'बधाई! तुम्हारा पुत्र सलामान्दा का वाइस कौन्सल नियुक्त हो गया। अच्छा ल्युसियां, अब तो तुमको क्रान्ति का स्वयं अनुभव हो सकेगा।' दूसरे देश में रहकर और फिर राजदूत के पासपोर्ट के साथ तो तुम यह काम कहीं आसानी से कर सकते हो। और फिर स्पेन की औरतें ...।' उसने तिरछी निगाहों से देनीजे की ओर देखा और फिर चुप हो रहा।

'आपने बड़ी जल्दी काम कर दिया,' ल्युसियाँ ने थकी हुई आवाज में कहा।

दूसरे दिन आपेरा के निकट आंद्रे से ल्युसियां की लगभग भेंट ही हो गई। वह कुछ बोले बिना उसके पास से निकल जाना चाहता था, लेकिन आंद्रे ने उसे रोक लिया। 'यह क्या अजीब मामला है?' उसने कहा 'जिसे देखो वही हड़ताल किये हुए है। बताओ तो सही, इसका अन्त क्या होगा? तुम तो जानते ही होगे।'

'मैं तो तीन दिन में स्पेन चला जाऊँगा।'

'सचमुच? अखबारों से मालूम होता है कि वहाँ भी कुछ गड़बड़ी है।'

ल्युसियां ने यह नहीं बतलाया कि उसे कौन्सल की जगह मिल गई है। उसने चुपचाप हाथ आगे बढ़ा दिया।

'क्या जानेत भी तुम्हारे साथ जा रही है?' आंद्रे ने जरा असमंजस में पूछा।

ल्युसियां उसका यह प्रश्न सुनकर अपने आश्चर्य को छिपा न सका। इसका तो यह अर्थ हुआ कि जानेत इसके साथ नहीं रहतीं। क्षण भर के लिए वह बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने मन में कहने लगा, चलो अच्छा ही है। ठीक है, वह किसी की होकर न रहे। लेकिन दूसरे ही क्षण फिर उस पर मुर्दनी छा गई। उसे उस शाम की याद आ गई जब वह जानेत के साथ उसके कमरे में था, उसकी गुड़िया लुढ़की पड़ी थी और वह सूनीं आँखों से उसे देख रही थी।

'माफ करना, मुझे बहुत से काम हैं। मेरे सिर में दर्द भी है। हाँ, तुमने जानेत के बारे में पूछा था? मैं नहीं जानता। सचमुच मुझे नहीं मालूम।'

१८

ब्रेतील अपने पाँच साल के लड़के की चारपाई के पास खड़ा था। लड़का जोर-जोर से रो रहा था, उसका चेहरा बुखार से सुर्ख था। ब्रेतील की स्त्री बच्चे को देख-देख कर रो रही थी।

'इसे चुप कराओ,' ब्रेतील ने कहा। 'ईश्वर ने चाहा तो यह अच्छा हो जायगा।'

'मैं कह रही थी कि इसे ठण्डे पानी में न भींगने दो। अभी-अभी यह इधर-उधर दौड़ रहा था।'

'रोको, इसे! इसको मजबूत दिल का बनना है।'

अँधेरा हो रहा था और मदाम ब्रेतील पति की आँखें नहीं देख पा रही थी, जिनसे आँसू बह रहे थे।

ब्रेतील लारेन का रहनेवाला था। उसके घरवाले बड़े गरीब और ईश्वर-भक्त थे। उसके कस्बे से देश की सीमा केवल बारह मील दूर थी। बचपन से ही उसने बेलफोर्ट के घेरे, जर्मन अफसरों की क्रूरता और प्रान्तों के छीने जाने के किस्से सुन रखे थे। उसने अपने दिमाग में यह निश्चय कर लिया था कि इसका बदला शत्रु से लेना है। दो बार वह लड़ाई में जख्मी भी हुआ था।

वह उस हरावली दस्ते में था जिसने सबसे पहले मेज़ नगर में प्रवेश किया था ; जहाँ उसकी एक चाची को पहला ही फ्रेंच झंडा देखते मूर्छा आ गई थी। वह स्वभाव से फ्रांसीसी नहीं मालूम पड़ता था। उसे मजाक पसन्द न था। वह दुखपूर्ण बातें सुनना भी पसन्द नहीं करता था और न कभी शराब पीता था। साफ-सुथरा रहने का तो उसे मर्ज-सा था। बिल्कुल शुष्क और अभिमानी। लोग उसे जर्मन समझते थे। राजनीति में पड़कर उसमें कुछ मुलायमियत आ गई थी। वह तेस्सा जैसे लोगों से दोस्ती रखता था। दिल में वह अपने पार्लमेंटरी साथियों से घृणा करता था। उसके मित्रों में फ़ौजी सिपाही, छोटे जमींदार और धार्मिक विद्वान सभी थे। दो साल हुए ब्रेतील ने यह समझ लिया था कि यदि कोई रास्ता हो सकता है तो वह हिंसात्मक परिवर्त्तन का रास्ता है। मुसोलिनी की 'रोम की चढ़ाई' ने इटली को बचा लिया था। जर्मनी में हिटलर ने अत्यन्त निर्दयता से मार्क्सवाद को उखाड़ फेंका था। ब्रेतील ने भी गुप्त समितियाँ संगठित करनी शुरू कीं। हर समिति में पचास सदस्य होते जो 'वफादार' कहलाते थे।

कौन ऐसा था जो ब्रेतील के 'वफादारों' में नाम लिखाने को तैयार न था। वरसाई रेस्तराँ का मालिक ब्रेतील के साथ इसलिए था कि वह वैभव का पुजारी था। उसके नजदीक जीवन का अर्थ था केवल उसके रेस्तराँ में ग्राहकों का आना, उनका शराब की बोतलों पर बोतलें खतम करना। फ्लारियों गुप्त बीमारियों का डाक्टर था और यहूदियों से इसलिए घृणा करता था कि उसके ख्याल में, यहूदी उसके मरीजों को बहका ले जाते थे और उसकी रोजी मारी जाती थी। वह ब्रेतील के साथ इसलिए था कि उसने रोथ्स्चाइल्ड के संपूर्ण वंश और यहूदी जाति के तमाम डाक्टरों को फ्रांस से निकाल बाहर करने का ठेका ले रखा था। बाम्बार जो एक बड़े चक्कीवाले का लड़का था, फ्रांस को उसकी प्राचीन ख्याति पर पहुँचाना चाहता था और इसके बदले में स्वयं देश की ओर से कहीं राजदूत बन जाना चाहता था। दाइने, जो 'ब्युरो' का भूतपूर्व एजेन्ट था, गुप्तचर विभाग से गबन के अपराध में निकाला गया था, उसका विश्वास था कि यह सब फ्रीमेंसनों के कारण हुआ है। इसलिए वह चेम्बर को भंग करने और लेरियो को सूली पर चढ़ा देने के पक्ष में था। ग्रीमो जो जानवरों को पालने का काम करता

था, और हाथ में एक चाबुक लिये फिरता था, 'वफादारों' में भर्ती होना एक गौरव की बात मानता था।

ब्रेतील ने बच्चे के सीने पर पवित्र क्रास का चिन्ह बनाया और फिर वह किसान यूनियन के लिए रवाना हो गया, जहाँ उसे जनरल पिकार से मिलना था। बड़ी सड़क की तमाम दुकानों में रोशनी थी। हड़तालियों के विज्ञापन साफ-साफ पढ़ने में आ रहे थे। कुछ राहगीर उनको देखते और नाक-भौं सिकोड़ते आगे बढ़ जाते थे। कुछ दूसरे वहाँ रखे हुए डिब्बों में कुछ पैसे डाल देते थे।

जनरल पिकार पहले ही से उसका इन्तजार कर रहा था। वह पैंसठ वर्ष का पतला-दुबला बूढ़ा था। पैर उसके घुड़सवार के पैरों की तरह टेढ़े थे। सीने पर तमगे लगे थे और ओठों पर घृणापूर्ण मुसकान थी। वह हर चीज से घृणा करता था—दलादिय, गैमेली और इंगलैण्ड के बादशाह से, स्वयं अपनी स्त्री से, यहाँ तक कि थियेटर, प्रेस और चुनाव से भी। यदि किसी पर उसे विश्वास था तो वह था ब्रेतील। वह सोचता था कि ब्रेतील ही फ्रांस को और उसकी सेना को बचा सकता है।

'कहो, क्या हाल है?' ब्रेतील ने पूछा।

'सब मूर्ख और डरपोक हैं। समझते हैं कि ब्लूम सारे स्टाफ को ही निकाल देगा!'

'लेकिन सिपाहियों का क्या हाल है?'

'खराब। कम्युनिस्ट जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं। अधिक से अधिक हमें जिस चीज का भरोसा हो सकता है वह है, सेना का निष्पक्ष होना। किन्तु मैं उपनिवेशों से आई हुई सेनाओं के बारे में नहीं कह सकता। हाँ, मैं तुम्हें बतला देना चाहता हूँ कि मैंने किसी प्रकार कोशिश करके दो मोरक्कन फौजों को विनसेनीज भेज दिया है।'

'मूर फौजों को भेज देना ही काफी नहीं। मैं केवल वफादारी के सहारे हूँ। दो बातें संभव हैं, या तो हमें हथियार दो, या फिर जो भी हमें मिलेगा उसे हम लेने से बाज नहीं आयेंगे।'

'कौन दे?'

ब्रेतील ने उसकी ओर देखते हुए कहा, 'प्रश्न यह नहीं कि 'कौन' देगा,

बल्कि 'क्या' देगा। साठ हजार राइफलें, चार सौ मशीनगनें, और गोला बारूद 'डजेल डार्फ' से आयेगा। साथ ही हम इसके अलावा और कोई जिम्मेदारी नहीं लेते कि हमें शान्ति स्थापित करनी है।'

पिकार ने थोड़ी देर सोचने के बाद कहा, 'कुछ बुरा नहीं। व्यक्तिगत रूप से मैं तो ऐसे काम के लिए 'आटोमेटिक' ही पसन्द करता हूँ। जैसे हो उन्हें ले लो। दोनों एक दूसरे में बाधक नहीं होंगे। शस्त्रागार से मैं भी कुछ उड़ाने की कोशिश करूँगा।'

'पहले हमें स्थानीय रूप से छिटपुट वारदातें करनी चाहिये ताकि सरकार की बदनामी हो। विलार फैक्टरियों पर जबरदस्ती कब्जा करने को कानूनी रूप देना चाहता है। हमें उसकी बातों में थोड़ा बहुत खून भी मिला देना है।'

वे काफी देर तक बातचीत करते रहे। बगल वाले कमरे में 'बख्तरधारी' ग्रिजनेज, जो ब्रेतील का इन्तजार कर रहा था, जंभाई ले रहा था और एक छोटी रेती पर अपने नाखून तेज कर रहा था। ग्रिजनेज, जिसने एकबार 'सांस्कृतिकगृह' में गड़बड़ मचाई थी, ब्रेतील पर अंधविश्वास रखता था। उसके माता-पिता बचपन ही में मर चुके थे और एक अनाथालय में उसकी परवरिश हुई थी। स्वभाव से वह बड़ा ही चिड़चिड़ा और तेज बोलनेवाला था। 'वफादारों' की एक टुकड़ी का वह अधिनायक बना दिया गया था और ब्रेतील ने फौजी भेदों को निकाल लाने का काम उसके सुपुर्द किया था।

'परसों', ब्रेतील ने कहा, 'हमारे आज्ञाकारी आदमी बेकार मजदूरों के रूप में 'ह्वीन' के कारखाने में जायेंगे। बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये तुम्हें फाटक के बिल्कुल पास पहुंच जाना होगा। इसके बाद तुम धरना देने वालों से झगड़ा करने लगना। उनको इतना गुस्सा दिलाना कि वे लड़ने के लिए तैयार हो जायें। फिर भी काम न चले, तो गोली चला देना। मैं इस बात का इन्तजाम कर रखूँगा कि पुलिस कहीं पास ही में मौजूद रहे। जरूरत यह है कि काफी झगड़ा हो जाये। समझे? अपने आदमियों के पास 'क्रिस्चियन मजदूर यूनियन' के टिकट होंगे। उन्हें नहीं मालूम होना चाहिये कि क्या होने जा रहा है। मैंने तुम्हें इसलिए चुना है कि तुम्हारे बाल-बच्चे नहीं हैं।'

'नेताजी, आप विश्वास रखिये, सब ठीक हो जायेगा।' ग्रिजनेज ने हाथ

ऊपर उठाकर सलामी दी और चलने के लिए तैयार हुआ। ब्रेतील ने उसे गले लगाकर धन्यवाद दिया।

ब्रेतील रात में दो बजे घर पहुँचा। उसकी पत्नी उसे बड़े कमरे में मिली। वह बोली, 'लड़के को निमोनिया हो गया है!'

ब्रेतील सबेरे तक बीमार बच्चे की चारपाई के पास बैठा रहा। दूसरे रोज दिन भर वह काम में लगा रहा। उसने देजेर से भी भेंट करने की कोशिश की। उसने सोचा कि सब से अच्छी तरकीब यह होगी कि कारखाने के मालिक की ओर से घोषणा करा दी जाये कि नये मजदूरों की जरूरत है। किन्तु देजेर ने मिलने से इनकार कर दिया; उसे लगा कि जरूर दाल में कुछ काला है। दूसरी ओर ब्रेतील ने पुलिस के प्रधान अफसर को मिला लिया था। इन दोनों ने निश्चय किया कि पुलिस फैक्टरी के पास ही घाट पर मौजूद रहेगी। यदि कोई गड़बड़ी हुई, तो तुरन्त मौके पर पहुँच जायेगी। शाम को ब्रेतील ने ग्रिजनेज से फिर बातें कीं और अच्छी तरह देखकर समझ लिया कि कल क्या-क्या और कैसे करना होगा। रात भर फिर वह अपने बच्चे के पास पैठा रहा। डाक्टरों ने साफ जवाब दे दिया था किन्तु ब्रेतील को ईश्वर पर विश्वास था। उसके ओंठ हिल रहे थे, वह ईश्वर की स्तुति में कुछ गुनगुना रहा था।

गर्मी का सुन्दर सुहावना सबेरा था। बाग में चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। शहर के शोरगुल से अभी उनकी आवाज नहीं दबी थी। कभी-कभी तरकारी बेचनेवालों की गाड़ियाँ उधर से घड़घड़ाती हुई निकलतीं। रोटी बेचने वाली औरतें रोटियाँ बेच रही थीं और ताजी-ताजी रोटियों की महक हवा में फैल रही थी। मकानों की ऊपरी खिड़कियों से निकलते हुए सूर्य की गुलाबी रोशनी आ रही थी। 'वफादार' एक-एक करके जावेल पुल के निकट जा पहुँचे। ग्रिजनेज ने उनकी गिनती की। चार नहीं आये थे। छियालिस आदमियों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ भिन्न-भिन्न मार्गों से कारखाने की ओर बढ़ीं।

हड़ताल का ग्यारहवाँ दिन था। कारखाने में सबेरे से पूर्ण शान्ति थी। पुराने सन्तरियों की जगह नये ने ली थी। मिशों रात भर सोने के बाद इस समय साबुन मलकर नहा रहा था। बड़े फाटक के पास जानो खड़ा उस गीत को गा रहा था, जो उसने रात में एक मंडली से सुना था। पियेरे सोकर उठ चुका था, वह हाजिरी का रजिस्टर देख रहा था।

जानो ने एक बुढ़िया की नकल की जो अपने को जवान दिखलाना चाहती थी। अपने पायजामे के किनारों को लंहगे की तरह पकड़ कर वह अंगूठे के बल नाचने लगा। अचानक उसने कहा, 'देखो तो, कौन लोग आ गये !'

फाटक पर लोगों की एक भीड़ आकर चिल्ला रही थी 'फाटक खोलो, फाटक खोलो···! अब हम लोग काम करेंगे। निकलो यहाँ से, बदमाशों !'

जानो भला कब पीछे रहने वाला था। उसने तुरन्त ही तड़क कर कहा, 'सूअर कहीं के ! धोखेबाज, फासिस्ट ! अभी हम तुम्हारे मुँह में कालिख पोतते हैं।'

अब सैकड़ों आदमी शोर मचाने लगे थे। कुछ सुनाई नहीं पड़ता था कि कौन क्या कह रहा है। ग्रिजनेज आग बगूला हो रहा था। मजदूरों के पास दौड़-दौड़कर न जाने उन्हें वह क्या-क्या कह रहा था। उसका चेहरा गुस्से से काँप रहा था। मिशो ने बड़ी कोशिश की कि उसके साथी शान्ति से काम लें, किन्तु फासिस्टों के अपमानपूर्ण व्यवहार के सामने कोई कुछ सुनने को तैयार नहीं था।

इतने में गोली की आवाज हुई। जानो धड़ से जमीन पर गिर पड़ा। मिशो ने पियेरे के हाथों से रिवाल्वर छीनकर चिल्लाते हुए अपने आदमियों को हुक्म दिया, 'गोली न चलाओ ! इनके ऊपर पानी फेंको !'

सब इधर-उधर भागने लगे। केवल ग्रिजनेज डटा रहा और इधर-उधर उछलता रहा। इसके बाद ही पुलिस आ पहुँची और ग्रिजनेज गायब हो गया।

मिशो ने झुककर जानो को देखा, वह मुसकरा रहा था। लेकिन पास के पत्थरों पर खून दिखाई पड़ा। वह चीखा, 'जानो !'

उस हँसमुख नवयुवक की मौत इतनी अचानक और रहस्यपूर्ण हुई कि मिशो जोर से चीख पड़ा, 'उन्होंने इसे मार डाला !'

उसने घूमकर दूसरों की ओर इस प्रकार देखा जैसे मानो वे कहेंगे कि, नहीं। मजदूर अपने सिर से टोपियाँ उतारे खड़े थे; मिशो की आँखों में धुंधलापन छा गया। इसी बीच उसने पियेरे के दुखित चेहरे की ओर देखा।

नदी में कूदकर ग्रिजनेज पुल के नीचे जा छिपा था। ठंडक और क्रोध

के मारे वह काँप रहा था। किसी ने पुकार कर पूछा, 'क्या बात है? नहाने का इरादा है?'

ग्रिजनेज ने उसकी ओर थूक दिया। फिर काफी देर तक वह धूप में बैठा रहा, क्योंकि पानी से तर कपड़ों में निकलना ठीक न था। तब वह एक हज्जाम की दूकान पर पहुँचा। वहाँ उसकी हजामत बनी, 'यू द कोलोन' छिड़का गया, बालों में काफी 'क्रीम' लगाई गई, किन्तु वह और क्रीम की माँग करता रहा। वास्तव में अभी-अभी जो घटना हुई थी उसे वह भुलाने की कोशिश कर रहा था। कैंची चलने की आवाज उसे ऐसी मालूम हो रही थी जैसे फूलों से लदे किसी बाग में चिड़ियों की चहचहाहट हो। सबेरे ग्यारह बजे वह जाकर ब्रेतील यहाँ पहुँचा। उसको ब्रेतील के कमरे में पहुँचाया गया, जहाँ वह सलीब के के सामने घुटने टेके बैठा था। उसके पुत्र की मृत्यु हो चुकी थी। ग्रिजनेज को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और बोला, 'कोई मरा भी?'

'एक को तो मैंने मार गिराया था।'

'लेकिन हमारे आदमियों में?'

'कोई नहीं। उन्होंने पानी के 'होज' इस्तेमाल किये।'

'एक भी नहीं? तुमने फिर किया क्या? सब किया कराया मिट्टी में मिल गया।'

ग्रिजनेज समझा नहीं। आश्चर्य से मुँह फैलाकर उसने कहा, 'अधिनायक होने के नाते वफादारों की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य था।'

ब्रेतील यह सुनकर फिर घुटनों के बल बैठ गया। ग्रिजनेज चुपके स बाहर निकल गया। नौकरानी हाल में खड़ी रो रही थी। उसने उससे कहा 'तुम्हारे मालिक एक महान् व्यक्ति हैं। लेकिन मालूम होता है अब मेरा अन्त निकट है।'

१६

पेरिस के सारे अखबारों ने जानो की हत्या की खबर मोटे अक्षरों में छापी। वामपक्षी अखबार इसके लिए ब्रेतील को जिम्मेदार ठहरा रहे थे। उनकी उनकी माँग थी कि फासिस्टवादी गुप्त संगठन के विरुद्ध तुरन्त कड़ी कार्रवाई

की जाय। दक्षिणपक्षियों का कहना था कि जानो को मारनेवाले कम्युनिस्ट थे, क्योंकि वह हड़ताल खत्म करने के पक्ष में था।

दो दिन बाद पार्लेमेन्ट में जानो की हत्या पर बहस हुई। प्रस्ताव पेश करने वाला स्वयं ब्रेतील था। चारों तरफ यही आशा थी कि आज काफी हुल्लड़ मचेगा। पब्लिक के लिए नियत गैलरियाँ खचाखच भरी थीं। बैठक आरम्भ होने से पहले ही हाल में इतना शोरगुल मचा हुआ था कि उसका वर्णन करना कठिन है पार्लेमेंट के सदस्य क्रोधित हो होकर एक दूसरे को खरी-खोटी सुना रहे थे। हेरियो ने, स्पीकर हेरियो ने परेशान स्कूल मास्टर की तरह जोर जोर से मेज पर रूलर पटका और जोर से घंटी बजाई और चिल्लाकर कहा, 'खामोश! खामोश!'

क्षण भर के लिए सन्नाटा छा गया, किन्तु ज्योंही ब्रेतील बोलने के लिए मंच पर आया, वामपक्षियों की ओर से लोग चिल्लाने लगे, 'हत्यारा है! हत्यारा!'

सदस्य अपनी-अपनी मेजों पर घूँसे मारते और चिल्लाते रहे। पहरेदार तैयार खड़े थे, क्योंकि यह भय था कि किसी भी क्षण मारपीट शुरू हो सकती है। हेरियो भरसक कोशिश करता रहा कि किसी प्रकार शान्ति स्थापित हो।

अन्त में शोर कम हुआ और ब्रेतील ने बोलना आरम्भ किया, 'कौन कहता है मैं हत्यारा हूँ? उस बेचारे निर्दोष मजदूर के हत्यारे तो कम्युनिस्ट हैं। उन्होंने उसका खून बहाया है।'

इस पर बड़े जोर का शोर हुआ और उसकी आवाज दब गई। वह बोलता ही रहा, किन्तु उसके दो-एक शब्द ही सुनाई दिये जैसे; बेचारी बूढ़ी माता ...अराजकता...ब्लूम की विवशता......विलार की अवहेलना!

विलार सरकारी बेंच पर बैठा अपने पैड पर छोटे-छोटे जहाजों की तस्वीर बना रहा था, यह सब पार्लेमेंट के बहुमत पर भद्दे ढंग से आक्रमण करने के सिवा और कुछ नहीं। वह कुछ और ही सोच रहा था, जैसे हड़ताल किस प्रकार समाप्त करायी जाय, आदि।

तालियाँ भी बजीं और आवाजाकशी भी हुई। अपने कागज समेटते हुए, ब्रेतील मंच से नीचे उतर गया।

समाजवादियों ने पहले ही ठीक कर रखा था कि सरकारी पक्ष की ओर

से एक रेडिकल बोलेगा। उन्होंने सोचा कि यह चाल अधिक ठीक होगी। जब अध्यक्ष ने तेस्सा से बोलने के लिए कहा तो वामपक्षियों की ओर से जोरों की तालियाँ बजीं। दक्षिणपक्षी चुप रहे। तेस्सा ने अपना भाषण धीमी, खिंची हुई आवाज में आरम्भ किया। उसने एक नवयुवक की हत्या पर शोक प्रदर्शित करते हुए उन लोगों की घोर निन्दा की जो देश को गृहयुद्ध की आग में ढकेल देना चाहते हैं।

'बड़े शोक के साथ कहना पड़ता है कि फैक्टरी पर हड़तालियों को कब्जा करने का मौका देकर सरकार एक प्रकार से हिंसा को प्रोत्साहन दे रही है। मैं यह बात सामाजिक न्याय के समर्थक और जनवादी मोर्चे के एक प्रतिनिधि की हैसियत से कह रहा हूँ...।'

यह बात ऐसे अचानक कही गई, कि थोड़ी देर तक किसी की समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे। इतने में ब्रेतील ने उठकर जोर से चिल्लाकर कहा 'शाबाश, शाबाश!' फिर क्या था इतने जोर की तालियाँ बजीं और शोर हुआ कि सारा हाल हिल उठा। दक्षिण पक्षियों और रेडिकलों में से भी कुछ ने इसमें भाग लिया। लोग सोचने लगे कि अब जनवादी मोर्चे का क्या होगा? किन्तु तेस्सा सरकार में पूर्ण विश्वास प्रकट करता रहा, यद्यपि लोग समझ रहे थे कि यह सब बनावटी बातें कही जा रही हैं।

तेस्सा के बाद उत्तरी क्षेत्र से चुने गये एक कम्युनिस्ट सदस्य के बोलने की बारी आई। वह किसी फाउन्ड्री में काम करने वाला मजदूर था, उसके चेहरे की नीली नसें साफ़ नजर आ रही थीं। उसने कहना शुरू किया, 'हम सरकार से माँग करते हैं कि वह फासिस्ट हत्यारों की सरगमियों को तुरन्त रोके। सदस्य ब्रेतील के कामों की तुरन्त जाँच पड़ताल की जाये...।'

दक्षिण पक्ष की ओर से शोर मचने लगा। ब्रेतील उठकर जा चुका था। किन्तु उसके साथी चिल्ला रहे थे। समाजवादी ऐसे चुप बैठे जैसे उन्हें इससे कुछ मतलब ही नहीं। उनका भी ख्याल था कि कम्युनिस्ट वक्ता के शब्द बड़े कटु हैं। अन्त में हेरियो ने अपनी ऊँची हैट उठा कर सिर पर रख ली, जिसका अर्थ था कि अधिवेशन स्थगित हो गया। जिस तरह छुट्टी मिलने पर लड़के क्लास के बाहर भागते हैं उसी प्रकार के सदस्य निकलकर 'लाबी' और 'बार' की ओर दौड़े।

रेडिकल सदस्यों की एक गुप्त बैठक हुई। कुछ ने तेस्सा का भाषण पसन्द किया। दूसरों ने कहा इससे देश की उम्मीदों पर पानी फिर गया, अब जनवादी मोर्चा छिन्न-भिन्न हो जायेगा और दक्षिणपक्षियों को षड़यन्त्र करने का अवसर मिलेगा। लेकिन तेस्सा ने विनम्रता से समझाते हुए कहा, 'मैं जनवादी मोर्चे तथा अपनी पार्टी को बचाना चाहता था।' काफी वादविवाद के बाद निश्चय किया गया कि रेडिकल समाजवादियों का साथ दें और फैक्टरियों को खाली कराने की आवश्यकता पर जोर दें। समाजवादियों ने जवाब देने में देर की। विलार देजेर से बात करना चाहता था। गैलरी में बैठे लोगों को हेरियो की यह घोषणा सुनकर बड़ी निराशा हुई कि ब्रेतोल की गतिविधि पर बहस शाम तक के लिए स्थगित की गई और उसकी जगह एक दूसरे बिल पर बहस होगी। ब्रेतोल चिल्ला कर कहा, 'रेडिकल पानी में हैं और विलार मास्को के आदेश का इन्तजार कर रहा है!'

एक समाजवादी घूंसा ताने ब्रेतोल की ओर लपका किन्तु ब्रेतोल ने उसे एक तमाचा जड़ दिया। फिर क्या था हाथापाई शुरू हो गई। एक पहरेदार लोगों के पैरों में रौंद गया। हेरियो अपनी छोटी-सी घंटी टनटनाता हो रहा। थोड़ी देर में झगड़ा रुका और सारे सदस्य उठकर 'बार' की ओर चले गये।

बड़ा दुखी हृदय लिये विलार देजेर से भेंट करने पहुँचा। काफी समय तक वह इसी उधेड़बुन में रहा कि उसका देजेर से भेंट करने जाना अपनी शान के खिलाफ तो नहीं होगा। देजेर ने पहले बड़ी सहानुभूति दिखाते हुए उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। विलार ने उत्तर दिया कि कार्य के भार से वह बड़ा थका रहता था।

'ठीक ही है,' देजेर बोला, 'इस प्रकार की हड़ताल को चलाना भी तो…।'

'हमें भी इससे उतना ही कष्ट है, जितना आपको', विलार ने कहा। 'इसी के बारे में तो आपसे बातें करने मैं आया हूँ। बतलाइये, आपकी क्या राय है?'

'मेरे दोस्त, तुम राज्यमंत्री हो और मैं एक साधारण व्यक्ति ठहरा। मैं तो तुम्हारे फैसलों का इन्तिजार कर रहा हूँ।'

विलार के मन में आया कि उठकर चल दे, किन्तु फिर अपनी जिम्मेदारियों

का विचार करके क्रोध को दबाते हुए बोला, 'मैं आपके इस व्यंग्य का अर्थ नहीं समझा।'

'यह व्यंग्य नहीं, आत्मरक्षा है। तुम्हीं सोचो, यदि मैं कहूँ कि हड़तालियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाये तो तुम तुरन्त कहोगे कि हम 'दो सौ घरानेवालों' ने तुम्हें पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण नहीं करने दिया। इसलिए इन्तजार करना ही मेरे लिए उचित है। हो सकता है तुम लोगों के पास कोई जादू हो, हो सकता है न भी हो। तब मजदूर स्वयं देख लेंगे कि तुमने उनकी दशा में न तो कोई परिवर्तन किया है और न कर ही सकते हो, इसलिए मैं कोई दबाव नहीं डालना चाहता।'

'लेकिन आज तो तेस्सा ने माँग की है कि फैक्टरियाँ खाली करा ली जायें।'

'मुझे खूब मालूम है। हमारे मित्र तेस्सा का नया दिमाग है। किन्तु मैं तो इन्तजार करना ही पसन्द करता हूँ। मैं पुलिस की सहायता लेने का विरोधी नहीं; किन्तु प्रत्येक चीज अपने समय पर ही उचित होती है। तुम्हें मेरी यह पेंटिंग कैसी लगती है? इसमें सन्देह नहीं, वह इतनी अच्छी नहीं जितनी तुम्हारी है, लेकिन यह हरा रंग भी कुछ...।' देजेर ने बात का रुख पेंटिंग की ओर बदलना चाहा। विलार इस समय पेन्टिंग के बारे में बात करने की स्थिति में नहीं था इसलिए वह उसकी बातों में न आया। वह सोच रहा था क्या किया जाय? देजेर कोई गहरी चाल चल रहा था। देखने में तो मालूम होता था कि वह सरकार के बहुमत को तोड़ने की फिराक में है। आज ही, आधे रेडिकलों ने तेस्सा का साथ दिया था। इसका अर्थ यह था कि फैक्टरियाँ खाली करायी जायें। लेकिन ऐसी दशा में सारे मजदूर कम्युनिस्टों के साथ चले जायेंगे, जिसका अर्थ होगा देश में क्रान्ति की आग का भड़कना। कितनी घृणित चाल थी। इसका साफ अर्थ था कि उसे हर प्रकार से हानि उठानी पड़े। विलार काफी देर तक यही सब सोचता रहा। उसके थके हुए मस्तिष्क ने कहा—'क्यों न और इन्तजार किया जाये?' यह इन्तजार करने वाली बात उसे बड़ी प्रिय थी, बचपन से ही उसने इसे सीख रहा था। क्या उसने अपना सारा जीवन इसी इन्तजार में नहीं गुजारा था?

शाम के अधिवेशन के पहले गुप्तचर विभाग से उसे सूचना मिली कि

हड़तालियों में फूट पड़ती मालूम पड़ती है। बहुत से कह रहे हैं कि हड़ताल समाप्त कर दी जाये। 'सीन' कारखाने में ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है, जो समझौते के पक्ष में हैं। विलार को कुछ संतोष हुआ, उसके ओठों पर मुसकराहट आई। उसने अपने मन में कहा—हड़ताल को एकदम असफल नहीं होने देना चाहिये, नहीं तो दक्षिणपक्षी रेडिकल इससे फायदा उठायेंगे। इसके अलावा देजेर भी समझौता करना चाहता है। इसलिए किसी न किसी प्रकार समझौता करा देना चाहिये, समय भी हमारे अनुकूल है।

रेडिकलों के हाथ कुछ भी न लगा। शाम के अधिवेशन में सरकारी पक्ष की ओर से विलार ने गोल-मोल उत्तर दिया कि एक ओर मजदूरों के हितों की रक्षा करनी है और दूसरी ओर शान्ति भी स्थापित रखनी है। दक्षिण पक्षियों ने इस उत्तर के प्रति घोर असन्तोष प्रकट किया, समाजवादियों ने उसकी प्रशंसा की और रेडिकल चुप रहे। हाल में अपनी जगह से तेस्सा ने चिल्लाकर कहा, 'अगर फैक्टरियाँ तुरन्त नहीं खाली करायी गईं, तो जनता के क्रोध की लहरों में तुम्हारे पाँव टिक नहीं सकते!'

एक बार फिर जोर से तालियाँ बजीं। विलार के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं; फिर भी उसने मुसकराने की कोशिश की। वह बेहद थका हुआ था।

तेस्सा की चारों ओर धूम थी। लोग उससे हाथ मिलाने पहुँचे और मिराबो, लाफेट और गाम्बेता से उसकी तुलना करने लगे। चैम्बर में इतना सफल व्याख्यान देने पर वह अभी तक प्रसन्न चित्त था, उसने सोचा मुझ-सा निडर, वीर तथा सत्य के लिए लड़नेवाला कौन है? घर पहुँचने पर उसे बड़ी कमजोरी मालूम हुई, यद्यपि अभी तक वह प्रसन्न था। उसकी स्त्री रोज की तरह आज भी गर्म पानी की बोतल दबाये पड़ी थी। ल्युसियां उसके आने से पहले ही गायब हो चुका था और कहीं मौज उड़ा रहा था। किन्तु तेस्सा को उस समय कोई ऐसा आदमी चाहिए था, जिसे वह अपनी सफलता की खबर सुना सकता इसलिए वह देनीजे के पास पहुँचा। ठीक उसी प्रकार जैसे वह चैम्बर में बोला था, उसने देनीजे के सामने अपना व्याख्यान दोहराया और बतलाया कि इस बात पर लोगों ने पागलों की तरह तालियाँ बजाई।

भाषण दोहराते समय वह इतने जोश में था कि देनीजे पर उसकी नजर ही न पड़ी। वह किसी विचार में लीन थी। पिछले कुछ दिनों से वह अपने

पिता के बारे में सोचने लगी थी। पिछले जाड़ों से राजनीति से उसे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी।

लेकिन अब चूँकि वह बराबर सभाओं में जाती और अखबार पढ़ती थी, इसलिए खाने के समय उसका पिता जिस प्रकार की बातें करता था, वे उसे पसन्द नहीं आती थीं। उसे ऐसा लगता था कि वह एक आरामतलब, आलसी राजनीतिज्ञ है, जो अपना मतलब सिद्ध करने के लिए कुछ भी कर सकता है और किसी से भी सौदा पटा सकता है।

पेरिस की सड़कों की हवा देनीजे को भी लग ही गई। उसने अखबारों में पढ़ा था कि 'सीन' कारखाने के हड़तालियों का नेता मिशो है। वह मिशो में पूर्ण विश्वास रखती थी और हड़ताल को न्यायपूर्ण लड़ाई समझती थी। जब उसने एक नवयुवक मजदूर की हत्या का समाचार सुना तो उसे मिशो के ये शब्द याद आ गये कि कर्म और वचन में संगति खून से पैदा की जा सकती है। उसने अपने मन में सोचा 'अब क्या किया जाये।' स्वभाव से वह शान्त थी। तरह तरह से हाथ-पैर हिलाने, मुँह बनाने और जोर जोर से बोलने में उसे लज्जा मालूम होती थी। जिस तरह भी हो वह अपनी पुरानी आदतों को छोड़ना चाहती थी। उसने सोचा इस बारे में मिशो से राय ली जाय, किन्तु वह तो और किसी काम में व्यस्त था। आज उसका पिता अपने यहाँ आकर डींगें हाँक रहा था और कह रहा था कि वे लुटेरे ही इस सब के लिए जिम्मेदार हैं। सुनते सुनते अचानक वह बीच में बोल उठी, 'बस, हो गया!'

तेरसा ने पुत्री की ओर आश्चर्य से देखा और सोचने लगा, इसे हो क्या गया है? वह सामने खड़ी थी— लंबे और पतले शरीर वाली उसकी लड़की उसके सुन्दर चेहरे में एक रुखी आती जा रही थी। वह गुस्से से उसकी ओर देख रही थी।

'तुम्हें हो क्या गया है?' तेरसा ने पूछा।

'मैं इस प्रकार की बातें नहीं सुन सकती! मैं आपको नाराज नहीं करना चाहती, लेकिन आप जो कुछ कह रहे हैं वह आपके सर्वथा अयोग्य है। शायद मैं भी वैसा ही अनुभव कर रही हूँ जैसा कि वे···। शायद रहने का ढंग ही भिन्न होता है। मैं कह नहीं सकती·· लेकिन कैसा क्लेश है-यह···। यह कहते हुए वह कमरे के बाहर हो गई।'

तेस्सा बिगड़ता हुआ अपनी स्त्री के कमरे में जा पहुँचा और बोला, 'तुम्हारी बेटी भी तुम्हीं को पड़ी है! उसमें भी एक प्रकार का धार्मिक कट्टरपन है। वह भी स्वर्ग, नर्क, और न जाने किस किस की बातें करती है!'

'पाल, मेरी हँसी क्यों उड़ाते हो?'

'मैं हँसी नहीं उड़ा रहा। तुम सबका दिमाग खराब हो गया है। मैं तो स्वतन्त्र मिचारों वाला हूँ, मुझे स्वर्ग चाहिए न नर्क मुझे बीच ही में रहने दो!'

वह पालेत के घर पहुँचा और चुपचाप बैठा ब्रान्डी पीता रहा। पालेत ने लाख कोशिश की कि उसका ध्यान बढ़ाये, किन्तु कोई लाभ न हुआ। जब उसने कहा, 'आओ, मेरा चुम्बन लो।' तब भी वह अपनी जगह से न हिला और धीरे से बोला, 'सब कुछ जहन्नुम में जा रहा है, सब कुछ!'

२०

जानो की माँ क्लेमेंस दुवाल कुछ चिड़चिड़े स्वभाव की लेकिन नेकदिल औरत थी। उसके हाथ गठिया से पीड़ित थे, भूरे बाल पीले पड़ गये थे और आँखें, जो अब भी चमकती थीं, बतला रही थीं कि किसी समय वह कितनी सुन्दर रही होगी। वह रोज बाहर काम करने जाती, अकेले लड़कों के कपड़े धोती, उन पर लोहा करती, उनके कमरों में झाड़ू-बुहारू करती और इस प्रकार रोजी कमाकर काम चला रही थी। कभी उसके और भी बुरे दिन थे—जब विराम संधि के ठीक पहले ही युद्ध में उसका पति मारा गया था और उसके ऊपर दो नन्हे बच्चों का भार पड़ा था। उस मैले-कुचैले कमरे में, जो मकान की सातवीं मंजिल पर था और जहाँ धुएँ से काला एक चूल्हा था और क्लेमैंस की दादी के पुराने बड़े-बड़े पलंग पड़े रहते थे, वह अपने बच्चों के साथ, किसी तरह दिन काटती थी। कभी-कभी तो इतना भी पैसा नहीं होता था कि कोयला खरीदा जा सके। बच्चे सर्दी से ठिठुरते रहते। कभी जानो के पायजामें फटे रहते, कभी अनेत के लिए नोट बुक खरीदने की जरूरत पड़ती। लेकिन किसी प्रकार उसने पाल-पोसकर बच्चों को बड़ा किया ही। अनेत की

शादी किसी इन्जीनियरिंग के कारखाने के एक मिस्त्री से हो गई और वह लियों चली गई। जानो को 'सीन' कारखाने में काम मिल गया। वह कितना भाग्यशाली था। उस दिन तो जानो ने एक बोतल शराब भी खरीदी। यह आश्चर्य की बात नहीं थी ? जानो की उम्र के न जाने कितने लड़के नौकरी की तलाश में शहर की सड़कों पर और आसपास के कारखानों के फाटकों पर ठोकरें खाते फिरते थे ? हर जगह यही उत्तर मिलता था 'कोई जगह खाली नहीं' एप्रेन्टिस भी नहीं लिये जा रहे थे। उसकी पड़ोसिनें कहा करती कि उनके जवान लड़के घर के लिए भार हो रहे हैं। जिस रोज पहली बार जानो ने अपनी तन्ख्वाह लाकर माँ के हाथ पर रखी, उसे कितना हर्ष हुआ था ?

उसे अपने जवान बेटे पर गर्व था, लेकिन उसे सदा यह भय रहता कि कहीं उसके बच्चे को कुछ हो न जाये। वह दूसरों की टाँग खींचने का बड़ा आदी था और सदा लोगों से भिड़ जाने के लिए तैयार रहता था। कितनी बार उसने उसे सचेत किया था कि किसी भी दिन वह संकट में पड़ सकता है। वह उसे अब भी एक बच्चा ही समझती थी और हर शरारत के लिए डाँट देने का उसे अधिकार था। जब उसने सभाओं में भाग लेना आरंभ किया तो उसे कुछ खटका लगा। उसका हृदय कह रहा था कि इस रास्ते में काँटे हैं। उसने जानो को इस काम से बाज आने को कहा। उसे डराया भी। लेकिन उसने हँस कर टाल दिया। उस साल मई दिवस के अवसर पर उसने जानो को एक लाल झंडा लिए जुलूस के साथ देखा। क्लेमैंस गिरजाघर जाने की आदी न थी। उसका विश्वास था कि यदि ईश्वर है, तो भी उस तक पहुँचने का कोई मार्ग नहीं। किन्तु उस रोज जब उसने जानो को लाल झंडा लिए जाते देखा, तो तुरन्त उसने अपने सीने पर पवित्र क्रास का चिन्ह बना लिया था। उसे भय हो रहा था कि कहीं उसका लड़का विनाश के पथ पर तो नहीं चल रहा है।

इसके बाद हड़ताल आरंभ हुई। और फिर हड़ताल भी कैसी ! पिछले जमाने में मजदूर चुपचाप हड़ताल कर देते थे। वे अपने घर जा बैठते थे और उचित समय आने तक इन्तजार करते रहते थे। किन्तु अब तो हड़ताल भी अजीब तरह की होने लगी थी। मजदूरों ने काम करने से इन्कार कर दिया था, और कारखाने में ही जमकर बैठ गये थे। इसके लिए उन्हें पुलिस गिरफ्तार

भी कर सकती थी। क्लेमैंस ने जानों को बहुत समझाया कि वह अपने घर आकर रहे, किन्तु उसने एक नहीं सुनी थी। रोज शाम को वह उसे अंडे, पनीर और ,सासेज' दे आती। उसके पास में पैसा न होने की शिकायत नहीं थी। अपनी उसे कोई परवाह न थी।

एक दिन अचानक जानो की मृत्यु की खबर आ गई। बिचारी बुढ़िया को इतना भारी धक्का लगा कि क्षण भर के लिए वह सन पड़ गई। न उसके पड़ोसियों ने, न रिश्तेदारों और जानों के साथियों ने ही उसके मुँह से एक शब्द निकलते सुना। शव के साथ आगे-आगे वह चली, आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी लेकिन जबान पर उफ भी न थी। उसके पीछे जानो की मौसी अपने बच्चों के साथ चल रही थी। कुछ पड़ोसी और मिशो के नेतृत्व में 'सीन' फैक्टरी के मजदूरों के प्रतिनिधि भी साथ थे।

यह तय हुआ था कि मजदूर तब तक फैक्टरी से नहीं निकलेंगे, जब तक पूरी जीत हासिल नहीं होती। इसीलिए मजदूरों का दल छोटा था। जानों की लाश शहर के बाहर एक कब्रिस्तान में, जहाँ बहुत सी कब्रें नजदीक-नजदीक थीं, दफनाई गई।

पुलिस ने विलार को धोखे में नहीं रखा। 'सीन' कारखाने की हालत परिस्थित नाजुक होती जा रही थी। दो सप्ताह की हड़ताल ने बहुत से मजदूरों के इरादे डवाडोल कर दिये थे। स्त्रियाँ अब फाटकों पर खाना लेकर नहीं आती थीं, बल्कि शिकायतें सुनाने आती थीं। पास में जो भी पैसा था वह खत्म हो चुका था और दूकानदार उधार देने से इन्कार करते थे। थोड़ी देर के लिए जानो की हत्या की खबर सुनकर लोगों में जोश आ गया था। वे हत्यारों से बदला लेने के लिए व्याकुल हो उटे थे और मिशो बड़ी कठिनाई से उन्हें रोक पाया था। लेकिन शाम होते ही फिर निराशा छा गई, उनके बाल-बच्चे भूखों मर रहे थे। हड़ताल इतने दिनों चली थी, फिर भी कोई नतीजा निकलता नहीं दिखाई पड़ता था। जो लोग अधिकारियों के सम्पर्क में थे, वे तरह-तरह की अफवाहें फैलाते थे—आर्डरों की कमी के कारण कारखाना जनवरी तक बन्द रहेगा, पुलिस ने कारखाना खाली करने का हुक्म दे दिया है और कहा है कि अगर ऐसा नहीं किया गया तो वह गैस का प्रयोग करेगी।

हड़तालियों में जो लोग असंतुष्ट हो रहे थे, उन्होंने सिल्विन नामक एक

खरादिये के पास इकट्ठे होना शुरू किया। यह सिलिव्रन बड़ा झक्की आदमी था, उसके मन में कोई स्थिरता न थी। हड़ताल के शुरू में उसने यह राय दी थी कि फेक्टरी चालू रखी जाय और पुराने अधिकारियों की जगह एक चुनी हुई कमेटी नियुक्त कर दी जाय। जब लोग उसकी बातों पर हंसे तो उसने बड़े जोर से बिगड़ कर कहा, 'तब हो चुका ! देजेर तो आसानी से हाथ पर हाथ धरे बैठा रह सकता है, लेकिन हम लोग नहीं रह सकते।' जब उसकी औरत ने आकर खबर दी कि खाने के लिए घर में एक पैसा भी नहीं रहा, तो उसने एक बार फिर बिगड़ कर अपने साथियों से कहा, 'अब हमें अपनी बेवकूफी से बाज आना चाहिए। हड़ताल खत्म कर दी जाये !' ज्यों-ज्यों दिन बीत रहे थे, लोग और उसकी बातें सुनने के लिए तैयार होते जाते थे। उसने प्रस्ताव रखा कि हर मजदूर की गुप्तरूप से राय ली जाये; उसे विश्वास था कि अट्ठारह हजार में से दस हजार मजदूर अवश्य हड़ताल वापस लेने के पक्ष में वोट देंगे। मिशो ने इसका विरोध किया और कहा कि ऐसे समय जब कि इतने मजदूरों की इज्जत का सवाल है, वोट खुले आम लिए जाने चाहिए। उसे यकीन न था कि अब मजदूर और अधिक टिक सकेंगे। हार के दिन निकट मालूम पड़ते थे।

देजेर को फैक्टरी की सारी खबर मिलती रहती थी। उसने कोशिश करके हड़ताल को तुड़वाना चाहा इसलिए फिर पियेरे को बुलवाया।

'क्या हाल है तुम्हारे जोश का ? मैं चाहता हूँ कि मेरे विचार हड़तालियों की कमेटी तक पहुँचा दिये जायें; मुझे मालूम हुआ है तुम भी उसके सदस्य हो। मजदूरी और काम के घंटों के बारे में मजदूरों की बात मैं मानता हूँ, लेकिन इस बात को मानने से मुझे साफ इनकार है कि मजदूरों को संगठित रूप से बातचीत करने और तनख्वाह सहित छुट्टियाँ मिलने का भी अधिकार हो। यह न कभी हुआ है और न होगा। अब भी तुम्हें विलार पर विश्वास है ? हो सकता है वह कोई जादू कर दिखाये। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, अगर हड़ताल खत्म नहीं कर दी जाती तो मैं फैक्टरी बन्द कर दूंगा।'

'मेरी समझ में आपकी बात स्वीकार नहीं होगी।'

पियेरे जो वैसे ही हमेशा जोश में रहता था, खुले-खुले शब्दों में बोलने लगा। देजेर ने तुरन्त ताड़ लिया कि उसके मन में विरोध की आग भड़क रही

है। बात को बदलते हुए तुरन्त ही वह बोला, 'इसमें नाराज होने की कौन सी बात है ! मैं एक पूंजीपति हूँ। इसी से तुम्हें सब समझ जाना चाहिए। मजदूर भी अपने दृष्टिकोण से ठीक हैं। लेकिन तुम ! तुम न इधर के हो न उधर के, फिर भी घुसे बीच में हो और खामखाह का शोर मचवा रहे हो ! सामूहिक समझौते की माँग से तुम्हें क्या लाभ ? तुम व्यर्थ ही अपना नुकसान कर रहे हो, ये लोग तो ऐसे ही रहेंगे !'

'मुझे उन पर विश्वास है,' पियेरे बोला।

'नहीं, तुम्हें उन पर विश्वास नहीं। हो सकता है तुम उन्हें पसन्द करते हो, किन्तु विश्वास तुम्हें उन पर नहीं। जानते हो, तुम उन्हें किस विनाश की ओर ले जा रहे हो ? कितने दुख की बात है !'

पियेरे ने मिशो तक देजेर का प्रस्ताव पहुँचा दिया। तुरन्त ही मिशो ने उत्तर दिया, 'सबेरे तक कुछ न बोलो। कल हम सब लोगों को इकट्ठा करके वोट लेंगे।'

पियेरे स्वयं समझता था कि इस सम्बन्ध में बड़ी होशियारी से कदम उठाने और हरएक को अच्छी तरह समझाने की आवश्यकता है। कम से कम सिल्विन को तो देजेर के प्रस्ताव के बारे में कोई खबर नहीं मिलनी चाहिए। बहुत देर तक दोनों में बातचीत होती रही। अचानक मिशो ने उठकर पियेरे को गले से लगा लिया और पियेरे भी समझ गया कि इसका क्या अर्थ है ? भावावेश में उसके मुंह से एक शब्द तक नहीं निकला।

मिशो ने उससे कहा, 'तुम्हें सभा में बताना होगा कि देजेर से तुम्हारी क्या-क्या बात हुई। तुम यह काम कर भी सकते हो। मुझे तो ऐसा लगा कि देजेर का हाल ठीक नहीं है।'

'अच्छी बात है,' पियेरे ने कहा। 'लेकिन तुम्हें मालूम है, इसमें सब से मजेदार बात क्या है ? देजेर की हालत हर तरह से खराब है। है तो वह लाखों, करोड़ों का मालिक, लेकिन उसका जीवन दो कौड़ी का है। एक बार मेरे साथ टहलते-टहलते उसने यही बात कही थी। वह बस, किसी प्रकार निभाये चला जा रहा है।'

सिल्विन को देजेर के प्रस्ताव का पता चल जाय इसका अधिकारियों के गुप्त एजेन्टों ने इन्तजाम कर रहा था। और फिर सिल्विन स्वयं कब चूकने

वाला था ! बाहर मैदान में और वर्कशापों में खबर फैल गई कि समझौता हो गया । मजदूरों में, जो इतने दिनों से बेकार बैठे उकता गये थे, और अपने बाल-बच्चों से अलग थे और जिनकी चिन्ता उन्हें खाये डालती थी, एक नई हलचल पैदा हो गई । बस अब क्या था, समझौते पर हस्ताक्षर हुए नहीं कि उनकी यह कुत्ते जैसी जिन्दगी खतम हुई । सिल्विन ने चुपके-चुपके कहना शुरू किया, 'खबर को छिपाया जा रहा है । क्यों ? यह राजनीति है । लेकिन हम लोग भूखों मर रहे हैं !'

जब अँधेरा होने लगा, तो मिशो पियेरे से बोला, 'सुनो, मैं घंटे भर के लिए बाहर जा रहा हूँ । किसी को बतलाना मत नहीं तो लोग कहेंगे मैं भाग गया ।'

'जा कहाँ रहे हो ? कमेटी के पास ?'

मिशो ने कोई उत्तर नहीं दिया ।

क्लेमेंस खिड़की में एक मूर्ति की तरह चुपचाप बैठी थी । मिशो ने कमरे में पहुँचकर उसके कोमल हाथों को अपने हाथों में लेकर कुछ कहना चाहा, लेकिन गले से आवाज न निकली । वह आया तो था इस स्त्री के पास सहायता माँगने, लेकिन उस बेचारी का दुख देखकर उसकी आँखें नम हो उठीं । जो कुछ कहने के लिए वह सोच कर आया था, सब भूल गया । उसे न हड़ताल की बात याद रही, न सिल्विन की और न समझौते की । उसने जानो के बारे में बोलना शुरू किया । अँधेरा हो आया था । क्लेमेंस ने बत्ती नहीं जलायी । उस अँधेरे कमरे में मालूम पड़ता था कि जानो फिर जिन्दा हो उठा है । यहीं पर तो वह पल कर बड़ा हुआ था, यहीं वह फर्श पर पड़ी ईंटों से खेला करता था और अपनी माँ को अपने साथियों, प्रदर्शनों और पुलिस से हुई मुठभेड़ों के किस्से सुनाया करता था । अचानक मिशो बोलते-बोलते रुक गया । उसे फैक्टरी और पियेरे की याद आ गई । उसने खड़े होकर कहा, 'हमें आपकी मदद की आवश्यकता है ।'

सारे मजदूर फैक्टरी के मैदान में उसी प्रकार इकट्ठे हो चुके थे, जैसे हड़ताल के पहले दिन हुए थे । सिल्विन मिशो की अनुपस्थिति से लाभ उठा रहा था । उसने कहना शुरू किया कि अधिकारियों ने मजदूरों की माँगें स्वीकार कर ली हैं, किन्तु हड़ताल कमेटी इसे छिपा रही है । जब मिशो

को मान लेने का निश्चय किया है। हमें कुछ बहुत ही जरूरी आर्डर मिले हैं। इसके अलावा, जीत भी तो उसी की होती है, जो पीछे हटना भी जानता है। खैर, यह सब तुम्हें बतलाने की कोई आवश्यकता नहीं। मेरे दोस्त, नेपोलियन की तरह तुम भी तो पीछे हटना खूब जानते हो!'

देजेर इस बेतुके मजाक से जरा अपना दिल बहलाना चाहता था। अपनी हार से उसके स्वाभिमान को धक्का लगा था और उसका दिल घृणा से भर रहा था वह सोच रहा था—अब शायद पियेरे हँस रहा होगा। लेकिन पाँच लाख रोजाना का नुकसान भी कौन बर्दाश्त कर सकता है! राजनीति तो एक प्रकार की सट्टेबाजी है। आज मजदूर समुद्रतट की हवा खाने जायेंगे, हो सकता है कल उन्हें जेलखाने की हवा भी खानी पड़े।

हड़ताल के सत्रहवें दिन सात बजे शाम को, समझौते पर हस्ताक्षर हो गये। मजदूरों की असली माँगें थोड़े संशोधन के साथ सभी मान ली गईं। उनकी जीत सारे श्रमिक वर्ग की जीत थी। दिन भर दूसरे कारखाने के मालिकों के भी हार मान लेने की खबरें आती रहीं। जोलियो ने एक कविता लिख डाली।

आठ बजे रात को, 'सीन' फैक्टरी के तमाम मजदूर, जो इतने दिनों तक अपनी इच्छा से एक प्रकार की कैद में थे, कतारें बनाकर बाजा बजाते और झंडा फहराते हुए फैक्टरी से बाहर निकले। उनके आगे-आगे क्लेमेंस और मिशो थे। हजारों की भीड़ ने विजयी मजदूरों का स्वागत किया। उनमें हड़तालियों के रिश्तेदार फैक्टरी क्षेत्र के रहने वाले अन्य लोग और भिन्न-भिन्न यूनियनों के प्रतिनिधि थे। गर्मी की शाम थी, सूर्यास्त हो रहा था और तारों ने आकाश में झिलमिलाना शुरू कर दिया था। उनकी नीली झिलमिलाहट सूर्यास्त की सुनहरी पृष्ठभूमि में बड़ी रहस्यमय लग रही थी। सड़कों और काफे के चबूतरों पर लोगों की भीड़ लगी थी। लोग मजदूरों का फूलों से स्वागत कर रहे थे और उन्हें बियर पिला रहे थे।

मिशो क्लेमेंस को सहारा दिये था। पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने उसे इतना थका डाला था कि वह खड़ी नहीं हो पाती थी। वह मिशो से बहुत हिल-मिल गई थी और उसे अपने पुत्र के समान मानने लगी थी। अब एक-दूसरे से अलग होने का समय आ गया था। उसे अपने काम पर जाना

था। वह सोचती थी जानो की तरह यह भी सभाओं में भाग लेने के लिए दौड़ता फिरेगा। और तब तक बोलता-बकता रहेगा, जब तक कोई इसे भी गोली न मार दे।

अचानक वह बोली, 'तुम अपना ब्याह क्यों नहीं कर लेते ? अकेले रहने से तो यह अच्छा ही होगा। वरना तुम अकेले ही रह जाओगे। अगर किसी दिन मारे गये तो कोई रोने वाला भी न होगा। यह ठीक नहीं।'

मिशो लज्जा से मुसकराने लगा। क्षितिज में पेड़ अब काली लकीरों जैसे मालूम पड़ रहे थे। सीन नदी पर नीला कोहरा छाया हुआ था। मिशो को ऐसा लगता था जैसे हर तरफ उसे कोई न कोई जान पहचान वाला दिखाई दे रहा है। सामने से देनीजे मुसकराती हुई उससे भेंट करने पहुँची और चुपके से उसके हाथ दबाने लगी।

२१

अपने मन को यह समझाकर कि स्टूडियो में अब दम घुट रहा है, आँद्रे चित्र बनाने की टिखटी को दीवार की ओर करके बाहर निकल आया। इधर कुछ दिनों से वह मन लगाकर अपना काम नहीं कर पाया था। जब उसने अपने पुराने सहपाठियों से कहा था कि राजनीति उसकी समझ से बाहर है तब उसने कोई गप नहीं मारी थी। यह तीन महीने पहले की बात थी। तब से अब तक बड़े-बड़े परिवर्तन हो चुके थे। राजनीति बिना पूछे उसके स्टूडियो में भी घुस आई थी। अब वह सबेरे सबसे पहले अखबार हाथ में लेता था और सड़क पर चलते समय लोगों की बातें बड़े गौर से सुनता था। जिसे देखो वही हड़ताल, पार्टियों की कशमकश और युद्ध छिड़ने की बात करता था। वह जन साधारण में इतना निकट आ गया था कि उसके लिए असंभव था कि वह उनकी आशा-आकांक्षा, और उनकी एकता की शक्ति को अनुभव न करे। यह सब कुछ तो ठीक था, लेकिन कभी-कभी वह सोचता कि नीरस जीवन से कैसे काम चलेगा !

किसी समय उसने एक लेख में पढ़ा था कि सोवियत रूस में गेहूँ की फलस बड़े वैज्ञानिक ढंग से तैयार की जाती है। उसे भूमि सम्बन्धी बातों से

बड़ी दिलचस्पी थी। और एक किसान के घर पैदा होने के नाते, उसे वह लेख बड़ा ही अच्छा लगा था। जब वह सड़क पर इधर-उधर घूम रहा था तो उसने यह याद करने की कोशिश की कि वे उस लेख में क्या लिखा था, बहुत सोचने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि पेन्टिंग ठीक से नहीं चल रही है। ऐसे भी पेड़ हैं, जो अस्सी-नब्बे साल के बाद फूलते हैं। जो माली उनका बीज बोता है, वह समझता है कि उसका बेटा या पोता पेड़ के फल चख सकेगा। किन्तु वहाँ तो एकवर्षीय पौधे के अल्पकालिक जीवन ने सारे क्षेत्र का नकशा ही बदल दिया था। सारा प्रश्न समय का था। पेन्टर के लिए चाहिये शान्ति, स्थिरता। उसने जिस दुनिया की तसवीर खींची थी वह सुख और सम्पन्नता से पूर्ण थी, उसके कुछ नियमित रूप और रंग थे। ऐसे समय में जबकि समाज में उथल-पुथल मची हो, वह कर ही क्या सकता है। संस्कृति भवन में बोलते हुए ल्युसियाँ ने कहा था कि वह क्रान्तिकारी क्रान्तिकारी नहीं जिसकी रुचि अच्छी न हो। कभी-कभी ऐसा समय भी आता है कि जब इस 'अच्छी रुचि' को रखने का वही हशर होता है जो उच्च वंशजों का होता है, जिसके लिए सन् १७६३ की क्रान्ति में न जाने कितने के सिर उड़ा दिये गये थे। इतिहास के निर्माण का सम्बन्ध युगों से होता है न कि व्यक्तियों से।

शाम होने वाली थी, जिसका वह इतनी उत्सुकता से इन्तजार करता था और फिर वह रेडियो सुनने बैठ जाता था। जानेत अब भी 'पोस्त पेरिसिये' रेडियो में काम करती थी और उसकी गहरी काँपती हुई आवाज इश्तिहारों के साधारण शब्दों से कितनी भिन्न थी! उसका मन वेदना से भर आता और उसे लफॉर्ग की कविता और पास्सिन की 'वाटर कलर' तसवीरें यदि आ जातीं।

कभी-कभी वह अपने मन में सोचता कि जानेत मेरी कौन है? 'प्रेम' शब्द कभी मस्तिष्क में आया ही न था। वह उसके बारे में कितना कम जानता था, शायद उन दोनों में कोई भी समानता न थी, यह सब कुछ केवल एक झक थी। आँद्रे की भावना उच्च और स्थायी थी। प्रेम का बीज उसके अन्दर धीरे-धीरे ही उग सकता था, उसके लिये बड़े धैर्य और लगन की आवश्यकता थी। पिछली बार ल्युसियाँ से मिलने के बाद उसने ऐसा अनुभव करना आरम्भ किया था, मानो किसी ने उसे पानी में धकेल दिया हो।

उसने बिना सोचे-विचारे अपने हृदय की बात कह डाली थी। अब वह पश्चाताप कर रहा था। ल्युसियाँ ने ठीक ही कहा था, 'तुम्हें इस सब से क्या मतलब ?' आँद्रे ने मन में सोचा इस झक से बाज आना ही अच्छा है, किन्तु शाम होते ही वह फिर रेडियो खोल कर बैठ गया।

वह कैसे काम कर सकता था! पास की गलियों में आधे बने मकानों पर हड़ताली मेमारों और राजगीरों के लाल झंडे फहरा रहे थे। रेडियो पर जानेत की आवाज कभी प्रेम के गीत गाती हुई सुनाई पड़ती और कभी पेटेन्ट दवाओं के। जुलाई का महीना था, हवा में दम घुटा जा रहा था। आँधी आने पर भी हवा साफ नहीं हो पाई थी, आँद्रे थकावट महसूस करने लगा था।

तो हाँ, जुलाई की शाम को हर जगह नाच-गाना जोरों से शुरू हुआ। शहर में कोई भी ऐसा गवैया न था जो उस रोज बेकार रह गया हो। चारों ओर लोग बाजे बजा रहे थे और चिल्ला रहे थे, सीटियाँ बजा रहे थे और दिल खोल कर खुशी मना रहे थे। सड़कों पर जगह-जगह आर्केस्ट्रा के स्टैण्ड गड़ गये थे। बाजेवालों के चेहरे ताँबे की तरह लाल हो रहे थे, चेहरे की नसें उभर आई थीं और वे 'बियर' के गिलास पर गिलास खाली करते जा रहे थे। रंग-बिरंगी चीनी लालटेनें लिये लोगों की भीड़ सड़कों पर घूम रही थी। कहवाखानों में हर तरह की मेजें लगी थीं, खाने की मेजें और ताश खेलने की मेजें। वातावरण गरम था और हर कोई अपना कोट उतारे हुए था, जैसे वह देहात में हो। पुरुष बिना कोट के ही कमीजों में नाच रहे थे। उनके पतलून के बक्सुए रोशनी में जगमगा रहे थे। बच्चे चीख रहे थे, या अपनी माताओं की गोद में सो रहे थे। नट और जादूगर आग निगलने और टोपी से मुर्गी के बच्चे निकालने का तमाशा दिखा रहे थे। फेरीवाले घूम-घूम कर जमाये हुये फल, फूल और कागज के बने सुंदर पंखे बेच रहे थे। जगह-जगह भाग्य देखनेवाले ज्योतिषी अड्डा जमाये थे। मेजों पर जुआ हो रहा था। लड़के पानी की तेज धारा में उछलती हुई पिंगपौंग की गोलियों पर निशाना साध रहे थे। सब से मजेदार तो काठ के घोड़ों, या नकली हवाई जहाजों की चर्खियाँ थीं जो आवाज करती हुई तेजी से घूम रही थीं।

आँद्रे एक जगह बैठा बियर पी रहा था कि अचानक जानेत पर उसकी

नजर पड़ी। वह कुछ लोगों के साथ आई थी। उसे देखकर आँद्रे प्रसन्नता से चीख पड़ा। इस मूर्खता के लिये अपने को बुरा-भला कहने के बाद वह उठकर गया और उससे बोला, 'नाचोगी?'

जानेत ने चकित होकर उसकी ओर देखा और चुपचाप उसके साथ नाचना शुरू कर दिया। दोनों को इस अचानक भेंट से इतना आश्चर्य हुआ कि दोनों कुछ चौंके। आँद्रे को पता न था कि उसका हाथ जानेत के शरीर को छू रहा है। उस जगह बड़ी भीड़ थी और वे रह-रह कर दूसरे नाचने वालों से टकरा जाते थे, किन्तु फिर भी उन्हें ऐसा मालूम पड़ रहा था जैसे वे दूर किसी सुनसान मैदान या रेगिस्तान में जा पहुँचे हैं।

इतने में आँद्रे ने कहा—'आओ, चलो थोड़ा घूम आयें।'

जानेत बोली, 'मेरे साथ और भी कुछ लोग हैं। लेकिन कोई बात नहीं, मैं उनसे कह देती हूँ कि मेरा इन्तजार करें।'

बच्चों की तरह एक दूसरे का हाथ पकड़े वे एक तङ्ग अँधेरी गली से गुजरे। जानेत ने 'सीन' कारखाने का किस्सा सुनाना शुरू किया। 'मैं इसके बारे में अधिक नहीं जानती,' उसने कहा, 'शायद ही कभी मैं अखबार पढ़ती हूँ। किन्तु उस रोज का दृश्य देखने लायक था! कितने ध्यान में लोग सुन रहे थे। उन्होंने मुझे इतना प्रभावित कर दिया था कि जब मैं घर पहुँची तो मेरा मन भर आया। कह नहीं सकती क्योंकि, शायद इसलिये कि उस शाम का दृश्य इतना सुंदर था!'

चर्खी मे तरह-तरह के जानवर, हरे, पीले, लाल झूले से लटके थे। कभी वे ऊपर उठते, कभी नीचे आते। 'आर्गन' बज रहा था—'तुम नहीं जानते मुझे तुम से कितना प्यार है!'……आँद्रे और जानेत एक नीले चमकदार काठ के हाथी पर सवार हो गये। ताजी हवा के एक झोंके ने दम घोंटने वाले वातावरण को दूर कर दिया।

वे एक दूसरे की कमर में हाथ डाले नीचे उतरे। दोनों चुप थे। पहले जानेत ने अपने को सँभाला। उसे डर लगा कि यदि वह तुरंत वहाँ से नहीं चली जाती तो न जाने कौन-सी आफत आ जायगी। उसका यह विचार क्षणिक नहीं था, यह एक प्रकार से उसके मन में बैठ गया था। उसे

निश्चित लगता था कि उन दोनों की नहीं निभेगी। ऐसे अवसर पर एक शब्द भी मुँह से निकालना, जरा भी नजर दूसरी ओर फेरना या हाथ हिला देने का अर्थ था कि उस समय की सारी प्रसन्नता धूल में मिल जाती।

'आँद्रे, अब मुझे जाना चाहिये,' उसने कहा। 'वे लोग मेरी राह देख रहे होंगे।'

चौक के कोने पर जहाँ अँधेरा था, एक पेड़ के नीचे, जिसकी पत्तियों से किसी लालटेन की हल्की-हल्की रोशनी छन कर आ रही थी, उसने धीरे से आँद्रे को चूम लिया, इस तरह जैसे वह आदमी नहीं कोई उपहार हो। आँद्रे ने डरते-डरते उसकी कमर में हाथ डाल दिया। वह छुड़ाकर हट गई और बोली, 'कोई जरूरत नहीं……।' उसने यह पूछने की हिम्मत न की कि क्यों नहीं। चुपचाप दोनों उसी जगह पहुँचे और बिना एक शब्द बोले एक दूसरे से बिदा हो गये।

जब आँद्रे वापस अपने स्टूडियो पहुँचा तो एक बड़े थाल की तरह सूरज मकानों के ऊपर उग रहा था। हर चीज चमकने लगी और हिलती हुई-सी मालूम पड़ने लगी। आँद्रे खिड़की के पास जा बैठा। उसका हृदय उदासी से भर रहा था। उसे तमाम बातें याद आ रही थीं—रात का वह अँधेरा और बनावटी पेड़ों की पत्तियों में से होकर कागजी लालटेनों की रोशनी का छन-छन कर आना, जैसे इस समय सूर्य की किरणें आ रही थीं, और चर्खी का तेजी से घूमना। हाँ, सभी चीजें घूम रही थीं—देख सकना या समझ पाना कठिन था। आँधी और तूफान की भी कोई दिन-तारीख होती है!

आँद्रे को प्रसिद्ध चित्रकार सेज़ान के वे शब्द याद आये, जिन पर उसने कई बार विचार किया था, 'मनुष्य को काफी समय तक प्रकृति का अध्ययन करना चाहिये। तब जो कुछ दिखाई पड़ेगा वह ऊपरी चमक और आकस्मिकता से परे होगा। उसका मनन करके मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है।' ऐक्स का शान्तिपूर्ण वातावरण कितना भला था! वे दिन ही कुछ और थे। किन्तु जानेत ने कहा था, 'कोई जरूरत नहीं……'। किस बात की जरूरत नहीं? इच्छा करने की? आशा रखने की? समझने की?

प्रत्येक वर्ष चौदह जूलाई को फौजी परेड हुआ करती थी। साधारण तौर से उसे देखनेवाले मध्यम वर्गी लोग हुआ करते थे। किन्तु इस साल दर्शकों

में कुछ दूसरे प्रकार के लोग भी थे। हर जगह मजदूरों की टोपियाँ नजर आती थीं। केवल सड़कों के मोड़ पर ठाठदार कपड़े पहने ब्रेतील के अनुयायी अकड़े खड़े थे। वे चिल्ला रहे थे, 'सेना की जय हो!' मजदूर इसके जवाब में नारा लगा रहे थे, 'जन-सेना की जय हो!' और यद्यपि फ्रांस की जनवादी सरकार को स्थापित हुए सत्तर वर्ष हो गये थे, फिर भी आज उनके इस नारे में एक चुनौती थी, इसीलिये रह रहकर ब्रेतील के आदमियों से उनकी मुठ-भेड़ हो जाती थी।

इधर कुछ दिनों से समाचारपत्रों ने लड़ाई के खतरे और राइन नदी तथा आल्प्स की दूसरी ओर होने वाली सरगर्मियों के बारे में काफी लिखना शुरू कर दिया था। जनता बड़ी आशापूर्ण दृष्टि से फौजियों के कवच को, बन्दूकचियों और प्रसन्नचित्त हवाबाजों को देखती थी। फौजी कूच के गानों की आवाज से हवा गूँज रहती थी। लोग सीना ताने जोश में कदम से कदम मिलाये पटरियों पर चल रहे थे। न जाने सेना में कौन-सी ऐसी चीज थी जो लोगों को आकर्षित कर रही थी।

'बेरेट' टोपियाँ पहने युवकों ने बड़े जोश के साथ पिकार का स्वागत किया, भीड़ ने भी इसमें उनका साथ दिया। पिकार ने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी थीं। उसका एक शानदार इतिहास था। दो बार वह युद्ध में घायल भी हुआ था। देखने से ही वह बड़ा साहसी मालूम होता था। किन्तु आज उसके ओंठों पर घृणा झलक रही थी। ठीक यही दशा उसके दिमाग की भी थी। दर्शकों की इस असाधारण भीड़ को देखकर उसे बड़ा क्रोध आ रहा था। उसने सोचा, इन गँवारों पर अगर अभी मैं अपने मराकशी सिपाहियों को छोड़ दूँ तो कैसा मजा आये। 'आर्क द ट्रायम्फ' के निकट मजदूरों की एक भीड़ खड़ी थी। जब पिकार उनके करीब पहुँचा, तो मिशो ने नारा लगाया। इतने में ही ब्रेतील के आदमी मजदूरों पर टूट पड़े। पुलिस की सीटियाँ बजने लगीं। पिकार के घोड़े ने अपने कान ऊपर उठाये, लेकिन जनरल ने पटरी की ओर देखा भी नहीं।

झगड़ा शुरू हो गया। फासिस्टों के पास रबर के कोड़े, भारी सिरोंवाले सोंटे और चाकू-छूरे थे। एक मजदूर जमीन पर आ गिरा, उसके चेहरे पर खून ही खून था। मिशो, जो दुश्मनों के घेरे में आ गया था, निकालने की

कोशिश कर रहा था। अचानक उसे जोर की चोट लगी, जैसे किसी ने उसकी पीठ पर कसकर कोड़ा मारा हो। उसने झट एक चाभी को मजबूती से पकड़ कर आक्रमणकारियों पर घूँसे चलाने शुरू किये। पुलिस अपनी तमाम शक्ति फासिस्टों को बचाने में लगा रही थी। उसे ब्लूम या विलार का ख्याल न था। अपनी आदत से मजबूर होकर वह हर उस आदमी पर डंडे बरसा रही थी जो अच्छे कपड़े नहीं पहने था।

परेड समाप्त होने के बाद पिकार ने जल्दी-जल्दी भोजन किया और सादी पोशाक पहन कर देहात की ओर चल दिया। 'फते' के पास एक छोटे मकान में अन्दर ब्रेतील उसकी राह देख रहा था। आसपास का दृश्य इतना सुन्दर था कि उसे दो प्रेमियों के मिलन के लिए उपयुक्त स्थान कहना अधिक उचित था, बजाय इसके कि वहाँ बैठकर षडयंत्र रचे जाते। मकान नदी के किनारे काफी ऊँचाई पर स्थित था।

ब्रेतील ने जो सदा की भाँति आज भी गम्भीर और कठोर लग रहा था, पिछले कुछ दिनों की घटनाओं का उल्लेख करना शुरू किया।

'इसके बारे में अभी कुछ कह सकना कठिन होगा। डजेलडोर्फ के लिए हथियार इकट्ठे किये जा चुके हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वे बहुत थोड़े हैं, लेकिन तुम्हारे कर्नल ने जो हथियार हमें दिये हैं, उसके मुकाबले में तो काफी हैं ही। मैं एक और चीज चाहता हूँ। क्या तुम किसी प्रकार सरकार की युद्ध-सम्बन्धी योजना कहीं से उड़ा सकते हो? जानते ही हो ये मूर्ख कुछ भी कर सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि लड़ाई छिड़ जाने पर हम अपने को बिना किसी तैयारी के पायें......।'

पिकार दूसरी ओर देखने लगा। वैसे तो वह ब्रेतील का अनन्य भक्त था, लेकिन आज की बातें सुनकर उसे कुछ सन्देह होने लगा। उसने सोचा, क्या इसकी बातें मानना ठीक होगा? पिकार एक फौजी घराने में पैदा हुआ था। उसके लिये सेना से सम्बन्ध रखनेवाली प्रत्येक चीज पवित्र थी।

'मैं सोचता हूँ कि लड़ाई छिड़ जाने पर हमें अपने सारे भेदभाव भूल जाने पड़ेंगे।'

ब्रेतोल बरामदे में चहलकदमी कर रहा था। वह पिकार के पास रुक कर बोला, 'मैं भी ऐसा ही सोचता था। मुझे आशा है, तुम्हें मेरी देशभक्ति पर सन्देह न होगा। हम दोनों ही लड़ाई के अगले मोर्चे पर रह चुके हैं और हम दोनों ने वहाँ अपने अच्छे से अच्छे मित्र भी खोये हैं। लेकिन विश्वास करो, आज हमारी राज्यशक्ति राष्ट्र के हाथों में नहीं, बल्कि एक गुट के हाथ में चली गई है। उसे जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए मैं तो जर्मनों का भी साथ देने को तैयार हूँ, यद्यपि ईश्वर से प्रार्थना है कि वह दिन कभी न आये! यह कहते हुए मुझे जितना कष्ट होता है, उससे कहीं अधिक वैसा करने में होगा, इसके लिये असाधारण चरित्र-बल और इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है! लेकिन इसके सिवा रास्ता ही क्या है? उनकी विजय से फ्रान्स की विजय नहीं बल्कि क्रान्ति की विजय होगी!'

'किन्तु सेना!' पिकार ने पूछा, 'उसका क्या होगा?'

'सेना यदि चाहे तो फ्रान्स को नई शक्ति दे सकती है, और नहीं तो उसका काम खत्म हो चुका। कम से कम अगले सौ वर्षों के लिए ···।'

२२

सारे दिन प्रदर्शन होता रहा। दस लाख से अधिक लोगों ने उसमें भाग लिया। जुलूस का कहीं अन्त ही नहीं जान पड़ता था। कतार पर कतार चली आ रही थी। आधे शहर में कहीं पुलिस पता भी न था। झगड़े से बचने के लिए उसे हटा लिया गया था। मजदूर स्वयं ही सारा प्रबन्ध कर रहे थे। किसी प्रकार का दंगा-फसाद, या गाली-गलौज नहीं हो सकता था। पेरिस की जनता आज छुट्टी मना रही थी। जिधर देखो लोग गा रहे थे और हँसी-मजाक कर रहे थे।

देश भर से प्रतिनिधि आये थे। पिकार्दी की खानों में काम करनेवाले मजदूर अपना सेफ्टी लैम्प लटकाये और कोयले से काले कपड़े पहने चल रहे थे। दक्षिणी फ्रान्स के अंगूर के बागों में काम करने वाले मजदूर बाँसों पर कागज के बने अंगूरों के गुच्छे लटकाये थे। अल्सेस की स्त्रियाँ अपनी विशेष पोशाकों में थीं और गीत गा रही थीं। ब्रिटानी के निवासी अपने मसक बाजे

बजा रहे थे और सेवाय के पहाड़ी चरवाहे अपने लोक-नृत्यों से भीड़ को मुग्ध कर रहे थे।

भूतपूर्व सैनिक भी जुलूस के साथ थे। जिनके पैर लड़ाई में कट गये थे, उन्हें छोटी-छोटी गाड़ियों में बैठा कर खींचा जा रहा था और अन्धों को हाथ पकड़ कर ले जाया जा रहा था। एक लाख आदमी, जिनके अंग भंग हुए थे, नारे लगा रहे थे, 'लड़ाई नहीं होगी, नहीं होगी !'

जुलूस के आगे-आगे बीस या तीस बूढ़े थे, जिनकी कमरें झुक गई थीं और जिन्होंने कभी 'पेरिस कम्यून' में भाग लिया था। एक वह भी जमाना था जब अपनी जवानी में उन्होंने सड़कों पर मोर्चेबन्दियाँ की थीं। आज वे अपने नाती-पोतों की कीर्ति को देख-देखकर प्रसन्न हो रहे थे। उनके सूखे ओठों पर मुसकराहट थी। कम्युनिस्ट नवयुवक बड़े गर्व से रेशमी झंडे फहराते चल रहे थे। उनके साथ मैक्सिम गोर्की, की बड़ी-बड़ी तसवीरें थीं, जिसकी हाल में ही मृत्यु हुई थी।

एक के बाद दूसरा दस्ता गुजरा। धातु के काम करनेवाले मजदूरों के बाद चमड़े के मजदूरों की टोली आई। इसके बाद लेखकों और तब विद्यार्थियों का दल आया। फिर गैस कम्पनी के मुलाजिम अपनी विचित्र टोपियों में दिखाई पड़े, और तब ऐक्टर, आग बुझाने वाले, अस्पताल की नर्सें, कुछ और धातु तथा चमड़े के काम करने वाले मजदूर निकले।

'सीन' कारखाने के मजदूरों का विशेष रूप से स्वागत किया गया। वह बैस्तील के बन्दीगृह का एक नमूना साथ में लिए हुए थे। उस पर लिखा था—'बैस्तील को याद रखिये, जो कभी छीना गया था। उस बैस्तील को भी न भूलिये जिस पर अभी आप को कब्जा करना है !' उनके आगे-आगे मिशो, लेग्रे और पियेरे चल रहे थे।

मंच पर थे सरकार के मन्त्रीगण और ट्रेड यूनियनों के प्रतिनिधि, लेखक और मजदूर, कम्युनिस्ट और रैडिकल। ब्लूम मुसकरा रहा था, उसका चेहरा उतरा हुआ था। भारी शरीर और शिकनदार चेहरा लिये दलादिये लगातार अपना घूँसा ताने था। विलार धीरे-धीरे दोहरा रहा था, 'यह जंग हमारी है आखिरी, उठो……!'

ज्योंही 'सीन' के मजदूरों का दस्ता मंच के पास से होकर गुजरा, किसी ने पियेरे को आवाज दी, 'पियेरे, विलार तुम से मिलना चाहते हैं !'

विलार ने इस कुशल युवक इन्जीनियर के बारे में काफी सुन रखा था, जो समाजवादी पार्टी का सदस्य था और जिसने हाल की हड़ताल में प्रमुख भाग लिया था। विलार उन आदमियों में से था जिन्हें सरकारी काम की झंझट में पड़कर भी पार्टी की ओर अपने कर्त्तव्य नहीं भूलते। उसने बड़े मैत्रीपूर्ण ढङ्ग से हाथ मिलाया और कहा, 'शाबाश ! कम्युनिस्ट कहते हैं कि हममें कोई क्रान्तिकारी उत्साह नहीं रह गया है। लेकिन तुम उसके जीते-जागते प्रमाण हो !' पियेरे यह सुनकर ऐसे असमंजस में पड़ गया कि उसके मुँह से धन्यवाद के सिवा और कुछ न निकल पाया।

'शायद मैं तुम्हारे पिताजी को जानता हूँ,' विलार ने कहा, 'तुम पेरिपिना के रहने वाले हो, है न ?'

विलार भले ही चेम्बर के उस सदस्य को भी न पहचान सकता हो जिससे उसने कल ही बातचीत की थी, किन्तु उसे अपनी नौजवानी के दिनों की सारी बातें याद थीं—उसके सहपाठी, कहाँ-कहाँ उसने भाषण दिये थे, न जाने कब-कब की पुरानी कांग्रेसों में आये हुए प्रतिनिधियों के नाम इत्यादि।

'हम दोनों ने मिलकर फेरेरा नाम के एक स्पेनवासी को फाँसी की सजा देने के विरुद्ध प्रदर्शन कराया था। इस नाम से तुम्हें तो कुछ नहीं पता चलेगा, लेकिन उन दिनों सारे देश में हलचल मच गई थी। हमारे देश के लोग भी खूब हैं। उनमें अन्तरराष्ट्रीय एकता की भावना कितनी प्रबल है।··· मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है !'

पियेरे खुशी-खुशी फिर से अपने दस्ते से जा मिला। विलार ने उससे क्या कहा था, यह उसने किसी से नहीं बताया। उसने सोचा कि ऐसा करने से मिशो छींटाकशी करेगा और सारा मजा किरकिरा हो जायगा।

सवेरे जो मुठभेड़ हुई थी और जिसमें उसका कोट फटकर बेकार हो गया था, उसे मिशो कभी का भूल चुका था। कमर में दर्द तो था लेकिन फिर भी वह प्रसन्न था। प्रदर्शन बहुत सफल रहा शहर के बाहरी फाटक पर पहुँच कर वह चुप हो गया। अँधेरा हो रहा था और सिगनलों, पेट्रोल की टंकियों और

दूकानों की लाल, हरी पीली बत्तियाँ जलने लगी थीं। लगता था जैसे नगर के आसपास फूलों का एक बड़ा बाग लगा है।

प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर भीड़ गुजर रही थी। उसका कोई अन्त नहीं था।

२३

दूसरे दिन सवेरे पियेरे एक महीने की छुट्टी पर चला गया। छुट्टी का दिन उसे सदा प्रसन्नतापूर्ण और सुनहला दिखाई पड़ता, जैसे देशाटन की एजेन्सियों के इश्तहार होते हैं।

एग्नेस एक सप्ताह पहले ही जा चुकी थी। उसने कोंकार्नो के निकट पहाड़ी पर एक मछुए की काटेज ले रखी थी। मकान एक छोटे सफेद डिब्बे-सा मालूम होता था। नीचे स्त्रियाँ बैठी मछली पकड़ने के नीले जालों की मरम्मत करती थीं और नावों के लाल बादबान हवा में फहराते रहते थे। सामने समुद्र था। लगातार सरसर हवा चला करती, जोर का ज्वार-भाटा आता और दिन-रात अटलांटिक महासागर थपेड़े खाता रहता था।

पियेरे ने अन्दर पहुँचकर देखा कि कमरा साफ-सुथरा है, दीवारों पर सफेदी की हुई है और तसवीरें टँगी हैं। उसके दिमाग में इस समय पेरिस की सारी घटनाएँ नाचने लगीं। उसने बड़े गर्व के साथ एग्नेस को विलार से हुई बातचीत के बारे में बताया, पेरिस में होनेवाले प्रदर्शन का विस्तार से वर्णन किया और फासिस्टों के षड्यन्त्रों की चर्चा की। एग्नेस चुपचाप सुनती रही।

समाचारपत्र वहाँ इतनी देर में पहुँचते कि उनकी सारी खबरें काफी पुरानी हो जाती थीं। एक दिन पियेरे अपने साथ लाये छोटे रेडियो को खोलकर बैठ गया और खबरें सुनने लगा—सट्टे बाजार के भाव, चीन-जापान की लड़ाई, व्यापारियों की दावत में तेस्सा का भाषण। पियेरे हाथ झटक कर उठ खड़ा हुआ और केंकड़े पकड़ने चला गया।

चौथे दिन शाम को एक तूफान आया, बिलकुल अचानक पियेरे एग्नेस के साथ समुद्रतट पर बैठा था। एकाएक धूल का एक भारी स्तम्भ हवा में

ऊपर उठा। एग्नेस ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं। क्षण भर में चारों ओर एक आफत-सी मच गई। भीषण लहरों ने नावों को उठाकर तट पर फेंक दिया। हवा चीखने लगी। विवश होकर पियेरे और एग्नेस को वहाँ से चल देना पड़ा।

पियेरे ने बिना कुछ सोचे ही रेडियो का स्विच घुमा दिया। रेडियो की छोटी-सी नीली आँख चमक उठी और किसी की परिचित आवाज समुद्र की लहरों की गरज के साथ सुनाई पड़ने लगी।

यह एक अंग्रेज एनाउन्सर की आवाज थी। वह कह रहा था, 'सट्टे का भाव बढ़ रहा है। 'रायल डच' का भाव आज दो प्वाइंट चढ़ गया।

'ठीक टाइम सुनिये! चौथे घंटे की आवाज पर ग्रीनविच टाइम के अनुसार शाम के ७ बजेंगे। अब समाचार सुनिये!...

'दो हजार मारे गये......।'

यह सुनते ही एग्नेस ने अपनी सिलाई बन्द कर दी। पियेरे ने दोनों हाथों से रेडियो को ऐसे दबा लिया जैसे वह उसका गला घोंट देना चाहता हो।

लेकिन एनाउन्सर अपनी सधी हुई आवाज में कह रहा था, 'बारसिलोना में कोलम्बस होटल पर तोपों से गोले बरसाये गये। मेड्रिड में वफादार सरकारी फौजों ने मजदूरों की सहायता से विद्रोहियों को ला मोन्तायाँ बैरक से खदेड़ दिया। सेवील में ट्राइना की मजदूर बस्ती के लिए लड़ाई चल रही है। जेनरल अरान्डा ने ओवीडो पर कब्जा कर लिया है। बर्गस में कत्लेआम शुरू हो गया है......।'

पियेरे मकान से बाहर निकल आया। जोर का तूफान जारी था। समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरों पर लाइट हाउस की रोशनी पड़ रही थी और पानी में उठी हुई पहाड़ियों से लहरें इस तरह टकरा रही थीं जैसे सैनिकों के दस्ते हों। नीचे दूर पर लाल-लाल दीये झिलमिला रहे थे। पियेरे लौटकर झोपड़ी में वापस आया। उसका चेहरा छींटों से भीग गया था। एग्नेस द्वार पर खड़ी थी। वह धीरे से बोली, 'मैंने गाड़ियों का समय देख लिया है। एक सवेरे छः बजे जाती है जो शाम को पेरिस पहुँचती है।'

जहाँ हर जगह उसका स्वागत किया जाता और उससे यही कहा जाता कि 'मामले पर गौर किया जायगा !' उसने म्युगे नामक एक बड़े व्यवसायी से भी भेंट की थी। उसने धैर्यपूर्वक उसकी बातें सुनीं। उसे एक सिगरेट पेश की और फिर मुसकराते हुए अत्यन्त नम्रतापूर्वक बोला, 'जितनी जल्दी फ्रैन्को की विजय हो सके उतना ही ठीक है !'

'देजेर से बात करने की कोशिश करो,' मिशो ने कहा। 'तुम जानते ही हो, यह व्यापार का मामला है। शायद वह कहने में आ जाय।'

दूसरे रोज सबेरे पियेरे देजेर से भेंट करने गया। देजेर ने तुरन्त उसे अन्दर बुला लिया। पियेरे ने साफ-साफ कहना शुरू किया, 'जब हड़ताल चल रही थी, तब हम दो विरोधी खेमों में थे किन्तु यह ऐसा मामला है, जिसका आपके कारखानों से कोई सम्बन्ध नहीं। स्पेन में शासन कम्युनिस्टों के हाथ में नहीं, बल्कि आपके ही ऐसे लोगों के हाथों में है, जैसे जिराल और अजाना। उन्हें बमवर्षकों की आवश्यकता है। वे लोग नकद दामों पर बीस 'ए-६८' खरीदना चाहते हैं।'

देजेर यह सुनकर मुसकरा दिया। 'नकद दाम सुनकर मुझे बड़ा अच्छा लगा। शायद तुम यह सोचते होगे जो कि देजेर को रुपये के जोर से जाल में फँसाया जा सकता है। हाँ, कल म्युगे ने मुझे बतलाया था कि स्पेन वाले उसके पास भी गये थे। उसने बड़े गर्व से कहा—मैंने उन्हें भगा दिया। मैं अपने वर्ग के साथ गद्दारी नहीं कर सकता। तो, तुम्हें इसमें कोई शिकायत नहीं होनी चाहिये—वह भी तो तुम्हारी तरह मार्क्सवादी ढंग से बहस करता है !'

'मैं म्युगे से मिलने नहीं आया। वह तो फासिस्ट है। लेकिन आप...।'

'मैं तो सबसे पहले एक फ्रांसीसी हूँ। मेरे लिए स्पेन से भी अधिक प्रिय चीज शान्ति है।'

'एक पड़ोसी सरकार के हाथों विमान बेचने से आपको रोक कौन सकता है ?'

'इतने भोले न बनो ! तुम समझते नहीं कि अगर आज मैं बीस 'ए-६८' भेज दूँ तो कल ही इटली वाले चालीस 'सेवाय' भेज देगें। फिर यही सिल-सिला जारी रहेगा।...इसमें शक नहीं कि जनरल फ्रैन्को से मुकाबले में मैं

अजाना को पसन्द करता हूँ। मैं स्पेनवालों के लिए तुम्हें एक लाख फ्रांक दे रहा हूँ, सिर्फ यह न खुलने पाये कि मैंने दिये हैं। लेकिन मैं विमान नहीं दे सकता। मैं फ्रांस की शान्ति भंग करने की जिम्मेदारी मोल नहीं ले सकता। कहावत है कि दूसरे की कमीज से अपनी खाल ज्यादा प्यारी होती है।'

'तो इसका मतलब यह हुआ कि स्पेन वाले पिटते रहें और हम खड़े देखा करें! यह तो कमीनापन होगा! म्युगे की बात तो समझ में आ सकती है लेकिन आपकी!······आपको याद है एक रात हमारी आपकी बात क्या हुई थी? मैं कैसे म्युनेज से कहूँगा कि आपने भी हमारी माँग को ठुकरा दिया?'

पियेरे कमरे में तेजी से चहल कदमी कर रहा था। वह जोर-जोर से कुछ बड़बड़ाता जाता और कभी-कभी मेज पर घूँसे पटकता। देजेर थकी हुई आँखों से उसकी ओर देखता और मुसकरा देता। दिल में वह पियेरे को चाहता था। इतने में पियेरे जाने के लिए तैयार हुआ, किन्तु देजेर ने उसे रोकते हुए कहा, 'इधर देखो, 'ए-६८' के लिए अर्जेन्टाइना ने आर्डर दे रखा है। मनू नाम का कोई व्यक्ति उन्हें ले रहा है। उससे बातचीत करो, शायद वह तुम्हारे हाथ बेच दे। तुम्हें मालूम ही है, मुझे इससे कोई रकम नहीं बनानी। अगर तुम्हारी राय में इससे स्पेनवालों की रक्षा हो सकती है तो ठीक ही है। मैं इस बात का विश्वास दिलाता हूँ कि मनू तैयार हो जायगा। ऐसी दशा में जहाज तुम्हारे हवाले करने में भी कोई गड़बड़ी नहीं होगी। मुझे विश्वास है कि वैसे ब्लूम एक विमान भी नहीं जाने देगा।''

'असम्भव! तब तो मुझे विलार से मिलना पड़ेगा!'

'अभी मैं विलार के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता! तुम्हारे ऐसे लोगों को जो कुछ भी कहा जाये थोड़ा है! यह देखो मनू के लाइसेंस। अब तुम्हें विश्वास हुआ?'

पियेरे अनमना होकर वहाँ से निकला और मनू से भेंट करने चल दिया। अपने पासपोर्ट के अनुसार, मनु हान्डुरास का रहने वाला एक रूमानियन था। बहुत दिन पहले वह आकर पेरिस में बस गया था और अब अपने को फ्रांसीसी समझता था। बहुत से संदिग्ध कामों में उसका हाथ रहा करता। आजकल उसे चारों ओर आशा ही आशा दिखाई पड़ रही थीं। दलालों,

एजेन्टों और सट्टेबाजों के लिए स्पेन की घटना काफी उत्साहजनक सिद्ध हो रही थी। प्रतिदिन मेड्रिड और बारसिलोना से प्रतिनिधि रकमें लिये युद्ध-सामग्री खरीदने पहुँचते। उनमें सरकारी विभागों के प्रतिनिधि, मजदूर नेता, सैनिक, पत्रकार—जनतावादी, कम्युनिस्ट और अराजकतावादी—सभी प्रकार के लोग होते थे। ये प्रतिनिधि बहुधा एक-दूसरे से अपरिचित होते और भिन्न-भिन्न समय पर एक ही व्यापारी से मिलते। उन्हें अच्छी तरह बेवकूफ बनाया जाता और व्यापारी तथा उनके दलाल जी खोल कर उन्हें लूटते। बर्गास के प्रतिनिधि भी आये हुए थे; उन्हें भी शस्त्रों की आवश्यकता थी। प्रतिदिन सट्टेबाज अपनी कीमतें बढ़ाते जा रहे थे।

मनु ने ज्योंही 'ए-६८' की बात सुनी, उसने तिनगुनी कीमत माँगनी शुरू की। उसने कहा, 'मुझे भय है, कहीं इसके कारण ब्युनेसआयर्स वाले नाराज न हो जायें। किन्तु मुझसे सौदा करते समय तुम पूर्ण विश्वास रखो, सामान तुम्हें मिल जायगा। लाइसेंस मेरे पास हैं।'

'अरे नहीं', पियेरे ने कहा, 'खुद मेरे पास लाइसेंस हैं!'

अब मनू की समझ में आया कि वह किसी स्पेनवासी से नहीं बात कर रहा है बल्कि 'सोन' कारखाने के एक इन्जीनियर से और एक ऐसे आदमी से जो इस सौदे के मामले में देजेर का मित्र है। उसने सोचा ऐसा आदमी तो बिना मेरे पास आये ही विमान पा सकता है। लेकिन फिर भी वह मेरे पास आया है। इसलिए उसने पियेरे से वादा किया कि दूसरे दिन उसे ठीक-ठीक दाम बताये जायेंगे।

तीसरे दिन मनू किसी प्रकार विमान देने को राजी हुआ, लेकिन असली दाम से बीस प्रतिशत अधिक पर। वे बमवर्षक विमान तूलूस के पास एक हवाई अड्डे पर खड़े थे। म्युनेज ने गुप्त भाषा में मेड्रिड खबर भेज दी कि विमान खरीद लिये गये। उसी शाम को उसने पियेरे के साथ तूलूस जाना तय किया, लेकिन चलने के ठीक पहले स्पेनिश राजदूत द्वारा एक तार प्राप्त हुआ कि इतने बमवर्षक पर्याप्त नहीं होंगे, बीस और खरीदे जायें, और 'डेवाटाइन' प्रकार के तीस लड़ाकू विमान भी। बिना फ्रांसीसी सरकार की सहायता के इतने हवाई जहाज मिल ही कैसे सकते थे। हवाई जहाज के कारखाने या तो देजेर के थे या फासिस्टों के। पियेरे की राय थी कि पेरिस में रुककर विलार से

बातचीत की जाय; किन्तु म्युनेज बड़े असमंजस में था। उसे भय था कि कहीं इन ग्यारह 'ए-६८' से भी उसे हाथ न धोना पड़े। अन्त में यह तय पाया कि पियेरे तूलूस जाये और म्युनेज अकेला विलार से भेंट करे।

'मैं उसे जानता हूँ,' म्युनेज ने कहा, 'हम दोनों की भेंट अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेसों में होती थी।'

२४

विलार से मिलते ही म्युनेज को पुरानी बातें याद आ गईं—बास्ल की अन्तरराष्ट्रीय कांग्रेस, गिरजे में वयोवृद्ध बेबेल का भाषण, युवतियों से भरी गाड़ियाँ, शपथों और आँसुओं की कहानियाँ, इत्यादि इत्यादि। लड़ाई के बाद ही वह विलार से बर्न नगर में मिला था। उन्होंने द्वितीय अन्तरराष्ट्रीय संघ की बिखरी हुई शृङ्खलाओं को फिर से जोड़ने का प्रयत्न किया था जैसे वह मिट्टी का कोई बर्तन हो। काफी वाद-विवाद हुआ कि युद्ध छेड़ने की जिम्मेदारी किस पर होगी, हर्जाने किससे और कितने वसूले जायेंगे, उपनिवेशों का क्या होगा। इस सारी कहानी को १६ वर्ष हो चुके थे···उन दिनों विलार के बाल काले थे और आवाज में टनक थी। आज वह बूढ़ा हो चुका था, उसी प्रकार जैसे म्युनेज···

विलार को भी बहुत-सी पुरानी चीजें याद आ गईं। दोनों मित्रों ने अपने जवानी के दिनों के बहुत से साथियों को याद करना शुरू किया, जैसे पेखानाव, मोरे, और इग्लेसिया। विलार ने कहा, 'एक आयु को प्राप्त कर लेने के बाद सभी मार्ग कब्रिस्तान को जाते दिखाई पड़ते हैं। जिधर देखो कब्र ही कब्र नजर आती है।'

'प्रिय मित्र, मैं समझता हूँ कि तुम्हारे ऊपर क्या बीत रही है! तीन साल हुए मेरी स्त्री भी चल बसी। अपने प्रिय इष्टजनों से बिछुड़ना असहनीय हो जाता है। उफ, किसी भयानक बात है! कभी-कभी तो मन में प्रश्न उठने लगता है कि इस प्रकार जीने से लाभ ही क्या?'

'मैं तुम्हारे पास वायुयानों के लिए आया हूँ,' उसने कहा, 'तुम्हें मालूम है कि हमारी परिस्थिति कैसी है। अगर आज तुम हमारी सहायता नहीं करते

तो शत्रु हमें कुचल देंगे। जनवादी मोर्चा समाजवाद का अन्तिम सहारा है। क्या यह सम्भव है कि तुम भी हमें धोखा दो? मैं तुमसे यह प्रश्न इस तरह कर रहा हूँ जैसे एक समाजवादी दूसरे समाजवादी से करता है। देखते नहीं, अब भी कुछ समय है! दुश्मनों ने मेरे बेटे को गोली का निशाना बनाया। खैर, उसकी बात तो मैं करना नहीं चाहता। लेकिन वे तो रोज निर्दोषों का खून बहा रहे हैं। आज समाचार मिला है कि कार्दोवा में भी गोली चली। वे लोग बड़े क्रूर हैं और अपनी मदद के लिए मराकश की बर्बर और असभ्य फौजों को ले आये हैं। चारों ओर आग लग रही है। किसी के जान-माल की हिफाजत नहीं, कामरेड विलार!'

'किन्तु हम तो दिल-जान से तुम्हारे साथ हैं,' विलार बोला। 'जब से स्पेन में विद्रोह हुआ है मैं स्वयं एक रात भी ठीक से नहीं सो सका। मैं तो समझता हूँ, तुम्हारे ऊपर अगर कोई आफत आई है तो वह मेरे ऊपर भी है। लेकिन तुम्हें एक बात नहीं भूलनी चाहिये, हम सारे देशवासियों के जीवन की रक्षा के लिए जिम्मेदार हैं। फ्रांस को शान्ति चाहिये। क्या बताऊँ कितने दुख की बात है! साधारण फ्रांसीसी तो यही सोचता है कि उसे दूसरे देश के राजनीतिक झगड़ों से कोई मतलब नहीं।'

'हमें लोग नहीं चाहियें,' म्युनेज ने कहा। 'हम तो वायुयानों की माँग कर रहे हैं। पुराने समझौते के अनुसार तुम हमारे हाथ विमान तो बेच ही सकते हो—'

कई बार नहीं करने के बाद विलार कुछ ठंडा हुआ। रूमाल से माथे का पसीना पोंछते हुए उसने घंटी बजा दी और म्युनेज से पूछा, 'क्या मँगाऊँ, चाय या लेमनेड?'

म्युनेज उठ खड़ा हुआ और बोला, 'तुम्हें मालूम है दुश्मन ने मेडिना पर भी कब्जा कर लिया है? उसकी सेना जेनरल मरेला की सेना से जा मिली है! मैं कोई कूटनीतिज्ञ तो हूँ नहीं, और फिर मैं चौंसठ साल का बूढ़ा हो चुका हूँ···कामरेड विलार, अब मुझे चलना चाहिये। शायद मैंने तुमसे बहुत-सी बातें कह डालीं, हालाँकि मुझे इसका अधिकार नहीं दिया गया था···मुझे तो विमान खरीदने के लिए भेजा गया था।'

म्युनेज चला गया। विलार के ओंठ घृणा से काँप रहे थे। आज की बातचीत आशा से अधिक कष्टप्रद निकली। स्पेनवालों की नाव डूबनेवाली ही है, इसमें किसी बच्चे को भी सन्देह नहीं हो सकता। बीस जहाजों से अन्तर ही क्या पड़ता। फ्रांस में जनवादी मोर्चे की रक्षा आवश्यक थी। जरा-सी चूक का बड़ा भीषण परिणाम हो सकता था। तब फ्रांस में भी फ्रैन्को के साथी निकल आते। फिर फ्रांस को कौन बचाने आता?'

'मस्यो तेस्सा फोन पर आपको बुला रहे हैं। कहते हैं, बड़ा जरूरी काम है,' उसके सेक्रेटरी ने कहा।

तेस्सा ने फोन पर अनुरोध किया था कि उससे तुरन्त मिला जाय। विलार को मानना ही पड़ा। वह मनहूस दिन किसी तरह बीत रहा था।

तेस्सा ने अपनी आदत के अनुसार प्रेमपूर्वक उसे गले लगाया और तुरन्त कहना शुरू किया, 'होशियार रहना! स्पेन बर्रे का छत्ता है। नेपोलियन को वहीं अपनी सारी शक्ति से हाथ धोना पड़ा था। इसके अलावा तुम्हें याद ही होगा, स्पेन के उत्तराधिकारी वाला वह मसला—'

'मेरी समझ में बात ठीक से आई नहीं…'

'अब भी नहीं समझे? तुम गलती कर रहे हो! अगर तुम क्रान्तिकारी को विमान दोगे, तो लड़ाई का छिड़ना अनिवार्य समझो। हिटलर एक कदम भी पीछे नहीं हटेगा, मुसोलिनी की तो बात ही और है।'

'निश्चय समझो, मैं फ्रांस की शान्ति भंग नहीं होने दूँगा,' विलार ने उत्तर दिया।

'यह तो मैं जानता हूँ; किन्तु तुम्हारे दुश्मन भी चुप नहीं बैठे हैं। रैडिकल एक तरफ शोर मचाये हैं। माल्वे चीख रहा है कि तुम राष्ट्र के स्वार्थों की रक्षा नहीं कर रहे हो। और लोग उसकी सुनते भी हैं। दक्षिण पक्ष की तो मैं बात ही नहीं करता। ब्रेतील तो मूर्ख और पागल है। हम स्पेननिवासी तो हैं नहीं, हम एक अत्यन्त सभ्य जाति के लोग हैं। हमारे यहाँ उस तरह का शासन असम्भव है। लेकिन ब्रेतील का प्रभाव बहुत है। कल वह कह रहा था कि वह उन्हें युद्धवादी ठहराने जा रहा है। मुझे विश्वास है, तुम उन लोगों की सारी चालों पर पानी फेर दोगे। इसीलिए मैं तो कहा करता हूँ कि विलार

के होते हुए हस्तक्षेप की नीति असंभव है। मुझे इसका विश्वास दिलाना, अब तुम्हारे हाथ है। तुम्हारे एक 'हाँ' से मुझे शान्ति मिल सकती है।'

तेस्सा हाथ झटकारता हुआ कमरे के दूसरे कोने तक जा पहुँचा और वहीं से चिल्ला-चिल्ला कर खरी-खोटी सुनाने लगा। फिर वह विलार के पास पहुँचा और कुछ बकने लगा। विलार शान्तिपूर्वक मुसकराता रहा। अचानक उसमें एक दृढ़ता-सी आगई थी। मालूम होत था जैसे कमरे में म्युनेज की आत्मा मौजूद थी। एक घंटे पहले, तकदीर का मारा, किन्तु अभिमान से भरा, म्युनेज इसी जगह खड़ा था, जहाँ इस समय तेस्सा अपना तमाशा रचाये हुए था। और विलार, जिसने अभी तक अपने एक पुराने मित्र के सामने एक आत्माहीन कूटनीतिज्ञ का रूप धारण कर रखा था, तेस्सा की धमकियों के सामने अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए तैयार हो गया। उसे यह भी याद न रहा कि ऐसा करना इस समय उचित होगा या नहीं। जब तेस्सा ने अपने प्रश्न का साफ-साफ जवाब माँगा, तो उसने कहा, 'मैं अपने कर्तव्य का पालन करूँगा।' इसके आगे तेस्सा उससे और कुछ नहीं कहला सका।

जब तेस्सा चला गया तो विलार थक कर सोफे पर जा लेटा और चिन्ता करने लगा, 'क्या किया जाय?' सिर में तेज दर्द होने और जी मतलाने के कारण वह कुछ सोच नहीं पा रहा था। तेस्सा का चिल्लाना और बकना कितना घृणित था! न जाने औरतें उसके प्रेम में कैसे फँसी रहती हैं? उसने सोचा, कुछ हो, तेस्सा को किसी न किसी ने यहाँ भेजा था। हो सकता है, इटालियन राजदूत ने भेजा हो, या फिर दक्षिणपक्षी रैडिकलों ने, खास तौर से ब्रेतील ने। यह तो ठीक है कि वे लोग ऊधम मचाये हुए हैं। क्या इसका अर्थ लड़ाई है? लेकिन लोग क्या कहेंगे? चालीस साल से मैं युद्ध की निन्दा करता चला आया हूँ और आज मैं ही लाखों आदमियों को मौत के मुँह में भेजूँ! स्पेन में तो पहले से ही मारकाट मची है...

रात को दस बजे तक विलार इसी उधेड़बुन में लगा रहा और यह न तय कर पाया कि क्या किया जाय। अन्त में सिर दर्द से परेशान होकर वह थक कर बैठ रहा और खुफिया पुलिस के सबसे बड़े अफसर को बुलवा भेजा।

'मुझे पता चला है कि पियेरे दुब्वा नाम का एक इन्जीनियर ग्यारह 'ए-६८' बमवर्धक वायुयान बार्सिलोना भेजना चाहता है। हो सकता है कि

इससे अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति और भी जटिल हो जाय। इसलिए यह जरूरी है कि जिस प्रकार भी हो विमान न जाने न पायें। तुम्हारी समझ में ऐसी कोई तरकीब है ?'

'यह तो बड़ी आसानी से हो सकता है। ये जहाज या तो 'सीन' के हवाई-अड्डों पर होंगे यह तूलूस में होंगे। मैं अभी जाकर इसका इन्तजाम करता हूँ।'

जब पुलिस अफसर चला गया तो विलार फिर सोफे पर लेट रहा। उसने सिरदर्द की दवा की दो खूराक ली। दवा खाते ही उसकी अजीब हालत हो गई। उसके लिए हाथ हिलाना भी मुश्किल हो गया। पेट में दर्द होने लगा और पैर ठंडे पड़ गये। उसने इस बात का बड़ा प्रयत्न किया कि उसके मन में किसी प्रकार की उलझन न पैदा हो। अभी तक सोचते-सोचते वह थक गया था; अब उसे आराम करना चाहिये। किन्तु न जाने क्यों 'गद्दार' शब्द रह-रहकर उसके कानों में गूँज उठता था। और किसी प्रकार हटाये हटता ही नहीं था। बेवकूफी की बात! उसने अपने मन में कहा, मैं किसी के साथ गद्दारी नहीं कर रहा हूँ! चाहे जो कुछ हो, स्पेनवालों की नाव डूब चुकी। दो सौ वायुयानों के मुकाबले में ग्यारह बमवर्षक कर ही क्या सकते हैं!······ बच्चे हैं, बच्चे! लान के मजदूरों की तरह! इस तरह मैं जनवादी मोर्चे को बचा सकूँगा, और पार्टी की भी रक्षा कर सकूँगा। और शान्ति की भी! मैं अपने कर्तव्य का पालन कर चुका। बस इतना काफी है। उसने अपने मन को इस तरह धीरज देना शुरू किया जैसे कोई माँ अपने डरे हुए बच्चे को देती है। किन्तु उसे लगा कि कमरे के अँधेरे में—उसने बत्ती बुझा दो थी—वही कटु शब्द 'गद्दार' हर तरफ से उठ रहा है।

अचानक उसे सरहद पर बसा नगर सरबेयर याद आया, जहाँ बहुत दिनों पहले वह अक्सर जाया करता था और एक बार पियेरे के पिता के साथ भी उसे वहाँ जाने का अवसर मिला था। उसे पेरीनीज़ के दामन में बसे नीले मकान, मछुओं की नावें, अंगूर के बाग और बड़े कारोबारी स्टेशन याद आये। वहाँ की स्वादिष्ट मीठी शराब का तो कहना ही क्या! यहाँ से लड़ाई का क्षेत्र निकट ही था। छोटी पहाड़ी पर चढ़ने या सुरंग से होकर निकलने भर की देर थी। सामने सरहद पार टूटे हुए मकान दिखाई पड़ रहे थे। गाँव की स्त्रियाँ रो रही थीं। लेकिन थोड़ी ही दूर सरबेयर में रहने वाली माताएँ

कहेंगे कि विलार ने फ्रांस को बचा लिया। विलार ने हमारे बच्चों को बचा लिया! विलार.........वह अपना नाम दोहराता हुआ सो गया।

२५

'असंभव!' पियेरे ने चिल्ला कर कहा। 'मैं अभी विलार को फोन पर बुलाता हूँ।'

बरसते हुए पानी में वे रोशनी के एक खम्भे के पास खड़े थे। पानी रुकने का नाम ही नहीं लेता था। लकड़ी के तख्ते पानी में उतरा चले थे। पुलिस सुपरिंटेंडेंट की बरसाती से पानी की धारा गिर रही थी।

'पेरिस से हुक्म आया है। निस्संदेह इसमें मिनिस्टर की आज्ञा है......'

और मेड्रिड में वहाँ लोग हवाई जहाजों के आने का रास्ता देख रहे थे। उसी रोज रेडियो से समाचार मिला था कि फासिस्ट आगे बढ़ते जा रहे हैं। टेलीफोन पर उसने काफी देर इन्तजार किया। मेज पर एक मोटी तगड़ी बिल्ली सो रही थी। पानी मूसलाधार बरस रहा था। अन्त में किसी प्रकार पियेरे विलार के सेक्रेटरी से फोन मिलाने में सफल हुआ। सेक्रेटरी ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक जवाब दिया, 'मैं आपका संवाद मंत्री जी तक पहुँचा दूँगा...... अभी वे काम में लगे हुए हैं......मेरी समझ में वे पुलिस के मामलों में पड़ना पसन्द नहीं करेंगे...।' पियेरे को लगा कि उससे बात करने से कोई लाभ नहीं और उसने फोन रख दिया। मनमें उसने सोचा कि यह सेक्रेटरी भी तो समाजवादी है!' यह विचार आते ही वह जोर से बोला, 'अभी पहली गाड़ी से पेरिस जाता हूँ!'

सुपरिंटेंडेंट ने कोई उत्तर नहीं दिया। पियेरे स्टेशन के पासवाले छोटे काफे में गया। अन्दर आनेवाले अपने कपड़े झाड़ते जाते थे। ऐसे खराब मौसम में काफे के अन्दर एक इतमीनान की साँस मिलती है।

पियेरे अपने विचारों में इतना मग्न था कि जब काफे की मालकिन ने उससे पूछा कि उसके लिए क्या लाया जाय तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया। उस समय उसका दिमाग मेड्रिड की परिस्थिति का अध्ययन कर रहा था। उसे नक्शे पर एक गोल निशान नजर आ रहा था, जिस पर चारों ओर

से तीर के निशान आ रहे थे। म्युनेज ने सूचना दी थी कि ग्यारहों 'एक्ट' बमवर्षक कल बार्सिलोना पहुँच जायेंगे। वहाँ वालों की हिम्मत बंध चुकी थी. वे जहाजों की राह देख रहे थे। और अब! मालूम होता था, सारा मामला. खटाई में पड़ चुका है। क्या इसके पीछे विलार का हाथ है? यह सोचते ही वह काँप उठा। उसे अपने इस तुच्छ विचार पर क्रोध आ गया। विलार पर संदेह करना! उसने एक प्याला शराब गले से नीचे उतारी, एक के बाद एक सिगरेट फूंकनी शुरू की और पास में दूसरी मेज पर बैठे हुए लोगों की बातें सुनने की कोशिश की।

काफे में सन्नटा छाया था। कुछ लोग तो जा चुके थे और कुछ ट्रेन के इन्तजार में बैठे ऊँघ रहे थे। होटल की मोटी तगड़ी मालकिन भी हरे ऊन का बंडल पेट से दबाये ऊँघ रही थी। कोने में बैठा एक मजदूर शराब के प्याले में रोटी भिगोता जाता था और अपने एक साथी को समझाने की कोशिश कर रहा था। पियेरे सुनता रहा।

'सारा मामला इस समय स्पेन में है। मैं वहीं जा रहा हूँ। तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अगर हम इस समय उनकी सहायता नहीं करते, तो हमारा भी सर्वनाश हो जायगा!'

पियेरे की तबीयत में आया कि तुरन्त उठकर उस मजदूर से हाथ मिलाये और कहे, तुम बिल्कुल ठीक कहते हो। लेकिन उसने अपने को रोक लिया वह केवल मुसकराया। मजदूर उसके इस इशारे को समझ गया।

पेरिस पहुँचकर पियेरे तुरन्त मंत्रिमंडल के दफतर में पहुँचा। उससे कहा गया कि मन्त्री महोदय इस समय काम में लगे हैं। दो घंटे तक दूसरे लोगों के साथ पियेरे भी बैठा इन्तजार करता रहा कि शायद अब उसकी भी बारी आये। इन भीड़ लगानेवालों में अधिकतर समाजवादी थे, जो विलार से या तो कोई बड़ा सम्मान प्राप्त करने आये थे या कोई ऐसा पद चाहते थे, जिससे काफी आमदनी हो सके। एक ठिगनी स्त्री घबरायी हुई कह रही थी, 'तुम लोगों को शायद मालूम नहीं, मैं उसे उस समय से जानती हूँ जब वह घूम घूम कर प्रचार करता था। वह मेरी बात मानने से इनकार कर ही नहीं सकता।' विलार ने उसको अन्दर बुलवाया। दूसरों को भी उसने बुलवाया। लेकिन

पियेरे को फिर भी बाहर ही बैठना पड़ा। अन्त में उसे सूचना दी गई, 'मंत्री जी जलपान करने गये हैं। तीन बजे लौटेंगे।'

पियेरे सड़क पर पड़ी एक बेंच पर तीन बजे तक बैठा रहा। चारों ओर सदा की तरह चहलपहल नजर आ रही थी। कपड़े सीने वाले दर्जी रोटियों और चाकोलेट का नाश्ता कर रहे थे। एक दूकान के बाहर स्त्रियाँ रेशम के गोले तैयार कर रही थीं। टेक्सी ड्राइवर आपस में गालीगलौज कर रहे थे। बूढ़े गौरैयों को दाना चुगाते फिर रहे थे। गाइड लोग अँग्रेज यात्रियों को नगर की मनोरंजक चीजें दिखाते फिर रहे थे। दलाल एक दूसरे को सट्टा के बाजार के ताजे भाव बता रहे थे। ऐसा लगता था जैसे किसी को मेड्रिडवालों की परवाह भी नहीं। किन्तु पियेरे को तो उसकी चिन्ताएँ घेरे थीं। वह रह रह कर मन में सोचता, 'क्या शत्रु तलावेराँ पर भी अधिकार कर लेंगे?'......... घड़ी की सूइयाँ जैसे सो गई थीं। पियेरे को ऐसा लगने लगा जैसे वह घंटों से यहाँ बैठा हो। लेकिन अभी तीन नहीं बजे थे।

जलपान के बाद विलार अपने दफतर में वापस आया। पहले की तरह पियेरे फिर से वेटिंग रूम में बैठ रहा। इस बार वहाँ और कोई नहीं था। सब लोग मिल-मिलाकर जा चुके थे। अन्त में सेक्रेटरी उसके पास आकर बोला, 'मन्त्री जी क्षमा चाहते हैं। वे बड़े आवश्यक कार्य में व्यस्त हैं। उन्होंने मुझे आज्ञा दी है कि मैं आप से बातें कर लूँ।'

पियेरे ने पुलिस सुपरिंटेंडेंट की ज्यादती की बात बतायी। सेक्रेटरी ने बीच में ही टोककर कहा, 'मन्त्री जी इस मामले को पूरी तरह जानते हैं। हम समाजवादी हैं, इसलिए खुलकर बातें करनी ठीक होगी......परिस्थिति बड़ी गंभीर है। हमें इस समय तय करना चाहिये कि दो में से कौन सा रास्ता अख्तियार करें। यदि हम स्पेनवालों की सहायता करने जाते हैं तो सब कुछ खो बैठेंगे। लड़ाई अवश्य छिड़ जायेगी और स्वयं हमारे देश में फासिस्टवाद की विजय होगी।'

'लेकिन अगर मेड्रिड में फ्रैंको है, तो यहाँ भी ब्रेतील है!'

'मेरी समझ में यह ठीक दृष्टिकोण नहीं। स्पेन यूरोप के एक सिरे पर बसा एक पिछड़ा हुआ देश है, जो अर्धदासत्व की मंजिल में है। तुम्हीं बतलाओ दोनों में से कौन-सी चीज ज्यादा अच्छी है, स्पेन के प्रजातन्त्र को

सहायता देना जिसकी कोई जड़-बुनियाद नहीं, जो यूंही खड़ा कर दिया गया है या फ्रांस जैसे अग्रणी देश में समाजवाद की रक्षा करना ? मंत्री जी ने तय किया है कि इस मामले में बिलकुल अलग रहा जाये।'

यह सुनते ही पियेरे को आग लग गई। पिछले कुछ सप्ताह उसे बहुत मानसिक कष्ट उठाना पड़ा था। ब्रेताँ के गाँव में वह भयंकर तूफान, सड़क की बैंचों पर बैठना, लोगों की लापरवाही, उसका रात-रात भर जागना और विलार पर अटूट विश्वास रखने के बाद इस प्रकार धोखा खाना—इन सब चीजों ने उसे जैसे पागल कर दिया। सेक्रेटरी की बात सुनते ही वह बोला, 'मन्त्री जी ? अरे वही गद्दार न !'

उसके मुँह से यह बात ऐसे अचानक निकली कि सेक्रेटरी ने कहा, 'क्षमा कीजियेगा, मेरी समझ में बात नहीं आई।'

लेकिन पियेरे जल्दी जल्दी जीने से नीचे उतर गया और कहता गया, 'अभी तुम्हारी समझ में कैसे आ सकता है !'

मिशो तुरन्त सारी बातें समझ गया। वह बोला, 'तो इसका अर्थ यह है कि सारे वायुयान रोक लिये गये ?'

'हाँ, सभी। और जानते हो, किसने उन्हें रोका है ? विलार ने ! आई बात समझ में ? मुझे तो लगता है जैसे मैं पागल हो जाऊँगा। देखो, मैं मेड्रिड जाना चाहता हूँ। तुम्हें मेरी सहायता करनी पड़ेगी। उसके बारे में मैं अब बात भी नहीं करना चाहता। बात करने से लाभ ही क्या ?'

मिशो को अब पता चला कि पियेरे के मनमें कितना भयंकर तूफान उठ खड़ा हुआ था। उसने खामोशी से सिर हिलाया। दोनों खिड़की के पास खड़े थे। बाहर लड़के मेंढक की तरह उछलने का खेल खेल रहे थे।

काफी देर चुप रहने के बाद मिशो बोला, 'म्युनेज को तीन 'पोटेज' जहाजों का वादा किया गया है। उसे इस चीज के बारे में कोई ज्ञान नहीं। हमारे बीच तुम्हीं एक व्यक्ति हो जो इस मामले के विशेषज्ञ हो। मैं अच्छी तरह समझ रहा हूँ कि तुम्हारे मन की क्या दशा है। हम लोग स्वयंसेवक भरती कर रहे हैं। हो सकता है, मैं स्वयं जाऊँ लेकिन तुम्हें नहीं जाना चाहिये। यहाँ तुम्हारे बिना सारा काम चौपट हो जायगा······।'

पियेरे ने कोई विरोध नहीं किया। उसने तय किया कि कल वह हवाई अड्डे जायगा। कोई बात नहीं, वह यहीं ठहरेगा। बाहर जाने का जो आखिरी बहाना हो सकता था वह भी उसके हाथ से छिन गया था।

बाहर सड़क पर आकर फिर उसने परेशानी से इधर-उधर देखा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ जाय। बाद में, उसे स्वयं समझ में नहीं आया कि क्यों वह सारे पेरिस को पार करता हुआ आंद्रे के यहाँ जा पहुँचा, आखिर उसे शेर्श-मिदी के उस गन्दे स्टूडियो में किस चीज के मिलने की आशा थी। उसे आंद्रे से भेंट किये छः महीने हो चुके थे। पियेरे को ऐसा लगा जैसे कई साल बीत गये हैं। स्टूडियो में प्रवेश करते ही उसने पूछा, 'आंद्रे, क्या हाल है?'

आंद्रे कह ही क्या सकता था? क्या वह उसे बतलाता कि गर्मी के दिनों की उन घटनाओं से वह कितना प्रभावित हुआ था, कैसे उसने जानेत को पाया था और फिर कैसे खो दिया था?

'बड़ा नीरस जीवन है। अब और अधिक सहा नहीं जाता।'

पियेरे ने बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखते हुए कहा, 'आंद्रे, तुम अब भी वही हो जो पहले थे। तुम्हें याद है, कैसे मैं तुम्हें घसीट कर संस्कृति-भवन तक ले गया था?'

आंद्रे ने सीटी बजाई। पियेरे ने कहा, 'तुम्हें मालूम है, ल्युसियां स्पेन गया हुआ है?'

'अखबारों में निकला था। उसे राजदूत का पद मिल गया है।'

'अच्छा! मैं तो समझा था वह लड़ाई में भाग लेने गया है...'

पियेरे यह सुन कर मुसकरा दिया। उसने सोचा, अभी तक इसका बचपन नहीं गया! उसने आंद्रे को विलार की सारी बातें बतानी शुरू कीं। सदा की भाँति वह आज भी जोर-जोर से बोलने लगा। वह तो जैसे चाहता था कि आंद्रे के स्टूडियो की दीवारों पर लगे कैनवास भी विलार को गद्दार कहकर पुकारें। किन्तु आंद्रे चुपचाप सुनता रहा। पियेरे से न रहा गया, उसने तुरन्त पूछा, 'क्या सोच रहे हो? तुम्हारी समझ में कुछ आता है?'

'मैं समझता हूँ ऐसा होना सम्भव है।'

'इस तरह की धोखेबाजी और गद्दारी सम्भव है ! मैं सुना करता था कि उसने मेरे पिता के साथ मिलकर एक स्पेनवासी की जान बचायी थी। आज उन्हीं स्पेनवासियों को वह दुश्मनों के हवाले कर रहा है ! क्या इस गद्दारी, इस मक्कारी को समझ सकना आसान है ?'

'तुम्हें गोया की तसवीरें याद हैं···?'

आगबबूला होकर, पियेरे चीखने लगा, 'तुम्हें तो अपनी कला की ही धुन सवार है ? मेरी समझ में नहीं आता तुम लोग अपने को मनुष्य कैसे कहते हो ? तुम लोगों को खून में, लोगों की दुर्दशा में और न जाने किस-किस चीज में मजा आता है। वैसे ही जैसे गोबर के कीड़ों को !' यह कहता हुआ वह बाहर निकल गया, लेकिन यह भी कहता गया, 'क्षमा करना, मैं फिर किसी समय आऊँगा।'

उसके चले जाने पर आंद्रे को बहुत बुरा लगा। वह बाहर निकलकर जीने तक गया लेकिन पियेरे कहीं दिखाई नहीं पड़ा। आंद्रे ने दुखित होकर अपना पाइप सुलगाना शुरू किया। आखिर पियेरे ने क्यों इस प्रकार उसका अपमान किया ? उसने केवल इतना ही कहा था कि इस चीज को समझना कठिन नहीं था, और थी यही बात। वह विलार ऐसे आदमी को भली-भाँति जानता था। किन्तु ल्युसियाँ ? इससे तो कुत्तों के साथ रहना कहीं अच्छा है ! इसमें सन्देह नहीं कि वे आपस में बुरी तरह लड़ते-झगड़ते हैं और एक दूसरे की काफी छीछालेदर करते हैं, लेकिन मीठे शब्दों की आड़ में नहीं। पियेरे ने इस प्रकार उसका अपमान करके गलती की। वह तो गद्दारी पसन्द नहीं करता।

पियेरे के दिमाग में बड़ी उलझन थी। उसे फैक्टरी में काम करने से घृणा सी हो गई थी। वह सोचता कि इस काम से लाभ ही क्या, जबकि मेरे बनाये हुए इन्जिन फ्रैन्को या ब्रेतील के काम आनेवाले हैं ? तीनों 'पोटेज' हवाई जहाज सफलतापूर्वक स्पेन पहुँचाये जा चुके थे। एक महीने बाद, दो 'फाइटर' हवाई जहाज भी जा चुके थे; लेकिन इतने से होता ही क्या। यह तो ऊँट के मुँह में जीरा था। मेड्रिड से तार पर तार आ रहे थे। फ्रांसीसी पुलिस हवाई जहाजों पर कड़ी नजर रखती थी। अखबारों की दूकानों पर हर जगह विलार की तसवीर टँगी दिखाई पड़ती थी। वह स्पेन के मामले में

हस्तक्षेप न करने का समर्थक था, जैसे वह कोई महान् कार्य कर रहा हो ! लोग कहते फिरते थे, 'हमने शान्ति की रक्षा कर ली !' विलार ने स्पेनवासियों के नन्हें बच्चों के दूध के लिए पाँच हजार फ्रांक चन्दा भी दिया था और यह कह कर दिया था कि यह 'सभी के बच्चों के लिए है !'

उस दिन पियेरे ने एग्नेस से कहा, 'मैं बच्चों को कुछ कम नहीं चाहता, लेकिन मेरी इच्छा होती है कि आज अगर विलार के कोई बच्चा होता तो मैं उसका गला घोंट देता···।'

जर्मन बम रोज मेड्रिड के मकानों का ध्वंस कर रहे थे। पेरिस की दीवारों पर कितने ही पोस्टर और इश्तहार चिपके थे, जिनमें बच्चों के फोटो थे जिन्हें जर्मनों ने अपने बमों का निशाना बनाया था। एग्नेस कहती कि उनकी ओर देखने से दुःख होता है। पियेरे कुछ नहीं बोलता। उसे तो न जाने कब से कष्टों का सामना करना पड़ रहा था। फ्रैंको ने टोलेडो ले लिया था और अब वह मेड्रिड की ओर बढ़ रहा था।

पियेरे ऐसा अनुभव करता था जैसे विलार ने न केवल उसी के साथ गद्दारी की है बल्कि एग्नेस और यहाँ तक कि सारे फ्रांस के साथ की है। उसे यह सोच कर घृणा होती थी। पियेरे को पेरिस से भी घृणा होने लगी थी क्योंकि उसके रोजमर्रा के कामों में कोई अन्तर नहीं दिखाई पड़ रहा था, जबकि पास में ही हजारों आदमी मौत के घाट उतारे जा रहे थे। काफे उसी तरह लोगों से भरे रहते, वही राजनीतिक चर्चा, ताश, ब्रिज और पोकर के खेल, वही नाचना-गाना और बजाना ! न कहीं बम थे, न खतरे की घंटी थी, यहाँ तक कि किसी की आँखों से एक कतरा आँसू भी नहीं निकलता था।

सिर्फ मिशो ने हिम्मत नहीं हारी। वह स्वयंसेवकों का पहला दस्ता लेकर स्पेन जा रहा था। पियेरे ने मिशो की ओर कुछ प्रशंसा और कुछ ईर्ष्या की दृष्टि से देखा। उसने सोचा यह आदमी है बड़े काम का ! उसने क्या कहा था ? 'इस तरह किसी को जीतना मुश्किल है !' और पियेरे भी यही महसूस कर रहा था। एक समय था जब लोग कहा करते थे कि विजय के पंख होते हैं। लेकिन आज विजय के पाँव जख्मी थे, धूल और खून में सने थे।

२६

ल्युसियां कूटनीतिज्ञ के जीवन से असन्तुष्ट था। दफ्तर के काम में उसे अधिक समय नहीं देना पड़ता था, लेकिन उसकी समझ में नहीं आता था कि बाकी समय में वह क्या करे। मध्यकालीन शानदार इमारतों, विद्यार्थियों और खच्चरों की भीड़ को वह अनमन ढंग से देखता रहता। पेरिस के कहवाखानों के बिना, जहाँ बेमतलब की बहसें हुआ करती थीं, नाटकों और गपशप के बिना उसे जिन्दा रहना दूभर जान पड़ता था। ये चीजें उसे इतनी ही प्रिय थीं, जितना उसे अपना बिस्तर या सिग्रेट होल्डर प्रिय था। वह सोच रहा था कि अपनी नौकरी, जिससे उसे काफी आय थी, छोड़ दे। इतने में ही स्पेन में घटनाओं ने ऐसा रुख अख्तियार किया कि वह भी उनके भँवर में पड़ने से न बच सका। एक बार फिर इस आदमी ने, जो सड़कों पर लगे उन मार्ग-सूचक बोर्डों की तरह था जो रोशनी पाकर चमक उठते हैं, समझा कि उसने सत्य को पा लिया है।

उसकी जान-पहचान एक फलांगी (फासिस्ट) नेता मेजर जोजे गार्नेज से हो गई, जो एक रूखा, और मनहूस आदमी था। वह बड़ा कट्टर स्वयंसेवक था, जो दिन में लोगों को गोलियों का निशाना बनाता फिरता और रात में बाइबिल का प्रचार करता। ल्युसियां को बड़ा आश्चर्य होता था कि यह स्पेनी अफसर अपने गुप्त विचारों को बार-बार उसके सामने खोलकर कह देने में जरा नहीं हिचकता था। जोजे अकसर इस बात पर जोर देता कि समाज में उच्च वर्ग का क्या महत्व है। असमानता में क्या शान छिपी है और साधारण जनता को दृढ़-स्वभाव, बुद्धिमान मनुष्यों के अधीन रखना कितना पवित्र कार्य है। यह तमाम बातें सुनकर ल्युसियां को याद आता कि कैसे पेरिस में उसका निरादर हुआ था; चुनाव में कितने वोट किधर पड़े थे, 'ला यूमानिते' के संपादक-मंडल का कूढ़मग्ज पत्रकार, पियेरे और उसके जैसे अनेक दूसरे

लोग जो बड़ी लम्बी-लम्बी बातें करते थे, कितनी साधारण बुद्धि के व्यक्ति थे। फलांगियों ने अपनी जान की बाजी लगा कर नाम पैदा किया था। जोजे जब पर्चे लिखने बैठता तो उसे जरा भी परवाह न होती कि दर्जी या खानों में काम करनेवाले मजदूर क्या कहेंगे। ल्युसियां की सदा यही राय रही थी कि पुराने समाज को उलटने के लिए सिर्फ चन्द साहसी षड्यंत्रकारी चाहियें। कम्युनिस्टों ने उसकी इस बात का मजाक उड़ाया था। वे जनता को शिक्षित करने और उसे आन्दोलन के लिए तैयार करने की बातें करते थे। वे एक बीते हुए युग का स्वप्न देख रहे थे—मार्क्स, कम्यून, प्रजातन्त्रवाद और प्रगति की दुनिया का स्वप्न, किन्तु यह सब निरर्थक था!

इस स्पेनवासी की बातों में एक और चीज भी थी, जिसने ल्युसियां को आकर्षित किया था वह थे मृत्यु के सम्बन्ध में उसके विचार। एनरी की मृत्यु के बाद ल्युसियां अच्छी तरह अनुभव कर चुका था कि अपना अस्तित्व मिटा-कर कोई नौजवानों के जोश से भरे दिलों पर कितना प्रभाव डाल सकता है। उसने इसी विषय को लेकर एक उपन्यास भी लिख डाला था। कम्युनिज्म के लिए अगर थोड़ा-बहुत जोश उसने दिखलाया भी था तो वह जैसे कलम की भूलचूक थी। क्षण भर के लिए दूसरे लोगों की चहल-पहल, शोरगुल और चापलूसी का असर उसके ऊपर अवश्य पड़ा था। ल्युसियां और जोजे दोनों ही के लिए मृत्यु केवल मनन का विषय न थी। उसका स्वयं एक महत्व था। वह इस संसार में मनुष्य के क्षणिक और इसलिए नाजुक जीवन का सुधारक थी!

ल्युसियां इस नई विचारधारा में बहने लगा, और जब मेजर ने उसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह पेरिस जाकर फलांगियों को ब्रेतील के सम्पर्क में लाये, तो वह तुरन्त तैतार हो गया।

उसने न अपने स्पेनस्थित फ्रेंच राजदूत से आज्ञा ली और न पेरिस की सरकार से ही। उसे अपने इस काम से घृणा हो गई थी; वह ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे इस पद पर रहकर वह अपना बड़ा निरादर करा रहा है। उसने जाका के रास्ते देश लौटने का निश्चय किया। उसकी कार सूखी, भूरी पहाड़ियों में होती हुई घुमावदार सड़क पर दौड़ रही थी। दूर तक कोई नजर नहीं आता था, न आदमी न जानवर। आसपास का दृश्य उसके हृदय में

उठनेवाले विचारों से मिलता-जुलता था—उसे मृत्यु बड़ी सुहावनी जान पड़ती थी।

उसके पिता ने उसका शानदार स्वागत किया। ल्युसियां अब पहले की तरह एक आवारा, फजूलखर्च लड़का न था; अब तो वह एक कूटनीतिज्ञ के पद पर था। ल्युसियां ने जानबूझ कर पिता को नहीं बताया कि उसके घर लौटने का क्या रहस्य था। तेस्सा ने लड़के से स्पेन की परिस्थित के बारे में कुछ नहीं पूछा। वह समझता का कि फ्रैंको की विजय तो निश्चित है। बाकी और किसी चीज में उसे दिलचस्पी नहीं थी। उसने ल्युसियां के सामने अपनी योजनाएँ भी रखीं। वह परराष्ट्र विभाग का सभापति नियुक्त किया गया था और उसकी सारी गुप्त सूचनाओं को भी पढ़ता रहता था। मौके पर वह चेम्बर में गरज उठता था और अपने जोरदार भाषण से सारी इमारत को हिला देता था! ल्युसियां ने जँभाई लेते हुए मन में सोचा—फिर वही पार्लेमेन्टरी धूर्तता की चर्चा!

ब्रेतील जानता था कि किस प्रकार के आदमियों से कैसा व्यवहार करना चाहिये। ग्रिजनेज जैसे 'वफादारों' से वह कड़े शब्दों में बात करता था, लेकिन चेम्बर के सदस्यों की चापलूसी करने और उनको मीठी-मीठी बातें करके अपने जाल में फँसाने की तरकीब भी उसे खूब आती थी। वह ल्युसियां के साथ बराबरी का व्यवहार करता और ल्युसियां भी उसके सामने पहुँचते ही अपने दिल की सारी बातें रख देता—ब्रेतील उसकी बातें बड़े गौर से सुनता। पहले तो दोनों ने प्रचार सम्बन्धी बातें कीं। फ्रैंको के विद्रोह को दबा देना चाहिये ताकि दूसरों के सामने नमूना रहे। ब्रेतील सोने की एक तलवार खरीदने के लिए रुपया इकट्ठा कर रहा था, जिसे वह अलकजार की रक्षा करनेवाले कर्नल पोस्कार्दो को उपहार में देना चाहता था। उसके बाद ब्रेतील ने बात शुरू की कि क्या-क्या कदम तुरन्त उठाने चाहिये। हथियारों और हवाई उड़ाकों का वर्गस भेजा जाना और ऐसे ही अनेक दूसरे काम। बार्सिलोना में खुफिया विभाग के लिए सारा जरूरी सामान पेरिस से होकर जा रहा था।

ल्युसियां की अपने पिता से एक झड़प होते-होते रह गई। जब तेस्सा को मालूम हुआ कि उसके बेटे ने अपने राजनीतिक पद को ठुकरा दिया, तो वह

जोर-जोर से पैर पटककर चिल्लाने लगा। ल्युसियां अपने पिता को कोई कारण नहीं समझा सका। इसके अलावा उसे अपने पिता से कई हजार फ्रांक माँगने पड़े।

धीरे-धीरे स्पेन की याद ल्युसियां के दिमाग से दूर होने लगी। सारा षड़यंत्र उसे एक साधारण खेल जान पड़ने लगा, जिसका न कोई निश्चित समय था, और न कोई निर्धारित कार्यक्रम। ब्रेतील कहता रहा, 'अभी इन्तजार करो।' किन्तु जोजे के साथी कभी के मेड्रिड के निकट जा पहुँचे थे। ल्युसियां अपने पिता की मेज पर रखे हुए कागजों की अच्छी तरह छानबीन करता और उनकी तमाम बातें ब्रेतील को बता आता। लेकिन इतने से भी उसका समय अधिक नहीं कटता, और अपने पिता के घर, ब्रेतील के वेटिंग रूम में और यहाँ तक कि शाम को सड़कों पर भी उसका मन उदास, ही रहता।

समय किसी प्रकार बिताने के विचार से ल्युसियां हर दावत में जा पहुँचता, खूब नाचता-गाता, उल्टी-सीधी कहानियाँ सुनाता और नौजवान लड़कियों से हँसी-दिल्लगी करता। एक बड़े व्यवसायी मांतिनी की लड़की उसके प्रेमजाल में आ फँसी। जोजेफाइन भरे हुए बदन की और बात-बात पर हँसने वाली लड़की थी। वह ल्युसियां की रँगीली सूरत देखकर मुग्ध हो गई थी। उसे उसके स्पेनी किस्से बड़े पसन्द आते थे। विशेषकर जब वह बात करते-करते चुप हो जाता, एक जगह निगाह गड़ा कर देखने लगता और हल्के से हँस देता। जब तेस्सा को बेटे की हरकतों का पता चला तो वह खुशी से फूला न समाया। उसने सोचा अगर उसका लड़का कूटनीतिज्ञ के पद को लात मारकर एक मालदार बहू ला रहा है, तो उसे मूर्ख नहीं कहा जा सकता।

जोजेफाइन इस आशा में थी कि ल्युसियां उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखने ही वाला है, और इसलिए वह चाय के कमरों की तनहाई में या बोलोन पार्क जैसी जगहों में मिलने की तारीखें ठहराया करती। लेकिन लगता था जैसे ल्युसियां को उसकी भावना की कोई परवाह नहीं थी। एक दिन उससे न रहा गया और उसने ल्युसियां का हाथ पकड़ ही लिया। उस रोज अच्छी खासी धूप निकली हुई थी और वे बाग में घूम रहे थे। सामने कुछ दूर एक स्त्री घोड़े पर सवार चाबुक चला रही थी। जोजेफाइन ने शर्म से गर्दन नीची कर ली और मुँह फेर लिया। ल्युसियां ने धीरे से अपना हाथ

छुड़ाते हुए कहा, 'देखो, साफ बात यह है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त तुम धनवान् भी हो। और कल मुझे तो अपनी घड़ी गिरवी रखनी पड़ी···तुम तेईस साल की हो चुकी, सदा हँसती रहती हो। और मैं ? मैं अपने मित्र जोजे की तरह हूँ, जिसके लिए मृत्यु ही उसकी अर्धांगिनी हो सकती है।'

२७

जब तेस्सा को पता चला कि ल्युसियां ने जोजेफाइन से भेंट करना भी बन्द कर रखा है तो वह बड़ा झल्लाया और अपने मन में सोचने लगा कि इस आवारा लड़के के किये कुछ नहीं होगा। किन्तु उसके लिए अभी एक दूसरा धक्का आनेवाला था। वह रोम स्थित फ्रांसीसी राजदूत की रिपोर्ट ऊँघते हुए पढ़ रहा था कि इतने में देनीजे ने कमरे में प्रवेश किया। उसे देखते ही तेस्सा प्रसन्न हो उठा। इतनी देर से उसे अपनी प्यारी बेटी को देखने का अवसर ही नहीं मिला। अमेली ने बताया था कि देनीजे की तबियत ठीक नहीं है।

'मैं जा रही हूँ,' देनीजे बोली। 'अकेली रहूँगी।'

तेस्सा क्रुद्ध होकर बोला, 'कहाँ ? किसी लड़के के साथ ?'

'नहीं, बिल्कुल अकेले।'

तेस्सा ने आश्चर्य से अपनी बेटी की ओर देखा और सोचा कि इसमें शक नहीं कि यह बीमार है। बात का रुख पलटते हुए, बड़ी नरमी के साथ उसने पूछा, 'अच्छा यह तो बताओ कि कारण क्या है ?'

'मैं तो समझी थी कि हमारी उस दिन की बातचीत के बाद आप स्वयं समझ गये होंगे। इसके अतिरिक्त मेरे सामने कोई रास्ता नहीं। मैं आपके ऊपर भार होकर नहीं रहना चाहती।'

यह सुनकर तेस्सा आगबबूला हो उठा और बोला, 'तो तुम्हारा इरादा है कि अपने नालायक भाई की तरह तुम भी धक्के खाती फिरो ?'

'मैं जानती थी कि आपकी समझ में बात आसानी से नहीं आयेगी। शायद यह बहाना आपको अच्छा मिल गया। ल्युसियां हर तरह से दोषी है, क्योंकि अगर वह चाहता तो एक दूसरी जिन्दगी बसर कर सकता था। किन्तु

होटल में सबसे ऊपर उसने एक कमरा ले रखा था। उसमें इतनी भी जग मुश्किल से थी कि एक चारपाई बिछ सके, दीवारों पर लगे वालपेपर न जाने कब से गन्दे पड़े थे। लेकिन अपना यह छोटा-सा घरौंदा भी उसे अत्यन्त सुखदायक प्रतीत होता था। दीवार पर लटके हुए धुँधले शीशे में उसे पहली बार अपने जीवन में अपना चेहरा खिला हुआ मालूम पड़ा।

एक दिन शाम को जब वह मिशो से मिली तो सीधे बोली, 'अच्छा अब काम की बात...मैं स्पेनवासियों के लिए कुछ करना चाहती हूँ। शाम के समय मुझे फुरसत रहती है।'

दोनों सेबास्तोपोल सड़क पर चले जा रहे थे। आज पेरिस में पहली बार घना कुहरा पड़ रहा था और यह सूचना दे रहा था कि शरद् ऋतु का आगमन होनेवाला है। सड़कों पर जलते हुए लैम्प इस पीले धुएँ में तैरते हुए से जान पड़ते थे। कुहरा इतना घना था कि कि नजदीक की चीज़ भी नहीं दिखाई पड़ती थी और रास्ता चलने वाले एक दूसरे से टकरा जाते थे।

'मैं तो तुम्हें फोन करनेवाला था,' मिशो बोला।

'अब मेरे यहाँ फ़ोन कहाँ ? मैंने तो घर छोड़ दिया है।'

वह तुरन्त सारी बात समझ गया और धीरे से उसने उसका हाथ दबा दिया। देनीज़े हँस पड़ी। कुहरे में उसकी प्रसन्न आखें रह रहकर इस प्रकार चमक उठतीं जैसे दूकानों के साइनबोर्डों के अक्षर।

दोनों ने उस कमरे में प्रवेश किया जहाँ कमेटी की बैठक हो रही थी। हर एक की जबान पर केवल एक ही शब्द था—'मेड्रिड'। जिधर देखो यही चर्चा थी। लड़कर जान कुर्बान करने के लिए उतावले युवकों से लेकर गोद में बच्चे लिये माताओं तक जो अपनी सारी बची हुई पूंजी मेडिड्र की स्त्रियों के सहायतार्थ लायी थीं, और मजदूरों, कलाकारों, होटल के नौकरों और विद्यार्थियों तक, हरएक के मुँह से एक ही बात सुनाई पड़ती थी। पेरिस की सारी शोषित किन्तु जीवित जनता की आत्माएँ मानों इन दो छोटे कमरों में, जहाँ मेड्रिड नगर का नक्शा टंगा हुआ था और स्पेन प्रजातन्त्र का झंडा फहरा रहा था, सिमट आयी थीं।

देनीज़े ने रोज़ शाम को वहाँ आने का प्रबन्ध किया। जब वह हर एक

को 'कामरेड' कहकर सम्बोधित करती तो मिशो को कितना आनन्द आता—
जैसे सारे जीवन वह इसी भाषा में बोलने की आदी रही हो।

मिशो ने उसके घर को कुहरे के धुंधलके में देखा। लौटते समय उसने कुछ भुने हुए अखरोट खरीदे। गरमागरम अखरोटों ने देनीज़े की ठंडक से जमी उँगलियों में खून दौड़ा दिया। उसने अपने नये जीवन की कहानी सुनानी शुरू की।

'मुनीम दिन भर बड़बड़ाता रहता है। जब देखो कहता रहता है, तुम्हारी वजह से एक और गलती हो गई! और मैनेजर! वह तो पक्का फासिस्ट और बड़ा भयानक आदमी है। वह कहता है कि मेड्रिड का तो कभी का पतन हो चुका। उसने मुझे अपने साथ सिनेमा चलने को कहा और बातों-बातों में इशारा किया कि वह चाहे तो मेरी तनखाह आज बढ़ा दे और चाहे तो अभी मेरा पत्ता कटवा दे। मैंने कह दिया कि मेरा एक प्रेमी है, जो मेरा पीछा नहीं छोड़ सकता। यह सुनते ही वह चुप हो रहा।'

दोनों खिलखिला उठे। दोनों को एक अद्‌भुत स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था। थोड़ी देर बाद मिशो बोला, 'मैं परसों जा रहा हूँ।'

'स्पेन जा रहे हो?'

उसने सिर हिला दिया।

'मिशो, तुम वापस आओगे न?' देनीज़े ने पूछा।

वह चुप रहा।

'मैं जानती हूँ तुम लौट आओगे।'

मिशो ने कोई उत्तर नहीं दिया, अचानक उसका चेहरा उदास हो गया।

'मिशो, मैं चाहती हूँ कि तुम लौटकर फिर आओ।'

एक बार फिर मिशो के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

'ज़रूर, ज़रूर, मैं वापस आऊँगा,' वह बोला। 'हम विजयी होंगे और मैं वापस आऊँगा। और तब...।'

दोनों होटल तक पहुँच चुके थे। उसकी झिलमिलाती रोशनी मुश्किल से दिखाई पड़ती थी। दोनों ने कुछ आगे बढ़कर एक दूसरे से राज की भाँति

विदाई ली। किन्तु देनीज़े ने अचानक मुड़कर पीछे देखा और दौड़कर मिशो के पास पहुँची और उसके गालों का चुम्बन लेने लगी। जितनी देर में मिशो संभले उतनी देर में वह फिर गायब हो चुकी थी। थोड़ी देर वह खड़ा मुसकराता रहा। कुहरे के बादल उसके चारों ओर मँडराते रहे।

२८

जिस दिन शाम को 'सीन' फैक्टरी के मजदूर अपने साथियों के स्पेन जाने के अवसर पर उन्हें विदाई दे रहे थे, उसी रोज समाचारपत्रों ने लन्दनस्थित हस्तक्षेप विरोधी कमेटी के सोवियत प्रतिनिधि का एक वक्तव्य प्रकाशित किया। तार द्वारा भेजे गये इस संक्षिप्त समाचार की चन्द पंक्तियों ने पेरिस के मजदूरों में एक हलचल पैदा कर दी थी। सड़कों पर, गलियों में, सिनेमाघरों में, कहवाखानों में हर जगह लोग यही कहते सुनाई पड़ते थे, 'अब स्पेन-निवासी अकेले नहीं रहेंगे!'

मिशो इतनी प्रसन्नता अनुभव कर रहा था जैसे उसकी वर्षगाँठ मनाई जा रही हो। स्पेन जाने की खुशी के साथ-साथ उसे एक और खुशी मिल चुकी थी, उसके उस विश्वास की विजय हुई थी जिसके लिए उसने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया था। भाषण आरम्भ करते समय वह जोश से भर गया।

ब्लूम और विलार के आज्ञानुसार फ्रांस और स्पेन के बीच सरहद का रास्ता बन्द कर दिया गया था। फिर भी रोजाना हजारों स्वयंसेवक इस पार से उस पार निकल ही जाते थे। कुछ तो रेल से व्यापारी या पत्र-प्रतिनिधि बनकर निकल जाते और कुछ पैदल पहाड़ी रास्तों से जा पहुँचते।

मिशो के साथ आठ और मजदूर थे, जिनके लिए जरूरी कागज-पत्र प्राप्त कर लिये गये थे। मिशो 'नई आवाज' का विशेष संवाददाता बनकर जा रहा था। पियेरे के पास भी जरूरी कागज थे। उन्चास स्वयंसेवकों का दल परपाइना के लिए प्रस्थान कर रहा था। वहाँ से वह कैटेलोनिया भेजा जाने वाला था।

गाड़ी शाम को आठ बजे जानेवाली थी। केन्द्रीय स्टेशन पर स्वयं-सेवकों को विदा करने के लिए लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई थी। कई लोग पहले और दूसरे दर्जे के डिब्बों के पास खड़े थे। विवाहित युवक-युवतियाँ हँसीठट्ठा कर रहे थे। एक बूढ़ा एक पत्रिका खरीद रहा था जिसके आवरण पर एक नंगी स्त्री की तसवीर बनी थी। खिड़की के पास बैठी एक स्त्री घबराहट में एक गुलदस्ते पर हाथ फेर रही थी। कुली लोग सूटकेसों को, जिन पर भिन्न-भिन्न होटलों के पते चिपके थे, उठा उठाकर रख रहे थे। यात्रियों में बहुत से व्यापारी थे, कुछ महिलाएँ थीं जो पेरिस के कुहरे भरे मौसम से घबराकर दक्षिण के सुन्दर नगरों को स्वच्छ वायु का सेवन करने जा रही थीं। कुछ सरकारी अफसर भी थे जो अल्जीयर्स जा रहे थे। दो एक की जबान से स्पेन का जिक्र भी सुनाई पड़ता था। वे कह रहे थे, 'दो एक रोज में मेड्रिड का पतन हो जायेगा, और तब सारा मामला ठंडा हो जायेगा।'

किन्तु तीसरे दर्जे के डिब्बों के पास जो भीड़ जमा थी वह कुछ और ही प्रकार की थी। वहाँ लाल फूलों की भरमार थी, जो इस भीड़भाड़ और शोर-गुल तथा धुएँ में नन्हें-नन्हें लाल झंडों जैसे लग रहे थे। स्पेन जाने वाले बहादुर स्वयंसेवकों के इष्टमित्र, माताएँ, बहनें और स्त्रियाँ उन्हें विदा करने आई थीं। एक दूसरे से बिछुड़नेवाले स्नेह और वफादारी का इकरार कर रहे थे। चारों ओर नारे लग रहे थे, लोग गा रहे थे। लगता था जैसे उन्हें विश्वास था कि अब शत्रु मेड्रिड नहीं ले पायेगा। देनीजे इस भीड़ में खो-सी गई, किन्तु जैसे ही गार्ड ने सीटी दी उसने लपक कर मिशो के कोट की आस्तीन पकड़ कर कहा, 'मैं तुम्हारी राह देखूंगी!''

सीटी बजी। तीसरे दर्जे के चारों डब्बों की खिड़कियों से झाँकते लोगों और बाहर प्लेटफार्म पर उनके प्रियजनों ने एक दूसरे को बिदा देने लिए घूंसे तान कर लाल सलाम किये। पहले दर्जे के डब्बे के पास खड़ी एक स्त्री ने कहा, 'छिः छिः कितने पतित हैं।' देनीजे ने अपना रूमाल हिलाया। कुहरे के बावजूद दिखाई पड़ रहा था कि मिशो खिड़की से बाहर को ओर झुका खड़ा था। एक स्वयंसेवक की बूढ़ी माता लड़के से बिछुड़ने के दुख में आँसू बहा रही थी और सिसक रही थी। आगे अँधेरी सुरंग में गाड़ी में बत्तियाँ जल उठीं और नये संघर्ष का गीत कुहरे में तैरने लगा।

पिछले कुछ दिनों की दौड़धूप से मिशो इतना थक गया था कि पड़ते ही सो गया। नींद में उसे ट्रेन के पहियों की गड़गड़ाहट, लोगों की बहस, स्टेशनों के नाम सभी सुनाई पड़ते थे। जब वह तड़के जागा तो गाड़ी नार-बोन स्टेशन के पास पहुँच चुकी थी। इस समय वह बड़ी बड़ी झीलों के पास से होकर दौड़ रही थी। झीलों का पानी गहरे नीले रंग का था। किनारों पर लम्बी लम्बी घास उगी हुई थी और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। पानी की सतह के पास छोटी छोटी चिड़ियाँ उड़ रही थी। आगे बढ़ने पर उगते हुए सूरज की किरणों में झीलों का पानी गुलाबी हो गया। इस समय मिशो को देनीजे की याद आ रही थी—उसके हाथों की वह गरमाहट, उसके वे अन्तिम शब्द! उसे अब उदासीनता नहीं बल्कि एक प्रकार की शान्ति का अनुभव हो रहा था।

स्पेन की सीमा पर नियुक्त संतरियों ने घूंसे तानकर जनवाद के इन रक्षकों को सलामी दी, जिनके अलावा अब गाड़ी में कोई नहीं रह गया था। बाकी सारे मुसाफिर रास्ते के स्टेशनों पर उतर चुके थे। गृहयुद्ध के शिकार पहले खंडहरों के पास छोटे बच्चे 'राहगो मार्च' गा रहे थे, जिससे एक अजीब उदासी टपक रही थी।

छः महीने बाद, 'पेरिस कम्यून' बटालियन का लेफ्टिनेंट मिशो मेड्रिड के पास एक गाँव को, जो आधा तबाह हो चुका था, दुश्मन के आक्रमण से बचा रहा था। उसकी सहायता के लिए सौ फ्राँसीसियों की एक टुकड़ी थी। ये लोग सूर्योदय से घंटे भर पहले वहाँ पहुँच गये थे। चारों ओर कास्टील की पहाड़ियों का सिलसिला दूर तक फैला हुआ था, जैसे सामने एक शान्त और स्थिर सागर हो। नवागन्तुक अपने चारों ओर के दृश्य से कितने भिन्न जान पड़ते थे। उनकी सभी चीजें बिल्कुल भिन्न थीं—उनके प्रसन्न चेहरे, आपस के हँसी मजाक, उनकी लच्छेदार बातें। वे अपने को इस निष्ठुर किन्तु सुन्दर देश और उसके कड़े स्वभाववाले स्वाभिमानी और भावुक वासियों में नहीं खपा पा रहे थे। पेरिस के ये निवासी, जिनका काम हमेशा हँसना-खेलना और खुशियाँ मनाना था, अपने को इस नये देश में बाहरी अनुभव कर रहे थे। हाँ, उनके और स्पेन के बीच उद्देश्य की जो एकता थी तथा

स्पेनवासियों ने जिस आदर के साथ उनका स्वागत किया था, वह अवश्य उनको हिम्मत बंधाये था।

दोनों ओर से थोड़ी बहुत गोलाबारी होने के बाद सात बजते-बजते फासिस्टों ने गाँव की ओर बढ़ना आरम्भ किया। एक बम के फटने से चार मशीनगन चलानेवाले हताहत हुए। मिशो और उसके साथी पहाड़ी की चोटी पर एक खाई में पड़े थे, जो जल्दी में खोदी गई थी। वहाँ से वे देख रहे थे कि फासिस्ट धीरे धीरे पहाड़ी के ढालुवाँ रास्तों से आगे बढ़ रहे हैं। मशीनगन की गोलियों के सामने दुश्मन की प्रगति रुक गई। इसके बाद दूसरा हल्ला हुआ। मिशो ने हुक्म दिया, 'हथगोले फेंको!'

कुछ ही समय हुआ होगा, लेकिन उसे मालूम हो रहा था जैसे सारा दिन लग गया। शत्रुओं को मारकर पीछे खदेड़ दिया गया। मिशो का एक साथी जेनतुई, जो लोहार था, जख्म खाकर दोपहर तक चल बसा। मरते समय तक उसे तरह-तरह की चिन्ताएँ घेरी थीं। वह बराबर कह रहा था '...... से कह देना!' लेकिन आखिर तक मिशो उसकी बात ठीक से न समझ पाया।

शाम के समय एक स्पेनी बटालियन फ्राँसीसियों को छुट्टी देने आई। सौ आदमियों में से केवल बयालीस जीवित बचे थे। सतरह अस्पताल भेजे जा चुके थे।

गाँव खाली पड़ा था। लोग घर छोड़कर भाग गये थे। केवल दो तीन मकानों से हलकी रोशनी आ रही थी। इतने में अँधेरे से भूतनी की तरह एक बुढ़िया निकली और जलती हुई आग के पास पहुँची। वह एक साधारण किसान स्त्री थी और काले कपड़े पहने तथा सिर को एक काले रूमाल से बाँधे थी। उसने मिशो से कुछ कहा किन्तु उसकी समझ में न आया। बड़ी मुश्किल से उसने स्पेनी भाषा के कुछ शब्द सीखे थे। बुढ़िया वापस गई और कुछ देर बाद थोड़ा सा गोश्त ले आई और उसकी ओर इशारा करके मानो कहने लगी, 'इसे खाओ!' मिशो को इस समय जानो की माता की याद आ गई। उसकी सिसकी साफ सुनाई पड़ रही थी। निस्संदेह वह कह रही थी, 'शत्रु, तुम्हें भी मार डालेंगे!"

बगल में बैठे हुए अपने एक साथी से मिशो बोला, 'ये लोग कह रहे हैं, तुम लोग हमारी खातिर अपनी जान दे रहे हो। किन्तु नहीं, हम अपनी जान

दे रहे हैं, पेरिस के लिए, फ्रांस के लिए। आज जेनतुई मरा तो पेरिस के लिए। एक बार मैं उसके घर गया था। वह मौँतरूज में रहता था। एक छोटा सा चौक है और नीचे एक कहवाखाना...'

उसके साथी ने गाना आरम्भ किया, 'पेरिस प्यारा, नगर हमारा !'

२६

पेरिस में सदा की भाँति चहलपहल थी। वही सिनेमा, थेयटर, संसद की बैठकें, नये नये फैशन, बैङ्कों का दिवाला निकलना, किसी धनी अमेरिकन महिला का भगाया जाना, दो चार रोमांचकारी घटनाएँ, आत्महत्या के समाचार इत्यादि इत्यादि। तेरसा को अब भी आशा थी कि वह ब्लूम की सरकार को उलट देगा; किन्तु संसद के सदस्यों में चर्चा फैली थी कि सरकारी पक्ष और भी तगड़ा हो गया है। स्पेन के मामले में हस्तक्षेप न करने की नीति ने रोडिकलों को ठंडा कर दिया था। लाल और तिरंगे दोनों ही झंडे गायब हो चुके थे। देजेर खुशी के मारे फूला नहीं समाता था—उसने ठीक ही जनता की सद्भावना पर विश्वास किया था। अन्य देशों में लोग खून की नदियां बहा रहे थे, कमर कस कर लड़ाई की तैयारियों में लगे हुए थे, तोपें-बन्दूकें इकट्ठा की जा रही थीं, किले और जेलखाने तामीर हो रहे थे और लोग अपने नेताओं और सेनापतियों का अभिनन्दन करने में व्यस्त थे। किन्तु पेरिस-वासी मारिस शेवालिये की इस पंक्ति को दोहरा रहे थे, 'पेरिस फिर भी पेरिस है !'...

किन्तु ऊपरी तौर से स्थिर और शान्तिपूर्ण सार्वजनिक जीवन के तल के नीचे असंतोष का एक भीषण समुद्र लहरें मार रहा था। दबा हुआ जोश लोगों के सीने से फूट निकलने को बेचैन हो रहा था। कई घरानों में फूट पड़ चुकी थी। यह बात न थी कि उन दिनों केवल तेरसा को ही घरेलू जीवन में अशान्ति का सामना करना पड़ रहा था। कहवाखानों में बैठे लोग बहस करते-करते गोलियाँ चलाने लगते।

नवम्बर के मध्य तक यह दशा हो गई कि ब्रेतोल के समाचारपत्रों को भी स्वीकार करना पड़ा कि जेनरल फ्रैन्को की सेनाएँ खास मेड्रिड के फाटकों

पर रोक दी गई हैं। पेरिस के पास की मजदूर बस्तियों में यही आवाज गूंज रही थी, 'दुश्मन आगे नहीं बढ़ने पायेगा।'

मेड्रिड के मजदूरों की वीरता के बारे में तरह तरह के किस्से मशहूर हो रहे थे। लोग अन्तरराष्ट्रीय सैनिक टुकड़ियों के कारनामों का बखान इस प्रकार करते मानो वे रोलां के किस्से सुना रहे हों। अकसर धातु या सूती कपड़े के कारखानों में काम करनेवाले मजदूर बड़े गर्व के साथ कहते, 'हमारे भी आदमी वहाँ हैं! दुवाल···जाक···हेनरी···!'

सवेरे का अखबार पढ़कर विलार मुसकराया। मेड्रिड अभी डटा हुआ है। अंगूर खट्टे हैं! जिस दिन से उसने मंत्रीपद ग्रहण किया था, भूलकर भी कभी यह नहीं सोचा था कि आदर्शों की लड़ाई और वर्गसंघर्ष जैसी भी कोई चीज है। उसके लिए राजनीति का अर्थ केवल यह रह गया था कि कभी एक पक्ष को और कभी दूसरे पक्ष को खुश किया जाय, रोजाना और कभी-कभी तो घंटे-घंटे पर तोड़-जोड़ लगाया जाय और देखा जाय कि सरकारी पक्ष के साथ कितने आदमी हैं, किन्हें पद और इनाम देने हैं और किनका तबादला करना है।

थोड़ी देर बाद वह अपने दैनिक कामों में फंस गया। भेंट करनेवालों का तांता बंध गया। उसे कभी तो गोलमोल उत्तर देना पड़ता, कभी मुसकराकर 'नहीं' कर देना पड़ता और कभी केवल आगन्तुक को खुश करने के लिए ऐसे वादे करने पड़ते जिनको वह जानता था कि पूरा करना असंभव है। आनेवालों में संसद सदस्य पीरू भी था, जिसने जुलाई के प्रदर्शन के अवसर पर उसकी नाक में दम कर दिया था। उसे न जाने कितनी शिकायतें थीं। उसने कहना शुरू किया :

'रोजाना दर्जनों आदमी छिपे तौर से सरहद पार कर जाते हैं। हम फ्रैन्को को अपना विरोधी बनाते जा रहे हैं। कल ही वह सारे स्पेन का मालिक होने जा रहा है। मेरे निर्वाचक इस बात पर विशेष तौर से जोर दे रहे हैं कि स्पेन के साथ अच्छे सम्बन्ध रखे जायें, वहाँ चाहे जिसका राज हो।'

विलार ने हलकी मुसकराहट के साथ उत्तर दिया, 'मेरे प्यारे दोस्त, यह अब भी नहीं कहा जा सकता कि जीत किसकी होगी। तुमने शायद सब से

ताजा तार पढ़ा होगा ? फिर भी मुझे कोई आपत्ति नहीं।······हमने वादा किया है कि कोई भी स्वयंसेवक स्पेन नहीं जाने पायेगा, और हम अपना वादा पूरा करेंगे।'

जब पीरू चला गया तो बिलार ने अपने सेक्रेटरी से कहा, 'यह जरूरी है कि पेरानीज ओरिएंटेल के उच्च अधिकारी को हिदायत कर दी जाय कि सरहद पर पहरा बढ़ा दिया जाय।'

भाग्यवश उस रोज कोई सरकारी निमंत्रण नहीं था। रोजाना की दावतों में काफी खा-पी चुकने के बाद उसे एक हलका उबला अंडा और उबली तरकारी खाने में काफी आनन्द आया। दूसरे पहर का प्रोग्राम बहुत ही मनोरंजक था—संसद की बैठक नहीं थी। बहुत दिनों से उसकी इच्छा था कि आंद्रे कानू द्वारा बनाये गये चित्र देखे जो उसने पिछली नुमाइश में प्रदर्शित किये थे—विशेषकर वह चित्र जिसमें उसने एक आखरोट का पेड़ पेंट किया था, जिसकी बायीं ओर एक चरखी बनी और दीवार से लगी हुई एक आकृति खड़ी थी। उसके दूसरे चित्र भी निस्सन्देह बड़े सुन्दर थे। हर जगह आंद्रे की चर्चा थी।······बिलार ने सोचा कि उसे वह अखरोट के पेड़वाला चित्र खरीद लेना चाहिये। वह कंजूस नहीं था, किन्तु मुफ्त में पैसा भी खर्च करना नहीं चाहता था। उसने सोचा कि नुमाइश में उसकी कीमत तीन हजार मांगी जा रही थी। इस का मतलब यह है कि दो हजार तक सौदा पट जायगा।

आंद्रे ने जब यह सुना कि बिलार उसके यहाँ आनेवाला है, तो उसे पियेरे की कही हुई बात याद आई और उसके माथे पर क्रोध से सिकुड़नें पड़ गईं। उसने मन में कहा—भाड़ में जाय! इस कूड़े-कर्कट को कैसे ठीक करूँ? नहीं, इसे ऐसे ही रहने देना चाहिये।

बिलार धीरे धीरे हर चित्र को देखता और कहता, 'क्या सफाई का काम है! किस खूबी से रंग भरे गये हैं! पौधों का रंग जरा गहरा हो गया है। यह दृश्य तो उतरिलो के अच्छे से अच्छे चित्रों की याद दिलाता है।' आंद्रे उसकी कोई बात नहीं सुन रहा था। पहले तो उसने ध्यानपूर्वक बिलार की ओर देखकर सोचा था कि इसकी तसवीर पेंट करना अच्छा नहीं होगा। इसका चेहरा गोल और भरा हुआ है। चेहरे पर कुछ भी स्पष्ट भी नहीं। किन्तु

थोड़ी देर बाद ही उसने अपना पाइप सुलगाया और बड़े आदर के साथ एक के बाद दूसरी पेंटिंग विलार के हाथ में देने लगा, यहाँ तक कि उसके कपड़ों की गर्द भी झाड़ने लगा। निस्सन्देह वह खरीदने आया था। लेकिन आंद्रे को इस बात में दिलचस्पी नहीं थी, वह चाहे खरीदे या न खरीदे। धन की उसे कोई परवाह न थी। जब उसके हाथ पैसा लग जाता तो वह जी खोल कर खर्च करता। जब कमी होती तो वह अच्छा खाना न खाकर रोटी और चटनी ही से गुजर कर लेता। कोई समय था जबकि उसको अपने हर चित्र के भविष्य का बड़ा ख्याल रहता था। वह सोचा करता, 'न जाने किसके हाथ में यह जायेगी'। लेकिन लगभग हमेशा होता यह था कि कोई सौदागर उन्हें खरीद ले जाता और बाजार में जाकर बेच डालता। अब आंद्रे इस बात का इतना आदी हो गया था कि हर चित्र के बारे में यही समझता था कि ज्यों ही यह उसके स्टूडियो के बाहर पहुँचेगा वैसे ही गायब हो जायगा।

विलार अन्त में बोला, 'तुमने जो चित्र नुमाइश में दिखलाया था वह मुझे बहुत पसन्द है। याद है ? वही पेड़ वाला……।'

आंद्रे ने चुपचाप फ्रेम पर दूसरा चित्र चढ़ा दिया। यह उसे स्वयं बहुत प्रिय था। जिस रात वह जानेत से मिला था, उसी रात को प्लास-द-इतालिया जाकर उसने यह चित्र बनाया था। वह दिन बहुत उदासी से भरा था। कोने में खड़ी एक लड़की किसी की राह देख रही थी और चर्खी के घोड़े रुके हुए थे।

'मैं इस तसवीर को लेना चाहता हूँ,' विलार ने कहा

आंद्रे का चेहरा यह सुनते ही काला पड़ गया। उसने मेज के पाये पर ठोंक कर अपना पाइप साफ किया और तसवीर को लेकर उसका मुँह दीवार की ओर फेर दिया।

आंद्रे ने, उस बच्चे की तरह जिसे कोई परवाह नहीं कि वह क्या और किससे कह रहा है, रूखे स्वर में उत्तर दिया, 'मैं इसे आपके मकान में लटकते नहीं देखना चाहता। क्या आप मेरी बात नहीं समझ सके ? हर चीज की एक हद होती है। मैं नहीं चाहता कि आप आँखें फाड़ कर इसे देखते रहें!'

जब कभी विलार को कोई बात बुरी लगती तो उसका सारा चेहरा काँपने लगता—उसकी ऐनक, मूछों के सिरे, उसका निचला ओंठ और ठुड्डी, सभी

कुछ। उसने बड़े सभ्य ढंग से कहा, 'जैसी तुम्हारी मर्जी !' तसवीरें दिखलाने के लिए आंद्रे को धन्यवाद देते हुए वह स्टूडियो से बाहर निकल पड़ा। आंद्रे उसे जाते हुए देखता रहा और अन्त में जोर से चिल्ला उठा, 'मूर्ख कहीं का !' और पियेरे इस कठपुतले में विश्वास करता है ! लोग क्या कर सकते हैं इसकी भी कोई हद है ? और फिर पियेरे के ऐसे भले आदमी भी। आंद्रे हाथ झाड़ता हुआ आगे बढ़ा और फिर अपने उस काम में लग गया, जो विलार के आने से रुक गया था। किन्तु वह कुछ कर न पाया; फिर भी कैनवस छोड़कर हटा नहीं। उसे अपने ही क्रोध पर गुस्सा आ रहा था।

जब अँधेरा हो गया, तो वह जाकर सोफ़े पर बिना बत्ती जलाये, लेट गया और उस समय का इन्तजार करने लगा जब स्टूडियो के उस सन्नाटे में रेडियो पर जानेत की आवाज़ गूँजने लगती। उसकी हालत एक अफ़ीमची जैसी हो गई थी। उस समय रोज वह जहाँ भी होता अपने ही आप किसी रेडियो की खोज करने लगता। आखिर वह समय भी आ पहुँचा। उसने बटन दबाया और सेट की हरी बत्ती जल उठी। कोई गाना गा रहा था। बांसुरी की आवाज़ में कुछ खराबी जान पड़ती थी। इसके बाद ही जानेत की आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने पहले तो समुद्रतल, घोंघों आदि के बारे में छोटा सा भाषण दिया—यह केवल नकली मोतियों का विज्ञापन था। तब उसने एक गाना सुनाना शुरू किया—आंद्रे यह नहीं सुन पाया कि वह किसका बनाया हुआ था।

फिर बांसुरी की तान सुनाई पड़ी और कुछ लोगों ने गाना शुरू किया। आंद्रे ने यूं ही बिना सोचे रेडियो की सुई घुमा दी। किसी स्त्री की मधुर आवाज़ फ्रेंच में कहती हुई सुनाई पड़ी, 'हम मेड्रिड से बोल रहे हैं। आज हमारी टुकड़ियों ने जिनमें ला मांशा के बहादुर सैनिक तथा अन्तरराष्ट्रीय ब्रिगेड के लोग थे, विश्वविद्यालय क्षेत्र में दुश्मन को पीछे हटा दिया। आक्रमण का उत्तर देते हुए हमने फासिस्टों को मेडिकल स्कूल की इमारत से निकाल भगाया। नगर के उत्तरी भाग पर जर्मन वायुयानों ने दो बार हमले किये। कुछ लोग मरे और कुछ घायल हुए......'

आंद्रे ने खिड़की से सिर निकालकर बाहर झांका। सड़क में सन्नाटा छा चुका था। पुराना माल बेचनेवाले कबाड़ी, मोची और फूलोंवाली मालिन—

सभी अपनी-अपनी दूकान बढ़ा कर सो रहे थे। कभी कोई राहगीर उधर से गुजर जाता। एक लारी खड़खड़ाकर गुज़री और फिर सन्नाटा छा गया। पुराने भूरे मकानों में ऐसी चुप्पी छायी हुई थी जैसे उनमें रहने वाले मकान छोड़ कर कहीं चले गये हों। और आंद्रे का मन विषाद से भर उठा। उसे मेड्रिड का ख्याल आया। उसने कभी मेड्रिड नहीं देखा था, किन्तु सदा यह कल्पना करने की चेष्ठा करता कि वह न जाने किस प्रकार का होगा, सफ़ेद इमारतें होंगी, चहल-पहल होगी, या चारों ओर सन्नाटा और अँधेरा होगा। लेकिन अब तो रात को मेड्रिड के ऊपर सारा आकाश रोशनी से जग-मगाता था। नीचे एक स्त्री चीख रही थी। रोज रात को यही हाल रहता था। मौत से भी बदतर हालत में लोग थे। उनकी हालत देखकर ही मनुष्य पागल हो जा सकता था, बमों या घायलों की चीख-पुकार से नहीं। लेकिन कोई कर ही क्या सकता था?...और यहाँ पेरिस में यह हाल था कि लोग अपने अपने दरवाजे बन्द कर सुख की नींद सो रहे थे। मकानों के अन्दर गरमाहट थी जब कि बाहर रात ठंडी थी और हवा में नमी थी। उधर मेड्रिड के मकानों से आग की ज्वाला उठ रही थी। आज तो आराम से दिन कट रहे हैं। लेकिन कौन जाने कल पेरिस का वायुमंडल भी वायुयानों की भनभनाहट से गूँजने लगे। तब रातें अँधेरी और कष्टदायक बन जायेंगी। सर्चलाइट की रोशनी दुश्मन के वायुयानों की खोज में आकाश का चक्कर लगाती होगी और फिर भी उन्हें न पा सकेगी! तब क्या होगा—सर्वनाश! एक, दो, तीन...यहाँ से भी कोई रेडियो द्वारा खबरें सुनायेगा—'बहुत से लोग मारे गये और बहुत से घायल हुए।' रात को यहाँ भी स्त्रियों के चीखने की आवाज़ सुनाई पड़ेगी। हो सकता है, उनमें ज़ानेत भी हो। क्यों लोगों ने उसे इस शान्ति का भुलावा दिये रखा, क्यों नहीं उसे समय से पहले जगाकर कह दिया: 'भागो, जहाँ भाग सकती हो, खुले देहात में, समुद्र के किनारे—जहाँ भी हो!' सभी को धोखे में रखा जा रहा है—मोची से लेकर एक छोटी बिल्ली तक, सभी को। ज़ानेत ने ही तो गाया था 'धोखे की शिकार, मैं मृत्यु का सामना करने जा रही हूँ!' कैसी सीधी-सी बात है, लेकिन कितनी भयानक!

दूसरा भाग

१

मांतिनी घराने में प्रत्येक मंगलवार को इष्टमित्रों का जमवट लगा करता था। घर के बड़े पुस्तकालय में ब्रेतोल के मित्र काफ़ी और मार्तिनीक की शराब पीते, सिगारों से धुआँ उड़ाते और ताजे से ताज़े राजनीतिक समाचारों पर बहस करते। दूसरी ओर ड्राइंग रूम में महिलाएँ चाय पीतीं और गप्पें लड़ातीं। मांतिनी की पुत्री जोज़ेफीन बैठक में पुरुषों के आने का इन्तज़ार किया करती—ल्युसियां के प्रति, जो हर मंगलवार को वहाँ आता था, अब भी उसे बड़ा स्नेह था।

जनवादी मोर्चे को विजयी हुए दो वर्ष बीत चुके थे। जैसा कि देज़ेर ने अनुमान लगाया था, चारों ओर शान्ति स्थापित हो चुकी थी। विलार बड़े गर्व के साथ कहता था: 'मैं जान गया हूँ कि शासन कैसे किया जाता है—अब कोई मेरी ओर उँगली उठानेवाला भी नहीं।' व्यापार जोरों पर था। फैक्टरियों को आर्डर पर आर्डर मिल रहे थे चीज़ों की इतनी माँग थी कि उसे पूरा करना कठिन हो रहा था। 'मकान खाली है!' ऐसी नोटिसों का कहीं पता न था। खाली मकान देखने तक को नसीब न थे। अर्थशास्त्र के बड़े-बड़े पंडित कह रहे कि कि पूँजीवाद का संकटकाल समाप्त हो चुका, अब देश उत्तरोत्तर समृद्धि की ओर बढ़ता ही जायेगा।

फिर भी फ्रांको को खुश रखने की इस नीति के पीछे एक बेचैनी की भावना थी, जो बढ़ती ही जा रही थी। पूँजीपतियों ने अभी जुलाई की हड़तालों को भुलाया नहीं था। जनवादी मोर्चे ने उन्हें जिस प्रकार भयभीत कर दिया था उसके लिए वे उसे क्षमा करने को तैयार न थे। सप्ताह में चालीस घंटे काम और तनखाह सहित छुट्टियों की माँगें ही सारी बुराई की जड़ थीं। यह

विचार न केवल उन लोगों का ही था जो प्रत्येक मंगलवार को मांतिनी के यहाँ इकट्ठे होते थे बल्कि उन लोगों का भी था जो थोड़ी पूँजीवाले थे और जिनकी नज़रों से समाचारपत्रों के लेख गुजरा करते थे। दूकानदार, जिसे अपने गाहकों को बताना पड़ता कि साबुन का दाम चार 'सू' और बढ़ गया है, यह कहते समय कंधे हिलाता और बोलता, 'हो ही क्या सकता है ? देखते नहीं, अब तो मजदूर भी भद्रलोगों की तरह स्वास्थ्यवर्धक स्थानों की हवा खाने जाते हैं।' किसान अपना इन्कमटैक्स फ़ार्म भरते समय बड़-बड़ाता, 'सब निखट्टू, कामचोर हैं, दूसरों के पैसे पर जीना चाहते हैं !' उसका इशारा होता स्कूल के मास्टरों, डाकखाने के बाबुओं और पड़ोस के नगर में काम करनेवाले मज़दूरों की ओर। मज़दूर भी असन्तुष्ट थे। रहन-सहन के खर्च दिनोदिन बढ़ते जा रहे थे, और साल भर पहले उनकी तनखाहों में जो बढ़ती हुई थी उससे कोई लाभ नहीं हुआ। हड़तालें बराबर हो रही थीं। मिल मालिकों ने मज़दूरों की माँगें मानने से लगातार इनकार किया। विलार लोगों से अपील करता कि धैर्य से काम लें। फ़ासिस्ट खुल्लम-खुला फौजी टुकड़ियाँ तैयार कर रहे थे। मज़दूर पूछते थे : 'हमारी रक्षा कौन करेगा ? पुलिस तो करेगी नहीं। वह तो इसके इन्तज़ार में तैयार खड़ी है कि हमें ही कुचल दे।' स्पेन में लड़ाई जारी थी किन्तु फासिस्टों ने कैटालोनिया को मेड्रिड से काट दिया था और मज़दूर क्रोधित होकर बड़बड़ाते थे, 'उनके साथ गद्दारी की गई !' लोहे के जंग की तरह यह दगाबाजी लोगों को धीरे-धीरे खाये जा रही थी। समाचारपत्रों में रोज़ ही लड़ाई छिड़ने की खतरे की घन्टी बजाई जाती थी। जर्मन सेनाओं के वियना की सड़कों पर मार्च करने की खबर आ रही थी। हर एक यह अन्दाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था कि अब हिटलर का अगला क़दम क्या होगा। लोगों में सनसनी फैली हुई थी। क़हवाखानों में गई रात तक बहसें छिड़ी रहतीं। उस साल सन् १६३८ की बसन्त ऋतु में असाधारण रूप से ठंडक पड़ रही थी और इस भयंकर सर्दी में ऊपरी तौर से पेरिस में शान्ति तो थी किन्तु अन्दर-अन्दर सभी के दिमाग़ परेशान थे। ऊपरी तौर से लोग खूब खा-पी रहे थे और खुशियाँ मना रहे थे, किन्तु अन्दर ही अन्दर असन्तोष की आग भड़क रही थी।

इस बीच ब्रेतील चुपचाप नहीं बैठा था; वह अपना जाल फैलाने में लगा था। उसके मित्र जो मांतिनी के घर इकट्ठे हुआ करते थे, भली भाँति जानते थे कि वह बहुत ही व्यस्त आदमी है। इस बात में विश्वास रखने के कारण, कि मज़दूरों को 'खुश' रखने की कोशिश ही सब खराबियों की जड़ है, ब्रेतील ने पूरा साल आतन्कवादी संगठन बनाने में लगा दिया था। सबसे ज़िम्मेदार काम उसने ग्रिज़नेज़ को सौंप रखे थे। वह ग्रिज़नेज़ ही था जिसने छः सैनिक वायुयानों में आग लगायी थी और एक रेल सुरंग में समय पर छूटनेवाला बम रखा था। पूँजीपतियों को भयभीत करने के लिए ब्रेतील ने ग्रिज़नेज़ को यह काम सौंपा कि वह व्यापार संघ की इमारत को उड़ा दिया जाय। बम से मकान के सामने वाले भाग को क्षति पहुँची और फाटक पर खड़ा सन्तरी मर गया।

दक्षिणपक्षी समाचारपत्र इन विध्वंसकारी कार्यों के लिए कम्युनिस्टों को जिम्मेदार ठहरा रहे थे। विलार ने प्रेस को वक्तव्य देते हुए गोलमाल शब्दों में कहा था, 'अभी इस बात का पता नहीं चल सका कि इन कामों के पीछे किन लोगों का हाथ है!' जनवादी मोर्चे के समर्थकों की ओर से माँग की गई कि अपराधी को कड़ा दंड दिया जाय। उन्हें शान्त करने के लिए विलार ने एलान किया कि एक षड्यंत्र का पता चला है। किन्तु उसने न तो ब्रेतोल की ओर और न उसके साथियों द्वारा जमा किये गये गोलाबारूद की ओर संकेत किया। थोड़े दिनों बाद सरकार की ओर से एलान कर दिया गया कि षड्यंत्र कुछ मूर्खों का काम था। उसके इशारे पर समाचारपत्रों ने इन षड्यंत्रकारियों को 'कागुलार' कहकर पुकारना शुरू किया, क्योंकि कहा गया कि मध्यकालीन डाकुओं की तरह वे भी नकाब पहनते हैं। संसद में ब्रेतील ने जोरदार शब्दों में सरकारी पक्ष पर यह आरोप लगाया कि सरकार निरपराध और सच्चे देशभक्तों पर मुकदमा चला रही है। नतीजा यह हुआ कि जो लोग पकड़े गये थे वे भी छोड़ दिये गये।

ब्रेतील ने अब दूसरी चाल चली। बम फेंकवाने की जगह संसद के अन्दर षड्यंत्र करके उसने फ्रांस और अन्य देशों के बीच के सम्बन्धों में गुत्थियाँ पैदा करने की चेष्टा की ताकि उनके आधार पर सरकार का तख्ता उलटा जा सके। नगर की दीवारों पर हर जगह लिखवा दिया गया, 'जनवादी मोर्चा

फ्रांस को युद्ध की ओर धकेल रहा है !' ब्रेतील के साथियों ने देहातों में जाकर किसानों को भड़काना शुरू किया कि यदि वे अब भी नहीं उठे तो फ्रांस की शान्ति खतरे में पड़ जायगी। मंत्रिमंडल के अन्दर भी तनातनी पैदा हो रही थी। रेडिकल समाजवादियों से तङ्ग आ गये थे। पूँजी पर टैक्स लगाने का प्रश्न ऐसा था, जिसके कारण ब्लूम का भी, जो अत्यन्त सावधानी के साथ कोई कदम उठाता था, पतन निश्चित था ! ऐसी दशा में तेस्सा का बोलबाला होता। यह बात दिमाग में आते ही ब्रेतील ने उस बुड्ढे वकील के पास पहुँच कर उसकी प्रशंसा के पुल बाँधने शुरू कर दिये। उसकी अच्छी खासी दावत की। तेस्सा ने भोज को पसन्द किया, किन्तु सतर्क रहा। उसने यहाँ तक किया कि विलार के साथ अपने अच्छे सम्बन्धों पर बार-बार जोर दिया और राय जाहिर की कि समाजवादी फ्रांस के योग्य नागरिक सिद्ध हुए हैं। शायद वह सोचता था कि उसकी विजय होने ही वाली है। इसीलिए समाजवादियों के वोटों को निश्चित रूप से पाने के लिए वह यह सब जाल फैला रहा था। शायद वह वामपक्षीय रेडिकलों, विशेष कर फूजे, को, जो खुलेआम ब्रेतील को हिटलरवादी कहते थे, खुश करना चाहता था।

निस्सन्देह किसी मकान को बारूद से उड़ा देना जितना आसान था उतना मंत्रिमंडल को उलट देना नहीं था। ब्रेतील को नई शक्तियों की सहायता लेना आवश्यक हो गया। ग्रिज़नेज़ और उसके दूसरे 'अनुयायी' बैठे केवल हाथ-पैर मार रहे थे। अब ब्रेतील ने संसद के दो नये सदस्यों, दूकाने और ग्रांदेल को, जो मांतिनी घराने में अक्सर आया-जाया करते थे, अपने जाल में फाँसा।

लगभग तीन वर्ष पहले, ग्रांदेल ने वेस्ट इन्डीज की एक सुन्दर लड़की से विवाह किया था। उसका नाम मेरी था, किन्तु लोग उसे मूश के नाम से पुकारते थे। मूश उसके साथ मांतिनी घराने में आया-जाया करती थी। हर जगह दोनों साथ-साथ जाते थे। मांतिनी के यहाँ होनेवाली बहसों में वह भाग नहीं लेती थी, चुपचाप चित्रों की पुरानी किताबें देखा करती। जो जेफीन दिल ही दिल उसे अपनी प्रतिद्वन्द्वी मान बैठी थी। वह अक्सर लाइब्रेरी के दरवाजे की ओर नजर रखती और ल्युसियां को देखते ही उसके चेहरे का रंग बदलने लगता।

हो रहा था, लेकिन बहुत ही धीरे-धीरे, और समय थोड़ा था। एक महीने के अन्दर ही जर्मनी कोई न कोई कदम उठाने वाला था।

'सिनेट के सदस्य हमारा साथ देंगे। काइयों ने कसम खाई है कि ब्लूम की खाल जिन्दा न खिंचवाली तो उसका नाम नहीं!'

दूकाने बड़बड़ाते हुए बोला, 'अरे वह तो लोमड़ी की तरह दुम दबाकर भागनेवाला कायर है!'

अब यह बहस छिड़ गई कि नई सरकार का प्रोग्राम क्या होना चाहिये। पहली बात तो यह हो कि तेरसा कम्युनिस्टों का साथ छोड़े। दूसरे सूडेटनलैंड के प्रश्न पर कड़ा रुख अपनाया जाय, लेकिन वह भी एक हद तक ही; कोशिश इस बात की की जाय कि कोई ऐसा हल पेश किया जाय, जो दोनों पक्षों को स्वीकार हो। जनरल फ्रांको की सरकार को तुरन्त स्पेन की कानूनी सरकार मान लिया जाय। लवाल को रोम भेज दिया जाय; मुसोलिनी से तुरन्त समझौता किया जाय, इसमें देर करना ठीक न होगा। प्रेस पर कड़ा नियंत्रण रखा जाय। वायुयान सम्बन्धी व्यवसाय को सरकारी मदद दी जाय— दूकाने ने इस पर काफी जोर दिया। काम का सप्ताह सत्तर घण्टे का हो।

ब्रेतील ने इतना और जोड़ दिया, 'अगर फैक्टरियों पर कब्जा करने की कोशिश हो तो फौजी ताकत इस्तेमाल की जाय!'

यह सब कुछ सोचा जा रहा था मांतिनी के हितों की रक्षा के लिए। किन्तु इस प्रश्न पर उसने मतभेद प्रकट करते हुए कहा, 'नहीं, गैस का प्रयोग किया जाय! इसके अलावा और कुछ नहीं! उन्हें चूहों की मौत मारना अधिक ठीक होगा। इसके अतिरिक्त आपके कार्यक्रम में एक बात और होनी चाहिये—वह यह कि तेजी के साथ जहाज बनने शुरू हों, आतङ्कवादी कार्यों के लिए मृत्यु दंड दिया जाय। हम उस हरामजादे को ढूँढ़ निकालेंगे जिसने हमारे व्यापार भवन पर बम फेंका था। उसके लिए फांसी का तख्ता ही ज्यादा अच्छा होगा!'

ब्रेतील ने मांतिनी के भारी भरकम चेहरे की ओर देखते हुए सोचा, ऐसे मूर्ख से ऐसी ही बात की आशा की जा सकती है। एक आवश्यक कार्य का बहाना करते हुए वह उठा और चल दिया।

बाकी लोग उठकर बैठक में पहुँचे। जोजेफीन की निगाह ल्युसियां पर थी, पर वह था कि उसकी ओर आँख उठाने तक को तैयार न था। वह मूश के पास बैठकर गिरोदू के नये नाटक के बारे में बातचीत करने लगा, जिसका नाम था 'ट्राय का युद्ध नहीं छिड़ेगा!'

'खूब नाम रखा गया है,' उसने कहा, 'लोग वहाँ अपना भय दूर करने जाते हैं!'

मूश ने कान में कहा, 'गुरुवार को वह नहीं रहेगा। मैं स्वयं तुम्हें अन्दर बुला लूँगी!'

दूकाने बड़ा गरम होकर ग्रांदेल को यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि अब समय चुपचाप बैठने का नहीं है, 'इटली के साथ या उसके खिलाफ बात एक ही है। मुझे चिन्ता जिसके बारे में है वह सूडेटन-जर्मन नहीं बल्कि चेकोस्लोवाकिया की सरहद पर बनी मैजिनो लाइन है...।'

'इसमें क्या शक! लेकिन तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि सूडेटन—निवासी भी तो आखिर जर्मन ही हैं। और हिटलर ने घोषित कर दिया है कि उसके आगे पच्छिम बढ़ने का उसका कोई इरादा नहीं...'

दूकाने उत्तेजित होकर जोर से कुछ बोला, लेकिन किसी की समझ में बात न आई।

ग्रांदेल ने मुसकुराते हुए कहा, 'तुम बिल्कुल ठीक कहते हो।'

जोजेफीन ने हाल में ल्युसियां को जा पकड़ा। बिना उसकी ओर देखते हुए वह जल्दी-जल्दी बोली, 'ल्युसियां, अगर तुम्हें कुछ जरूरत हो तो भूलना नहीं। मैं हमेशा तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ।'

ल्युसियां इससे प्रभावित हुआ लेकिन अपने को रोकते हुए बोला, 'धन्यवाद। किन्तु यहाँ सर्दी है। कहीं तुम्हें जुकाम न हो जाय।'

जोजेफीन की आँखों में आँसू आ गये।

बाहर ठंडी हवा बह रही थी। ल्युसियां ने अपने कोट का कालर मोड़ लिया, उसे—ब्रेतील, जोजेफाइन की मूर्खतापूर्ण बातों और मूश—सभी से घृणा-सी मालूम पड़ने लगी।

मदाम ब्रेतील ने अपने कपड़ों में हाथ पोंछे और ब्रेतील की ओर देखते हुए, वह चीख पड़ी, 'क्या गजब करते हो !'

ब्रेतील चुप रहा।

२

ग्रिज़नेज बर्नुई स्टेशन से पुरानी शिकारगाह की ओर कीचड़ भरे रास्ते पर चल रहा था। कई दिनों के खराब मौसम के बाद आज आकाश साफ हुआ था और ग्रिजनेज अपने मन में सोचता जाता था—'अब तो ईस्टर का त्योहार आ गया। खुले हरे मैदान में निकलने पर उसे कुछ गर्मी अनुभव हुई और उसने अपने ओवरकोट के बटन खोल दिये। पेड़ों के नीचे लिली की नुकीली पत्तियाँ हरी-हरी चमकती थीं। एक महीने के अन्दर ही अन्दर पेरिस के बहुत से मनचले यहाँ 'पिकनिक' मनाने आने लगेंगे। रोजाना का शान्तिमय जीवन ग्रिजनेज को खलने लगता था। हालाँकि वह शायद इस चीज को महसूस नहीं करता था, फिर भी बात यह थी कि दूसरों को जिन्दगी के मजे लूटते देखकर उसे ईर्ष्या होती थी। इस समय जंगल की सुहावनी धूप और बहार ने उसके मन को विचलित कर दिया। वह सोचने लगा कि वे कौन से भाग्यशाली प्रेमी होंगे जो लिली के इन फूलों को तोड़ने यहाँ आयेंगे।

ब्रेतील न जाने अब उसे कहाँ भेजे—स्पेन की सरहद पर ? या फिर ब्रितानी ? जवानी के शुरू के दिनों से ही, ग्रिजनेज देशभ्रमण का शौकीन रहा था। खचाखच भरे रेल के डब्बों में चलने, रेलवे जंकशनों की ठंडक, उनके सन्नाटे, घटिया किस्म के होटलों में रहने, जहाँ दूर-दूर के व्यापारी न जाने कहाँ-कहाँ के किस्से सुनाया करते, साधारण टेबुल पर भोजन करने, मामूली कमरों में, जिन्हें गरम रखने का भी कोई साधन न होता, रातें बिताने आदि का आदी हो चुका था। वह इधर-उधर चलते-फिरते रहने को अधिक पसन्द नहीं करता था लेकिन शान्ति से बैठना भी उसके लिए संभव न था। पहले वह जो काम करता था, यह उसी का परिणाम था कि आज वह ब्रेतील द्वारा सौंपे गये इतने खतरनाक कामों को भी कर डालता था। जब कभी वह

अपने होटल के कमरे से सप्ताह भर के लिये गायब हो जाता तो उसकी माल-किन को कोई आश्चर्य न होता। ग्रिजनेज फ्रांस के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सभी स्थानों को जानता था। हर जगह उसके कुछ न कुछ मित्र मिल जाते। कहीं की पुलिस ऐसी न थी जिससे उसके संबन्ध न हों। पिछले चार महीनों से वह बेकार था। ओबरी के पत्र से उसे न सुख हुआ और न दुख। लापरवाही के साथ उसने दो चार चीजें एक सूट केस में रख लीं, साथ में ब्रांडी की एक बोतल ली और पैंट के जेब में रिवाल्वर लेकर चल खड़ा हुआ। उसने अपनी मालकिन से कह दिया, 'मैं औजार लेकर अनेसी जा रहा हूँ।' उसने मनमें सोचा—औजार या बम—कुछ भी हो इससे क्या होता है? दो साल पहले जो काम बड़ा रोमांचकारी मालूम पड़ता था, वही अब बिल्कुल साधारण रोजमर्रे का काम हो गया था उसे वह अत्यन्त कुशलता से पूरा करता था, हालाँकि बिना किसी उत्साह के।

ओबरी पहले से ही उसकी राह देख रहा था। शिकारगाह वर्च वृक्षों के बीच में एक इमारत थी, जिसकी हालत बड़ी खराब होती जा रही थी। अनेक प्रेमियों ने उसकी टूटी-फूटी दीवारों पर अपने नाम खोद रखे थे। ओबरी पत्थर की छोटी कुर्सी पर बैठा था।

दोनों ने हाथ मिलाये। 'बैठो', ओबरी ने कहा, 'देलमास भी आ रहा है उसके पास सारी हिदायतें हैं।'

ग्रिजनेज ने एक अखबार फैला दिया; वह अपनी नयी पतलून मैली नहीं करना चाहता था।

'गीला तो नहीं है, धूप निकली हुई है। फिर भी थोड़ी बहुत परवाह रखनी ठीक ही है। सर्दी खा जाना कोई अच्छी बात थोड़े ही होगी।'

दोनों झरने के निर्मल जल में नन्हीं-नन्हीं लहरों को उठते देखते रहे। धीरे-धीरे दोनों को नींद-सी लगने लगी।

'क्या नेता जी नहीं आ रहे हैं?' ग्रिजनेज ने पूछा।

'नहीं। उनकी तबीयत अच्छी नहीं। अब कुछ सँभल रहे हैं।'

'तुम्हारा क्या अनुमान है, उनकी क्या उम्र होगी?'

'साठ से ऊपर।'

'लड़के की मृत्यु के बाद उनका बुढ़ापा जल्दी आ गया। दो ही साल की तो बात है। मुझे अच्छी तरह याद है। हड़ताल हो रही थी। उनकी स्त्री रो रही थी और जब मैं पहुँचा तो वे ईश्वर से मना रहे थे कि······।'

'हां, यह कोई अच्छी बात तो नहीं थी······तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुम्हारी शादी हो चुकी?'

'नहीं, क्या तुम्हारी हो चुकी?

एक क्षण के लिए ओबरी का कुरूप चेहरा भी जगमगा उठा; उसने जरा शरमाते हुए कहा, 'नहीं, अभी नहीं।'

'तो क्या करने की सोच रहे हो? अच्छा हो, कर डालो। मेरी शादी भी जल्द ही होनेवाली है। मुझे अनेसी में एक सुन्दर लड़की मिल गई है। उसका पिता वकील है। उनकी बड़ी भारी जायदाद है। मैं स्वयं वहीं जाकर रहने की सोचता हूँ। मैं एक होटल खरीद लूँगा। अंग्रेज लोग वहाँ आकर ठहरा करेंगे; उनसे पैसा मिलेगा। मैंने पहले ही कुछ पैसा बचा रखा है। वह भी तो गजब की लड़की है, कितना सुन्दर गाती है······।'.

उसकी प्रेमिका लुलू ने अपने जीवन में शायद एक कड़ी भी नहीं गायी थी। लेकिन ग्रिजनेज ने जब झूठ बोलना ही शुरू किया तो फिर रुकने की क्या जरूरत थी। वह झूठ ही नहीं बोल रहा था बल्कि अपने दिल की बातें कह रहा था। चारों ओर जंगल में चिड़ियाँ खूब चहचहा रही थीं।

ओबरी ने अपने साथी के बढ़िया हलके भूरे रंग के जूतों पर नजर डाली और कुछ दुखित होकर सोचने लगा ऐसे आदमी के लिए शादी कर लेना आसान है। लेकिन मुझे? मुझे कौन पूछेगा? शायद कोई बुढ़िया चुड़ैल हो।'······

'हाँ', ग्रिजनेज बोला, 'कहाँ है वह तुम्हारा आदमी जिसका नाम तुमने अभी लिया था? अरे वही देलमास? कहीं रास्ता तो नहीं भूल गया!'

'नहीं, वह आयेगा अवश्य', ओबरी ने उत्तर दिया।

ओबरी किसी का इन्तजार नहीं कर रहा था। उसने पहले से ही सब कुछ सोच रखा था। किन्तु कुछ कारणों से देर करता जा रहा था। ग्रिजनेज

ने अपना पलास्क निकाला और ओबरी ने कुछ रोटियाँ और थोड़ा 'सामेंज'
भी, जो वह अपने साथ लाया था, सामने रख दीं।

ब्रांडी के प्रभाव में आकर ग्रिजनेज और भी हवा में उड़ने लगा। उसे जंमाई आने लगी और नींद मालूम हुई। पानी की ओर देखते हुए उसने जैसे स्वप्न में कहा, 'मुझे मछली का शिकार पसन्द है। अनेर्मी में मछलियाँ इतनी बड़ी होती हैं जितनी यह—देखो तो सही!'

यह कहते-कहते वह सो गया। उसकी हैट जा गिरी; मुँह आधा खुला और आधा बन्द रह गया। उसके पीले चेहरे से जिस पर प्रायः शिकन पड़ी रहती थीं लगता था, जैसे वह आराम कर रहा है। उसकी इस निद्रावस्था में एक प्रकार का लड़कपन झलकता था। ओबरी को अब भी हिम्मत नहीं हो रही थी। लेकिन् फिर उसके मन में घृणा की एक लहर दौड़ गई। उसने अपना छुरा निकाल ही लिया।

दो मिनट के बाद, जब ओबरी को विश्वास हो गया कि ग्रिजनेज ठंडा हो चुका है, उसने कुर्सी के नीचे वह कार्ड रख दिया जो ब्रेतील ने उसे दिया था। फिर अपने हाथों, ओवरकोट और पतलून को अच्छी तरह देखकर वह तेजी से उठकर चल दिया। वसन्त ऋतु ने जो भी उत्साह उसके मन में पैदा किया था वह सब जाता रहा था। केवल घृणा की भावना उसके मन में रह गई थी।

अँधेरा हो रहा था। लड़कियाँ बड़ी सड़क के किनारे बसों के रुकने की जगहों पर खड़ी थीं। उसी रोज शाम को उसने 'घायल सिपाहियों की यूनियन' में पहुँचकर ब्रेतील को सारी रिपोर्ट दी।

'काम हो गया,' उसने कहा।

ब्रेतील ने उसे धन्यवाद दिया और अपने पास सोफे पर बैठते हुए कहा, 'यह तुम्हारी बहादुरी की पहली परीक्षा थी।'

'क्या सचमुच वह गद्दार था?'

ब्रेतील उठकर खड़ा हो गया और बोला, 'हाँ, अब तुम जा सकते हो।'

ओबरी को बिदा करके उसने मन में सोचा, इसे भी रास्ते से हटाना पड़ेगा।

दूसरे रोज सबेरे सभी समाचारपत्रों में ग्रिजनेज की तस्वीर निकली और उनमें लिखा हुआ कि यह आदमी अपने कट्टर दक्षिणपन्थी विचारों के लिए प्रसिद्ध था और उसने ६ फरवरी के प्रदर्शन में भाग लिया था। उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। वह गरीब आदमी था। इसलिए स्पष्ट है कि धन के लालच से उसकी हत्या नहीं की गई। कम्युनिस्टों ने ऐलान जरूर किया था कि जाक देलमास नाम कोई भी व्यक्ति उनकी पार्टी में नहीं था; लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि यह काम उन्हीं का था ताकि एक राजनीतिक विरोधी से छुटकारा मिले, क्योंकि उसका कैथोलिक व्यापारियों के संघ पर बड़ा प्रभाव था।

ओबरी ने अखबार नहीं पढ़े और न उसने किसी को बतलाया कि जंगल में उस रोज क्या हुआ था। वह अपना रोज का काम करता रहा—टिकट चेक करना और रह-रहकर जँभाई लेना। काम खत्म करके, वह एक अनजान कहवाखाने में जा पहुँचा। उसने तेज शराब की एक बोतल मँगवायी। उसे पीकर उसे कुछ चक्कर-सा मालूम हुआ। उसने दूसरा गिलास भी खाली कर डाला और फिर तीसरा भी······

टोपियां पहने कुछ लोग अगली मेज पर बैठे थे। ओबरी नहीं चाहता था कि उनकी बातचीत सुने, किन्तु ग्रिजनेज का नाम बार-बार सुनकर उसके बदन में आग लग गई। ये मूर्ख सदा उसी की बातें करते हैं!

'चलो अच्छा हुआ, एक कुत्ता कम हुआ······'

'हाँ, लेकिन अगर उसके ऐसा आदमी फासिस्टों से जाकर मिल गया तो इसका साफ यह अर्थ है कि उन्होंने उसे खरीद लिया था······।'

ओबरी उठकर उनके पास पहुँचा और कड़े स्वर में बोला, 'तुम लोग सरासर झूठ बोल रहे हो! वह एक होटल खरीदना चाहता था। कम्युनिस्टों ने, तुम्हारे ऐसे प्रजातन्त्रवादियों ने उसकी हत्या की। समझ में आया तुम्हारे हरामी कहीं के!'

उनमें से एक ने उठकर ओबरी के मुँह पर एक घूँसा जमा दिया। फिर क्या था, गिलास फूटने लगे। ओबरी जमीन पर जा गिरा। कहवाखाना मिनटों में खाली हो गया। बहुत देर तक नौकर टूटी तश्तरियाँ, और चम्मच इत्यादि इकट्ठे करते रहे।

३

एक दिन पहले तेस्सा ने अपनी साठवीं वर्षगाँठ मनायी थी। बेशुमार तारों और पत्रों में साठ की संख्या को दोहराया गया था। छोटे वकीलों ने उसे एक बड़ी केक भेंट की जिस पर साठ मोमबत्तियाँ लगी थीं। शाम को बत्तियाँ जलायी गयीं और तेस्सा देर तक उनकी छोटी हिलती हुई लवों को देखता रहा। जब उसने यह सोचना शुरू किया कि जीवन का इतना बड़ा मार्ग वह तय कर चुका है और उसका अन्त अब अधिक दूर नहीं तो वह कुछ उदास हो गया। किन्तु यह विचार मात्र था वास्तव में आज वह अपने में जितनी स्फूर्ति पाता था उतनी उसने पहले कभी नहीं अनुभव की थी। उसकी असली जिन्दगी तो अब शुरू होने जा रही थी। निस्संदेह वह एक प्रसिद्ध वकील था, लेकिन कल वह देश के बड़े नेताओं में स्थान पाने वाला था। उसका नाम दैनिक 'ल तें' के पांचवें कालम के बजाय, जिसमें अदालती नोटिसें निकलती थीं, पहले कालम में दिखाई पड़ने लगेगा। हुल्लड़बाजी और शोरगुल के दिन बीत चुके देश को शान्ति की आवश्यकता है। जनवादी मोर्चावालों के तने घूंसों और ब्रेतील के रोमन सलामों से देश तङ्ग आ चुका था। आज राष्ट्र को एक मैत्रीपूर्ण वातावरण, चहल-पहल, दावतों और अच्छे घरेलू सम्बन्धों की और सब से अधिक तो अति सावधान तेस्सा की आवश्यकता थी!

आज का दिन बड़ा ही सुहावना था, यद्यपि घरेलू झंझट रोज से ज्यादा था। बड़े-बड़े डाक्टरों की राय ली गई थी और मदाम तेस्सा को वितेल के चश्मे का पानी पिलाया गया था। लेकिन सब व्यर्थ। उसकी बीमारी बढ़ती ही गई और दौरे ज्यादा जल्दी-जल्दी होने लगे। कल अमेली बड़ी उत्तेजित हो उठी थी, जिसका परिणाम यह हुआ था कि थोड़ी देर में वह थककर ढीली पड़ गई। और उधर जब तेस्सा साठ बत्तियों को जलते हुए देख रहा था और

दूसरे रोज सबेरे सभी समाचारपत्रों में ग्रिजनेज की तस्वीर निकली और उनमें लिखा हुआ कि यह आदमी अपने कट्टर दक्षिणपन्थी विचारों के लिए प्रसिद्ध था और उसने ६ फरवरी के प्रदर्शन में भाग लिया था। उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं बची थी। वह गरीब आदमी था। इसलिए स्पष्ट है कि धन के लालच से उसकी हत्या नहीं की गई। कम्युनिस्टों ने ऐलान जरूर किया था कि जाक देलमास नाम कोई भी व्यक्ति उनकी पार्टी में नहीं था; लेकिन इसमें सन्देह नहीं कि यह काम उन्हीं का था ताकि एक राजनीतिक विरोधी से छुटकारा मिले, क्योंकि उसका कैथोलिक व्यापारियों के संघ पर बड़ा प्रभाव था।

ओबरी ने अखबार नहीं पढ़े और न उसने किसी को बतलाया कि जंगल में उस रोज क्या हुआ था। वह अपना रोज का काम करता रहा—टिकट चेक करना और रह-रहकर जँभाई लेना। काम खत्म करके, वह एक अनजान कहवाखाने में जा पहुँचा। उसने तेज शराब की एक बोतल मँगवायी। उसे पीकर उसे कुछ चक्कर-सा मालूम हुआ। उसने दूसरा गिलास भी खाली कर डाला और फिर तीसरा भी······

टोपियां पहने कुछ लोग अगली मेज पर बैठे थे। ओबरी नहीं चाहता था कि उनकी बातचीत सुने, किन्तु ग्रिजनेज का नाम बार-बार सुनकर उसके बदन में आग लग गई। ये मूर्ख सदा उसी की बातें करते हैं!

'चलो अच्छा हुआ, एक कुत्ता कम हुआ······'

'हाँ, लेकिन अगर उसके ऐसा आदमी फासिस्टों से जाकर मिल गया तो इसका साफ यह अर्थ है कि उन्होंने उसे खरीद लिया था······।'

ओबरी उठकर उनके पास पहुँचा और कड़े स्वर में बोला, 'तुम लोग सरासर झूठ बोल रहे हो! वह एक होटल खरीदना चाहता था। कम्युनिस्टों ने, तुम्हारे ऐसे प्रजातन्त्रवादियों ने उसकी हत्या की। समझ में आया तुम्हारे हरामी कहीं के!'

उनमें से एक ने उठकर ओबरी के मुँह पर एक घूँसा जमा दिया। फिर क्या था, गिलास फूटने लगे। ओबरी जमीन पर जा गिरा। कहवाखाना मिनटों में खाली हो गया। बहुत देर तक नौकर टूटी तश्तरियाँ, और चम्मच इत्यादि इकट्ठे करते रहे।

सोच रहा था कि उसके देशवासी उसकी वर्षगाँठ पर कितनी खुशियाँ मना रहे हैं, तब मदाम तेस्सा अपने अँधेरे कमरे में, जहाँ दवाइयों की ही गंध आती थी, पड़ी कराह रही थीं।

लेकिन पत्नी की बीमारी के अतिरिक्त भी तो कई चीजें थीं, जिन्हें तेस्सा को सँभालना पड़ता था। ल्युसियां तो ऐसा बिगड़ चुका था कि उससे कोई आशा न रह गई थी। अमेली अब भी उसे बच्चा कहा करती थी हालाँकि यह 'बच्चा' अब चौंतीस साल का हो चुका था। कोई राजनैतिक पद पाने की सम्भावना कभी की खत्म हो चुकी थी। उसने रुपया कमाने का एक निराला ढङ्ग निकाला था। वह जोलियो के समाचार पत्र में घुड़दौड़ के घोड़ों के बारे में गुप्त सूचनाएँ निकाला करता था। अफवाह यह थी कि घोड़ों के 'जाकी' को वह मिला लेता और ऐसी खबरें छापता जिससे लोग बहक जायें। जीत से जो भी आमदनी होती थी वह जोलियों के साथ बाँट लेता था। किसी राज्य मन्त्री के लड़के के लिए यह काम किसी प्रकार शोभा नहीं देता था। अपने स्वास्थ्य पर खराब असर न पड़े, इसीलिये तेस्सा लड़के से बोलता भी नहीं था। खाने के समय, दोनों टेबुल के इधर उधर बैठे चुपचाप खाते और उठकर चल देते। ज्योंही ल्युसियां बोलने को अपना मुँह खोलने को होता, तेस्सा बड़ी फिक्र के साथ उसकी ओर देखने लगता क्योंकि वह जानता था कि अब वह कोई न कोई बेहूदगी करने वाला है।

देनीजे और भी बड़े दुख का कारण बन रही थी। तेस्सा अब समझ रहा था कि प्रेम के क्षेत्र में न्याय जैसी कोई चीज नहीं। जब ल्युसियां का ख्याल आता तो उसे अपने लिये ही डर लगता कि कहीं वह उसकी बेइज्जती न कर बैठे। अगर ल्युसियां मर जाता तो वह आँसू बहाकर दिल ठंडा कर लेता। देनीजे की बात कुछ और थी। यह बात, कि उसने अपने पिता का घर छोड़ कर फैक्टरी में बंडल बाँधने का काम कर लिया था और, गुप्त विभाग के सब से बड़े अफसर के अनुसार, किसी कम्युनिस्ट कमेटी की सदस्या भी बन गई थी, उसे इतनी नहीं परेशान कर रही थी जितनी उसके स्वास्थ्य की चिन्ता। निस्संदेह उसके दिन बड़ी कठिनाई से बीत रहे थे। कड़े परिश्रम के लिए वह बनी ही नहीं थी। हो सकता है किसी रोज उन मूर्खतापूर्ण प्रदर्शनों में वह भी भाग ले और पुलिस की गोली का शिकार हो जाय। देनीजे की खबरें

तेस्सा को केवल पुलिस या एक अपने गुप्तचर विभाग के द्वारा मिला करती थीं। उसने देनीजे को पत्र भी लिखे किन्तु उसने जवाब तक न दिया; वह उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहती थी। यह सोचकर तेस्सा की आँखों में आँसू आ जाते।

दूसरे रोज सवेरे एक दुर्घटना हो गई। जब वह प्रागस्थित फ्रांसीसी राजदूत की रिपोर्ट पढ़ने बैठा तो उसे पता चला कि फूजे के दिये हुए सारे कागजात गायब हो गये हैं। ग्रांदेलवाले सारे मामले को सोचकर तेस्सा को बड़ा क्रोध आया। वह यह नहीं पसन्द करता था कि किसी का भंडाफोड़ हो। राजनीति बहुत नाजुक और टेढ़ी चीज है। धुआँधार भाषण ही सब कुछ नहीं उनके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है, जैसे संसद भवन के बाहर सदस्यों में कानो-कान खबरें फैलना, खाने की टेबुल पर चुपके-चुपके घुलमिलकर बातें करना, शब्दों के तरह-तरह के अर्थ निकालना, इशारों में बातें समझाना इत्यादि। दूसरों के भंडाफोड़ से कोई लाभ नहीं होगा।

तीन ही दिन पहले फूजे ने वे कागजात उसे दिये थे। तेस्सा ने पत्र को पढ़कर उसे उस फाइल में रख दिया था, जिसमें वैदेशिक मामलों से संबंधित कागजात रखे थे। नोट में बीस लाख फ्रांक का जिक्र था, जो किसिन्जेन और वेदेन-वेदेन के झरनों से बिजली पैदा करने के लिए इस्तेमाल किये जाने वाले थे। तेस्सा को पढ़कर बड़ा क्रोध आया। उसने सोचा, अच्छा तो ग्रांदेल जर्मन झरनों से रुपया कमा रहा है; किन्तु यह राजद्रोह तो नहीं कहा जा सकता। यह ठीक है कि फूजे ने कहा था कि ग्रांदेल अपने पक्ष में कोई सुबूत नहीं पेश कर सकता, किन्तु तेस्सा संसद के सदस्यों के व्यक्तिगत जीवन में दखल देने के खिलाफ था और उसने यह बात फूजे से भी कह दी थी।

लेकिन आखिर उस कागज को चुराया किसने? इसके पहले उसके साथ ऐसा कभी नहीं हुआ था। फाइल उसकी लिखने वाली मेज पर रखी हुई थी। उसे अच्छी तरह याद था कि कल बाहर जाने के पहले उसने मेज की दराज में चाभी लगा दी थी। सभी कागज अपनी अपनी जगह पर उसी प्रकार रखे थे। अगर वह अमेली से यह बात बतलाता है तो वह कहेगी कि शैतान चुरा ले गया होगा।

संसद भवन में पहुँच कर तेस्सा अपना नुकसान भूल गया। जिस बिल पर बहस हो रही थी, उसमें जानवरों के दो अस्पताल खोलने की बात थी। जिन इलाकों से बिल का संबन्ध था केवल वहाँ के सदस्य उपस्थित थे। बाकी सदस्य बाहर के बरामदे में आराम कर रहे थे या सिगरेट पी रहे थे।

बिलार ने तेस्सा के पास जाकर उसे उसकी साठवीं वर्षगाँठ पर बधाई दी और बड़ी उदासी से आह भरकर बोला, 'जब मैं साठ वर्ष का था तो मुझे स्वप्न में भी कभी इसका ख्याल नहीं आया कि एक रोज मैं भी मंत्री हो जाऊँगा। तुम्हें तो जल्दी ही यह पद मिल गया!'

तेस्सा ने फूजे की थका डालने वाली बातों से तो पिंड छुड़ा लिया था किन्तु खोये हुए कागज का ख्याल रह रहकर उसे बेचैन कर डालता था। यह बात ठीक थी कि यदि वह चाहता तो सारे मामले को दबा दे सकता था। फूजे से कह देता कि उस कागज को निरीक्षण के लिए विशेषज्ञों के पास भेजा गया है और तब खोने की सारी जिम्मेदारी विशेषज्ञों या 'बारहवें विभाग' के सर थोप देता। उस विभाग में उसके काफी दोस्त थे जो उसके ऊपर कोई आँच न आने देते। यह भी हो सकता था कि वह फूजे की पूछताछ कर कोई उत्तर देने से इनकार कर देता या मशहूर कर देता कि पूरा कागज जाली है और पार्टी मीटिंग में अपने प्रति विश्वास था प्रस्ताव पेश कर देता। लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अचानक वह गायब कैसे हो गया। क्या बिलार के आदमी उसके पीछे लगे हुए हैं, या, इससे भी कमीनी हरकत जो हो सकती है, वह की गई है और वह भी देनीजे के मित्रों द्वारा? वह यह सोचकर एक बार काँप उठा। वह कम्युनिस्टों को निर्लज्ज अपराधी समझता था जो किसी भी चीज से बाज नहीं आ सकते। हो सकता है कि वे स्वयं उसे ही उठा ले जायँ और मास्को पहुँचा दें......क्या सचमुच यह काम कम्युनिस्टों का ही है?

घर पहुँचकर उसने अपने मन को शान्त करने और रोजमर्रा के काम में लग जाने की कोशिश की। एक बार उसने बड़ी सावधानी से सारी फाइल को उलटा-पुलटा, थोड़ी बहुत आशा अभी बाकी थी कि शायद कोई चमत्कार हो जाय और खोया हुआ कागज मिल जाय। किन्तु उसे निराश होना पड़ा। उसने प्रागस्थित फ्रांसीसी राजदूत की रिपोर्ट पढ़नी शुरू की। उसने बहुत

पहले ही निश्चय कर रखा था कि सूडेटन के जर्मनों के विषय में हिटलर से समझौता कर सकना संभव है। अपने मित्रों से वह कहा करता था, 'यह ठीक है कि कार्ल्सबाद बड़ा ही मनोरम स्थान है, वहाँ के गंधक के चश्मों का पानी स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है, किन्तु मुझे जिस चीज में अधिक दिलचस्पी है वह है विशी का भाग्य !'

कमरे से कराहने की आवाज आई। वह झट काम छोड़ कर उठा और अन्दर पत्नी को देखने पहुँचा।

जब वह वापस अपने कमरे के पास पहुँचा तो ठीक उसी समय ल्युसियां कमरे से बाहर निकल रहा था। दरवाजे में ही दोनों टकरा गये और तुरन्त ही तेस्सा के दिमाग में बात आई, जरूर ल्युसियां ने वह कागज चुराया है! आज पहली बार ही उसने अपने लड़के को अपने कमरे में जाते नहीं देखा था, जब कभी इस प्रकार का मौका आता था तब ल्युसियाँ घबराहट में कह बैठता कि दियासलाई की डिब्बी या शाम का अखबार खोजने आया था। अब तो सारी बात स्पष्ट हो चुकी थी। उसने सोचा, इस प्रकार का आदमी कुछ भी कर सकता है।

तेस्सा दालान से होता हुआ तेजी के साथ आगे बढ़ा। ल्युसियाँ के कमरे में उसकी मेज पर घोड़ों के कुछ फोटो, एक स्त्री के लम्बे दस्ताने और एक रिवाल्वर पड़ा था। तेस्सा सोफे पर बैठ कर अपने हाथ से चेहरे का पसीना पोंछते हुए बोला, 'ल्युसियां, तुम्हीं ने मांदेलवाला पत्र लिया है न ?'

ल्युसियां निगाह नीची किये देखता रहा; उसके मुंह से एक शब्द भी न निकल सका।

बस फिर क्या था तेस्सा लाल-पीली आखें करके चिल्लाया :

'क्या तुम जर्मनों का काम कर रहे हो ?'

ल्युसियाँ उसकी ओर हाथ ऊँचा उठाये हुए लपका। किन्तु फिर अचानक रुक गया और बड़बड़ाया, 'तुम खुद दुराचारी हो !'

'निकल जाओ यहाँ से !' तेस्सा ने तड़प कर कहा और यह कहते हुए वह अपने कमरे में वापस आ गया।

उसने ल्युसियाँ को अपनी माता से विदा लेते हुए सुना। अमेली हिचकियाँ ले रही थी। अब सब कुछ खत्म हो चुका था। अब मंत्री के पद रहने

से ही क्या लाभ था ? उसकी पुत्री उसको छोड़ कर चली गई थी। उसने लड़के को भी घर से निकल जाने का हुक्म दे दिया था। उसका लड़का और भेदिया ! तेस्सा को अपनी ही दशा पर दया आने लगी। काफी देर तक वह भरे हुए दिल के साथ अपनी नाक साफ करता रहा। सोनेवाले कमरे से अमेली के रोने की आवाज आ रही थी। वह फिर से उसके कमरे में गया और उसके बिस्तर पर बैठ गया।

'ममी'—जब कभी वह विशेष रूप से विचलित होता तो अपनी स्त्री को ममी कह कर पुकारता था—'अब हम दोनों अकेले रह गये !'

'तुमने उसे घर से निकल जाने को क्यों कहा ? जानते हो वह कितना स्वाभिमानी है ! अब वह किसी तरह वापस आने को तैयार नहीं !'

'मैं भी उसे नहीं आने दूँगा। जानती हो, वह आजकल क्या कर रहा है ? वह गुप्तचर का काम कर रहा है ! अब वह जर्मनों का एजेन्ट बन गया है !'

तेस्सा, जो सदा अपनी स्त्री को मूर्ख तथा अज्ञानी समझता था, उसकी बातें सुनकर चकित रह गया। अमेली कह रही थी :

'मैं तुमसे सदा कहती रही हूँ कि राजनीति बड़ी गंदी चीज है। ल्युसियां ने भी तुम्हारी देखादेखी की। क्या तुम्हीं ने चीख-चीखकर नहीं कहा था कि जर्मनों के साथ समझौता कर लेना संभव है और कम्युनिस्ट थोरे से फासिस्ट हिटलर कहीं बेहतर है ?

'अच्छा, चुप रहो,' उसने कहा, 'मैं यह सब नहीं सुनना चाहता। ल्युसियां राजनीतिज्ञ नहीं, गुप्तचर है। तुम्हें अन्तर नहीं दिखाई देता ?' और वह अपने कमरे में लौट आया।

उसने सारे मामले पर फिर नये सिरे से विचार करना आरम्भ किया। यदि ल्युसियां की मदद से कागजात गायब कराये जा रहे हैं तो इसका अर्थ है कि मामला बहुत संगीन है और सचमुच ग्रांदेल अपराधी है। किन्तु अब तो कागज गायब हो चुके हैं। कोई गवाही-शहादत मिल नहीं सकती। क्या इस चोरी की पुलिस को सूचना देना ठीक होगा ? लेकिन इसका मतलब तो यह होगा कि ल्युसियां को जेल भिजवाया जाय। अमेली इस खबर को सुनकर मारे दुख के मर जायेगी। और उसे स्वयं इससे लाभ क्या होगा ? लोग कहेंगे, 'वाह,

फ्रांस का यह कैसा रक्षक है, जिसका बेटा खुद दुश्मनों का भेदिया है ? नहीं, चोरी के बारे में एक शब्द भी कहना उचित न होगा। फूजे से कहना पड़ेगा कि सारा कागज जाली है। लेकिन ग्रांदेल के साथ क्या किया जायेगा ? संसद के अन्दर स्वयं दुश्मन का एजेन्ट ! किसी ने आज तक ऐसी बात भी सुनी है ? किन्तु कोई सुबूत तो है नहीं। अगर वह फूजे की कही हुई बात दोहरायेगा तो दक्षिणपक्षियों में बीसों दुश्मन पैदा हो जायेंगे। इसके अतिरिक्त, यदि ठंडे दिल से सोचने के बाद, मान भी लिया जाये कि ग्रांदेल जर्मन भेदिया है तो भी वह फ्रांस को हानि ही क्या पहुँचा सकता है ? वह युद्ध कमेटी का सदस्य भी तो नहीं। हो सकता है जर्मनों के हजारों एजेन्ट हों। तब यदि एक और हो गया तो अन्तर ही क्या पड़ा ?......खैर, इस मामले का संबन्ध उससे नहीं बल्कि खुफिया विभाग से है। मामले के सभी पहलुओं पर काफी गौर कर लेने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचा कि सारे मामले को दबा देना ही अच्छा होगा। अच्छा हुआ ल्युसियां ऐसे बेकार लड़के से, जो कभी ठीक ही नहीं हो सकता, छुटकारा मिला।

वह फिर से अमेली के कमरे में गया और उससे बोला, 'ल्युसियां के भेदिया होने के बारे में किसी से कोई बात न कहना। सब बेकार-सी चीज है। मैं उस समय क्रोध में था। मेरे सामने फिर एक बिल लाकर उसने रख दिया था ! इसके अतिरिक्त उसने मेरा बड़ा निरादर किया था। तुम उसको रुपये भेज दो, लेकिन उसके यहाँ आने की जरूरत नहीं ! अच्छा, तो अब मैं जा रहा हूँ।'

अपने कमरे में पहुँचकर वह सोफे पर लेट गया। बत्ती बुझाकर आंखें खोले, वह अपने असफल जीवन पर गौर करता रहा। सदा की भाँति उसे देनीजे की याद आ रही थी। आज पहली बार उसे ख्याल आया, 'शायद वह ठीक रास्ते पर है।' एक झगड़ों से भरे नरक जैसे घर से उसने किसी प्रकार अपना पीछा छुड़ाया था। बाप से उसे मतलब ही क्या था ? वह बच्चों जैसी बात करती है। उसे मालूम नहीं कि कानून क्या कहता है। वह हत्यारों की रक्षा करता है, झूठे मुकदमें लड़ता है और बदनाम गुंडे बदमाशों से मिला रहता है। यह तो उसका पेशा ही है ! लेकिन देनीजे उसे झूठा और मक्कार समझती थी। उसे भी तो राजनीति का कोई ज्ञान नहीं। वह

नहीं जानती कि उसका पिता कितनी जबरदस्त चाल चल रहा है, ब्रेतील से भी दोस्ती रखता है और विलार से भी हंसकर बातें करता है। फ्रांस की रक्षा के लिए यह बहुत जरूरी है। लेकिन इसमें संदेह नहीं कि काम बहुत गन्दा है। इसीलिए देनीजे इतनी नाराज है। उसने अपने पिता का साथ इसीलिए छोड़ दिया कि उसका जीवन गन्दे और संदिग्ध कामों से भरा है। माँ पुरानी रूढ़ियों को मानने वाली है और भाई भेदिया बन चुका है। देनीजे स्वयं बड़ी ईमानदार है, अपने सिद्धान्तों को चन्द रुपयों के लिए बेचने को तैयार नहीं है।

तेस्सा को अपनी पुत्री का गम्भीर चेहरा याद आ रहा था। उसे नींद मालूम होने लगी और देनीजे की सूरत कमरे की तसवीरों और पत्थर की मूर्त्तियों में बदलती हुई जान पड़ी। नींद में उसने देखा कि देनीजे कभी तो जोन आफ आर्क की तरह हाथ में तलवार लिये खड़ी है, कभी उसके हाथ में खंजर है जिससे लहू की बूँदें टपक रही हैं।

तेस्सा ने नींद में चिल्लाना शुरू किया। इतने में अमेली ने आकर उसे जगाया। उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर उसने उठने की कोशिश की, किन्तु संभल न पाई और फर्श पर धम से गिर पड़ी। फिर वह रेंगती हुई अपने कमरे से तेस्सा के कमरे तक पहुंची और उसका हाथ जोर से पकड़ कर पुकारने लगी, 'पाल, पाल! क्या हो गया है?'

तेस्सा को संभलते संभलते थोड़ी देर लगी।

'मैं देनीजे को स्वप्न में देख रहा था······ममी, अब हम दोनों अकेले रह गये!'

टेलीफोन की घंटी बजी। तेस्सा कांप उठा। इतनी रात गये किसे जरूरत पड़ गई? क्या ल्युसियां के साथ कोई घटना हो गई?

उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया। मार्शन्दो बोल रहा था। वह बतलाना चाहता था कि अभी दस मिनट हुए सिनेट में वोटिंग खत्म हुई थी। ब्लूम विशेषधिकार की मांग कर रहा था; वोटिंग में सैंतालिस वोट पक्ष में और दो सौ से अधिक विपक्ष में पड़े थे।

लड़खड़ाती हुई आवाज़ में तेस्सा अपनी स्त्री से बोला, 'कल मैं मंत्री हो जाऊँगा। आज मेरी जीत हुई!'

वह अमेली की तसल्ली देने के लिए कुछ कहना चाहता था। लेकिन वह इतना विचलित हो उठा था कि कुछ न कर सका। अपनी मेज के पास नीली पतलून पहने बैठा वह रो रहा था और बाहों से आंसू पोंछता जाता था।

४

जहाँ एक ओर सिनेट के सदस्य गुस्से से भरे बैठे खाँस रहे थे, और ब्लूम का भाषण सुन रहे थे, वहाँ नगर के दूसरे सिरे पर 'सीन' फैक्ट्री के मजदूर, जो दो सप्ताह से हड़ताल किये हुए थे, एक मीटिंग में यह तय कर रहे थे कि मिल मालिक के जवाब पर क्या कदम उठाया जाय। इस बार देजेर ने साफ कह दिया था कि जब तक मजदूर फैक्टरी की इमारत खाली करके हट नहीं जायेंगे तब तक वह कोई बात नहीं करेगा। इस बार उसने मसले को एक दार्शनिक पहलू से देखने या हंसी में उड़ा देने से इनकार कर दिया। समय बदल चुका था। इसके अतिरिक्त मजदूरों में आज वह जोश न था, जिसकी बदौलत दो वर्ष पहले उन्होंने विजय प्राप्त की थी।

मिशो जा चुका था। वह अब स्पेन के युद्ध में भाग ले रहा था। उसके साथियों को कोई सूचना न थी कि वह जीवित है या मर गया। समाचार था कि फरवरी की लड़ाई में 'पेरिस कम्यून' ब्रिगेड को काफी क्षति उठानी पड़ी थी। पियेरे ने हड़तालियों का साथ अवश्य दिया था, किन्तु पिछले दो साल में उसमें भी बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका था। उसके बाल कुछ पकने लगे थे और स्वभाव में भी गंभीरता आ गई थी। अब वह पहले जैसे पियेरे नहीं रह गया था। विलार की धोखेबाजी ने उसकी आत्मा को कुचल दिया था। लड़ता वह बराबर रहा और स्वयं अपने हितों के विचार से। न एग्नेस की आँसू भरी आँखें और न अपने एक वर्षीय बच्चे दूदू का ख्याल ही उसे रोक पाता था। इस लड़ाई में लड़ तो वह रहा था, किन्तु किसी आशा के साथ नहीं बल्कि एक निराशापूर्ण निष्ठुरता के साथ।

- -

हड़तालियों का नेतृत्व लेग्रे कर रहा था। यदि मिशो का उत्साह जून-वाला हड़ताल के जोश का सूचक था तो आज लेग्रे की शान्तिपूर्ण दृढ़ता इस जाड़े में होनेवाले संघर्ष के लिए हर प्रकार से उपयुक्त थी।

जब लेग्रे ने मालिकों के सूखे जवाब का एलान किया तो चारों ओर सन्नाटा छा गया। जब उसने राय पेश की कि मजदूर हड़ताल पर डटे रहें तो न तो किसी ओर से तालियाँ बजीं और न किसी ने विरोध ही किया। सभी के दिल बैठ रहे थे।

'कोई बोलना चाहता है ?'

इस भीषण सन्नाटे को देखकर हिम्मत टूटी जा रही थी; मालूम पड़ता था जैसे मजदूरों की हार निश्चित है। अचानक बहुत पीछे से किसी ने धीमी आवाज में कहा, 'मैं कुछ बोलना चाहता हूँ।'

दुशेन नाम का एक बूढ़ा बोलने के लिए मंच पर पहुँचा। किसी समय वह ढलाई वाले कारखाने में काम करता था, किन्तु अब बहुत दिनों से रात को चोकीदारी का काम कर रहा था। वह मुश्किल से अपनी कमर टेढ़ी कर पाता था और अपने घर के आंगन में भी आसानी से चल नहीं पाता था, लेकिन नौकरी छोड़ने के लिए तैयार न था। वह कहा करता, 'घर पर बैठे-बैठे क्या करूँगा, मक्खी ही तो मारूँगा।'

वह मंच पर खड़ा हुआ और काफी देर तक कुछ नहीं बोला। आखिर में उसका मुँह खुला और उसने अपनी कमजोर आवाज में क्रांतिकारी 'अन्तर्राष्ट्रीय' गीत की पहली कड़ी दोहराना शुरू किया—'उठ जाग, भूखे बन्दी !'

फिर क्या था, सारी भीड़ घूंसे तान कर खड़ी हो गई।

यह निश्चय किया गया कि हड़ताल जारी रखी जाय। यह बहस हो रही थी कि दूसरी फैक्टरियों के मजदूरों से अपील की जाय या नहीं कि इसी बीच लेग्रे की बुलाहट हुई। कमेटी के पास से सूचना आई थी कि सरकार में उलट-फेर होने जा रहा है।

देनीजे ने उस चेहरे पर घाव के निशानवाले मजदूर को तुरन्त पहचान लिया, जिसने उस शाम को, जब कि वह मिशो से मिली थी, बातचीत की थी। शायद लेग्रे ने कुछ सुना हो। अकसर देनीजे के पास मिशो के पत्र आया करते

थे, जिनमें वह लड़ाई के हाल, स्पेनी भाषा न जानने की कठिनाइयां, ब्रिगेड के अपने साथियों, अरागन की गर्मी और सर्दी, किसानों की बहादुरी आदि के बारे में लिखा करता था।

वैसे देखने में उसका जीवन अत्यन्त नीरस था : काम पर जाना, फिर किसी मीटिंग में शरीक होना या कोई लेक्चर सुनना, जिसमें सिवा नामों और गिनतियों के और कुछ न होता था। किन्तु वह जानती थी कि यह युद्ध है और इसमें वह मिशा के साथ है। मिशा के पत्र, जो सैनिक संवादपत्रों की तरह होते थे और उनमें बचपन से भरे प्रेम के शब्द, उसे निराशा और दुख की घड़ियों में कितना धीरज देते थे! किन्तु फरवरी के बाद से कोई पत्र नहीं आया था। देनीजे अपनी चिन्ता को दबाने की भरसक चेष्टा करती थी किन्तु वह बढ़ती ही जाती थी। वह बराबर अपने मन में कहती रहती, 'वह अवश्य ही जीवित है।' दिन ज्यों-ज्यों बीतते जाते थे उसकी चिन्ता भी बढ़ती जाती थी। जब उसकी निगाह लेग्रे पर पड़ी, तो वह एकाएक उत्तेजित हो उठी; शायद उसी को कोई सूचना हो...।

कमेटी की बैठक में मंत्रिमंडल में रद्दोबदल होने की खबर पर बात छिड़ी थी। सिनेट की इच्छा थी कि ब्लूम त्यागपत्र दे दे। लोग कह रहे थे कि हो सकता है जनवादी मोर्चा टूट जाय। रेडिकलों में फूट पड़ ही चुकी है उनमें दो गुट हो गये हैं। समाजवादी तेरसा को प्रसन्न रखना चाहते हैं, ताकि कहीं उसे भी खोकर कम्युनिस्टों के ऊपर ही निर्भर न करना पड़े। पेरिस में हड़तालों की संख्या बढ़ती जा रही है। लेकिन कोई विशेष उत्साह नहीं दिखाई पड़ रहा है। फिर किसानों को मजदूरों के विरुद्ध सफलतापूर्वक भड़काया जा चुका है। गत वर्ष के मुकाबले में इस वर्ष परिस्थिति कहीं अधिक खराब है।

मीटिंग ने एक लम्बा-चौड़ा घोषणापत्र तैयार किया, जिसमें कहा गया था कि ब्लूम की सरकार कायम रहे और विलार जनरल पिकार और उसके अनुयायियों को बन्द करा दे स्पेन को सहायता पहुँचाई जाय। समय आ गया गया है जब कि सीमा को आने-जाने के लिए खोल दिया जाय।

इन बातों को लिखने की कोई आवश्यकता न थी। उन्हें प्रत्येक शब्द ज़बानी याद हो गया था। उसमें कोई विशेष चीज नहीं मालूम पड़ती थी। यह तय हुआ कि ब्लूम से बातचीत करने के लिए दूक्लू को भेजा जाय और

लेग्रे विलार से मिले, क्योंकि पिछले चुनाव में उसने विलार का साथ दिया था। और फिर, किसी मजदूर को भेजना अधिक उचित होगा बजाय संसद के किसी सदस्य के। इससे विलार को कम से कम यह तो मालूम हो जायगा कि जन-साधारण के मन में क्या है।

इसके बाद हड़ताल के विषय में बहस शुरू हुई। बराबर डटे रहा जाय! बहुत कुछ इस बात पर निर्भर था कि देश के सामने उपस्थित राजनीतिक संकट क्या रूप धारण करता है। देनीजे से पूछा गया कि 'नोम' फैक्टरी में क्या परिस्थिति है।

'वहाँ सभी कहते हैं कि हड़ताल समाप्त कर दी जाय, किन्तु यह भी सभी लोग महसूस करते हैं कि हड़ताल करने की आवश्यकता है,' देनीजे ने उत्तर दिया। 'जबकि दूसरे लोग डटे हुए हैं, हमारे कम्युनिस्ट साथी हिम्मत करके आगे नहीं आ रहे हैं?'

लेग्रे ने मुस्कराकर कहा, 'ठीक यही दशा हमारी फैक्टरी में है।'

बाहर निकलते ही देनीजे ने उसे जा पकड़ा और पूछने लगी, 'स्पेन से कोई खबर आई?...मिशो का क्या हाल है?'

देनीजे की आवाज से साफ-साफ मालूम पड़ता था कि वह विचलित हो उठी है। लेग्रे ने भौंहें सिकोड़ीं। तीन महीने से उसे कोई खबर नहीं मिली थी: किन्तु बड़ी शान्ति से उसने कहा, 'सब ठीक है...एक साथी अभी आया है। उसने थोड़े ही दिन पहले मिशो से भेंट की थी...।'

देनीजे यह सुनकर अपनी खुशी को छिपा न सकी। और एक हलकी सी मुसकराहट ने लेग्रे के उदासीन चेहरे को भी खिला दिया।

'कल मैं तुम्हारी फैक्टरी में आऊँगा और तुमसे भेंट करूँगा,' 'उसने कहा। हमें हड़तालियों की हिम्मत बढ़ानी है। हमारी फैक्टरी में भी हालत खराब है। आज अगर वह बूढ़ा हमारी मदद को न आ पहुँचता तो क्या हालत होती। उसने कैसे 'अन्तरार्ष्ट्रीय' आना आरम्भ कर दिया था। लोग डरते हैं कि कहीं दूसरे लोग उन्हें कायर न कह दें, बस, इसी भय से डटे हुए हैं।'

लेग्रे सीधे उस कमरे में पहुँचा जहाँ हड़ताल कमेटी की बैठक हो रही थी। सभी उसके चारों ओर इकट्ठे होकर पूछने लगे, 'क्या खबर है?'

'तीन बातें हैं। पहली तो है हड़ताल के सिलसिले में। बस, डटे रहना है। दूसरे कारखानेवाले भी लड़ते रहने के पक्ष में हैं। डेलीगेट आये थे। 'नोम' फैक्टरी में मजदूर एक कदम भी पीछे हटने को तैयार नहीं थे और देजेर की हालत खराब है। आजकल दूसरी चीजों के मुकाबले में हवाई जहाजों की कहीं अधिक जरूरत है। हिटलर फिर कोई कदम उठाने वाला है। इसका अर्थ यह है कि देजेर पर दबाव डाला जायगा—उसे आर्डर पूरे करके देने ही पड़ेंगे। दूसरी बात है, मन्त्रिमण्डल के बारे में। हमारे आदमियों ने तय किया है कि सरकार से अपील की जाय कि वह इस्तीफा न दे। संसद ने अपना विश्वास प्रकट किया है। जहाँ तक सिनेट का सम्बन्ध है, वह तो केवल एक अनाथालय है! उन पुराने खूसटों को तो अब तक निकाल बाहर करना चाहिये था। मैं विल्लार के पास जा रहा हूँ। हमारी मदद उसके साथ है। यदि आवश्यकता पड़ी तो हम उसके लिए सड़कों पर अपना खून भी बहाने को तैयार रहेंगे।'

'ठीक है। लेकिन तीसरी बात क्या है?'

'तीसरी क्या?'

'तुम्हीं ने तो अभी कहा था कि तीन बातें हैं!'

लेग्रे ने मुसकरा कर कहा, 'हाँ मैं भूल गया था......तीसरी बात थी मौसम के बारे में। यह मौसम बसन्त का है न, दोस्तो? यह बसन्त नहीं हमारे लिए अपमान है!'

५

बिलकुल तड़के उठकर जंभाई लेते हुए हजारों लोग फ्रांसीसी प्रजातन्त्र के राष्ट्रपति के महल के सामने 'सेन्ट आन्तेरे' में जमा होने लगे। प्रेस प्रतिनिधि अपनी नोटबुकें लिये और कैमरे, सँभाले तैयार खड़े थे। इस बात पर बाजियाँ लग रही थीं कि राष्ट्रपति राज्य भार सँभालने के लिए किसे बुलायेंगे। पड़ोस के शराबखानों में बहुत से उत्सुक लोग बैठे अपने को काफी या शराब से गरमा रहे थे। नौ बजे एक बड़ी-सी कार फाटक के सामने आकर रुकी। तत्सा

साफ सुथरे कपड़े पहने तेजी से अन्दर की ओर चला। केमरावालों ने झट-पट उसके फ़ोटो लेने शुरू किये। उसने मजाक में पत्र-प्रतिनिधियों की ओर उँगली उठा कर कहा :

'मुझे तो राष्ट्रपति ने परामर्श के लिए बुलाया है। मैं बस इतना ही आप लोगों को बता सकता हूँ। अभी रहस्य खुल जायगा, जल्दी करने को क्या जरूरत है? आप लोग धैर्य से काम लीजिये, धैर्य से!'

उस जरूरी कागज का गुम हो जाना, देनांजे की चिन्ता, पत्नी की बीमारी सभी कुछ तेस्सा इस समय भूल गया था। एक पत्रप्रतिनिधि ने ईर्ष्या से बड़-बडाते हुए कहा, 'तमाशा तो यह है कि यह सत्तर वर्ष का बूढ़ा होने जा रहा है और फिर भी!'

फ़ोटोग्राफरों ने हेरियो, दलादिये और बोने के फोटो लिये।

सिनेट तथा चेम्बर के सदस्यों का सबेरे का सारा कार्यक्रम गडबडा गया था। किसी को समय पर नाश्ता नहीं मिल सका था। संसद भवन के दालान में उनकी भीड लगी थी। गपे लड रही था कि कैसे राष्ट्रपति सिनेट के अध्यक्ष को धन्यवाद देते समय मारे उत्तेजना के रो पडा था। दलादिये अपनी दवा पीना भी भूल गया था। तेस्सा ने सबके सामने ब्रेतील को गले से लगाया था। 'कामेडी फ्रामेज' की अभिनेत्रियाँ, नाचने गानेवाली लडकियाँ और अन्य अनेक सुन्दरियाँ व्यर्थ ही अपने-अपने प्रभावशाली प्रेमियों से निश्चित समय पर मिलने की प्रतीक्षा कर रही थीं। उधर राष्ट्र के नेताओं को आज प्रेम करने की फ़ुरसत कहाँ थी!

विलार ही एक ऐसा आदमी था जिसने रोज से भी अधिक निश्चिन्तता से अपना कार्य आरम्भ किया। वह संसद भवन नहीं गया। इस खेल में उसके लिए कोई जगह न थी। जाड़े में ही उसने अच्छी तरह समझ लिया था कि रेडिकल लोग अपनी आदत के अनुसार फिर गद्दारी करने वाले है। इसीलिए इस समय उसे कोई क्रोध न था। उसने अपना सारा ध्यान घरबार के कामों में देना आरम्भ किया था। वह बैठा मजदूरों की तसवीरों के बंडल बाँधते देखा करता—वह अपने निजी मकान में वापस जा रहा था। अपने मकान मालिक को उसने लिखा दिया कि जुलाई तक मकान की मरम्मत हो जाये। उसने सोचा, चलो इस साल तो छुट्टी आराम से कटेगी।

साफ सुथरे कपड़े पहने तेजी से अन्दर की ओर चला। केमरावालों ने झट-पट उसके फोटो लेने शुरू किये। उसने मजाक में पत्र-प्रतिनिधियों की ओर उँगली उठा कर कहा :

'मुझे तो राष्ट्रपति ने परामर्श के लिए बुलाया है। मैं बस इतना ही आप लोगों को बता सकता हूँ। अभी रहस्य खुल जायगा, जल्दी करने को क्या जरूरत है? आप लोग धैर्य से काम लीजिये, धैर्य से!'

उस जरूरी कागज का गुम हो जाना, देनाजे की चिन्ता, पत्नी की बीमारी सभी कुछ तेरसा इस समय भूल गया था। एक पत्रप्रतिनिधि ने ईर्ष्या से बड़-बड़ाते हुए कहा, 'तमाशा तो यह है कि यह सत्तर वर्ष का बूढ़ा होने जा रहा है और फिर भी!'

फोटोग्राफरों ने हेरियो, दलादिये और बोने के फोटो लिये।

सिनेट तथा चेम्बर के सदस्यों का सबेरे का सारा कार्यक्रम गड़बड़ा गया था। किसी को समय पर नाश्ता नहीं मिल सका था। संसद भवन के दालान में उनकी भीड़ लगी थी। गप्पें लड़ रही थी कि कैसे राष्ट्रपति सिनेट के अध्यक्ष को धन्यवाद देते समय मारे उत्तेजना के रो पड़ा था। दलादिये अपनी दवा पीना भी भूल गया था। तेरसा ने सबके सामने ब्रेतोल को गले से लगाया था। 'कामेदो फ्रांसेज' की अभिनेत्रियाँ, नाचने गानेवाली लड़कियाँ और अन्य अनेक सुन्दरियाँ व्यर्थ ही अपने-अपने प्रभावशाली प्रेमियों से निश्चित समय पर मिलने की प्रतीक्षा कर रही थी। उधर राष्ट्र के नेताओं को आज प्रेम करने की फुरसत कहाँ थी!

विलार ही एक ऐसा आदमी था जिसने रोज से भी अधिक निश्चिन्तता से अपना कार्य आरम्भ किया। वह संसद भवन नहीं गया। इस खेल में उसके लिए कोई जगह न थी। जाड़े में ही उसने अच्छी तरह समझ लिया था कि रेडिकल लोग अपनी आदत के अनुसार फिर गद्दारी करने वाले है। इसीलिए इस समय उसे कोई क्रोध न था। उसने अपना सारा ध्यान घर-बार के कामों में देना आरम्भ किया था। वह बैठा मजदूरों को तसवीरों के बंडल बाँधते देखा करता—वह अपने निजी मकान में वापस जा रहा था। अपने मकान मालिक को उसने लिखा दिया कि जुलाई तक मकान की मरम्मत हो जाये। उसने सोचा, चलो इस साल तो छुट्टी आराम से कटेगी।

मन्त्रिमण्डल मे संकट उपस्थित होने के कुछ दिन पहले उसकी लड़की वायलेत उससे मिलने आई। वह नान्सी मे रहती थी, जहाँ उसके पति की एक फर्म थी। वायलेत ने अपने पिता को बहुत चिन्तित पाया वह रह-रह कर वोटो का अन्दाज लगाता था, सिनेट के सदस्यों को गालियाँ देता सुनाता और कहा करता कि लोगो ने उसकी कीमत नहीं पहचानी। किन्तु आज वायलेत की खुशी की कोई सीमा न थी; उसके पिता का चेहरा खिला हुआ था। वह एक बड़े प्याले में काफी पर से जमी हुई परत को हटाकर काफी पी रहा था और मुसकराता जाता था। कोई भी जिसे सबमे ताजी खबरों का पता न होता, यह समझता कि उसे विजय प्राप्त हुई है।

'आज से मै बिल्कुल स्वतन्त्र हूँ,' वह बोला, 'मै तुम्हे 'रू द ला बोयर्ती 'मे तसवीरे दिखाने ले चलूँगा। वहाँ बड़ी अच्छी तसवीरें देखने को मिलेगी।'

इतने मे किसी ने, जिसके आने की कोई उम्मीद न थी, जैसे उसे जगा दिया। आगन्तुक लेग्रे था।

'कम्युनिस्ट चाहते है कि तुम हथियार न डालो,' लेग्रे ने कहा। 'चुनाव मे जीत जनवादी मोर्चे की हुई थी और देश की इच्छा केवल चेम्बर के सदस्यों द्वारा ही प्रकट की जा सकती है।'

'किन्तु विधान में तो . ।'

'विधान में यह कही नहीं लिखा है कि तुम सिनेट के निर्णय के सामने सर झुकाओ। तुम चाहते हो कि इस मासले मे कानून तुम्हारा पक्ष ले? अच्छी बात है, जब सिनेट ने रेडिकल मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध निर्णय किया था तब लियो ब्लूम ने तो इस्तीफा नही दिया था। यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। तुमने इस्तीफा दिया नहीं कि फासिस्टो के लिए रास्ता साफ हो जायगा। पहले दलादिये, बोने, तेस्सा। और फिर, ब्रेतील!'

'मित्र, खतरे को इतना बढा-चढाकर दिखाने की क्या आवश्यकता? दलादिये जनवादी मोर्चे का सगठन करता है, कम्युनिस्टो ने भी उसे वोट दिया था। वह एक आदर्श रेडिकल है। थोडा बहुत डवाँडोल अवश्य रहता है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि ईमानदार है. .।'

लेग्रे पाखंड से बहुत दूर था। उसने खड़े होकर जोर से कहना शुरू किया:

'तुम्हीं ने एक बार मेरे सामने कहा था कि तुमने मजदूर वर्ग का साथ देने का निश्चय किया है। मजदूरों की इच्छा है कि तुम अपने पद से अलग मत होओ। मैं तुम्हे धोखा नहीं दे रहा हूँ। तुम जानते ही हो कि अक्सर तुम्हारी नीति की निन्दा करने से भी हम बाज नहीं आये, लेकिन आज वह समय नहीं जब कि आपस में झगडा किया जाय। फासिस्ट उस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब वे सारे मजदूर संगठन को तोड-फोडकर चकनाचूर कर डालेंगे। और फिर, हम मजदूर पूरी तरह से तुम्हारा साथ देने को तैयार हैं। तुम्हे अपने पद पर डटे रहना पड़ेगा। कल सिनेट हाउस के सामने एक भारी प्रदर्शन होने जा रहा है। हम उन पुराने गधों को दिखला देना चाहते हैं कि ताकत किन लोगों की है!'

विलार धीरे से मुसकराया और बोला, 'मैं तुम्हारा और तुम्हारी पार्टी का अत्यन्त अनुगृहीत हूँ। लेकिन अब तो यह सब पुरानी चीजें हो गईं। आज सबेरे ब्लूम ने सारे मन्त्रिमण्डल की ओर से इस्तीफा दाखिल कर दिया।'

लेग्रे यह सुनकर बैठ गया और हाथों से अपना चेहरा ढँकते हुए बोला, 'इसका नतीजा खराब होने वाला है! सब से पहले वे मजदूर संगठन को तोडने की कोशिश करेंगे। अब तब? तब वही होगा जो आस्ट्रिया में हो चुका है—जर्मन आ धमकेंगे। स्पेन भी आखिरी साँस ले रहा है। चेको के साथ भी गद्दारी होगी। शान्ति स्थापित करने के नाम पर ब्रेतील किसी की भी सहायता लेने के लिए तैयार हो जायगा, हिटलर की, मुसोलिनी की या और किसी की!'

जब वह चला गया तो विलार ने अपने मन में सोचा; वह फौरन बात समझ गया। उसे पता चल गया कि मैं थककर चूर हूँ। किन्तु दूसरे लोग नहीं समझते। वे मुझे परेशान करते ही रहते है।...ओह हाँ, सेक्रेटरी से मुझे कुछ कहना था...।

सेक्रेटरी पहले ही अपनी नोटबुक खोले खडा था।

विलार बोला, 'कल सिनेट भवन के सामने एक भारी प्रदर्शन होने जा रहा है। पुलिस के प्रधान अधिकारी को सूचित करो कि प्रदर्शक की मनाही

कर दी जाय। मैं नहीं चाहता कि लोगों को कहने का मौका मिले कि मैंने किसी प्रकार के दबाव से काम लिया। हमारी हार हुई और हम अपना पद त्याग रहे हैं। साधारण पार्लेमेंटरी तरीका और ईमानदारी का रास्ता यही है।'

उसने अपने नौकर के लिए घंटी बजा दी। नौकर के आते ही उसे हुक्म दिया, 'यहाँ बड़ी सर्दी है। आग जला दो और मेरी गरम स्लीपर लाओ।'

इतने में वायलेत आ पहुँची और विलार का चेहरा खुशी से खिल उठा। अब वह उससे दिल खोलकर बात कर सकता था। उसने उससे उसके पति का, कारबार और घर का हाल पूछना शुरू किया।

वायलेत अपने पिता से राजनीति पर बातचीत करना चाहती थी। मारिस, घर जाने पर, उससे बार बार यह प्रश्न करता था: 'तो फिर उन्होंने क्या कहा?'

'पिता जी, आपको मालूम है, पिछले दो वर्ष मेरे लिए कितनी कठिनाई के रहे हैं! हमारी तरफ के लोग आपको समझ ही नहीं पाते। मेरे सामने तो वह कुछ नहीं बोलते, लेकिन मारिस और जोन से मुझे सारी बातों का पता चल जाता है। न जाने क्यों लोग आपके खिलाफ हरदम हाथ धोकर पड़े रहते हैं। कुछ का तो कहना है कि आपने मजदूरों की आदतें बिगाड़ दीं। मैंने स्वयं लोगों को कहते सुना है। यहाँ तक कि इस पर गाने भी बनाये गये हैं! दूसरे आप से इस लिए नाराज हैं कि आपने फासिस्ट कागूलारों को जेल से छोड़ दिया। खैर, अब इस बात को छोड़ें यहीं...लेकिन मैं क्या करूँ? हर जगह मुझे यही सुनाई पड़ता है। कभी-कभी तो मुझे सुन-सुनकर रोना आ जाता है!'

नाराजगी में विलार की ठुड्डी काँपने लगी। अपनी पुत्री से वह कह ही क्या सकता है? बड़े आदमी, जब तक वे जीवित रहते हैं, इस प्रकार निन्दित होते ही रहते हैं! कौन कह सकता था कि इन दो वर्षों में उसने फ्रांस को खूनखराबी से नहीं बचाया? किन्तु उसने स्वयं महसूस किया कि इन शब्दों का कोई महत्व नहीं रह गया। वह अँगीठी के पास जा बैठा।

'मैं जानता हूँ, लोग मुझसे घृणा करते हैं,' वह बोला। 'माँ के मरने के बाद मेरा कोई नहीं रहा।' यह कहकर वह उठा और बड़ी सावधनी के साथ

गिलास में बीस बूँद दवाई छोड़ते हुए बोला, 'अरे, इसे तो मैं भूल ही गया था। पाचनशक्ति ठीक रखने के लिए भोजन से एक घन्टा पहले ही मुझे इसे लेना चाहिये था।'

६

मूश ल्यूसियां की ओर इतनी अधिक क्यों आकर्षित हुई थी? वह तो उससे प्रेम नहीं करता था और न उसने कभी अपनी ज़बान से ऐसा कहा ही। जहाँ इतनी स्त्रियाँ उसके जाल में फँसी थीं वहाँ यह भी एक थी: एक सुन्दर लड़की, जिसके बारे में मशहूर था कि उस तक पहुँचना कठिन है। अब उसे अनुभव हो रहा था कि जानेत के लिए उसके मन में कितनी जगह थी। वह ईर्ष्या की आग में जला करता, कहीं न कहीं उससे भेंट करने की राह देखा करता, कभी-कभी उसे भय होता कि कहीं जानेत उसको छोड़ न दे या उसकी ओर से विरक्त न हो जाय। मूश के साथ तो वह जरा मजाक कर रहा था। उसकी प्रेमाग्नि को और तेज करने के लिए उसने मूश को, अपने पति के साथ रहने पर धिक्कारना आरम्भ किया। आँखों में आँसू भर कर मूश बोली, 'क्या तुम चाहते हो कि मैं उसे छोड़ दूँ?' वह सोचती थी कि बड़ा अच्छा हो अगर उसे भी ल्युसियां के साथ उसके गन्दे कमरे में, जहाँ वह बाप से लड़ाई करने के बाद रहने लगा था, रहने, उसके साथ भूखों मरने, उसके फटे मोजे सिलने और उसके लेख अखबार के दफ्तरों में पहुँचाने का मौका मिले। ल्युसियां ने कहा: 'नहीं, मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं, किन्तु वह तो तुमसे प्रेम करता है!' मूश और जोर-जोर से रोने लगी।

ग्रांदेल से मूश की भेंट तीन वर्ष पहले ब्रितानी तट के किसी स्थान में हुई थी। उसका दिल तुरन्त मूश पर आ गया था। उसे साथ लेकर न जाने किन किन पहाड़ियों की सैर उसने की थी और तरह-तरह के किस्से सुनाये थे। उस समय वह एक अच्छा लेखक बन रहा था। जाड़ा आने पर उनका विवाह हो गया। दोनों सुन्दर, जवान और बड़े ही हँसमुख थे। ग्रांदेल का सितारा भी उन दिनों खूब चमक रहा था। वह संसद का सदस्य चुना जा चुका

था और काफी धन कमा रहा था। ओतुई में उन्होंने एक बड़ा ठाटदार मकान लिया, जहाँ मित्रों और अन्य परिचित लोगों की दावतों पर दावतें हुआ करतीं। मूश सबसे महँगी दूकानों पर अपने कपड़े खरीदती, बड़ी कैडिलैक गाड़ी में जिसे उसका 'शोफर' बराबर बैंगनी रँग के फूलों से सुसज्जित रखा करता था, इधर-उधर घूमा करती थी। मूश ने ग्राँदेल को इसलिए चुना था कि वह उसे किसी उपन्यास का हीरो जान पड़ता था। किन्तु तीन वर्ष उसके साथ रहकर उसे पता चला कि वह जबरदस्त अवसरवादी था जो अपने को आगे बढ़ाने के लिए किसी भी हथियार का इस्तेमाल कर सकता था। उसने स्वयं एक बार मूश को बतलाया था कि केवल एक प्रभावशाली आदमी तक पहुँचने के लिए उसने मूश के रहते हुए भी, एक एक्ट्रेस से सम्बन्ध स्थापित किया था। उसे जुआ खेलने का बड़ा शौक था। पहले तो मान्तकार्लो और बिचारिज के अड्डों में जाया करता था, किन्तु जब से वह संसद का सदस्य हो गया था तब से कुछ ठीक रास्ते पर आ गया था। वह मूश से कहा करता, 'राजनीति मेरे लिए एक प्रकार का जुआ है।' मूश को अब उसकी बातों पर विश्वास नहीं रह गया था। वह उससे घृणा करने लगी थी। उसने ल्युसियां के सामने कहा भी था, 'कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे उसने मुझे खरीद रखा हो।' ल्युसियां कभी-कभी उस पर बिगड़ उठता। एक बार तो उसने मूश को मार भी दिया; किन्तु अधिकतर वह हँस कर कह देता, 'मुझे वेश्याएँ पसन्द हैं। वे कितनी भली औरतें होती हैं!'

ल्युसियाँ ने कभी किसी से नहीं बतलाया था कि घरवालों से उसके कैसे सम्बन्ध है, क्योंकि उसे डर था कि कहीं इसकी खबर जोलियो के कानों तक न पहुँच जाय और उसकी रही सही आमदनी का सहारा भी जाता रहे। इसी प्रकार तेस्सा भी कभी किसी से नहीं बतलाता कि बेटे को उसने घर से निकाल दिया है। केवल मूश को सब बातों का पता था। ग्राँदेल अब रोज उससे ल्युसियाँ की बातें किया करता। अन्त में उसने कह ही डाला, 'मैं जानता हूँ कि तुम्हारी उसके साथ दोस्ती है। किन्तु उसे छोड़ने की आवश्यकता नहीं। मुझे कोई ईर्ष्या नहीं। मैं केवल यह चाहता हूँ कि वह यहाँ आये। मुझे उससे अकेले में कुछ बातें करनी हैं।'

मूश बड़ी चिन्तित होकर ल्युसियां के पास पहुँची, लेकिन उसकी समझ

में नहीं आता था कि कैसे पति का संवाद उस तक पहुँचाये। दिल में उसे डर लग रहा था कि जरूर इसमें कोई खतरा छिपा हुआ है। ल्युसियाँ, मानो उसे चिढ़ाने के लिए, इस समय बड़ा प्रसन्न था, उसने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। यह पहली बार था जब कि उसके आलिंगन ने मूश में उत्तेजना न उत्पन्न करके भय पैदा किया था। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे नस-नस में सर्दी घुस गई हो। अपने को उसके आलिंगन से मुक्त करते हुए वह बोली :

'वह तुमसे मिलना चाहता है। किन्तु, ल्युसियाँ, मुझे तुम्हारे लिए खतरा नजर आता है।'

'क्या मूर्खता की बात करती हो !'

'तुम नहीं समझे नहीं। ईर्ष्या की कोई बात नहीं। वह भयंकर आदमी है। वह जरूर किसी आफत में फाँसना चाहता है। मैं उसकी हलकी मुसकराहट का अर्थ खूब जानती हूँ। अच्छा सोचो तो सही, उसे तुम्हारी आवश्यकता क्यों पड़ी ?'

'शायद वह यह नहीं जानता कि अपने पिता से मेरा झगड़ा हो गया है। वह मेरे द्वारा मेरे पिता का विश्वासपात्र बनने की कोशिश कर रहा होगा। वह तो अपना नाम बढ़ाने की कोशिश में रहता है। किन्तु बस, हो चुका; इसकी भी कोई हद होनी चाहिये।' उसने मूश का चुम्बन लिया। उसने तुरन्त हट कर पूछा : 'अच्छा यह तो बताओ वह पत्र किसका था ?'

ल्युसियाँ कँधा हिलाकर बोला, 'सरासर जालसाजी थी। वही रुपए उड़ाने की पुरानी कहानी ! उस पर किलमान के हस्ताक्षर थे।'

मूश ने तकिये में अपना सिर छिपा लिया। ल्युसियाँ ने उसका कँधा पकड़ कर जोर से झटका दिया और पूछा : 'तुम्हें कुछ मालूम है ? बताओ मुझे !'

'वह तुम्हें जान से मार डालेगा।'

'बताओ मुझे ! तुम्हें उस पत्र के बारे में कुछ मालूम है ?'

'नहीं, मुझे उसके बारे में कोई खबर नहीं। लेकिन मैं किलमान को जानती हूँ। वह तुम्हें जिन्दा नहीं रहने देगा। ल्युजर्न में एक होटल की बात है। उसने मुझे केवल चन्द मिनटों के लिए किलमान के साथ अकेले छोड़

दिया था। हमारे कमरे एक दूसरे के बगल में थे। वह बड़ा ही भयानक आदमी है। उसका सिर पीछे से बिलकुल मूंड़ा हुआ था...वह अजीब तरह से फ्रेंच बोलता रहा था; 'त' की जगह वह 'द' ही कहता था। वह पक्का जर्मन है। किन्तु किसी से कहना मत! आँदेल ने मुझसे कह दिया था कि मैं किसी से कुछ न कहूँ। वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था...और तुम जानते ही हो कि वह यों साधारणतः कितना चुप रहने का आदी है! उससे तुम कोई सम्बन्ध न रखो!'

ल्युसियां अब उसकी बात नहीं सुन रहा था। उसने झटपट कपड़े पहने और जोर से कहा, 'जल्दी कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ।'

मूश समझ नहीं पायी कि बात क्या है; उसने अपने होंठ उसके हाथों से लगाने की कोशिश करते हुए कहा, 'ल्युसियां, प्रिय, नाराज मत होओ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं।'

वह रोने लगी। फिर उसे प्रसन्न करने के लिए उसने अपना छोटा-सा सिंगारदान निकाल कर मुँह पर पाउडर लगाना शुरू किया। ल्युसियां ने उसके हाथ से पाउडर छीनते हुए जोर से कहा, 'अरे हटाओ इसको, चलो जल्दी!'

दोनों साथ साथ चले। उसने ल्युसियां के कान में कहा, 'ल्युसियां, प्यारे ल्युसियां मुझे इस समय कितना डर लग रहा है!'

उसने देखा कि उसका ब्लाउज ठीक नहीं है। यह देखते ही वह सामने वाले मकान के दरवाजे में घुस गयी लेकिन जब बाहर निकली तो ल्युसियां का पता न था। वह पास ही बैठ गई। वह बस के ठहरने की जगह थी। थोड़ी देर में लोगों ने उसके पास भीड़ लगाना शुरू कर दिया, किन्तु उसने किसी की ओर देखा ही नहीं। एक अखबार बेचने वाला उसके पास ही आकर चिल्लाया 'अभी खतरा दूर नहीं हुआ।' वह और भी बेचैन हो उठी और उसकी आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। एक स्त्री ने पास आकर उसे ढाढ़स दिया और बोली, 'चिन्ता मत करो! मेरा पति कहता है कि लड़ाई नहीं होगी।'

में नहीं आता था कि कैसे पति का संवाद उस तक पहुँचाये। दिल में उसे डर लग रहा था कि जरूर इसमें कोई खतरा छिपा हुआ है। ल्युसियाँ, मानो उसे चिढ़ाने के लिए, इस समय बड़ा प्रसन्न था, उसने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। यह पहली बार था जब कि उसके आलिंगन ने मूश में उत्तेजना न उत्पन्न करके भय पैदा किया था। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे नस-नस में सर्दी घुस गई हो। अपने को उसके आलिंगन से मुक्त करते हुए वह बोली :

'वह तुमसे मिलना चाहता है। किन्तु, ल्युसियाँ, मुझे तुम्हारे लिए खतरा नजर आता है।'

'क्या मूर्खता की बात करती हो!'

'तुम नहीं समझे नहीं। ईर्ष्या की कोई बात नहीं। वह भयंकर आदमी है। वह जरूर किसी आफत में फाँसना चाहता है। मैं उसकी हलकी मुसकराहट का अर्थ खूब जानती हूँ। अच्छा सोचो तो सही, उसे तुम्हारी आवश्यकता क्यों पड़ी?'

'शायद वह यह नहीं जानता कि अपने पिता से मेरा झगड़ा हो गया है। वह मेरे द्वारा मेरे पिता का विश्वासपात्र बनने की कोशिश कर रहा होगा। वह तो अपना नाम बढ़ाने की कोशिश में रहता है। किन्तु बस, हो चुका; इसकी भी कोई हद होनी चाहिये।' उसने मूश का चुम्बन लिया। उसने तुरन्त हट कर पूछा : 'अच्छा यह तो बताओ वह पत्र किसका था?'

ल्युसियाँ कँधा हिलाकर बोला, 'सरासर जालसाजी थी। वही रुपए उड़ाने की पुरानी कहानी! उस पर किलमान के हस्ताक्षर थे।'

मूश ने तकिये में अपना सिर छिपा लिया। ल्युसियाँ ने उसका कँधा पकड़ कर जोर से झटका दिया और पूछा : 'तुम्हें कुछ मालूम है? बताओ मुझे!'

'वह तुम्हें जान से मार डालेगा।'

'बताओ मुझे! तुम्हें उस पत्र के बारे में कुछ मालूम है!'

'नहीं, मुझे उसके बारे में कोई खबर नहीं। लेकिन मैं किलमान को जानती हूँ। वह तुम्हें जिन्दा नहीं रहने देगा। ल्युजर्न में एक होटल की बात है। उसने मुझे केवल चन्द मिनटों के लिए किलमान के साथ अकेले छोड़

दिया था। हमारे कमरे एक दूसरे के बगल में थे। वह बड़ा ही भयानक आदमी है। उसका सिर पीछे से बिलकुल मूंड़ा हुआ था...वह अजीब तरह से फ्रेंच बोलता रहा था: 'त' की जगह वह 'द' ही कहता था। वह पक्का जर्मन है। किन्तु किसी से कहना मत! आँदेल ने मुझसे कह दिया था कि मैं किसी से कुछ न कहूँ। वह बड़ा उत्तेजित हो रहा था...और तुम जानते ही हो कि वह यों साधारणतः कितना चुप रहने का आदी है! उससे तुम कोई सम्बन्ध न रखो!'

ल्युसियां अब उसकी बात नहीं सुन रहा था। उसने झटपट कपड़े पहने और जोर से कहा, 'जल्दी कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ।'

मूश समझ नहीं पायी कि बात क्या है; उसने अपने होंठ उसके हाथों से लगाने की कोशिश करते हुए कहा, 'ल्युसियां, प्रिय, नाराज मत होओ! इसमें मेरा कोई अपराध नहीं।'

वह रोने लगी। फिर उसे प्रसन्न करने के लिए उसने अपना छोटा-सा सिंगारदान निकाल कर मुँह पर पाउडर लगाना शुरू किया। ल्युसियां ने उसके हाथ से पाउडर छीनते हुए जोर से कहा, 'अरे हटाओ इसको, चलो जल्दी!'

दोनों साथ साथ चले। उसने ल्युसियां के कान में कहा, 'ल्युसियां, प्यारे ल्युसियां मुझे इस समय कितना डर लग रहा है!'

उसने देखा कि उसका ब्लाउज ठीक नहीं है। यह देखते ही वह सामने वाले मकान के दरवाजे में घुस गयी लेकिन जब बाहर निकली तो ल्युसियां का पता न था। वह पास ही बैठ गई। वह बस के ठहरने की जगह थी। थोड़ी देर में लोगों ने उसके पास भीड़ लगाना शुरू कर दिया, किन्तु उसने किसी की ओर देखा ही नहीं। एक अखबार बेचने वाला उसके पास ही आकर चिल्लाया 'अभी खतरा दूर नहीं हुआ।' वह और भी बेचैन हो उठी और उसकी आँखों से आँसू की झड़ी लग गई। एक स्त्री ने पास आकर उसे ढाढ़स दिया और बोली, 'चिन्ता मत करो! मेरा पति कहता है कि लड़ाई नहीं होगी।'

७

रात के आठ बज चुके थे जब ल्युसियां ब्रेतीले के मकान पर पहुँचा। नौकर ने उसे बैठक में ले जाकर बैठा दिया और इन्तजार करने के लिए कहा। ब्रेतीले भोजन कर रहा था।

'प्रतिज्ञापालकों' का यह नेता एक साधारण मध्यम वर्गी नागरिक की भाँति रहता था। बैठक में एक प्यानो रखा था, जिसे कोई बजाता नहीं था। गोल मेज पर खानदान के अनेक आदमियों के फोटो के अल्बम थे। पास में एक मोटी पुस्तक रखी हुई थी। कमरे की दीवारों पर तरह तरह के प्राकृतिक दृश्यों के चित्र टँगे थे।

खाने के कमरे से मिला हुआ दरवाजा खुला था। दूर से दिखाई पड़ रहा था कि एक तरफ मेज पर प्याले और तश्तरियाँ जमा हैं। आलमारी में पुराने जमाने का नकाशीदार शीशा जड़ा था। ब्रेतील मेज पर अपनी पत्नी के सामने बैठा खाना खा रहा था। कोने में बच्चों वाली ऊँची कुर्सी थी। उसकी स्त्री ने उसे वहाँ से हटाने नहीं दिया था। रूमाल को ठीक से तह करते हुए ब्रेतीले आगन्तुक से मिलने कमरे में आया।

ल्युसियां के उत्तेजित चेहरे को देखते ही उसने भौंहें सिकोड़ लीं। वह नहीं चाहता था कि लोग इस प्रकार बिना बुलाये उसके यहाँ आ धमका करें किन्तु ल्युसियां इतना घबड़ाया हुआ था कि उसे क्षमा माँगने की बात भी न सूझी। मूश से अलग हुए अभी उसे एक घंटा भी नहीं हुआ था।

उसने तुरन्त कहा, 'वह चिट्ठी जाली नहीं है।'

ब्रेतील यह सुन कर मुसकराया। उसने पूछा, 'क्या तुम्हारे पिता ने ही तुम्हें यह बताया है?'

'नहीं, यदि उन्होंने कहा होता तो मैं विश्वास भी न करता। किन्तु अब

मुझे पता चला है कि किलमान नाम का कोई आदमी सचमुच है और ग्रांदेल ने उससे भेंट भी की थी।'

ब्रेतील उस लम्बे और अँधेरे से कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलता रहा। ल्युसियां ने कनखियों से उसकी ओर यह जानने के लिए देखा कि उसे क्रोध हुआ या आश्चर्य। किन्तु ब्रेतील के सख्त हड्डीदार चेहरे पर कोई फर्क न आया।

'तुमसे यह किसने बतलाया ?' ब्रेतील ने पूछा।

'यह जानने की जरूरत ही क्या ? मैं आपको नाम बतला सकता हूँ, लेकिन मैं आप से सच कह रहा हूँ कि...'

ब्रेतील ने कमरे की बत्ती जला दी। क्षण भर के लिए ल्युसियां की आँखें चौंधिया गयीं। ब्रेतील उसके पास ही एक ऊँची कुर्सी के बाजू पर हाथ टेक कर खड़ा हो गया और बोला, 'मैं तुम्हें राय देता हूँ कि जो कुछ तुमने अभी कहा है उसे भूल जाओ। तुम दूसरे लोगों के हाथों का खिलौना बन रहे हो। तुम मुझे एक ऐसे आदमी के बारे में यकीन दिलाते हो जिसका नाम भी तुम नहीं खोलना चाहते। लेकिन मैं तुम्हें ग्रांदेल के बारे में विश्वास दिलाता हूँ।'

ल्युसियां उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ कहे हाल में चला गया। बहुत देर तक अंधेरे में वह अपनी हैट टटोलता रहा था। वह अचानक फिर बैठक में वापस आया। ब्रेतील अब भी उसी तरफ खड़ा था।

ल्युसियां ने असाधारण शान्ति के साथ कहा, 'मेरा आपका व्यवहार पिछले डेढ़ वर्ष से चल रहा है। आज कुछ अजीब बात है...किन्तु शायद आपकी आखों पर पर्दा पड़ा है ! या, यह कि आपको भी मालूम है कि यह किलमान कौन है !'

'तुम्हारे ऐसे तुच्छ आदमी मेरा अपमान नहीं कर सकते', ब्रेतील ने कहा। 'मेरी तुमको सलाह है कि तुम राजनीति की झँझट में न पड़ो। यह तुम्हारे बस की बात नहीं। स्वभाव से ही तुम लुच्चे और कमीने हो। निकल जाओ यहाँ से !'

ल्युसियां ने मारे गुस्से के मुट्ठी बाँध ली, किन्तु ब्रेतील को मारने के लिए नहीं। वह चुपचाप बाहर निकल गया और सड़क पर पहुँचकर सोचने लगा,

मैं उसके पास गया ही क्यों ? उसे यह सोच कर स्वयं अपने से इतनी घृणा मालूम हुई कि वह अपना सारा अपमान भूल गया। ठंडी हवा के चलने के बावजूद वह सड़क पर घूमता रहा। महीना तो मई का था किन्तु जाड़ा अभी पूरी तौर से नहीं गया था।

एक बार फिर से ल्युसियां को अपनी सारी आशाओं को धूल में मिलते देखना पड़ा। उसे जान पड़ा कि अब इस क्षति की पूर्ति असंभव है। वह किलमान नामक आदमी के लिए अभी तक काम कर रहा था। कितनी घृणित बात थी। और मूश ग्रांदेल के साथ रहती थी। वह यह भी भूल गया था कि मूश ने अकसर ग्रांदेल का साथ छोड़कर उसके पास चले अपने की इच्छा प्रकट की थी। वह अब मूश को भी अपराधी समझने लगा था। कौन जाने, हो सकता था वह इसी प्रकार किलमान के साथ भी रही हो ? ये सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं ! उसके पिता ने ठीक ही कहा था, 'तुम जर्मनों के हाथ के खिलौने बने हुए हो।' लेकिन पिता के घर वापस जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

अचानक वह सामने से कुछ चीजों को आते देख चकित होकर ठहर गया। सड़क पर सामने से सजी-सजायी कार्निवल की कारें चली आ रही थीं। अर्धनग्न लड़कियाँ, जो जाड़े के मारे ठिठुर रही थीं, रास्ते में खड़े दर्शकों को देख देखकर मुसकरा रही थीं। सभी चीजें एक हलकी रोशनी में नहायी हुई थीं, जिससे सर्दी कुछ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी। ल्युसियां को भ्रुवों पर पड़ने वाली बर्फ और वहाँ पर हेनरी की मृत्यु की याद आ गई। यह सब हो क्या रहा था ? सफेद कारें, प्लास्टर के बने बड़े-बड़े हंस, स्वच्छ कपड़े पहने और चेहरों पर पाउडर पोते लड़कियाँ—आज यहाँ कार्निवल कहाँ से आ गया ? ल्युसियां को आखिर याद आ ही गया कि समाचारपत्रों में इसकी खबर निकल चुकी है। पाल तस्सा ने पेरिस के भद्रजनों के मनोरंजन के लिए यह सामान इकट्ठा किया था। तने हुए घूँसों, लाल झंडों और नीरस राजनीति से शायद लोगों का जी उकता गया था। अच्छा है कुछ दिनों इसी प्रकार चहल-पहल रहे। तेस्सा सारी दुनिया को दिखलाना चाहता था कि पेरिस को युद्ध, या क्रान्ति का कोई भी भय नहीं। कार्निवल के साथ ही वसन्त ऋतु का आरम्भ होने जा रहा था। थियटरों की पहली रातें, हिपोड्रोम में जुए के दांव,

नाच-गान और तरह तरह के फैशनों का प्रदर्शन। जल्दी करो ओ अंग्रेजों और अमेरिकनों! अपने साथ रुपये पैसे लेकर तुरन्त पहुँचो! सभी नाचने-गाने वाले, अच्छे से अच्छे कपड़े सिलनेवाले, इत्र-फुलेल बेचनेवाले—सभी तुम्हारा रास्ता देख रहे हैं। फ्रांस का संरक्षक पोल तेंस्सा तुम्हारी राह देख रहा है!

इतने में एक दूसरी सजी हुई कार पास से होकर गुजरी। एक मोटी तगड़ी स्त्री, तिरंगा कपड़ा सर पर डाले और बिजली की मशाल हाथ में ऊपर उठाये। यह थी फ्रांस की प्रतिमा। वह बिल्कुल निर्जीव मालूम पड़ती थी, उसकी आँखें उदास थीं और ओंठ नीले। ल्युसियां खड़ा उस स्त्री की ओर घूरता रहा और फिर अचानक सड़कों पर आवारा फिरनेवाले लड़कों की तरह उसने उस स्त्री की ओर जीभ निकाल दी।

८

अभी कुछ दिनों पहले तक 'युद्ध' शब्द के साथ अनेक स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं। पचास वर्षीय लोग, अंगूर के बाग लगाने वाले या मुनीम लोग अपनी जवानी के उन तूफानी दिनों को, जाड़े की लम्बी शामों में याद किया करते थे। बच्चे अपने पिताओं की वीरता और उनके कष्टों की कहानी सुनते-सुनते तंग आ गये थे। उनके निकट लड़ाई ऐसी ही बेकार चीज हो गई थी, जैसे घोड़ा-गाड़ियाँ और तेल के चिराग, जिनका एक समय बड़ा प्रयोग होता था। आज वह परिचित शब्द लोगों की जबान पर था। हरदम लोगों के दिमागों पर लड़ाई का भूत सवार रहता। लगता था जैसे कल ही कुछ होनेवाला है। लोग कहते सुनाई पड़ते, 'अगर लड़ाई नहीं होती तो हम जाड़े में अपनी शादी करेंगे,' या 'मैं जुलाई में अपनी परीक्षा पास कर लूँगा, बशर्ते कि उस समय तक लड़ाई न छिड़े।'

उन दिनों सूटेडन के जर्मनों की दशा से, जिनके बारे में पहले किसी ने कुछ नहीं सुना था, अखबारों के कालम के कालम रंगे रहते थे। चेकोस्लोवाकिया के नक्शे को देखकर लोग घबरा उठते थे। उन्हें सन् १९१४ के वे दिन भूले नहीं थे जब सर्विया पर आक्रमण हुआ था, जब गर्मी के मौसम में

एक दिन छोटी छोटी नोटिसें बँटी थीं और नगाड़ों की आवाज ने एलान किया था कि लड़ाई के लिए सारी जनता तैयार हो जाय।

मई के महीने में लड़ाई छिड़ जाने की जो अफवाह फैली थी, वह गलत निकली। फिर भी किसी की हिम्मत यह कहने की नहीं होती थी कि गर्मी बीतते बीतते क्या नहीं हो जायगा। फिर वही सूटेडन जर्मन ! यदि किसी का कोई मित्र छुट्टियों में सैर के सिलसिले में राय माँगता तो उसका उत्तर देना कठिन हो जाता क्योंकि कुछ निश्चय नहीं कहा जा सकता था कि निकट भविष्य में क्या हो जायगा। ज्यादा से ज्यादा यही उत्तर मिलता, 'अगर तब तक लड़ाई न छिड़ गई तो······'

छुट्टियों के दिन निकट आ रहे थे। सारे भय को एक किनारे रख पेरिस-निवासियों ने छुट्टियाँ मनाने के लिए समुद्रतट की किसी बस्ती या पहाड़ी गाँव को चुनने का काम शुरू कर दिया। लोगों ने निश्चय सा कर लिया कि इस कमबख्त सूडेटन के लिए उन्हें पेरिस की भीषण गर्मी में जान नहीं देनी है।

तेरसा को अपने तथा फ्रांस के सौभाग्यशाली होने में तनिक भी संदेह न था। 'हमारा देश तो शान्ति का नखलिस्तान है ! वह कहता। उसका इतना कहना था कि सारे अखबार तथा रेडियो स्टेशनों से फ्रांस के शान्ति-पूर्ण वातावरण के राग इस तरह अलापे जाने लगते जैसे किसी पेटेंट दवा या बोतल में बन्द शर्बत का प्रचार किया जा रहा हो। अमेरिकन पर्यटक कहाँ जायेंगे ? वाइजवेडेन को अरे तोबा ! वह तो खूँखार जर्मन सिपाहियों, सैनिक षड्यंत्रकारियों और यातना-गृहों से भरा पड़ा है। कार्ल्सबेड को जा नहीं सकते सूडेटन जर्मन वहीं तो बसते हैं। इटली के सारे अस्पताल स्पेन से लाये गये घायलों से भरे पड़े हैं और चारों तरफ शोर मचा हुआ है कि 'कालोकुर्ती वाले फासिस्ट स्वयंसेवक नये गुल खिलानेवाले हैं। किन्तु विशी, कैने, ब्यारिज में पर्यटकों के लिए काफी जगह थी। ये स्थान वास्तव में शान्ति के नखलिस्तान थे। रोज शाम को जानते रेडियो पर बोलती, 'अमन चैन के नख-लिस्तान। जल्दी अपने लिए स्थान चुनिये······एमेराल्ड कोस्ट······लामा-र्तें के विख्यात सेरों वाले इलाके के सुन्दर दृश्यों को न भूलिये !······शाम को घंटों की ध्वनि कितनी प्यारी मालूम होती है और फूलों की वह भीनी-

का उस पर कोई असर न होता था। जानेत को ऐसा मालूम होता मानो वह गाँव के बाहर सावधानी से खड़ा पहरा दे रहा है ताकि गाँव में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो सके।

लड़ाई की अफवाह पल्यूरी तक भी जा पहुँची। गाँव के कहवाखाने में, जहाँ सदा केवल धुंधली-सी रोशनी रहती और ठंडक मालूम पड़ती थी और जहाँ किसान बैठे मोटे मोटे गिलासों से शराब के घूँट उतारा करते थे, रेडियो की भारी आवाज गूँजने लगती। रह रहकर सूडेटन जर्मनों और किसी 'हीन लीन' के नाम निकला करते। अंगूर उगाने वाले किसान सुन-सुन कर बिगड़ते थे, 'तो इसका अर्थ यह है कि लड़ाई बढ़ते-बढ़ते हमारे घरों तक पहुँच रही है!'

जानेत उस छोटे से गाँव की दुनिया और उसके प्राकृतिक दृश्यों में जैसे समा-सी गई थी। किसान उसे शराब पेश करते उससे और हँसी-ठट्ठा करते। आपस में वह एक दूसरे से कहा करते, 'बड़ी ही सुन्दर और हँसमुख लड़की है!' जानेत को थोड़े ही दिनों बाद पेरिस भूल-सा गया; सिवा कड़े परिश्रम, एकान्त जीवन के और था ही क्या वहाँ। गाँव के पास की सड़क से होकर गुजरनेवाली कारों में बैठे पेरिसवासियों को देखकर उसे उस वैरी संसार की याद आ जाया करती थी। वह यह सोचकर भयभीत हो जाती कि थोड़े दिनों में उसके इस शान्तिपूर्ण जीवन का भी अन्त हो जायेगा।

एक रोज जबकि बड़ी कड़ी गर्मी पड़ रही थी और तेज धूप से बचने के लिए लोग कहवाखाने में जा पहुँचते थे, उसकी एक पेरिसवासी से मुलाकात हुई। वह छुट्टियों की पोशाक पहने हुए था। बिना कालर की कमीज और पैर में बालू पर चलने के जूते। उसके प्रसन्न स्वभाव, पुराने टूटे पाइप, ढिटाई, भरे चेहरे और चमकीली आँखों से मालूम पड़ता था कि वह मैसाँ या दिजाँ का कोई शराब का व्यापारी है। वह शराब बड़े ठाट से पीता था; ओंठ चाटते हुए और गाल फुला कर। उस रोज मारे गर्मी के हर एक सुस्ती और नींद महसूस कर रहा था। जब उसने मालकिन और गाँव के उस आवारा आस्ट्रियन को चिढ़ाना शुरू किया तो जानेत को हँसी आ गई। इसके बाद उसने मर्साई का एक किस्सा सुनाना शुरू किया। 'ओलीवियें बहुत उत्तेजित हो चुका था,'

उसने कहना शुरू किया। 'मैं केनबियर के किनारे-किनारे जा रहा था, जबकि मेरी निगाह मेरियस पर जा पड़ी। मैंने पुकारकर उससे कहा: 'कहो, मेरियस! किन्तु उसने मुड़कर न देखा। जरा सोचो तो सही। ऐसा हुआ कि न वह वह था और न मैं मैं था!' जानेत खिलखिला कर हँस पड़ी, 'यह भी खूब रहा— 'न वह वह था और न मैं मैं!' वह इस प्रकार हँसने लगी कि मालकिन की नींद उचट गई; उसने सर उठा कर देखा, मुसकरायी और फिर सो गई।

जानेत को यह अपरिचित आदमी बड़ा पसन्द आया, यद्यपि न वह जवान था और न सुन्दर। उसे उसकी सादगी, ढिटाई और एक प्रकार के फुर्तीलेपन ने मोह लिया था। जानेत नाटक की दुनिया में रहने वाली थी, जहाँ हर एक के हाव, भाव और सुर अप्राकृतिक हुआ करते हैं। इस पुरुष में जिसे उसने शराब का व्यापारी समझा था, कुछ ऐसी विशेषता थी जिसने उसे आकर्षित कर लिया। बड़ी देर तक दोनों हंसते और गप्पें लड़ाते रहे। जब गर्मी कम हुई तो दोनों बाहर निकले। जानेत उसको अपने साथ अपने प्रिय वृक्ष के पास ले गई। वह घास पर बैठ गया और अपने हैट को उतार कर एक बड़े रेश्मी रूमाल से मुंह पोंछते हुए बोला, 'कितना सुन्दर है।' किन्तु दूसरे ही क्षण वह उदास हो गया। जानेत भी इसी प्रकार किसी सोच में पड़ी थी।

'मालूम होता है तुम प्रसन्न नहीं हो?' व्यापारी ने पूछा, 'क्या बताऊँ, मुझ में खराबी है ही। मैं जिससे मिलता हूँ उसके उत्साह को ठंडा कर देता हूँ। किस्से कहानियों में ऐसे लोगों के बारे में मैं सुना करता था, जिनके हाथ में आते ही बालू भी सोना हो जाती थी, मेरी बात बिलकुल उलटी है—मेरे हाथ जो भी आया बालू बन गया।'

'हूँ, हो सकता है,' वह बोली।

जानेत ने दुखी होकर उस पेड़ को याद किया जो पेरिस के किसी चौक के कोने पर खड़ा था और जिसकी पत्तियाँ मुरझायी तथा धूल से लदी हुई थीं। वह सुखी हो सकती थी। फिर उसने इस सुख को क्यों लात मार दी। वह भी उसी की भाँति थी, जिसे छूती बालू हो जाता। यह विचार

का उस पर कोई असर न होता था। जानेत को ऐसा मालूम होता मानो वह गाँव के बाहर सावधानी से खड़ा पहरा दे रहा है ताकि गाँव में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो सके।

लड़ाई की अफवाह पल्यूरी तक भी जा पहुँची। गाँव के कहवाखाने में जहाँ सदा केवल धुंधली-सी रोशनी रहती और ठंडक मालूम पड़ती थी और जहाँ किसान बैठे मोटे मोटे गिलासों से शराब के घूँट उतारा करते थे, रेडियो की भारी आवाज गूँजने लगती। रह रहकर सूडेटन जर्मनों और किसी 'हीन लीन' के नाम निकला करते। अंगूर उगाने वाले किसान सुन-सुन कर बिगड़ते थे, 'तो इसका अर्थ यह है कि लड़ाई बढ़ते-बढ़ते हमारे घरों तक पहुँच रही है!'

जानेत उस छोटे से गाँव की दुनिया और उसके प्राकृतिक दृश्यों में जैसे समा-सी गई थी। किसान उसे शराब पेश करते उससे और हँसी-ठट्ठा करते। आपस में वह एक दूसरे से कहा करते, 'बड़ी ही सुन्दर और हँसमुख लड़की है!' जानेत को थोड़े ही दिनों बाद पेरिस भूल-सा गया; सिवा कड़े परिश्रम, एकान्त जीवन के और था ही क्या वहाँ। गाँव के पास की सड़क से होकर गुजरनेवाली कारों में बैठे पेरिसवासियों को देखकर उसे उस बैरी संसार की याद आ जाया करती थी। वह यह सोचकर भयभीत हो जाती कि थोड़े दिनों में उसके इस शान्तिपूर्ण जीवन का भी अन्त हो जायेगा।

एक रोज जबकि बड़ी कड़ी गर्मी पड़ रही थी और तेज धूप से बचने के लिए लोग कहवाखाने में जा पहुँचते थे, उसकी एक पेरिसवासी से मुलाकात हुई। वह छुट्टियों की पोशाक पहने हुए था। बिना कालर की कमीज और पैर में बालू पर चलने के जूते। उसके प्रसन्न स्वभाव, पुराने टूटे पाइप, ढिटाई, भरे चेहरे और चमकीली आँखों से मालूम पड़ता था कि वह मेसाँ या दिजाँ का कोई शराब का व्यापारी है। वह शराब बड़े ठाट से पीता था; ओंठ चाटते हुए और गाल फुला कर। उस रोज मारे गर्मी के हर एक सुस्ती और नींद महसूस कर रहा था। जब उसने मालकिन और गाँव के उस आवारा आस्ट्रियन को चिढ़ाना शुरू किया तो जानेत को हँसी आ गई। इसके बाद उसने मर्साई का एक किस्सा सुनाना शुरू किया। 'ओलीविये बहुत उत्तेजित हो चुका था,'

उसने कहना शुरू किया। 'मैं केनबियर के किनारे-किनारे जा रहा था, जबकि मेरी निगाह मेरियस पर जा पड़ी। मैंने पुकारकर उससे कहाः 'कहो, मेरियस! किन्तु उसने मुड़कर न देखा। जरा सोचो तो सही। ऐसा हुआ कि न वह वह था और न मैं मैं था!' जानेत खिलखिला कर हँस पड़ी, 'यह भी खूब रहा— 'न वह वह था और न मैं मैं!' वह इस प्रकार हँसने लगी कि मालकिन की नींद उचट गई; उसने सर उठा कर देखा, मुसकरायी और फिर सो गई।

जानेत को यह अपरिचित आदमी बड़ा पसन्द आया, यद्यपि न वह जवान था और न सुन्दर। उसे उसकी सादगी, ढिठाई और एक प्रकार के फुर्तीलेपन ने मोह लिया था। जानेत नाटक की दुनिया में रहने वाली थी, जहाँ हर एक के हाव, भाव और सुर अप्राकृतिक हुआ करते हैं। इस पुरुष में जिसे उसने शराब का व्यापारी समझा था, कुछ ऐसी विशेषता थी जिसने उसे आकर्षित कर लिया। बड़ी देर तक दोनों हंसते और गप्पें लड़ाते रहे। जब गर्मी कम हुई तो दोनों बाहर निकले। जानेत उसको अपने साथ अपने प्रिय वृक्ष के पास ले गई। वह घास पर बैठ गया और अपने हैट को उतार कर एक बड़े रेश्मी रूमाल से मुंह पोंछते हुए बोला, 'कितना सुन्दर है।' किन्तु दूसरे ही क्षण वह उदास हो गया। जानेत भी इसी प्रकार किसी सोच में पड़ी थी।

'मालूम होता है तुम प्रसन्न नहीं हो?' व्यापारी ने पूछा, 'क्या बताऊँ, मुझ में खराबी है ही। मैं जिससे मिलता हूँ उसके उत्साह को ठंडा कर देता हूँ। किस्से कहानियों में ऐसे लोगों के बारे में मैं सुना करता था, जिनके हाथ में आते ही बालू भी सोना हो जाती थी, मेरी बात बिलकुल उलटी है—मेरे हाथ जो भी आया बालू बन गया।'

'हूँ, हो सकता है,' वह बोली।

जानेत ने दुखी होकर उस पेड़ को याद किया जो पेरिस के किसी चौक के कोने पर खड़ा था और जिसकी पत्तियाँ मुरझायी तथा धूल से लदी हुई थीं। वह सुखी हो सकती थी। फिर उसने इस सुख को क्यों लात मार दी। वह भी उसी की भाँति थी, जिसे छूती बालू हो जाता। यह विचार

उसके मन में आया और वह अपरिचित व्यक्ति उसे और भी प्रिय लगने लगा। उसने एक आश्चर्यपूर्ण स्वर में उससे कहना आरंभ किया :

'न जाने हम दोनों की कैसे जान पहचान हो गई। फिर भी मैं नहीं जानती कि तुम कौन हो। मैं स्वयं एक ऐक्ट्रस हूँ। केवल यह न समझना कि मेरे नाम से तुम्हारा कोई मतलब हल हो सकेगा। मैं एक रेडियो स्टेशन पर काम करती हूँ। मेरा नाम है जानेत लैमब्र। हाँ, जानेत। और तुम्हारा क्या नाम है ?'

'देजेर। शायद फ्रांस में हजारों लाखों देजेर होंगे।'

'मैंने एक देजेर के बारे में तो कुछ सुना है। वह एक करोड़पति है। सुनती हूँ, वह कुछ झक्की भी है, लेकिन दूसरों की तरह वह भी भयंकर आदमी है...'

देजेर ने मुस्करा कर उत्तर दिया, 'हाँ, हाँ। अच्छा, अब परिचय देने का कार्य समाप्त किया जाय। बेहतर होगा यदि हम भी उस चतुर बदमाश ओलीविये की तरह कहें—न तुम तुम हो और न मैं मैं हूँ। क्या कहा है ! तुम्हारे लिए तो ऐक्ट्रेस होने के नाते आसान है। अच्छा कैसा पार्ट तुम अदा करती हो—भोली भाली लड़की का ? प्रेम में निष्फल लड़की का ? किसी देहाती लड़की का ?—मारगराइत गोतिये का ?'

'मैं रेडियो पर 'सिजानों' की शराब और 'नेशनल' चारपाइयों का प्रचार किया करती हूँ। और फ्रांस की सम्पन्नता के बारे में भी। तुम स्वयं समझ सकते हो कि मैं कितनी साधारण हूँ। एक समय जब कि मुझे एक नाटक में प्रमुख पार्ट मिलने वाला था। लेकिन वह किसी और को दे दिया गया। नाम अर्थात् धन का प्रश्न था। मेरा एक मित्र है, जो स्टेज-मैनेजर है। वह बड़ा चतुर है, सदा वह खेल दिखाने की बातें सोचा करता है, लेकिन कभी तैयार नहीं करता। उसके पास धन ही नहीं। उसका थियेटर बड़ा प्रगतिशील किस्म का है। किन्तु उसकी आजकल पूछ कहाँ ? उसके दिमाग में एक अत्यन्त सुन्दर खेल तैयार करने का विचार था, जिसमें मेरा प्रमुख पार्ट होता। किन्तु वह सब सपने की बातें थीं। मेरी लिए यही लिखा हुआ है कि रेडियो पर मैं नकली मोतियों या किसी नई रेचक-पाचक औषधि की प्रशंसा के पुल बाँधा

करूँ। कोई बात नहीं। दुख है तो केवल इस बात का कि मुझे इतनी जल्दी पेरिस वापस जाना पड़ेगा......'

अचानक उसके दिमाग में आया कि वह यह पूछना तो भूल ही गई कि उसका साथी रहने वाला कहाँ का है और काम क्या करता है। वह पास में स्थित गाँव मेसाँ से आया है या पेरिस से ? उसने कुछ डरते हुए पूछा, 'क्या तुम यहाँ छुट्टियाँ बिताने आये हो ?'

'हाँ, मैंने यही पास में एक छोटा-सा मकान ले लिया है। वहीं जूलियन के रास्ते में। मैं तो अक्टूबर तक ठहर रहा हूँ ?

'क्या तुम्हारे घरवाले भी साथ में हैं ?'

वह जोर से खिलखिला उठा और बोला, 'मैं तो सदा अकेले रहता हूँ ! नहीं कह सकता क्यों—या तो लोग मुझसे दूर भागते हैं या मैं उनसे। लेकिन मैं अभी तक तो तुमसे नहीं दूर भागा।'

'मैं भी तो नहीं भागी। मैं भी अकेली हूँ। मेरा मतलब है किसी समय मेरे भी निकट सम्बन्धी थे। अरे नहीं, यह ठीक नहीं, वे दूर के सम्बन्धी थे। मैं उनके साथ रहती थी, बस। इतना ही मेरा पार्ट था, जिसे मुझे अदा करने को दिया गया था। कभी तो इससे भी कम होता था। किसी होटल के कोने में एक छोटा-सा कमरा। इससे क्या मतलब कि कौन सा ?'

कुछ दिनों बाद की बात है। दोनों बड़ी उत्सुकता के साथ उस घड़ी का इन्तजार कर रहे थे जब वे उस परिचित पेड़ के नीचे मिल सकेंगे। दोनों ही में अहंकार कूट-कूट कर भरा था और कोई भी पहले दूसरे से अपने दिल की भावनाएँ प्रकट करने को तैयार न था। जानेत सोचती थी—वह सोचता है चलो छुट्टी काटने का अच्छा साधन है। देजेर समझता था—मैं बूढ़ा और कुरूप जरूर हूँ किन्तु पैसा सब कुछ खरीद सकता है।

सितम्बर के महीने का आरंभ था। गर्मी काफी पड़ रही थी। किसान लोग खुशी मना रहे थे। अंगूर फूलने लगे थे। कुछ ही दिनों बाद फसल कटने-वाली थी। किन्तु जानेत तो तब तक चली जायेगी। उसकी छुट्टी एक सप्ताह में खत्म होने वाली थी।

यह उनकी एक कम आखिरी बैठक थी। बड़े भद्दे तरीके से देजेर ने

अपनी बाहें उसके चारों ओर डालदीं। प्रेम करने के मामले में वह एक स्कूली छोकरे से अधिक न था। जानेत ने उसकी भावनाओं का समझते हुए अपने को उससे छुड़ा लिया और बोली, 'तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये।'

दूसरे दिन देजेर शहरी कपड़े पहने आया। उसके चेहरे से मालूम पड़ता था, वह बड़ी परेशानी में है। उसने जानेत की बातों की झड़ी की ओर ध्यान दिये बिना ही कहा, 'मैं घंटे भर में पेरिस जा रहा हूँ।'

वह चौंक पड़ी और बोली, 'नहीं तो!'

एक महीन नीला कागज का टुकड़ा हिलाते हुए वह बोला, 'यह देखो, तार आया है। मुझे वापस बुलाया गया है। परिस्थिति अचानक बड़ी गंभीर हो गई है......'

जानेत को भी अचानक परिचित नाम सुनाई पड़ने लगे, जैसे रेडियो बोल रहा हो—हिटलर, हीनलीन, चेम्बरलेन!

'लड़ाई तो नहीं होने जा रही है?'

'मेरा ख्याल है, नहीं। किन्तु शान्ति तो बनाये रखना ही है। देखो तो यहाँ वाले कितने सुखी हैं। इनके सुख की हमें रक्षा करनी है...'

'हाँ', जानेत ने जरा अनमने ढंग से कहा। क्षण भर के बाद ही उसने चकित होकर पूछा, 'किन्तु क्यों? नहीं; मेरी समझ में नहीं आया। मैं अभी तक नहीं जानती तुम कौन हो। पहले मैंने सोचा था तुम शराब के कोई व्यापारी हो। लेकिन इस समय तो तुम ऐसी बातें करते हो जैसे संसद् का कोई सदस्य या मंत्री हो।'

क्षण भर के लिए देजेर का चेहरा खिल उठा। वह बोला, 'नहीं, नहीं, कोई मंत्री नहीं! ईश्वर इस पद से बचाये! मैं एक व्यापारी हूँ। केवल शराब का नहीं। वास्तव में मैं वही देजेर हूँ जिसको तुमने एक भयंकर आदमी बतलाया था। याद है, वही पहले दिन! अब शायद तुम कहना चाहती हो; कि मैं यहाँ से रुखसत हो जाऊँ!'

जानेत उसे इस तरह आँखें फाड़ कर देखने लगी जैसे पहले कभी देखा ही न था। करोड़पति! उसे लियों के धनी भी याद आये, जो बड़े ठाटवाले और अभिमानी थे। किन्तु देजेर! वह तो किसानों के साथ भी बैठ कर शराब

पीता था। केवल अल्पाका की एक सदरी पहने इधर-उधर घूमता था और एक साधारण एक्ट्रेस से बातें करता था। जानेत का उसके प्रति आकर्षण और भी रहस्यमय हो गया। उफ, वह जा रहा था। दोनों ने उसी अखरोट के पेड़ के नीचे एक दूसरे से विदा ली। जानेत उसका चुम्बन लेना चाहती थी, किन्तु अचानक हट खड़ी हुई और बोली, 'रात मैंने सोचा था कि मैं तुम्हारा चुम्बन लूँगी, किन्तु अब असंभव है—तुम कहीं यह न सोच बैठो कि तुम्हारी करोड़ों की सम्पत्ति पर मेरी नजर है।'

देजेर की आँखों में आँसू भर आये। अपने इस भावावेश पर खिसियाकर उसने धीरे से कहा, 'सदा यही सुनने को मिला!'

उसने जल्दी से देजेर का चुम्बन लिया और पहाड़ी के ऊपर दौड़ती हुई, पुकार कर बोली, 'मेरा टेलीफोन नं० है सूफेन ०८२६।'

और ऊपर पहुँचकर उसने पुकार कर कहा, 'अच्छा, नमस्कार! हम पेरिस में मिलेंगे? ठीक न?'

देजेर इतनी देर में संभल चुका था। उसने कुछ व्यंग्य से कहा, 'हाँ, हाँ, अगर लड़ाई न छिड़ी तो!'

६

तेस्सा इतने दिनों से लोगों में फ्रांस के सुरक्षित होने का प्रचार करता रहा था कि अब उसे स्वयं इसमें विश्वास हो गया था। जब कोई उसके सामने कहता, 'अगर लड़ाई न छिड़ी' तो वह तुरन्त आश्वासन देते हुए कहता, 'नहीं, कोई लड़ाई नहीं छिड़ेगी!' जो भी होता उसकी यह बात सुन कर मुसकरा देता और अधिक प्रसन्नता अनुभव करता—क्योंकि आखिर तेस्सा तो भीतरी बातें जानता ही था। किन्तु वास्तव में तेस्सा को कुछ भी पता न था। दूसरों की तरह वह भी सिर्फ बैठे हवाई किले बनाया करता और मन में सोचता—लड़ाई होगी या नहीं? किन्तु बाहर से वह बिल्कुल शान्त रहता।

इतने में सितम्बर का महीना आ गया। बर्लिन से आनेवाले तारों से

पता चलता था कि शीघ्र ही पर्दा उठने वाला है। अब आशापूर्ण बात करने से कुछ भी नहीं हो सकता था। तेस्सा ल्वायर नदी के किनारे अपने किसी मित्र के यहाँ जाकर कुछ दिनों के लिए आराम करने की सोच ही रहा था कि इतने में तूफान उठ खड़ा हुआ। बहुत कम लोग ऐसे थे जिन्होंने परिस्थिति की गंभीरता को पहचाना। अखबारों की खबरों पर किसी को विश्वास नहीं था। उन्हें याद था कि मई में भी अखबारों ने इसी प्रकार शोर मचाना शुरू किया था। लोग कहते, 'सब ठंडा पड़ जायेगा !' छुट्टियाँ मनाना लोगों ने जारी रखा—समुद्र तक की धूप लेना, ग्लेशियरों पर चढ़ना और मछलियों का शिकार बन्द न हुआ। हवाखोरी के शान्तिपूर्ण वातावरण में अखबारों की खबरें वास्तविकता से बहुत दूर जान पड़ती। इसका कोई कारण समझ में ही नहीं आ रहा था कि फ्रांसीसी राजदूतों की रिपोर्टों से लोगों के नहाने तथा घूमने के कार्यक्रम में कोई अन्तर आना चाहिये।

जिम्मेदारी से तेस्सा घबराता था। इतनी चालें चलकर और इतनी खुशामदें करके पद प्राप्त करना, ऐसे कठिन समय पर कहाँ तक उचित था ? कभी कभी वह अपने बीते हुए दिनों कि याद करके ठंडी साँसें भरता। एक ईमानदार हत्यारे के जिसने बिना लम्बी-चौड़ी बातें बनाये अपनी घर्वाली का गला काट डाला था, मुकदमें की पैरवी करना कितना आसान था ! किन्तु तेस्सा किसी तरह भी अपने मंत्रीपद को त्यागने के लिए तैयार न था—राजशक्ति के अपने हाथ में रहने से कितना अच्छा लगता है ! मंत्री बनने के बाद तो वह ऐसा अनुभव करने लगा था जैसे उसकी उम्र दस वर्ष और घट गई है। पालेत ने भी यही बात कही थी। वह हर समय चलता-फिरता रहता था, बदन में स्फूर्ति और दिमाग में उत्तेजना रहती थी। उसने अपने मन में कहता क्या अद्भुत समय है ! मंत्री तो बहुत से हो चुके है। लोग उन्हें भूल चुके हैं लेकिन हमारी भावी सन्तान मेरा जीवन-चरित्र पढ़ा करेगी। केवल यदि मैं फ्रांस को लड़ाई से बचा सका और शान्ति स्थापित किये रह सका !

परिस्थिति रोज-ब-रोज बिगड़ती जाती थी। जर्मनों को रोकने के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक हो गया था। किन्तु अंग्रेज चुप्पी साधे बैठे थे, स्वयं फ्रांस के अन्दर एकता न थी। तेस्सा ने फ्लाँदीं को एक ओर ले जाकर कहा, 'शान्ति अब भंग होना ही चाहती है !' वह उदास स्वर में यह बारबार दोह-

राता रहा। तेस्सा का विचार था कि यह सारी मुसीबत चेक लोगों की बदौलत है। इतने में दाढ़ी हिलाता हुआ फूजे आ पहुँचा। उसने आजादी का नाम लेकर चिल्लाना और क्लीमैन्सो के लेखों का हवाला देना शुरू किया, 'फ्रांस! हाय, फ्रांस का क्या होगा?' तेस्सा ने घबराकर उससे कहा, 'तुम इतना शोर क्यों मचा रहे हो? हम चेकों का साथ नहीं छोड़ेंगे।...मैं इस बात का विश्वास दिलाता हूँ कि...।' इस दढ़ियल से जान बचते ही उसने साँस खींच कर कहा, 'मालूम पड़ता है लड़ना ही पड़ेगा!'

अभी-अभी प्राग से उसके लिए एक तार आया था—दो-चार दिन में ही सूडेटन जर्मन बगावत करने वाले हैं। जर्मन सेनाएँ अपने 'भाईबन्दों की रक्षा करने के लिए सरहद पार करके चेकोस्लोवाकिया में घुसने वाली हैं। प्रधान वेनेश जोर दे रहा था कि वे सभी राष्ट्र जिन्होंने जर्मनी के विरुद्ध चेकोस्लोवाकिया की रक्षा की जिम्मेदारी ली थी मिलकर कदम उठायें। क्या चेकों को बचाना संभव था जब कि फ्रांस स्वयं विनाश के निकट था? दक्षिणपक्षी लोग विद्रोह पर तुले हुए थे। दलादिये शराब के घूँट उतार-उतार कर कहता था, 'मैं फ्रांस के किसानों को उनका खून बहाने के लिए नहीं ले जाने दूँगा!' लेब्रन रो रहा था। देनीजे के साथी उत्तेजनापूर्ण प्रस्ताव पास कर रहे थे और लोगों को हड़ताल के लिए भड़का रहे थे। ऐसे समय राज्य कार्य चलाना बड़े से बड़े और भयंकर से भयंकर हत्यारे की पैरवी करने से भी कहीं अधिक कठिन था।

जब ब्रेतील उसके कमरे में दाखिल हुआ, तो तेस्सा ने बड़े दुखी भाव से नाक साफ की। वह जानता था कि इससे भी जो बात होगी, उससे कष्ट के सिवा और प्राप्त ही क्या हो सकता है! जैसे सूडेटन ही काफी न थे, जो उसे अपने विरोधियों का सामना करने और ब्रेतील को भी खुश रखने की जरूरत थी। तेस्सा को तुरन्त ल्युसियां और खोये हुए पत्र की याद आयी। उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसकी लम्बी नाक शिकारी चिड़िया की लम्बी चोंच की तरह बाहर निकल आई।

'मालूम तो ऐसा ही होता है कि हमें लड़ना पड़ेगा,' वह बोला।

'बिल्कुल नहीं,' ब्रेतील ने उत्तर दिया। 'तुम्हें मालूम होना चाहिये कि

हमें लड़ना नहीं चाहिये और न हम लड़ेंगे। देश को शान्त रखो। इस घबराहट से सारे कारोबार पर असर पड़ रहा है। सट्टे बाजार में आज...।'

'लेकिन तुमने सुना या नहीं, कि इसी सप्ताह के अन्दर सूडेटन लोग विद्रोह करने वाले हैं? सब कुछ ठीक-ठीक कर लिया गया है। जर्मन सेनाएँ सरहद पार करके देश के अन्दर प्रवेश करेंगी। हम लड़ाई से बच नहीं सकते।'

'अगर तुमने लड़ाई की तैयारी का हुक्म निकाला तो तुरन्त गृहयुद्ध छिड़ जायगा। फ्रांस की हार निश्चित है। इसमें संदेह नहीं, जर्मनी हमारा स्वाभाविक शत्रु है। किन्तु लड़ने की योग्यता भी तो होनी चाहिये। और तुम देख ही रहे हो आपस में कितनी फूट है! कुछ लोग चाहते हैं कि सूडेटनों को जर्मनी के हवाले कर दिया जाय। जो चीज ईश्वर की है वह उसकी रहे और जो हिटलर की है वह उसे मिले—यह है तर्क मेरे दल के संसद सदस्यों का। कुछ भी रियायत देने के विरोधी कौन लोग हैं? वही कम्युनिस्ट! जनवादी मोर्चा, मास्को का उपासक फूजे! उन्हें चेक लोगों की तिल बराबर परवाह नहीं। उन्हें तो अपनी स्थिति मजबूत करनी है। दस फी सदी फ्रांसीसी इस पक्ष में हैं कि समझौता कर लिया जाय, पाँच बेनेश का साथ देने को तैयार हैं; बाकी सभी लोग सारे किस्से को सुनते-सुनते तंग आ चुके हैं। मुझे आशा है, तुम कम्युनिस्टों के कहने पर तो नहीं चल रहे हो।'

'कम्युनिस्टों का इससे क्या सम्बन्ध? यह प्रश्न तो चेक लोगों का है।'

'हाँ, लेकिन चेक लोग तो मास्को के कहने में हैं न!'

'और हम लोग? हमारी ओर से कैशिन ने प्राग की सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं किये थे, हस्ताक्षर करनेवाला लवाल था। जहाँ तक परराष्ट्र नीति का प्रश्न है, उसमें दलबन्दी को नहीं आने देना चाहिये।'

'हम स्वर्ग में बैठे बातें नहीं कर रहे,' ब्रेतील बोला, 'हमने स्वयं कहा था कि फ्रांस वाले बारसिलोना के अराजकतावादियों के लिए जान देने को तैयार नहीं हैं। नहीं, ठहरो! तुमने यह कहा था या नहीं? अच्छा ठीक है। और अब तुम्हीं बताओ फ्रांस वाले क्यों एक ऐसे राष्ट्र के लिए खून बहायें जो जबरदस्ती बनाकर खड़ा कर दिया गया है और जो क्रेमलिन के हाथों की कठपुतली है? पोल, तुम नहीं समझते, चेकोस्लोवाकिया मास्को की सबसे

अगली चौकी है। हिटलर का वहाँ घुसने की कोशिश करना बिल्कुल स्वाभाविक हो सकता है।'

जब ब्रेतील चला गया तो तेस्सा ने बैठकर हिसाब लगाना शुरू किया : दक्षिणपक्षी तो जंजीर तुड़ाकर भाग ही खड़े हुए—इसका अर्थ यह है कि दो सौ चालीस वोट विरुद्ध चले गये। ब्रेतील एक बात तो ठीक ही कह रहा था कि देश में फूट पड़ चुकी है। इस समय ग्राँदेल के मामले को उठाना ठीक होगा? लेकिन यह तो सरासर मूर्खता होगी। उसके विरुद्ध सबूत ही क्या था? बर्लिन को धमकी देने की बात कैसी रहेगी? लेकिन यदि हिटलर धमकी में न आया तो क्या होगा? दाँव तो बड़ा खतरनाक है! जनरल गैमेलो ने 'चेक मैजिनो लाइन' के बारे में लगातार तीन घंटे तक बातें कीं, किन्तु जब दलादिये ने मुँहफट बनकर प्रश्न कर दिया, तो गैमेलो बगलें झाँकने लगा और बोला, 'सरकार का जैसा आदेश होगा, सेना वही करेगी।' आज्ञा का पालन करना तो आसान था, किन्तु आज्ञा देना इतना आसान न था।

खाने के लिए उठने के पहले तेस्सा ने अपने मित्र जनरल पिकार को जिस पर उसे बड़ा विश्वास था बुला भेजा। पिकार नवयुवक और बड़े शान्त स्वभाव का था। जान पड़ता था जैसे वह फ्रांस की अजेय सेना का प्रतिरूप था। उसने तेस्सा को फूजे या ब्रेतील की तरह कड़े शब्द नहीं सुनाये और न बात टालने की चेष्टा की। उलटे उसने बहुत ही शान्ति से अपने विचार रखने शुरू किये।

'मैं प्रश्न के राजनीतिक पहलू को नहीं लेकर चल रहा हूँ,' वह बोला। 'मैं एक सैनिक हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि चेकोस्लोवाकिया की तरफ वाली लाइन के हाथ से निकल जाने पर हमें भारी धक्का पहुँचेगा। किन्तु जो वास्तविकता है, उससे मुँह मोड़ना ठीक नहीं होगा। मेरी समझ में फौजी तैयारी का हुक्म देने में हमें सफलता की आशा नहीं। देश का क्या रुख हो रहा है, यह आपसे छिपा नहीं। लोग समझ नहीं पाते कि क्यों सूडेटन लोगों के लिए उन्हें बलि चढ़ाया जाय? लड़ाई रोकने के लिये लड़ाई लड़ने का विचार लोगों को पसन्द नहीं। जहाँ तक जर्मनी का सम्बन्ध है...।'

'लेकिन चेक लोग उन्हें रोकें तो जरूर।'

'ठीक है, शायद एक सप्ताह तक! यह चाल कैंचीदार होगी। यह आक्र-

हमें लड़ना नहीं चाहिये और न हम लड़ेंगे। देश को शान्त रखो। इस घबराहट से सारे कारोबार पर असर पड़ रहा है। सट्टे बाजार में आज...।'

'लेकिन तुमने सुना या नहीं, कि इसी सप्ताह के अन्दर सूडेटन लोग विद्रोह करने वाले हैं ? सब कुछ ठीक-ठीक कर लिया गया है। जर्मन सेनाएँ सरहद पार करके देश के अन्दर प्रवेश करेंगी। हम लड़ाई से बच नहीं सकते।'

'अगर तुमने लड़ाई की तैयारी का हुक्म निकाला तो तुरन्त गृहयुद्ध छिड़ जायगा। फ्रांस की हार निश्चित है। इसमें संदेह नहीं, जर्मनी हमारा स्वाभाविक शत्रु है। किन्तु लड़ने की योग्यता भी तो होनी चाहिये। और तुम देख ही रहे हो आपस में कितनी फूट है ! कुछ लोग चाहते हैं कि सूडेटनों को जर्मनी के हवाले कर दिया जाय। जो चीज ईश्वर की है वह उसकी रहे और जो हिटलर की है वह उसे मिले—यह है तर्क मेरे दल के संसद सदस्यों का। कुछ भी रियायत देने के विरोधी कौन लोग हैं ? वही कम्युनिस्ट ! जनवादी मोर्चा, मास्को का उपासक फूजे ! उन्हें चेक लोगों की तिल बराबर परवाह नहीं। उन्हें तो अपनी स्थिति मजबूत करनी है। दस फी सदी फ्रांसीसी इस पक्ष में हैं कि समझौता कर लिया जाय, पाँच बेनेश का साथ देने को तैयार हैं; बाकी सभी लोग सारे किस्से को सुनते-सुनते तंग आ चुके हैं। मुझे आशा है, तुम कम्युनिस्टों के कहने पर तो नहीं चल रहे हो।'

'कम्युनिस्टों का इससे क्या सम्बन्ध ? यह प्रश्न तो चेक लोगों का है।'

'हाँ, लेकिन चेक लोग तो मास्को के कहने में हैं न !'

'और हम लोग ? हमारी ओर से कैशिन ने प्राग की सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं किये थे, हस्ताक्षर करनेवाला लवाल था। जहाँ तक परराष्ट्र नीति का प्रश्न है, उसमें दलबन्दी को नहीं आने देना चाहिये।'

'हम स्वर्ग में बैठे बातें नहीं कर रहे,' ब्रेतील बोला, 'हमने स्वयं कहा था कि फ्रांस वाले बारसिलोना के अराजकतावादियों के लिए जान देने को तैयार नहीं हैं। नहीं, ठहरो ! तुमने यह कहा था या नहीं ? अच्छा ठीक है। और अब तुम्हीं बताओ फ्रांस वाले क्यों एक ऐसे राष्ट्र के लिए खून बहायँ जो जबरदस्ती बनाकर खड़ा कर दिया गया है और जो क्रेमलिन के हाथों की कठपुतली है ? पोल, तुम नहीं समझते, चेकोस्लोवाकिया मास्को की सबसे

अगली चौकी है। हिटलर का वहाँ घुसने की कोशिश करना बिल्कुल स्वाभाविक हो सकता है।'

जब ब्रेतील चला गया तो तेस्सा ने बैठकर हिसाब लगाना शुरू किया : दक्षिणपन्थी तो जंजीर तुड़ाकर भाग ही खड़े हुए—इसका अर्थ यह है कि दो सौ चालीस वोट विरुद्ध चले गये। ब्रेतील एक बात तो ठीक ही कह रहा था कि देश में फूट पड़ चुकी है। इस समय ग्राँदेल के मामले को उठाना ठीक होगा? लेकिन यह तो सरासर मूर्खता होगी। उसके विरुद्ध सबूत ही क्या था? बर्लिन को धमकी देने की बात कैसी रहेगी? लेकिन यदि हिटलर धमकी में न आया तो क्या होगा? दाँव तो बड़ा खतरनाक है! जनरल गैमेलो ने 'चेक मैजिनो लाइन' के बारे में लगातार तीन घंटे तक बातें कीं, किन्तु जब दलादिये ने मुँहफट बनकर प्रश्न कर दिया, तो गैमेलो बगलें झाँकने लगा और बोला, 'सरकार का जैसा आदेश होगा, सेना वही करेगी।' आज्ञा का पालन करना तो आसान था, किन्तु आज्ञा देना इतना आसान न था।

खाने के लिए उठने के पहले तेस्सा ने अपने मित्र जनरल पिकार को जिस पर उसे बड़ा विश्वास था बुला भेजा। पिकार नवयुवक और बड़े शान्त स्वभाव का था। जान पड़ता था जैसे वह फ्रांस की अजेय सेना का प्रतिरूप था। उसने तेस्सा को फूजे या ब्रेतील की तरह कड़े शब्द नहीं सुनाये और न बात टालने की चेष्टा की। उलटे उसने बहुत ही शान्त से अपने विचार रखने शुरू किये।

'मैं प्रश्न के राजनीतिक पहलू को नहीं लेकर चल रहा हूँ,' वह बोला। 'मैं एक सैनिक हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि चेकोस्लोवाकिया की तरफ वाली लाइन के हाथ से निकल जाने पर हमें भारी धक्का पहुँचेगा। किन्तु जो वास्तविकता है, उससे मुँह मोड़ना ठीक नहीं होगा। मेरी समझ में फौजी तैयारी का हुक्म देने में हमें सफलता की आशा नहीं। देश का क्या रुख हो रहा है, यह आपसे छिपा नहीं। लोग समझ नहीं पाते कि क्यों सूडेटन लोगों के लिए उन्हें बलि चढ़ाया जाय। लड़ाई रोकने के लिये लड़ाई लड़ने का विचार लोगों को पसन्द नहीं। जहाँ तक जर्मनी का सम्बन्ध है...।'

'लेकिन चेक लोग उन्हें रोकें तो जरूर।'

'ठीक है, शायद एक सप्ताह तक! यह चाल कैंचीदार होगी। यह आक्र-

मण आस्ट्रिया की ओर से होगा। हंगरी वाले आगे बढ़ेंगे और पोल भी। तब जर्मन तुरन्त ही हमारे ऊपर आक्रमण कर देंगे। यह ठीक है कि हमारी रक्षा के लिये मैजिनो लाइन है। फिर भी...।'

'फिर भी क्या—?'

'हमारे पास थोड़े ही से हवाई जहाज हैं। हमारे विमान चालक भी अधिक होशियार नहीं। हमारी तोपें भी नई किस्म की नहीं हैं। स्पेन के अनुभव ने साबित कर दिखाया है कि...'

तेस्सा ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'तो तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि कुछ हो ही नहीं सकता?'

पिकार ने धीरे से मुसकराकर कहा, 'एक सैनिक के लिए 'असम्भव' नाम की कोई चीज नहीं होती। लेकिन कोई कदम उठाने के पहले आगापीछा सोच लेना चाहिये। चेकोस्लोवाकिया का हाथ से निकल जाना सैनिक हार से कहीं बेहतर है।'

पिकार के आने पर तेस्सा को काफी इत्मीनान हुआ था, लेकिन अब वह बड़ा उदास हो गया था। पिकार ने पेरिस के विनाश का बड़ा भयंकर चित्र खींचा था। यदि पिकार सारी बातें जानता है तो जर्मनों को भी अवश्य ही मालूम होंगी। केवल धमकी से अब काम नहीं निकलेगा। क्या किया जाय? हिटलर के सामने हथियार डाल दिये जायें?

वह देजेर के साथ भोजन कर रहा था। हालांकि देजेर जानता था कि कैसे बढ़िया भोजन कराकर तेस्सा को प्रसन्न किया जा सकता है, फिर भी आज का भोजन साधारण ही जान पड़ता था। तेस्सा ने खाने की सूची की ओर निगाह उठाकर भी नहीं देखा। जिस रेस्तराँ में दोनों बैठे थे वह किसी मर्साई-वाले का था क्योंकि लहसुन और अँगूर की पत्तियों की महक आ रही थी। यदि और कोई समय होता तो वह दक्षिण फ्रांस का प्राकृतिक सुन्दरता पर एक भाषण दे डालता। किन्तु इस समय उसका दिल मुर्दा था, क्योंकि उसे अपना पतन साफ दिखाई दे रहा था।

'होने क्या जा रहा है?' तेस्सा ने अँगड़ाई लेते हुए पूछा।

'हमें चुप रहना पड़ेगा। ब्रेतील से तुम्हारी बातें नहीं हुई?' देजेर बोला।

'हाँ, वह और उसके साथी काफी शोरगुल मचा रहे है। उनके लिए बेनेश एक 'बोल्शेविक'।'

देजेर यह सुनते ही ठहाका मार कर हँस पड़ा। 'वाह! पहला बोल्शेविक अजना था। देखना है तीसरा नम्बर किसका आता है। चेम्बरलेन का? क्या मजे की बात कही। किन्तु नतीजा साफ है : हमें चुप रहना पड़ेगा।... ईमानदारी की और सीधी-सादी लड़ाई तो अब असम्भव है। कोई भी लड़ाई इस समय छिड़ी तो उसे एक गृहयुद्ध का रूप धारण करने में देर नहीं लगेगी। एक समय था जबकि खतरा केवल गुप्त आन्दोलनों का या जनता में अशान्ति फैलने, अथवा सेना के विद्रोह का हुआ करता था।...लेकिन आजकल के दिनों में राज्य का कितना विशाल ढाँचा होता है, उसके पास कूटनीतिज्ञों की कितनी बड़ी संख्या है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके पास कितनी जबरदस्त वायु सेना है। स्वाभाविक है कि सभी लोग पूर्व की ओर सन्देह की दृष्टि से देखें। यदि रूसी हमारा साथ देते हैं तो ब्रेतील और उसके साथियों की सारी आशाओं पर पानी फिर जायगा। यदि वह हमारे खिलाफ जाते हैं तो मजदूरों का दिल बैठ जायगा। यदि वह लड़ाई से अलग ही रहना पसन्द करते हैं और अधिक उपयुक्त अवसर का इन्तजार करते हैं, तो हरएक की हिम्मत पस्त हो जायगी। हमारा मध्यमवर्ग तो हार और जीत दोनों से घबराता है। सब से ज्यादा खतरा उसे इस बात में मालूम होता है कि कहीं मास्को और भी शक्तिशाली न हो जाय। ऐसी परिस्थित में लड़ाई मोल लेने का तुक ही क्या है? यदि मजदूर 'अन्तर्राष्ट्रीय' गीत गाते फिरते हैं तो यह बात समझ में आ सकती है। लेकिन उधर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। गाने तो फिर भी गाने ही हैं। हमें तो चुपचाप रहना ही पड़ेगा।'

'लेकिन हमें किसी निर्णय पर तो पहुँचना ही होगा...।

'दूसरे लोग फैसला कर लेंगे...एक घंटा पहले मुझे लन्दन से टेलीफोन पर बुलाया गया था। मिस्टर चेम्बरलेन ने निश्चय किया है कि वह हिटलर के साथ समझौता कर लेंगे। मैं तुम से कहता हूँ वह पक्का धूर्त है। इसलिए तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। थोड़ी देर के लिए समझ लो कि हम एक ब्रिटिश उपनिवेश हैं। हो सकता है कल हम जर्मन राइख के एक प्रान्त मात्र रह जायें। तब ब्रेतील हमारा डिक्टेटर होगा। कितना बड़ा अत्या-

मण आस्ट्रिया की ओर से होगा। हंगरी वाले आगे बढ़ेंगे और पोल भी। तब जर्मन तुरन्त ही हमारे ऊपर आक्रमण कर देंगे। यह ठीक है कि हमारी रक्षा के लिये मैजिनो लाइन है। फिर भी...।'

'फिर भी क्या—?'

'हमारे पास थोड़े ही से हवाई जहाज हैं। हमारे विमान चालक भी अधिक होशियार नहीं। हमारी तोपें भी नई किस्म की नहीं हैं। स्पेन के अनुभव ने साबित कर दिखाया है कि...'

तेस्सा ने उसकी बात काटते हुए कहा, 'तो तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि कुछ हो ही नहीं सकता ?'

पिकार ने धीरे से मुसकराकर कहा, 'एक सैनिक के लिए 'असम्भव' नाम की कोई चीज नहीं होती। लेकिन कोई कदम उठाने के पहले आगापीछा सोच लेना चाहिये। चेकोस्लोवाकिया का हाथ से निकल जाना सैनिक हार से कहीं बेहतर है।'

पिकार के आने पर तेस्सा को काफी इत्मीनान हुआ था, लेकिन अब वह बड़ा उदास हो गया था। पिकार ने पेरिस के विनाश का बड़ा भयंकर चित्र खींचा था। यदि पिकार सारी बातें जानता है तो जर्मनों को भी अवश्य ही मालूम होंगी। केवल धमकी से अब काम नहीं निकलेगा। क्या किया जाय ? हिटलर के सामने हथियार डाल दिये जायें ?

वह देजेर के साथ भोजन कर रहा था। हालांकि देजेर जानता था कि कैसे बढ़िया भोजन कराकर तेस्सा को प्रसन्न किया जा सकता हैं, फिर भी आज का भोजन साधारण ही जान पड़ता था। तेस्सा ने खाने की सूची की ओर निगाह उठाकर भी नहीं देखा। जिस रेस्तराँ में दोनों बैठे थे वह किसी मर्साई-वाले का था क्योंकि लहसुन और अँगूर की पत्तियों की महक आ रही थी। यदि और कोई समय होता तो वह दक्षिण फ्रांस का प्राकृतिक सुन्दरता पर एक भाषण दे डालता। किन्तु इस समय उसका दिल मुर्दा था, क्योंकि उसे अपना पतन साफ दिखाई दे रहा था।

'होने क्या जा रहा है ?' तेस्सा ने अँगड़ाई लेते हुए पूछा।

'हमें चुप रहना पड़ेगा। ब्रेतील से तुम्हारी बातें नहीं हुईं ?' देजेर बोला।

'हाँ, वह और उसके साथी काफी शोरगुल मचा रहे है। उनके लिए बेनेश एक 'बोल्शेविक'।'

देजेर यह सुनते ही ठट्ठामार कर हँस पड़ा। 'वाह! पहला बोल्शेविक अजना था। देखना है तीसरा नम्बर किसका आता है। चेम्बरलेन का? क्या मजे की बात कही। किन्तु नतीजा साफ है : हमें चुप रहना पड़ेगा।... ईमानदारी की और सीधी-सादी लड़ाई तो अब असम्भव है। कोई भी लड़ाई इस समय छिड़ी तो उसे एक गृहयुद्ध का रूप धारण करने में देर नहीं लगेगी। एक समय था जबकि खतरा केवल गुप्त आन्दोलनों का या जनता में अशान्ति फैलने, अथवा सेना के विद्रोह का हुआ करता था।...लेकिन आजकल के दिनों में राज्य का कितना विशाल ढाँचा होता है, उसके पास कूटनीतिज्ञों की कितनी बड़ी संख्या है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके पास कितनी जबरदस्त वायु सेना है। स्वाभाविक है कि सभी लोग पूर्व की ओर सन्देह की दृष्टि से देखें। यदि रूसी हमारा साथ देते हैं तो ब्रेतील और उसके साथियों की सारी आशाओं पर पानी फिर जायगा। यदि वह हमारे खिलाफ जाते हैं तो मजदूरों का दिल बैठ जायगा। यदि वह लड़ाई से अलग ही रहना पसन्द करते हैं और अधिक उपयुक्त अवसर का इन्तजार करते हैं, तो हरएक की हिम्मत पस्त हो जायगी। हमारा मध्यमवर्ग तो हार और जीत दोनों से घबराता है। सब से ज्यादा खतरा उसे इस बात में मालूम होता है कि कहीं मास्को और भी शक्तिशाली न हो जाय। ऐसी परिस्थित में लड़ाई मोल लेने का तुक ही क्या है? यदि मजदूर 'अन्तर्राष्ट्रीय' गीत गाते फिरते हैं तो यह बात समझ में आ सकती है। लेकिन उधर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। गाने तो फिर भी गाने ही हैं। हमें तो चुपचाप रहना ही पड़ेगा।'

'लेकिन हमें किसी निर्णय पर तो पहुँचना ही होगा...।

'दूसरे लोग फैसला कर लेंगे...एक घंटा पहले मुझे लन्दन से टेलीफोन पर बुलाया गया था। मिस्टर चेम्बरलेन ने निश्चय किया है कि वह हिटलर के साथ समझौता कर लेंगे। मैं तुम से कहता हूँ वह पक्का धूर्त है। इसलिए तुम्हें चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं। थोड़ी देर के लिए समझ लो कि हम एक ब्रिटिश उपनिवेश हैं। हो सकता है कल हम जर्मन राइख के एक प्रान्त मात्र रह जायें। तब ब्रेतील हमारा डिक्टेटर होगा। कितना बड़ा अत्या-

चार है। लेकिन तुम कर ही क्या सकते हो। फ्रांसवालों में कमजोरी आ गई है। मैं फिर कहता हूँ, हमें चुप रह जाना पड़ेगा।'

वह खाता रहा और देजेर उसे देख देखकर मुसकराता रहा।

'जब मेरी चाची का देहान्त हुआ था,' तेस्सा बोला, 'तो मेरे चाचा ने दो बत्तखें एक साथ खा डाली थीं, वह भी यह कहते हुए कि 'मारे शोक के उन्होंने ऐसा किया...।' जब तेस्सा लौटकर घर पहुँचा तो उसकी तबीयत काफी हलकी हो चुकी थी।

'क्या अभी तक शराब उड़ रही थी?' अमेली ने पूछा।

'नहीं तो। लेकिन आज खाने को खूब मिला। इसके अलावा काफी अच्छी राजनीतिक खबर भी सुनने में आई। तुम नहीं समझ पाओगी—बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी बातें हैं। हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि हमें चुप रह जाना पड़ेगा।'

यह कह कर उसने अपना पतलून उतारना और गुनगुना शुरू किया, 'चुप रहना पड़ेगा...चुप...चुप...।'

१०

जोलियो ने शिकायत शुरू की, 'उन्होंने मुझे भूखों मारने की बड़ी कोशिश की लेकिन फिर भी मैं दुबला नहीं हुआ, लेकिन आज शायद मेरा वजन पाँच पौंड घट गया होगा।' सम्पादक का दफ्तर क्या था मानो किसी सेनापति का हेड-क्वार्टर हो गया था। जोलियो एक जनरल की तरह काम कर रहा था; उसके पास रहस्यपूर्ण बंडल आते, वह रहस्यपूर्ण आज्ञाएँ देता। सामने दीवार पर चेकोस्लोवाकिया का एक भारी नक्शा टंगा था। वास्तव में उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था और वह मारे चिन्ता के दुबलाता जाता था। उसे डर था कि कहीं देजेर, जो अब भी 'नई आवाज' को आर्थिक सहायता देता था, नाराज न हो जाय। लेकिन देजेर से कुछ मालूम कर सकना असंभव था। वह केवल यही कहता था, 'सरकार का समर्थन करो!' लेकिन समर्थन किया भी जाय तो किसका? मंत्रिमंडल में स्वयं इस प्रश्न पर एक मत न था।

दलादिये मांडेल के विरुद्ध षड्यंत्र कर रहा था, तेस्सा रेनो के विरुद्ध। और हर एक यह आशा करता था कि जोलियो उसका समर्थन करेगा।

देजेर की बदौलत, 'नई आवाज' एक सब से बड़ा और प्रभावशाली समाचारपत्र बन गया था। जोलियो उसे धोखा देने मे नहीं चूकता था। परराष्ट्र विभाग के गुप्त कोष से उसे रुपया मिला करता था, साथ ही अनेक राजनीतिक पार्टियों से घूस लेने मे भी उसे शर्म न थी। कभी-कभी उसे अपने इस ओछेपन पर लज्जा भी आती थी। कभी वह सोचता कि अगर देजेर को इसका पता चल गया तो क्या होगा? लेकिन वह यह कहकर अपने मन को ढाँढ़स दे लेता था कि कोई बात नहीं, मेरे पास और भी तो बहुत से साधन हैं।

देशवालो की समझ मे भी नहीं आता था कि आखिर यह सब हो क्या रहा है। कुछ समाचारपत्र तो लिखते थे कि हिटलर स्ट्रासबर्ग पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा है, कुछ कहते थे कि चेक लोग सूडेटनो पर घोर अत्याचार कर रहे हैं और फ्रांस का इस मामले मे कोई वास्ता नहीं। एक दर्जन अखबार पढ़ लेने के बाद भी लोग एक दूसरे से यही पूछते, 'आखिर इस सब का मतलब क्या है? होने क्या जा रहा है? इस बीच शहर मे रोज-मर्रा वही चहलपहल रहा करती थी अंगूर के बागों के मालिक फसल काटने की तैयारी कर रहे थे, थियेटरों मे खेल-तमाशे जारी थे और स्कूली लड़के पढ़ाई के नये साल के शुरू होने का इन्तजार कर रहे थे। स्त्रियाँ चीनी और चावल खरीदते समय कह उठती, 'लड़ाई न हो तो कितना अच्छा है!'

शाम को बड़ी चिन्ताजनक खबर सुनाई पड़ी कि चेम्बरलेन की दूसरी यात्रा असफल रही। जोलियो ने जोर से हाथ को झटका दिया। वह तैयार बैठा ही था कि 'शान्ति के इस दूत' की अहिंसात्मक विजय के ऊपर दो कालम का सम्पादकीय लेख लिख मारे। वाह, क्या कहना 'शान्ति के दूत' का, यह उम्र और दो-दो बार हवाई यात्रा करने की हिम्मत! और अब फिर वही पेचीदगियाँ फिर से आ खड़ी हुई। जोलियो ने दफ्तर के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर काटना शुरू किया, उसकी समझ मे नही आ रहा था कि क्या करे। इतने मे देजेर ने अचानक उसे टेलीफोन पर बुलाकर कहा, 'अभी आकर मुझसे मिल लो।'

११

आंद्रे तमाम दिन पेरिस की सड़कों पर चक्कर काटता रहा। लोग घबराहट से भरे थे। जिधर देखिये यही बातें हो रही थीं—'लड़ाई होगी ? लड़ाई नहीं होगी !' शाम को थका मांदा वह अपने मुहल्ले में पहुँचा। वहाँ भी यही हाल था। मोची चिल्ला रहा था, 'अगर उनको रोका न गया तो वे यहाँ तक बढ़ आयेंगे, भूखे चूहों की तरह !' उस बूढ़े कबाड़ी की पत्नी ब्वालो, जिसके बाल सफेद हो रहे थे, कह रही थी, 'अच्छा, तुम्हीं बताओ, फ्रांस को इस से क्या वास्ता ? कभी तुमने किसी जिन्दे चेकोस्लोवाक को देखा है ?' 'तम्बाखू पीने वाले कुत्ते' के कहवाखाने में एक ग्राहक यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा था कि जर्मनों को अधिक भूमि की आवश्यकता है, 'उदाहरण के तौर पर कहवाखानों का ही हाल देखिये। एतवार के दिन क्या हालत होती है ? बाहर जहाँ मेजें नहीं लगनी चाहिये, उससे भी दूर तक लगती चली जाती हैं। यह बिल्कुल स्वाभाविक है।' कहवाखाने का मालिक बिगड़ कर उत्तर दे रहा था, 'लेकिन इसके लिए जुर्माना भी तो देना पड़ता है।'

कबाड़िये की दूकान में रखी चीजों पर आँद्रे की नजर गई और उसे कुछ आराम सा मालूम हुआ। न जाने कितनी तरह की चीजों का जमघट लगा था। सामने एक काली हब्शी मूर्ति रखी थी, जो बड़ी शान के साथ संसार-वालों को अपने दैवी संबन्ध का परिचय दे रही थी। तश्तरियाँ अधिक नहीं चमक रही थीं। सफेद और नीली चीनी मिट्टी के बर्तन, सुन्दर और चिकने रूएन में बने बर्तन। हाथी दाँत के बटन, सुंघनी की डिब्बियाँ। ईरानी फीरोजे वैलेंशिया, ब्रूजे और वेनिस के बने हुए गोटेकिनारी, नीला शीशा, इंगलैंड की बनी घुड़दौड़ की तस्वीरें—रंगीन जाकिट पहने हुए जॉकी, हलके पीले रंग के घोड़े। किसी कीमियागर के भभके की तरह भारी, शानदार किन्तु रहस्यपूर्ण हुक्का। अप्सराओं की मूर्तियाँ, सिक्के, नकली बालों के गुच्छे, मोम के बने

गुलाब के फूल। न जाने इन चीजों को बनाने में कितना परिश्रम करना पड़ा होगा!

अगली दूकान एक ग्वाले की थी। सामने रखे हुए पनीर के ढेर को देख कर आंद्रे ऐसा मुग्ध हो गया मानो वह प्राचीन महान् कलाकारों की बनाई तसवीरों के सामने खड़ा हो। डच पनीर के लाल गोले, स्वीस पनीर का लिब-लिबा ढेर, पार्मेशन पनीर, सूखा, मोम की तरह का रोकफोर पनीर संगमर्मर की तरह सफेद।

आगे चलकर एक शराब की दूकान थी। बोर्दो की अच्छी लम्बी बोतलें, जिन्हें सिनेट के सदस्य, बड़े-बड़े विचारक तथा वैज्ञानिक पसन्द करते थे; बर्गोदी की बड़ी साईज की बोतलें, जिन्हें अधिकतर बड़े-बूढ़े पीते थे।

इसके बाद वह दूकान थी, जिसके सामने वह अक्सर खड़े होकर दराजों में रखे पाइपों को ताका करता था। लम्बे, सीधे, टेढ़े, शौकीन मिजाज लोगों के लिए, छोटे मल्लाहों के लिए भारी, काले, भूरे हलके लाल रंग के पाइप। दूकानदार ने उत्सुकतापूर्वक पूछना शुरू किया: तुम्हारी क्या राय है लड़ाई होगी?' आंद्रे कुछ नहीं बोला। वह टहलते-टहलते घर लौट आया। थोड़ी देर में पियेरे भी पहुँचा। सदा की भाँति वह इस समय भी जल्दी ही सब कुछ कह डालना चाहता था। शाम को फैक्टरी गेट पर मीटिंग होने वाली थी, और मजदूर बड़े उत्तेजित थे। यद्यपि पियेरे की उम्र अब ढल रही थी लेकिन उसमें उतावलापन अभी तक वैसा ही था। परिस्थिति जिस तरह नाजुक होती जा रही थी, उससे वह बड़ा घबराया सा हुआ था और जो कुछ वह कहना चाहता था उसे समाप्त नहीं कर पा रहा था। उसने बराबर रेडियो खोलना और बन्द करना शुरू किया और आखिर में जोर-जोर से कहने, 'लगा हर चीज की एक हद होती है। अब मजदूर पीछे नहीं हट सकते। विनाश के किनारे तक पहुँच चुके हैं। किन्तु फिर भी डर तो उन्हें है ही...!तुमने विलार का लेख पढ़ा? कितना अपमानजनक है! किन्तु मजदूर वर्ग......'

आंद्रे ने बात काटते हुए कहा, 'वह तो सपने देखता है। लेकिन मेरा क्या, मैं तो कुछ समझता भी तो नहीं। सदा यही रहा। क्या राय है तुम्हारी? तुम लड़ाई चाहते हो? बड़ी गन्दी चीज़ है। वर्साई गैलरी में देखो न हर तरफ़ जनरलों की तस्वीरें, और झंडे ही नजर आते हैं। लड़ाई का अर्थ है, कीचड़-

पानी में मरना और खटमलों और जुओं का शिकार बनना। मैं तुमसे ठीक कहता हूँ, मेरी समझ में नहीं आता कि क्या होगा। तुम्हारा तो खैर सब ठीक ही है। पहली बात तो यह कि तुम्हारे पास—' उसने अपना भारी अँगूठा मोड़ते हुए कहा, 'एग्नेस है। फिर तुम्हारे एक बच्चा है। इसके अतिरिक्त, और सबसे बड़ी चीज यह है है—तुम्हारे सामने कुछ उद्देश्य हैं। लेकिन मेरे पास क्या है? कुछ नहीं!'

'लेकिन तुम्हारी कला तो है!'

'कला? यह सब केवल बात है, पियेरे। वातावरण अनुकूल नहीं है। कल मेरे पिता की चिट्ठी आई है। वे जानना चाहते हैं कि लड़ाई की क्या सँभावना है—वह भी अपने सेबों के बाग के लिए। मैं भी जानना चाहता हूँ—अपनी तस्वीरों के लिए। लेकिन मैं किससे पूँछू? यदि इस समय किसी प्रकार टलभी गई तो साल दो साल में फिर होगी। और तुम चाहते हो कि मैं कला के नाम पर जीता रहूँ? सभी चीजें गतिहीन मालूम पड़ती है। फिर से चालू करने में काफी समय लगेगा। आज मैंने एक बड़ा विचित्र पाइप देखा। उसके रेशे ऊपर की ओर हैं। जानते हो पाइप किस चीज का बनता है? हेदर की मुरदार जड़ों का। समझे? लेकिन उसे सौ वर्ष तक जमीन के अन्दर पड़ा रहना पड़ता है। और हमारे पास क्या है? हड़तालें, प्रदर्शन अथवा हिटलर—या सूडेटन जर्मनों को गालियाँ देना। ऐसी अवस्था में तुम आशा करते हो कि मैं शान्तिपूर्व बैठकर कला की साधना करूँगा? मैं सच कहता हूँ तुमसे—सब बेकार है!'

रेडियो पर खामोशी थी। जानेत का कोई पता न था। आंद्रे के लिए यह एक अनहोनी-सी और बड़ी कष्टदायक बात थी। 'मालूम होता है समझौता नहीं हो पाया,' उसने कहा। 'मुझे तो डर यह लगता है कि कहीं दलादिये ने धोखा न दिया हो।'

तरह-तरह के विचार उसके मन में उठ रहे थे। रोज की तरह के ब्राडकास्ट के बजाय, जानेत की आवाज के बजाय, आज केवल घड़ी की टकटक सुनाई पड़ रही थी। एकाएक किसी ने अनमने ढङ्ग के बोलना शुरू किया, 'फौज में भर्ती होने लायक लोग जिनके नाम 'अ' और 'ब' से शुरू होते हैं...'

आँद्रे का चेहरा खिल उठा। उसके ऊपर से जैसे एक भारी बोझ हट चुका था। अब उसके लिए सोचने-विचारने का काम दूसरे लोग करेंगे।

'खूब रहा! क्या राय है?' उसने पूछा।' इसका तो मतलब यही है कि लड़ाई होने जा रही है।'

'मुझे ट्रेन पकड़नी है,' पियेरे ने कहा। 'मुझे डर लगता है कहीं देर न हो जाय। अच्छा, चलूँ!'

पियेरे ने सलाम तो कर लिया, लेकिन वह गया नहीं। इस विदाई ने दोनों को व्याकुल कर दिया था। आँद्रे पियेरे को एक बच्चे के पिता, इंजीनियर और एक समाजवादी के रूप में नहीं देख रहा था। उसके सामने वह उसके एक सहपाठी, एक शरारती लड़के की शक्ल में था, जिसने बारह साल की उम्र में एक बार आंद्रे को राय दी थी कि बड़े होकर दोनों ग्रीनलैंड की यात्रा पर चलेंगे।

आँद्रे ने याद दिलाते हुए कहा, 'याद है तुम्हें ग्रीनलैंड चलने की बात, ह्वेल मछली का शिकार करने के लिए? हम लोग भी क्या-क्या सपने देखा करते थे! शायद फौज में भर्ती होने के लिए तुम्हें भी बुला लिया जाय। यह बिल्कुल निश्चित है कि इस बार हम लोग मक्खियों की तरह पीस डाले जायेंगे। बहुत दिनों की बात है, कहवाखाने में एक जर्मन मेरे ही पास बैठा हुआ था। वह पक्का जर्मन था। मैं समझा कि वह जर्मनी से भाग कर हमारे देश में शरण लेने आया है, लेकिन वह तो कट्टर जर्मन निकला। उसे मछलियों से बड़ी दिलचस्पी थी। उसने मेरे पेन्ट किये हुए प्राकृतिक दृश्यों की भी बड़ी प्रशंसा की। शराब के नशे में उसने कहना शुरू किया कि लड़ाई छिड़ना तो निश्चित है और इस बार जर्मन पेरिस को तहस-नहस कर डालेंगे। अजीब आदमी था! ताज्जुब तो मुझे इस बात का है कि उसे भी फौज में भर्ती होने के लिए बुलाया गया है। इसका अर्थ तो यह हुआ कि हो सकता है उसका मुझ ही से मुकाबला पड़ जाय! छिः छिः! फिर भी, पियेरे, मैं खुश हूँ, क्योंकि कम से कम इतना तो हुआ ही कि जो अनिश्चितता थी वह खत्म हो गई। लड़ाई छिड़ गई तो फिर ठीक है, लड़ाई ही होगी!'

इसके बाद पियेरे वहाँ से चला गया।

१२

ब्रेतील के लिए खड़ा रहना भी मुश्किल हो रहा था। कई रात न सो सकने के कारण उसकी आँखें लाल हो रही थीं। केवल हृष्ट-पुष्ट शरीर और प्रबल इच्छा-शक्ति की बदौलत वह चल फिर रहा था। समझौता किसी न किसी प्रकार होना ही चाहिये। जर्मनी के साथ समझौता करना सम्भव था। मुख्य चीज यह थी कि किसी प्रकार मास्को से जो समझौता हुआ था, उसे किस तरह फाड़ फेंका जाय। घटनाएँ बड़ी तेजी के साथ घटित हो रही थीं। हिटलर इन्तजार करने वाला नहीं था। 'शान्ति का दूत' व्यर्थ हवाई जहाज से उड़-उड़ कर जर्मनी पहुँचता था। फ्रांस में जनवादी मोर्चेवाले जोर दे रहे थे कि हर प्रकार से हिटलर का सामना किया जाय। ब्रेतील लेख और पुस्तिकाएँ लिखता, बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञों से परामर्श करता, अपने अनुयायियों को आदेश देता, सैनिक अफसरों को जनरल पिकार के जरिये हुक्मनामें भेजता।

पेरिस में रात को रोशनी गुल रहने लगी। रात के अँधेरे में ब्रेतील के एजेंट अपना काम करते। वे लोगों को भड़काते फिरते और उनसे कहते, 'चेक लोग स्वयं अपराधी हैं। लड़ाई के पक्ष में केवल धनी यहूदी हैं!' 'मैन्डेल भी लड़ाई चाहता है! उसका असली नाम रोद्सचाइल्ड है। वेनेश ने उसे घूस देकर फोड़ लिया है। लेकिन जानें तो हमारे आदमियों की जायेंगी!' 'जर्मनी के पास एक लाख वायुयान हैं। पहले ही दिन वे पेरिस को भून डालेंगे...!'

नगर के धनी मुहल्ले तेजी से खाली हो रहे थे। हवाखोरी के स्थान उजड़ रहे थे। अखबारों की रिपोर्टों से भयभीत होकर हवाखोरी करने वाले राजधानी में वापस लौट आये थे। लेकिन जब लड़ाई की तैयारी का एलान हुआ और नगर में अंधेरा रखने का हुक्म हुआ, तो पैसेवालों ने पेरिस से अपने बालबच्चों को दूर भेजना आरंभ किया। यही कारण था कि समुद्र तट के

स्थान और पहाड़ी गाँव, जो वर्ष के इन महीनों में बिल्कुल उजाड़ पड़े रहते थे, फिर चहल पहल से भर गये थे।

लेकिन मजदूर बस्तियों में कुछ और ही हाल था। लड़ाई की खबर ाकर प्रसन्न तो कोई नहीं हुआ था, किन्तु लोग शान्तिपूर्वक अपने देश की रक्षा के लिए लड़ाई के मोर्चे को जा रहे थे। वे जानते थे कि देश के सामने एक संकट उपस्थित है, उसे अपनी रक्षा करना मुश्किल हो रहा है। लेकिन वे यह भी समझते थे कि इस प्रकार का जीवन अधिक दिनों तक नहीं चलाया जा सकता। 'आक्रमणकारी' शब्द का अर्थ सबकी समझ में आ गया था। यही नहीं, वह तो हर एक की जबान पर था। रिजर्व सैनिक अक्सर जब जाने लगते तो मजदूरोंवाला अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाते। उन्हें देश के भविष्य में पूर्ण विश्वास था। वे शत्रु का सामना अवश्य करेंगे; यही नहीं, वे अपने देश में भी उसके एजेन्टों को नहीं छोड़ेंगे। वे ब्रेतील, उसके अनुयायियों और दोरियों को खूब ‹हचानते थे।

राष्ट्रवादी सदस्यों की एक सभा में बोलते हुए ब्रेतील ने कहा, 'कोई लड़ाई नहीं होगी और न हो सकती है! चेक लोगों की मास्को के साथ सन्धि है, जिसका अर्थ यह है कि हम कम्युनिज्म की रक्षा के लिए लड़ें। समझौता होना बहुत जरूरी है। आप लोग जरा गंभीरतापूर्वक सोचिये। बोल्शेविज्म हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। स्पेन में राष्ट्रीय युद्ध अभी तक चल रहा है। इंगलैंड एक टापू पर बसा होने के कारण इस महामारी से सुरक्षित है। अंग्रेज भले ही लम्बी चौड़ी बातें बनाकर, डरा-धमकाकर काम चला लें, किन्तु यूरोप को कम्युनिज्म के खतरे से बचाने वाला कौन हो सकता है, सिवा हिटलर के? इस प्रकार हम देख रहे हैं कि जो हमारे मित्र बनते हैं, वही हमारे सब से बड़े शत्रु हैं, और जो आज हमारे शत्रु जान पड़ते हैं, वे ही हमारे सच्चे मित्र हैं!'

सीन कारखाने के मजदूरों की सभा जल्द ही समाप्त हो गई। लोग अब शब्दों के जाल में फंसने को तैयार न थे। सब जानते थे कि देश की बागडोर ऐसे निकम्मे और कायर लोगों के हाथों में है, जो किसी समय भी गद्दारी कर सकते हैं। मजदूर लड़ने के लिए तैयार जरूर थे, किन्तु उनमें न चहल पहल थी और न उत्साह था। उन्होंने तय किया कि चेकोस्लोवेकिया के फ्रांस स्थित

राजदूत से एक प्रतिनिधि मंडल जाकर मिले और उसे आश्वासन दे कि फ्रांस के मजदूर चेक लोगों के साथ हैं।

चेक दूतावास में लेग्रे जब तक रहा बराबर चुपचाप रहा। सारी बातचीत पियेरे ने की। दूतावास का प्रथम सचिव वानेक पियेरे की जोशीली बातों और भाषा पर उसके असाधारण अधिकार को देखकर दंग रह गया। उसने महसूस किया कि यह शख्स न मजदूर हो सकता है और न कम्युनिस्ट, बल्कि एक स्वतंत्र विचारोंवाला आदमी है, ठीक स्वयं उसकी तरह।

'तुम जो कुछ कह रहे हो उससे मुझे बड़ी खुशी हो रही है,' वानेक बोला। 'अच्छा ही है, तरह तरह के विचारों वाले लोग यहाँ आते हैं, वरना यह प्रभाव पड़ता है कि केवल कम्युनिस्ट ही हमारे साथ हैं।'

'मैं भी कम्युनिस्ट हूँ,' पियेरे ने जरा सख्ती से कहा।

वानेक मुसकरा दिया।

१३

ल्युसियां को फौज में भर्ती होने का बुलावा बड़ा ही सुखप्रद प्रतीत हुआ। गर्मी के दिनों के बाद से उसका जीवन बड़ा दुखपूर्ण रहा था। जिस बात से वह डर रहा था, अन्त में हुई वही—वह अपने पिता से अलग हो गया है यह खबर जोलियो के कानों तक पहुँच चुकी थी, और उस नाटे और मोटे से सम्पादक ने, जिसे ल्युसियां से घृणा थी, रेस सम्बन्धी स्तंभ अपने भतीजे को दे दिया। ल्युसियां के पास आमदनी का और कोई साधन न रहा। अब भूख और गन्दे कपड़ों से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। कई शाम उसे बिना सिगरेट के रह जाना पड़ता था। खाने के समय वह होटल से अकसर गायब हो जाता ताकि होटलवाला, जो बिलों को उसके नियमित रूप से न अदा करने के कारण उसे शक की निगाह से देखता था, यह न समझे कि ल्युसियों के पास खाने को पैसा नहीं है। वह तेज धूप में सड़कों पर मारा-मारा फिरा करता।

एक रोज उसे अपनी माँ का एक पत्र मिला। उसमें लिखा था, 'मेरा स्वास्थ्य दिनों दिन खराब होता चला जा रहा है। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि

अपने पिता से मेल करलो !' पत्र पढ़ते ही ल्युसियां को अपने बचपन की याद आ गई जब वह एक बार बहुत बीमार हो गया था। उसे अपने ऊपर दया आने लगी। उसने सोचा इस समय माता की राय मान लेना ही उसके लिए ठीक होगा। उसने पत्र का उत्तर लिखने के लिए कागज का एक टुकड़ा उठाया, लेकिन फिर उसे मोड़ माड़कर फेंक दिया। नहीं, हरगिज नहीं ! वहाँ रहने-खाने का बहुत आराम है, तो क्या हुआ इसके लिए वह अपने आत्म-सम्मान को ठेस नहीं लगने देगा।

किन्तु दो एक दिन बाद ही ऐलान हुआ कि म्युनिख में समझौता हो गया ! ल्युसियां को अपने ऊपर हँसी आई; उसे फिर एक बार बेवकूफ बनाया गया ! उसने जोर से जँभाई ली। हजारों-लाखों लोगों की तरह वह भी नगर में अँधेरा रखने, टैंकों के सड़कों पर दौड़ने और लड़ाई की तैयारी होने से धोखे में आ गया था। लेकिन उसे नहीं मालूम था कि उसका पिता इस धूमधाम से फायदा उठा रहा था और अपने लिए लोक सभा में अधिक वोटों को बन्दो-बस्त कर रहा था।

किस्मत को भी उस पर दया आ गई। मेदलीन के समीप ही एक दिन अचानक उसे अपना पुराना प्रकाशक गोतिये मिल गया। और कोई समय होता तो गोतिये उससे कतरा कर निकल जाने की कोशिश करता; किन्तु आज वह बड़ा घबराया हुआ था। सवेरे वह अपनी तीन वर्षीय बच्चों की चारपाई पकड़ कर इस तरह फूट फूट कर रो रहा था जैसे अपनी जान देकर ही मानेगा। अचानक 'नई आवाज' के विशेष संस्करण पर उसकी नजर पड़ी और जान में जान आई।

'मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा है,' वह जोर से चिल्ला कर बोला। 'देखो न, किस्मत ने कैसा जोर मारा ! मुझे कल ही कोलमार जाने का हुक्म था, तोपखाने के साथ सार्जेन्ट बनकर। और अब......!' उसने ठीक से साँस लेने की कोशिश करते हुए पूछा, 'तुम्हारा क्या हाल है ?'

ल्युसियां को याद आया कि इससे पैसे झटकने हैं। रहस्यपूर्वक हँसते हुए वह बोला, 'मेरे ऊपर तो एक और आफत टूट पड़ी है न। जब यह सब हुल्लड़ शुरू हुआ तो मैं एक ऐक्ट्रेस के साथ त्रुवील में था। मुझे किसी प्रकार पता

था कि लड़ाई नहीं होगी, किन्तु अचानक यह सुनाई पड़ा कि फौजी भर्ती के लिए बुलाहट है और मुझे उसे वहीं छोड़कर चला आना पड़ा। अब मुझे त्रुवील जाकर उसे लाना है। छुट्टी तो मुझे मिल गई है किन्तु सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि आज बैंक बन्द हैं और मैं कल तक ठहरना नहीं चाहता। यदि हो सके तो इस समय मेरी सहायता करो, मैं तुम्हारा ऋणी रहूँगा। अगर कोई कष्ट हो तो...'

'अरे नहीं, कष्ट कैसा!...' गोतिये ने अपना बैग निकाला और एक हजार फ्राँक का एक नोट थमा दिया।

दोनों एक शराबखाने में पहुँचे और वहाँ बढ़िया शराब पी। ल्युसियां की तबीयत कुछ ठिकाने लगी। गोतिये से विदा होकर उसने एक टैक्सी पकड़ी और 'मोंपरनास' की ओर चल दिया! एक बड़े रेस्तराँ में उसने तरह-तरह की खाने की चीजें लाने का हुक्म दिया। उसके चारों ओर बैठे हुए लोग खुशियाँ मना रहे थे। मंडली के हीरो कुछ फौजी मालूम पड़ते थे। वे कुछ थके से जान पड़ते थे, मानो अभी-अभी मोर्चे से लौटे हों। कुछ तो अभी वर्दी पहने थे, दाढ़ी किसी की नहीं बनी थीं। ल्युसियां ने शांवरतैं की एक बोतल खाली की। उसके चेहरे पर एक अजीब बेहूदा-सी मुसकराहट थी। उसे इस समय न किलमान की परवाह थी न अपने होटल के मालिक की और न अपनी फटी हालत की। एक बार फिर से वह एक प्रसिद्ध लेखक होने जा रहा था, सुरियलिस्टों का मित्र, ठाटबाट वाला वकील, एक सुन्दर ऐक्ट्रेस का प्रेमी। उसे जीवन के आनन्द एक बार फिर प्राप्त होने जा रहे थे।

ल्युसियां को जरा भी आश्चर्य न हुआ जब ग्विलो, जो एक पिक्चर गैलरी का मालिक था और जिसे उसने तीन वर्ष से नहीं देखा था, आकर जोर से बोला, 'तुम कभी कभी गैलरी क्यों नहीं आते? अरे दोस्त, मुझे एक मोती मिला है, सच्चा मोती!'

ग्विलो के पाँव लड़खड़ा रहे थे। उसका गोल, लाल चेहरा तमतमा रहा था। उसने बटन में एक सफेद फूल, जिसकी पंखड़ियाँ झड़ गई थीं, लगा रखा था। वह ल्युसियां को घसीटकर अपनी मेज पर ले गया। ल्युसियां भी तैयार था, क्योंकि वहाँ उसकी नजर एक स्त्री पर पड़ी जो बड़ी आकर्षक मालूम पड़ती थी। ग्विलो ने एक हिचकी ली और कहा, 'पास आओ। यही हैं

वह मोती—आप हैं जेनी, एक कलाकार; और आप हैं हमारे एक सुविख्यात लेखक—ल्युसियां तेस्सा। कृपया इनके नाम से इनके पिता की गलतफहमी में न पड़ें।'

ल्युसियां जोर से हँस पड़ा। उसने कहा, 'क्या बकते जा रहे हो? मैं भी कोई लेखक हूँ। हाँ, रेस के घोड़ों का मैं जरूर जानकार हूँ।'

जेनी उसकी ओर आँखें फाड़कर देखने लगी। वह बोली, 'मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी है। वही जो मृत्यु के बारे में है। मैंने आपका उसी प्रकार इन्तजार किया है, जैसे बगदाद वाले माली का मौत ने इन्तजार किया था।'

उसके अंग्रेजी स्वर के कारण उसकी बातचीत से बचपन-सा टपकता था। ल्युसियां ने अपने मन में सोचा, इसने दो-एक गिलास जरूर चढ़ाया है लेकिन सुन्दरता भी कैसी गजब की है! बैठकर एक गिलास शैम्पेन पीने के बाद वह बोला, 'मैं भी आपका इन्तजार करता रहा हूँ, किन्तु एक सुन्दरी के रूप में ही। अच्छा आओ, हम एक दूसरे से और परिचित हो लें। लेकिन पहले एक गिलास पी लिया जाय।'

'ठीक है। लेकिन मैं ह्विस्की ही पीती हूँ।'

जेनी का जन्म और उसका पालन-पोषण केन्टकी, अमेरिका, के एक छोटे से उजाड़ नगर में हुआ था। उसका पिता मेथोडिस्ट था और प्लाईउड का काम करता था। बचपन से ही जेनी में काफी उत्साह था। उसने कीट्स और शेली की कविताएँ पढ़ी थीं। वह रोमन कैथोलिक बनना चाहती थी। उसने हबशियों के दुखमय जीवन पर कई कहानियाँ लिखी थीं और जब अमेरिका के राष्ट्रपति विल्सन युरोप यात्रा से देश वापस लौटे तो उनका स्वागत करने पहुँची। अट्ठारह वर्ष की उम्र में उसने एक फेरीवाले फोटोग्राफर से, जिसने उससे हालीवुड ले चलने का वादा किया था, विवाह कर लिया। किन्तु थोड़े ही दिनों बाद उसे तलाक देकर वह हालीवुड जा ही पहुँची। वह एक फिल्म-स्टार बनना चाहती थी। लेकिन वहाँ उसे दरिद्रता और अपमान का सामना करना पड़ा। सहायक डायरेक्टर और स्टूडियो के प्रबन्धक तुरन्त कहते, 'आज रात को हमारे साथ भोजन करो और फिर...।' वह नाराज होकर इस प्रकार के सभी प्रस्तावों को ठुकरा देती। तब उसने पेन्टिंग का काम शुरू

किया। खाली पेट वह प्राकृतिक दृश्य पेन्ट करने चली—भूरी मिट्टी, थूहड़ के पेड़ और तरह-तरह के मकान। योग्यता में उसके कोई सन्देह न था किन्तु उधर उसकी रुचि न थी। अचानक उसकी किस्मत ने फिर पलटा खाया; लासएंजेल्स का एक इन्जीनियर उसके प्रेम में फँस गया। वह भी उसकी ओर आकर्षित हुई और दोनों का विवाह हो गया। गरीबी से निकल कर जेनी फिर धन-वैभव के संसार में पहुँची। घर में वह इन्जीनियर बड़े ही स्नेह और सहृदयता से पेश आता था। यहाँ तक कि जेनी कभी-कभी कहती, 'मुझे मालूम न था कि वास्तविक प्रेम इसे कहते हैं।' दो वर्ष बाद उसका पति एक हवाई दुर्घटना में मर गया। जेनी ने जहर के दो ट्यूब पी लिये, किन्तु डाक्टरों ने उसकी जान बचा ली। वह एक झील में कूद पड़ी, किन्तु उसमें से भी निकाल ली गई। महीनों वह एक अंधेरे कमरे में पड़ी रही। धीरे-धीरे उसकी दशा सुधरी; उसे पता चला कि उसके लिए उसके पति ने काफी धन छोड़ा है। उसने युरोप यात्रा की और वहाँ अजायबघरों और दूसरी अद्भुत चीजों को देखा। कई राह चलते लोगों के चक्कर में भी वह पड़ी—केवल इसलिए कि वह जानना चाहती थी 'सच्चा प्रेम' किसे कहते हैं। उसने नियमपूर्वक आर्ट स्कूलों में शिक्षा भी ग्रहण की। अन्त में वह आकर पेरिस में रहने लगी।

थोड़ी देर बाद दोनों साथ-साथ बाहर निकले। पैसी तक दोनों कार में गये। जेनी एक सुनसान गली में रहती थी। उसके मकान से मिला हुआ एक वृक्ष था जिसकी पत्तियाँ सड़क पर जलते हुए लैम्प की रोशनी में हिलती हुई जान पड़ती थीं। वह ल्युसियां को विदा करना चाहती थी, किन्तु वह उसके साथ अन्दर तक चला गया। वह कुछ असमंजस में पड़कर बच्चों की तरह बोल उठी, 'नहीं, ऐसा नहीं...।'

उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो 'वास्तविक प्रेम' यही है। वह अचानक सब कुछ खो बैठने से डर रही थी। ल्युसियां, बिना ओवरकोट उतारे ही, पास में रखी एक आराम कुर्सी पर बैठ गया। उसने हाथों से आँखें बन्द कर लीं। उसके चेहरे से थकावट टपक रही थी। जेनी अचानक चुप हो गई, और फिर बोली :

'अच्छा, मैं कुछ काफी तैयार कर लूँ।'

वह बड़े आराम से बैठा था; जैसे उसे किसी चीज की जरूरत नहीं थी। तेज और महकदार काफी उसे बड़ी सुखदायी लगी! जेनी बिना रुके बोलती रही, न जाने सन्नाटे से उसे क्यों डर लगता था। यद्यपि वह इससे पहले भी कई प्रेमियों के चक्कर में पड़ चुकी थी फिर भी इस समय उसके व्यवहार से ऐसा लगता था जैसे इस बारे में उसे कोई अनुभव ही न हो।

'मुझे पीले गुलाब के फूल जितने प्रिय हैं उतनी और कोई चीज नहीं। अगर तुम वास्तव में मुझे खुश करना चाहते हो तो कुछ पीले गुलाब लाओ...।'

ल्युसियां वहीं बैठे-बैठे बोला, 'मेरे पास तो जाने के लिए किराया तक नहीं है...।'

उसे अपनी दरिद्रता पर लज्जा आ रही थी; जेनी के सामने इस प्रकार अपना भेद खोल देने पर उसे अपने आप पर आश्चर्य हुआ। उसका दिमाग तरह-तरह के विचारों से भर उठा—काफी, जेनी का अनुपम रूप, पेन्टिंग के बारे में उसकी बातचीत, यूनान के किस्से और गुलाब के फूलों के लिए उसकी माँग। उसने काफ़ी शराब पी रखी थी और थकावट महसूस कर रहा था। आवाज ऐसे धीमे-धीमे निकल रही थी, जैसे कहीं दूर से आ रही हो। जेनी ने सोचा कि यह मजाक कर रहा है। अभी-अभी तो उसने होटल का भारी बिल अदा किया था।

'बस बस,' उसने हँसते हुए कहा। 'अधिक पी लेने का यही नतीजा होता है।'

ल्युसियां ने झट आँखें खोल दीं; यह मजाक उसे तीर की तरह लगा। वह बोला, 'यह सब 'मौजबाजी तो किसी और के—गोतिये के बल पर की गई थी। ऐसे अवसर रोज-रोज कहाँ आते हैं। वैसे थोड़ा-बहुत पैसा तो मैं रोज ही ऐंठ लेता हूँ। हाँ, फूलों के लिए तो नहीं, बल्कि अपनी दाल-रोटी के लिए। तुम्हारी समझ में बात नहीं आ सकती। तुम्हारी क्या बात, एक धनी अमेरिकी स्त्री हो। मैं तो एक साधारण फक्कड़ नागरिक हूँ। हम दोनों दो भिन्न वर्गों के हैं।'

जेनी को खूब मालूम था कि गरीबी क्या होती है। उसे हालीवुड के

अपने दो वर्ष भूले नहीं थे। वह दौड़ कर बगलवाले कमरे में गई और नोटों का एक बंडल उठा लायी और उसे ल्युसियां के जेब में ठूँसने लगी।

'कृपा करके, इसे स्वीकार करो; मैं तुम से विनती करती हूँ।'

ल्युसियां का चेहरा उस समय देखने योग्य था। मारे क्रोध के उसने नोटों को तोड़-मरोड़कर मेज पर पटक दिया। 'मैं इसके लिए नहीं आया था,' वह बोला।

उसने जोर से जेनी के कंधे पकड़ लिये। उसके मन में न कोई इच्छा थी न किसी प्रकार की उत्तेजना। वह केवल यह दिखाना चाहता था कि उसका मन कितना स्वच्छ और निष्कपट है। जेनी ने सोचा इसने मेरे धनी होने के अपराध को क्षमा कर दिया। यह मुझसे प्रेम करता है, यह और अधिक प्रतीक्षा करना नहीं चाहता, कर नहीं सकता...। यह विचार आते ही उसने बिना किसी हिचक के अपने आपको उसके हवाले कर दिया।

१४

जिस दिन तेस्सा की सवारी पर भीड़ ने फूलों की वर्षा की थी उसको बीते एक महीना हो गया था। किन्तु उसे वह सुहावनी घड़ियाँ भूल गई थीं। अब तो प्रत्येक क्षण उसके पास चिन्ताजनक खबरें पहुँचा करती थीं।

देश पर झूठी जीत का जो नशा सवार हो गया था, वह अब उतर रहा था। जगमग करती हुई सड़कें भी काटे खाती थीं। लोगों को सितम्बर के वे दिन भूल गये थे जब खतरा हर समय सिर पर मँडरा रहा था। इस समय प्रश्न यह था कि यदि फौज को लड़ाई के लिए तैयार करना है तो पैसा कहाँ से लाया जाय। रोज सरकार द्वारा नये-नये कर लगाये जा रहे थे। रोटी की कीमत बढ़ गई थी। बस में सफर करना अब पैसेवालों का काम रह गया था। जगह-जगह हड़तालें होने लगीं। मिल-मालिकों ने सरकार पर दबाव डालना शुरू किया कि हड़तालियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाय। अखबारों में अब भी सदा की भाँति फ्रांस के सुखी और सम्पन्न होने के राग अलापे जा रहे थे, किन्तु लोगों का उन पर से विश्वास उठ चुका था।

ब्रेतील के अनुयायियों के जत्थे के जत्थे सरकार का तख्ता उलटने की जबरदस्त तैयारी कर रहे थे। आब्री ने तो यहाँ तक कह दिया था कि 'नये वर्ष के आरम्भ तक हम देश में शान्ति स्थापित कर देंगे!' दलादिये हिस्टीरिया के मरीज की तरह अपनी 'दृढ़ इच्छाशक्ति' की दुहाई दे रहा था, किन्तु लोग उसे सन्देह की दृष्टि से देखते थे। सरकार का पाया डावाँडोल था, वह थोड़े ही दिनों की मेहमान मालूम पड़ती थी; तेस्सा घबराया हुआ पार्लियामेंट के सदस्यों के बीच दौड़ता रहता था।

सरकार के डावाँडोल होने की बात महसूस करते हुए, ब्रेतील ने अब तेस्सा से इस प्रकार बात करनी शुरू किया जैसे वह उसके मातहत हो। उसने जोर दिया कि कम्युनिस्ट पार्टी को दबा दिया जाये। इस माँग को सुन कर तेस्सा काँप उठा। किसी राजनीतिक पार्टी को इस प्रकार तोड़ देना मजाक तो था नहीं! ऐसा करने से काफी हुल्लड़ मचने की संभावना थी। इससे सोशलिस्ट तो अवश्य प्रसन्न होंगे, फिर भी उनमें भी दर्जनों ऐसे निकल आयेंगे जो इसका विरोध करेंगे वामपक्षीय रेडिकल भी उनका साथ देंगे और तेस्सा को ब्रेतील का ही सहारा लेना पड़ेगा। कौन इस बात की जिम्मेदारी ले सकता है कि ब्रेतील उस समय नहीं कहेगा, 'तेस्सा अपना काम कर चुका। अब उसे लवाल के लिए स्थान खाली कर देना चाहिये!'

दलादिये ने राय दी कि लोक सभा को भंग कर दिया जाय और नये चुनाव की घोषणा की जाय। सदस्य यह सुनकर भयभीत हो उठे। तेस्सा ने महसूस किया कि यह कितना मूर्खतापूर्ण कदम होगा। इससे कम्युनिस्ट और दक्षिण पक्षीय दोनों ही दल जोर पकड़ जायेंगे। रेडिकलों के हाथ से कम से कम पचास सीटें निकल जायेंगी, जिसका अर्थ यह होगा कि वे अपने हाथों अपनी कब्र खोद लेंगे। इसके अतिरिक्त चेम्बर के सदस्य इसे नहीं स्वीकार करेंगे। कोई भी आत्महत्या करना पसन्द नहीं करेगा।

किसी प्रकार फूजे का मुँह बन्द करना था। तेस्सा रेडिकल पार्टी की कान्फ्रेंस की प्रतीक्षा कर रहा था, जहाँ ऐसे सिरफिरे सदस्यों को ठीक करने की कोशिश की जा सकती थी। कान्फ्रेंस के लिए तेस्सा ने एक शानदार, किन्तु धूर्ततापूर्ण भाषण तैयार किया। जब अमेली उससे कहती, 'समझ में नहीं आता, तुम इतनी कड़ी मेहनत क्योंकर करते हो? तो वह जवाब देता, और आशा

ही क्या रह गई है, ममी ? बच्चे तो हमें छोड़ कर चल ही दिये। अब मेरे पास केवल फ्रांस की देखभाल ही तो रह गई है ? पिछले सालभर से अमेली काफी दुबला गई थी। वह ठीक से भोजन भी नहीं कर पाती थी। नींद तो उसे बहुत ही कम आती थी।

जो लोग पार्टी कान्फ्रेंस की तैयारी में जुटे थे उनमें फूजे भी था। संसद-भवन में खड़े होकर वह सरकार का विरोध करने को तैयार न था, क्योंकि, कुछ भी हो, उसे चलानेवाले तो उसी की पार्टी के सदस्य थे। वह पार्टी के प्रति बड़ा ही वफादार था। फूजे ने निश्चय कर लिया था कि वह कान्फ्रेंस में आँदेल की गद्दारी और तेस्सा की दुरंगी चालों का पर्दाफाश करेगा।

कान्फ्रेंस के दूसरे दिन मामला बड़ा नाजुक हो गया। जब फूजे मंच कर पहुंचा तो सारे हाल में सन्नाटा छा गया; मालूम पड़ता था जैसे हर एक उससे किसी आसाधारण चीज की आशा कर रहा था। रात भर परिश्रम करके उसने अपना भाषण तैयार किया था।

फूजे ने अत्यन्त शान्तिपूर्वक अपना भाषण आरंभ किया, 'बच्चे रोग-शैया पर पड़ी अपनी माता के पास नहीं लड़ते और आज फ्रांस बुरी तरह से रोगग्रस्त है······,

उसका इतना कहना था कि एक ओर से शोर हुआ। दूसरी पंक्ति से एक लम्बा तगड़ा आदमी उठ खड़ा हुआ। उसने चिल्लाना शुरू किया, 'हम कम्युनिस्टों के गुर्गों को यहाँ नहीं बोलने देंगे···!

'तुम कौन हो ?' फूजे ने बिना अधिक ध्यान दिये हुए पूछा।

'कोल्मार का एक डेलीगेट।'

फिर क्या था, लगा जैसे किसी ने इशारा कर दिया हो इस तरह चारों ओर से हुल्लड़ हुआ, 'निकालो इसे!' 'मास्को भेजो इसे!' 'अल्सेस जिन्दाबाद!' 'कम्युनिस्टों को गोली से उड़ा दो!' 'डाकू कहीं का!'

फूजे ने अपना भाषण जारी रखने की बड़ी कोशिश की। किन्तु इस शोरगुल में उसकी आवाज दब गई। सभापति ने जोर से घंटी बजाना और मेज पर हाथ मारना शुरू किया। किन्तु कोई लाभ न हुआ। अन्त में उसने चुपके से फूजे को राय दी, 'इस समय जिद करने से काम नहीं चलेगा।'

कुछ सुन सकना असंभव हो रहा था ! हुल्लड़ फिर शुरू हुआ । तब सभा-पति ने अवकाश की घोषणा कर दी ।

दूसरे दिन तेस्सा ने स्वयं भाषण दिया । हालांकि उसके लिए कोई खतरा नहीं था फिर भी वह बड़ा घबराया हुआ था । उसका भाषण बड़ा सुन्दर रहा । नवयुवक रेडिकल बीच बीच में जोर से तालियाँ बजाते और जब तेस्सा ने गरज कर कहा, 'जनवादी मोर्चे की संधि तोड़नेवाले कम्युनिस्ट हैं । वे देश-द्रोही है ।' तो फिर बड़े जोर की ताली बजी । डेलीगेट सरकार के ढीलेढाले रवैये से असंतुष्ट थे । वे तेस्सा की बात मानने के लिए तैयार थे ।

वह भोजन कर रहा था उसी समय नगर के मध्य में भीषण अग्निकांड का समाचार मिला । तेस्सा स्वभाव से कोई भी भीषण कांड देखना नहीं सह सकता था । बचपन में भी जब उसके दूसरे साथी खेलते-खेलते आग या बाढ़ देखने दौड़ जाते तो वह बड़ा अप्रसन्न होता । आँधी-पानी को देखकर उसका दिल बैठ जाता । किन्तु आज वह सोच रहा था कि उसे घटनास्थल पर पहुँच कर अभागे पीड़ितों से सहानुभूति प्रकट करना चाहिये ।

'यूनिवर्सल स्टोर्स' इस तरह जल रहा था जैसे दियासलाई की डिबिया। उत्तर पच्छिम की ठंडी हवा जोर से चल रही थी । थोड़ी देर में सड़क की दूसरी ओर भी जहाँ अच्छे से अच्छे होटल थे, आग पहुँच गई । कानेवेयर होटल के चारों ओर घेरा डाल दिया गया ताकि वहाँ तक आग न पहुँच सके। तेस्सा पर नजर पड़ते ही पुलिस कर्मचारी दौड़ने-धूपने लगे । मारे धुएँ के तेस्सा को खाँसना पड़ रहा था। इतने में उसकी नज़र हेरियो पर पड़ा, जो खड़ा चिल्ला रहा था, 'कितना बड़ा अत्याचार है ! मैंने लियों से आग बुझाने वाले इंजिन बुलवाये हैं लेकिन भगवान ही जाने, वे कब तक यहाँ पहुँचेंगे ?' सड़कों में लोग कह रहे थे कि दुकानों में काम करनेवाली कई लड़कियाँ जल-कर मर गई, क्योंकि भागने का कोई रास्ता नहीं था । लेब्राक के साथियों ने कान्फ्रेंस को तो लात मारी और चुपके से होटलों में घुस गये; वहाँ जो कुछ भी हाथ आया जेबों में भर कर चल दिये । जलती हुई इमारतों के सामने खड़ी भीड़ चिल्ला रही थी, 'ओफ, एक भी सीढ़ी नहीं, आग बुझाने का एक भी इंजिन नहीं !' फासिस्टों ने मौके से फायदा उठाकर प्रचार करना आरंभ किया

'यह सरकार कितनी निकम्मी है! भला ऐसी कोई घटना इटली में हो सकती थी?'

जिस होटल में तेस्सा ठहरा हुआ था, उसका आधा भाग जल गया था। राज्य मंत्रियों को 'प्रिफ़ेक्चर' की इमारत में जगह दी गई और उनका सारा सामान वहां पहुँचा दिया गया। बहुत से डेलीगेटों के जरूरी कागजात गायब हो गये थे। तेस्सा बड़े इतमीनान के साथ अपना पोर्टफ़ोलियो बगल में दबाये हुए था। ल्युसियां वाले मामले के बाद से वह बड़ा सावधान हो गया था। उसका केवल कपड़ों का एक संदूक, जो बड़ा अच्छा था, चोरी चला गया था।

दलादिये बहुत बिगड़ रहा था। उसे इस अग्निकांड में बुरे लक्षण नज़र आ रहे थे। किन्तु तेस्सा प्रसन्नचित्त था। उसके दिमाग में तो बस यही धुन सवार थी कि कैसे कान्फ्रेंस में उसकी जीत रहे। आग का लगना है ही क्या—एक साधारण-सी घटना। एक सप्ताह में लोग उसे भुला देंगे। किन्तु फ्रांस की नीति अब बहुत दिनों के लिए निश्चित हो चुकी। एक नये युग का आरंभ होगा। एक संकट और आया नहीं कि पोल तेस्सा देश का कर्णधार बन जायेगा।

वह आँखें बन्द किये आराम-कुर्सी में बैठा था कि इतने में एक तार आया। यह तार उसके परिवार के डाक्टर का था, जिसमें उसने सूचना दी थी कि अमेली की दशा अचानक बड़ी खराब हो गई है।

तेस्सा की आँखों में आँसू आ गये। किन्तु उसने धैर्य नहीं छोड़ा। उसने तार का कागज दलादिये को देते हुए कहा, 'मुझे तुरन्त पेरिस लौटना चाहिये। लेकिन कोई बात नहीं, कल की बैठक में कोई खास बात नहीं। किन्तु तुम ठीक कहते थे। शायद आग का लगना अशुभ था। नहीं, नहीं, मेरा दिल नहीं बैठ रहा है, मैं बिल्कुल शान्त हूँ।'

तेस्सा ने बिना किसी प्रकार की धार्मिक रीति के उसके शव के उठाने का प्रबन्ध किया। उसने सोचा वाम पक्ष को नाराज करने से क्या लाभ, विशेष कर जबकि अभी मरसाई कान्फ्रेंस हो रही है? कब्रिस्तान का घंटा बजने लगा। जनाजे का जुलूस धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। सब से आगे तेस्सा था। एक राज्यमंत्री की पत्नी का देहान्त बड़ी भारी चीज थी और उस जुलूस में सम्मिलित होने के लिए सारा पेरिस उमड़ आया था। पास की सड़क पर सैकड़ों कारें खड़ी थीं—वही कारें जो बड़े बड़े अवसरों पर पार्लियामेंट भवन के बाहर या पहली रातों को थियेटर घरों के बाहर खड़ी दिखाई पड़ती थीं।

खुली कब्र के सामने वह अकेला खड़ा था। इतने में कुछ दूर पर उसे ल्युसियां के हलके लाल बाल दिखाई पड़े। उसने मुँह फेर लिया। ल्युसियां अपने चाचा रोबेर्त से कितना मिलता-जुलता था। रोबेर्त! वह महा-धूर्त था·········इतने में ल्युसियां एक समाधि के पीछे गायब हो गया। वह यहाँ अपनी माता से विदाई लेने आया था—वह यह नहीं निश्चय कर पाया था कि घर जाना ठीक होगा या नहीं। जब उसने जनाजे पर चाँदी के वरक देखे और ब्रेतील का दुबला चेहरा तथा जोलियो की नीली टाई पर उसकी नजर पड़ी तो समझ लिया कि उसकी माता का शव दफनाया जा चुका। यह सोचते ही वह एक असफल चोर की तरह इधर-उधर देखता जल्दी जल्दी वहाँ से खिसक गया।

शव के साथ जितने लोग आये थे वे कतार बनाकर खड़े हो गये और बारी-बारी से कब्र खोदने वाले के पास से होते हुए उसकी थाली से थोड़ी मिट्टी लेकर खुली कब्र में छोड़ देते। इसके बाद जाकर तेस्सा से हाथ मिलाते।

तेस्सा ने भी न जाने कितनी बार मुट्ठी भर मिट्टी कब्रों में छोड़ी थी और मरने वाले के रिश्तेदारों से हाथ मिलाये थे। किन्तु आज उसे सारी चीज अनोखी मालूम होती थी। हवा बड़ी ठंडी थी। यहाँ तक कि आँखें खोलना कठिन हो रहा था। तेस्सा अपनी आँखें सिकोड़े हुए था। अचानक उसके मन में विचार उठा—'शायद मुझे ही लोग दफन कर रहे हैं। उसके पाँव

लड़खड़ाने लगे, इतने में किसी ने आकर उसे संभाल लिया। तेस्सा ने इधर उधर नजर फेर कर देखा कि संसद के सदस्यों में कौन कौन आया है। उसे याद आ गया कि संसद में वोट लेते समय भी उसे ऐसा ही करना पड़ता था। उसे यह जानकर खुशी थी कि अभी वह जीवित है, मरा नहीं। हाँ, वह थक अवश्य गया है।

शाम वह पालेत से भेंट करने पहुँचा। बहुत देर तक वह यही सोचता रहा कि कहीं ऐसा करना अपनी प्यारी अमेली की याद के प्रति अन्याय करना तो न होगा। किन्तु अन्त में उसने जाने का ही निश्चय किया। उसे इस समय किसी की सहानुभूति तथा संवेदना की आवश्यकता थी। घर अब उजाड़ और डरावना मालूम पड़ता था। जिस छोटी मोटी चीज की ओर भी उसकी निगाह उठती, तुरन्त अमेली याद आ जाती।

पालेत छरहरे बदन की सुन्दरी थी। उसकी आवाज भी मीठी थी। कई सभाओं में उसे गाने का अवसर मिला था। स्वभाव से वह बड़ी सरल थी। वह आराम की जिन्दगी बसर करने के लिए पैदा हुई थी। उसे बच्चों, बागों और दस्तकारी के कामों में दिलचस्पी थी। नाटक की ओर उसका झुकना आकस्मिक था, वह भी इसलिए कि अपनी युवावस्था में उसे अपने एक प्रेमी से बड़ी निराशा उठानी पड़ी थी। तेस्सा से उसकी जान पहचान हुए तीन वर्ष हो चुके थे। यह एक ऐसा सम्बन्ध था, जिस पर उसे गर्व था। उसे यह सोचकर बड़ी प्रसन्नता होती थी कि तेस्सा जैसा बड़ा वकील, संसद का सदस्य, और अब एक मन्त्री, उस जैसी साधारण-सी नर्तकी के यहाँ आया करता है। वह एक साधारण दूकानदार की बेटी थी और शब्दों का ठीक-ठीक उच्चारण तक नहीं कर पाती। उसे जासूसी किस्से कहानियों के अतिरिक्त और किसी चीज के पढ़ने में दिलचस्पी नहीं थी। तेस्सा के लिये उसके मन में बड़ा स्थान था। वह सब कुछ जानता था। बात-बात में कविताएँ सुनाता, लातीनी भाषा के मुहावरे इस्तेमाल करता और अमेरिका के बारे में तो इस प्रकार बातें करता जैसे वह उसके घर के बगल में ही हो। उसे तेस्सा की दशा पर दया भी आया करती थी : उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ता था, पत्नी सदा रोग-शैया पर पड़ी रहती थी और बच्चे नालायक निकल गये थे। वह तेस्सा को हर प्रकार से सुख पहुँचाने की चेष्टा करती, वह जैसे कहता उसी प्रकार अपने

शाल काढ़ती, उसके लिए रूमाल बुनती और 'पेस्ट्री' तैयार करती। वह समझती थी कि मैं तेस्सा के प्रति वफादार हूँ, यद्यपि उसका एक दूसरा प्रेमी आल्बेर्त भी था, और तेस्सा को इसका कुछ भी पता न था। पालेत इसे तेस्सा के प्रति विश्वासघात नहीं समझती थी। हफ्ते में एक बार वह इस नवयुवक के पास अवश्य जाती। पालेत उससे अधिक नहीं बोलती थी, न उसके लिये रूमाल बनाती या खाना तैयार करती। वह केवल चुपचाप उससे अपने प्रेम की प्यास बुझाकर घर चली आती, जैसे कोई भुक्खड़ खाने पर टूटता हो। और जब वह उसके पास से चलती तो उसे न कोई दुख होता न पश्चाताप।

वह एक नीला 'किमोनो' (जापानी स्त्रियों की पोशाक) पहने घर में बैठी थी। इतने में दरवाजे की घन्टी बोली। उसे तेस्सा को अन्दर आते देखकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि आज उसके आने की कोई भी संभावना नहीं जान पड़ती थी। चुपचाप उसने तेस्सा का स्वागत किया, उसके साथ कमरे में गई और उसका कालर खोलने लगी। तेस्सा की तबीयत कुछ अजीब-सी मालूम पड़ रही थी, साँस लेना भी कठिन हो रहा था। पालेत को उसकी दशा पर बड़ी दया आ रही थी। उसकी समझ में नहीं आता था कि कैसे बात आरम्भ करे। चुप्पी साधे रहने से तो उसका दम घुटा जाता था। अन्त में तेस्सा ने ही बात शुरू की, 'जब मरसाई में आग लगी थी तो लोगों का कहना था कि यह बड़ा अपशकुन है। मुझे शकुनों में विश्वास तो नहीं, किन्तु कभी-कभी आश्चर्य होने लगता है कि......।'

पालेत ने 'आरमैग्नाक' की एक पुरानी बोतल निकाली। तेस्सा ने हाथ से गिलास को गरम किया और शराब पी गया।

'तुम्हारा नाम लेकर पीता हूँ! डाक्टर ने मेरी तसल्ली के लिए एक मसाला ढूँढ़ निकाला है। उसका कहना है कि अमेली को अन्तिम समय में कष्ट नहीं हुआ। कुछ भी हो, कितनी भयानक चीज है। मेरे तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं तो अभी तक ठीक से समझ भी नहीं पाया कि क्या हो गया। उसके लिये तो जान देना आसान था; उसे अपने ईश्वर पर विश्वास था। वह नरक में जाने से डरती थी। किन्तु मेरा तो दिल काँप जाता है। कब्रिस्तान में उसे ऐडमिरल लपेरिये के बगल में जगह मिली है......!,

वह आरमैग्नाक तुम्हारे हाथ कहाँ से लगी ?.. अमेली एक पादरी के हाथो दफन होना चाहती थी। मुझे तो कोई आपत्ति न थी। किन्तु तुम जानती हो मुझे हर मामले मे अपनी राजनैतिक स्थिति भी ध्यान मे रखनी चाहती है। ब्रेर्ताल को तो मौका मिलता हो लेकिन मुझे तो वामपक्षियों की चिन्ता है। आजकल उनमे काफी बेचैनी है। जहाँ तक अमेली की बात है, वह तो मर चुकी, उसे क्या परवाह कि वह धार्मिक रीतियो के अनुसार दफनाई जाती है या बिना उनके। अब तो वह पुकारने पर भी नही सुनेगी ..मैने सब कुछ सोच विचार रखा है। पालेत प्यारी, कोई दर्द-भरा गाना ही सुनाओ !"

'खुदा की कसम ! तुम्हारे पास दिल नहीं !' पालेत बोली और कुछ गुनगुनाने लगी।

१६

नवम्बर का महीना था। आकाश मे कोहरा कही काला, कही भूरा और कही पीला मालूम पडता। नगर के आसपास के टूटे-फूटे मकान कोहरे की नमी से तर हो रहे थे। इस साल शरद ऋतु लोगो के लिए बडी निराशा-जनक सिद्ध हुई थी। मजदूरो को सन् १६३६ की गर्मियो मे जो भी सहूलियतें मिली थी, वे सब उनसे छीन ली गई थी। प्रत्येक नये सरकारी एलान द्वारा कुछ न कुछ नये बन्धन लगते जाते थे और कोई न कोई नई मुसीबत आ खड़ी होती थी। काम के घटे बढ़ा दिये गये थे, 'ओवर टाइम' की दर घटा दी गई थी और मजदूरो को जो थोडी-बहुत मजदूरी मिलती भी थी उस पर तरह-तरह के कर लगा दिये गये थे। जगह-जगह हडताले होने लगी। पुलिस हड़तालियो को कारखानो से निकाल बाहर करती। धरना देनेवाले मजदूर गिरफ्तार करके अदालत के सामने पेश किये जाते और अदालत हडतालियो के नेताओ को कडी सजाएँ देती।

दलादिये को हर समय इसी की धुन सवार रहती कि कोई सिर न उठाने पाये, जो भी उठाने की हिम्मत करे उसे कुचल दिया जाय। वह देश में जरा भी अशान्ति बर्दाश्त करने को तैयार न था। उसे यह मालूम नहीं था कि

फ्रांस के लोग कितने तंग आ चुके हैं। उसके विरोधी भी भ्रम में पड़े थे। मजदूर संघों ने यह तय किया कि एक दिन की हड़ताल रखी जाय। काफी पहले से उन्होंने दिन भी निश्चित कर लिया। तेस्सा अमेली को भूल चुका था; हड़ताल की खबर सुनकर उसका खून खौल उठा। कुछ भी हो वह फ्रांस का सेनानायक था। फिर क्या था, दूसरे ही रोज नगर की दीवारों पर हजारों नोटिसें चिपकी मिलीं कि फौजी भर्ती के लिए लोग तैयार हो जायें। रेलवे, लड़ाई का सामान बनानेवाले कारखानों और सरकारी फैक्टरियों में काम करनेवालों को भी सैनिकों की तरह तैयार रहने का हुक्म मिला। ऐलान कर दिया गया कि जो कोई भी हड़ताल करेगा उसे वही सजा मिलेगी जो फौज से भागने वाले को मिलती है। यह ऐलान करके, तेस्सा ने इत्मीनान की साँस ली और मन में कहा, कितना अनोखा तरीका मैंने निकाला। अब इसका प्रारम्भ कैसे किया जाय। जो भी हो, अब हर एक को मालूम हो गया कि फौजी भर्ती से जान बचती नजर नहीं आती।

तेस्सा से बात करके जोलियो ने अपने अखबार में निकाल दिया कि इस समय हड़ताल करना जर्मनों को बढ़ावा देना है। उसने लिख मारा—'फ्रांस की जनता मास्को के इन एजेन्टों से सतर्क रहे!'

पेरिसवासियों ने सबेरा होते ही अपने कमरों की खिड़कियाँ खोलीं, हर एक सोच रहा था कि आज न जाने क्या हो। चारों ओर गहरा कुहरा पड़ रहा था। एक ओर कहवाखाने के चबूतरे साफ किये जा रहे थे, दूसरी ओर कारखानों के निकट पुलिसवालों की लोहे की टोपियाँ चमक रही थीं। पुलिस के दस्ते रेलवे स्टेशनों, सरकारी इमारतों और डाकखानों की रखवाली करने के लिए तैनात कर दिये गये थे। सड़कों पर चलने वाली बसों में भी ड्राइवर के पास एक पुलिसवाला बैठा हुआ दिखाई पड़ता था।

जो मजदूर पुराने थे, उनके चेहरों पर उदासी छाई हुई थी; उन्हें डर था कि कहीं हड़ताल टूट न जाय। देनोजे के लिए आज परीक्षा का पहला दिन था। उसे विश्वास था कि सरकार में इतनी हिम्मत नहीं कि वह मजदूरों के इस धक्के को बर्दाश्त कर ले। फिर क्या, यह रोज-रोज की बेइज्जती तो खत्म होगी। पेरिस के मजदूर अपने स्पेन के साथियों को भी, जो कमजोर तो अवश्य हो गये थे किन्तु अभी तक लड़े जा रहे थे, बचा लेंगे।

मजदूर एक मीटिंग कर रहे थे। सभी काम छोड़कर निकल आये थे। इतने में किसी ने आकर सूचना दी कि ढलाईघर के बाबुओं में से कुछ लोग काम पर वापस गये। मजदूरों की भीड़ ने एक क्रान्तिकारी गीत गाने की कोशिश की, किन्तु थोड़ी ही देर में उनकी आवाज धीमी पड़ गई और फिर सन्नाटा छा गया। चीफ इन्जीनियर ने कारखाने में प्रवेश किया। उसके चारों ओर सादे लिबास में पुलिस वाले थे, जिनमें से एक के हाथ में रिवाल्वर चमक रहा था। इन्जीनियर बोला : 'यदि आप लोग काम नहीं करना चाहते, तो मैं दर्खास्त करता हूँ कि कारखाने की हद से बाहर चले जायें।' उसका इतना कहना था कि चारों ओर से गालियों की बौछार होने लगी। इन्जीनियर हाथ हिलाता हुआ चल दिया किन्तु पुलिस वाले वहीं डटे रहे। मजदूरों ने धीमी आवाज म बातचीत करना शुरू किया कि अब क्या किया जाय।

'ढलाईवाले तो काम कर रहे हैं!'

'इस तरह से काम नहीं चलेगा।'

देनीजे चीख उठी, 'साथियो!'

सादे कपड़े में खड़े पुलिसवालों से उसे पकड़ लिया और घसीट ले चले। एक ने तो उसकी बाँह मिरोड़ दी। वह चीख पड़ी।

कुछ मजदूरों ने फिर से काम पर जाना आरम्भ कर दिया। दूसरे वहाँ से चले गये। करीब एक दर्जन मजदूर, जो पुलिसवालों की बात सुनने को तैयार न थे, घसीट कर सामने मैदान में ले जाये गये। वहाँ पुलिस की लारी खड़ी थी। उसी में वे ठूँस दिये गये, और इस बुरी तरह से कि बेचारे एक मजदूर का दाँत ही टूट गया।

कैदियों से पूछताछ शुरू हुई। देनीजे तेरसा का नाम सुनकर सुपरिंटेंडेंट ने मुसकराते हुए पूछा, 'मेरी समझ में तुम उनकी कोई रिश्तेदार तो नहीं हो?' और चाहे जैसा कष्ट दिया जाता, देनीजे की जबान न खुलती, किन्तु सुपरिंटेंडेंट की बात ने उसकी चुभती हुई रग पकड़ ली। पहले तो वह चुप रही, फिर उसने सोचा वास्तविकता को छिपाना और भी बेकार है।

'मैं आपके मिनिस्टर की ही पुत्री हूँ। किन्तु इससे मतलब ही क्या! मैं कम्युनिस्ट हूँ। आप अपना काम जारी रखिये...।'

सुपरिंटेंडेंट ने आँख मटकायी और फिर मुँह बनाते हुए अपने अफसर के पास पहुँचा। उसने प्रिफेक्ट को सूचना दी।

तेस्सा पड़ा सो रहा था। जरूरी घन्टी के बजने से वह जाग उठा। दिन में वह काफी गरम रह चुका था। उसने लगातार अपने सेक्रेटरी से रिपोर्टें सुनीं और बराबर पुलिस हेडक्वार्टर से टेलीफोन मिलाये रखा था। उसे भय था कि हड़ताल फैलती जा रही है। जब रात काफी गुजर चुकी, तब जाकर उसकी चिन्ता कम हुई। सबेरे तीन बजे उसने स्नान किया। सफेद खपरैलें चमक रही थीं और पानी नीला जान पड़ता था। अपनी पतली-दुबली टाँगों की ओर देखकर उसने एक कविता की दो-एक पंक्तियाँ भी गुनगुनानी शुरू कर दीं। अच्छा है, लोगों की हड़ताल की आदत छूट जायगी। हाँ, बशर्ते कि दक्षिणपक्षी इससे आवश्यकता से अधिक लाभ उठाने की चेष्टा न करें!

वह ठीक से सो भी नहीं पाया था कि टेलीफोन पर किसी की आवाज सुनाई दी, 'आपकी पुत्री के बारे में कुछ बात है!' तेस्सा तुरन्त सब कुछ ताड़ गया। आज वह पुलिस के सबसे बड़े अधिकारी के चंगुल में था। क्या गारंटी है कि ब्रेतील को इस मामले की सूचना नहीं मिल जायगी! अखबारों को कितना बड़ा मसाला मिल जायगा! नरक में जाय यह लड़की, इसने तो नाक कटा दी!

पुलिस के बड़े दफ्तर में वह प्रजातन्त्र की मूर्ति के सामने खड़ा था कि इतने में देनीजे लायी गयी। उसकी दशा देखकर तेस्सा की आँखों में आँसू छलक आये। उसके कपड़े फटे हुए थे, बाल बिखरे थे और रात भर सो न सकने के कारण चेहरा पीला पड़ गया था। यह वही लड़की थी जिसके स्वास्थ्य की तेस्सा को सदा चिन्ता रहा करती थी, जिसको वह समुद्रतट की हवा खिलाने ले जाता था और अच्छी से अच्छी दवाइयाँ खरीद कर देता था। अपने क्रोध को रोककर, उसने बहुत नरमी से काँपती हुई आवाज में कहा, 'देनीजे, मैं तुम्हें छुड़ाने आया हूँ।'

उसने एक तरकीब सोच रखी थी। वह पुलिस अधिकारियों से कहेगा कि देनीजे साधारण जनता के जीवन पर एक उपन्यास लिखना चाहती थी और इसीलिए उसने फैक्टरी की नौकरी कर ली थी ताकि अपनी आँखों सारी हालत

देख सके ! उसने यह भी सोचा कि देनीजे को मैं अपने साथ घर वापस ले जाऊँगा ताकि उस उजड़े घर में फिर से जीवन आ जाय। लेकिन देनीजे ने जवाब दिया, 'तब तो आपको मेरे इन तमाम साथियों को छोड़ना पड़ेगा !'

देनीजे के शब्द, उसका स्वर सब कुछ ऐसा था कि तेस्सा सुनकर दंग रह गया। तड़पकर उसने कहा, 'देनीजे !'

वह चुप रही। वह सोच रही थी कि सामने यह जो आदमी खड़ा है, इसका संसार दूसरा है। कल की घटना ने उसे भूतकाल के बंधनों से मुक्त कर दिया था। तेस्सा बहुत बिगड़ा और बोला, 'क्या ? इन बदमाशों को छोड़ दिया जाय ? कुछ सोच-समझ कर बातें करो !'

'बदमाश कौन है ? जर्मनों के सामने तो आपने कायरों की तरह दुम दबा ली और कहा—देश तैयार नहीं। और आज इन निहत्थे मजदूरों पर गैस छोड़ी जाती है !'

'तुम्हारे कम्युनिस्ट साथी जर्मनों का काम कर रहे हैं,' तेस्सा ने उत्तर दिया। 'अभी कल जब तुमने और तुम्हारे साथियों ने हड़ताल का एलान किया तो उसी समय इटली ने नाइस और कोर्सीका की माँग पेश कर दी। तुम्हारे हड़ताल करने का यह पहला परिणाम है।'

'जर्मन एजेन्टों का काम तो आप कर रहे हैं। हवाईजहाज बनानेवाली फैक्टरियाँ किसने बन्द कीं ? यह भी आपको शोभा नहीं देता कि आप अपने मुँह से अपनी बड़ाई करें। अभी कल ही की बात तो है जब फूजे ने जरा-सी जबान खोलनी चाही तो आपने गुंडों से उसे पिटवा दिया !'

'सरासर झूठ ! सफेद झूठ ! अरे मूर्ख, जो भी तेरे कान में भरा जाता है उस पर तू तुरन्त विश्वास कर लेती है !'

'ब्रेताल से आप अपने को अच्छा कैसे समझते हैं ?'

'तुम तो हर बात में राजनीति घुसेड़ देती हो। मनुष्य की भावनाएँ भी तो कोई चीज हैं। कुछ भी हो, तुम मेरी बेटी हो। अपनी स्वर्गीय माता का तो ख्याल करो। उस बेचारी का हृदय कितना कोमल था। देनीजे मैं फिर तुमसे विनती करता हूँ। चलो, घर चलो ! तुम्हें अपनी स्वर्गीय माता की कसम !'

देनीजे से रहा न गया। उसने चीख कर कहा, 'बस, चुप रहिये ! आप के ऐसा गिरा हुआ आदमी कोई हो सकता है !'

बाद में उसे पश्चाताप हुआ कि उसने इतने कड़े शब्द अपने ही पिता के लिए क्यों इस्तेमाल किये। लेकिन उसने तो अपने दिल का बुखार निकाला था।

तेरजा हाथ मलता हुआ वापस चला गया। उसने पुलिस के उच्चतम अधिकारी पर दबाव डाला। देनीजे की गिरफ्तारी की खबर समाचारपत्रों को नहीं दी गई और न इस बात का कहीं उल्लेख किया गया कि उसे कितनी सजा मिली। 'नोम' फैक्टरी के दूसरे मजदूरों के साथ उस पर भी मुकदमा चला और सब को एक-एक महीने की सजा मिली। देनीजे बड़ी प्रसन्न थी। अदालत ने उसका नाम जल्दी से पढ़ दिया और उससे, नाम, बाप का नाम और कैफियत भी नहीं पूछी। देनीजे को पता भी नहीं था कि इतना कराने में उसके पिता को कितना कष्ट उठाना पड़ा था।

तब से तेरजा दिल-जान से कम्युनिस्टों से घृणा करने लगा। पहले वह किसी को अपना शत्रु नहीं समझता था। कभी-कभी ब्रेतील या विलार से उसकी झड़प अवश्य हो जाया करती, किन्तु फिर भी, वे दोनों उसी के तो चट्टे-बट्टे के थे। उसे फूजे की दशा पर दुख था, यद्यपि उस दढ़ियल ने अपनी कट्टरता में आकर उसे बदनाम करने में कोई कसर उठा न रखी थी। किन्तु कम्युनिस्टों ने तो उसकी प्यारी बेटी देनीजे को ही उससे छीन लिया था। एक सीधी सादी, भोली लड़की को उन्होंने कर्कशा बना दिया था, उसी के जैसी स्त्रियाँ थीं जिन्होंने सन् १७९३ में सूली के चारों ओर नाच-नाच कर जान दी थी। यह राजनीतिक पार्टी कैसे हो सकती है? यह तो एक प्रकार के भूतों की दुनिया है। यदि इन्हें मिटा न दिया गया तो मालूम नहीं लोगों को ये कितना कष्ट देंगे, कितनों को छूरे भोंकेंगे, कितनों को गला दबाकर मार डालेंगे। हड़ताल टूट चुकी थी। तेरजा ने सोचा, चलो अच्छा हुआ। अब आराम की साँस ली जा सकेगी। थोड़ा मन बहलाने के लिए पालेत के घर चलना चाहिये।

उसने एक जगह पर्दे के पीछे कुछ रोशनी देखी। यह शराबखाना था। वह अन्दर दाखिल हुआ। वहाँ उसने देखा कि लोगों की भीड़ लगी है और खूब शोरगुल हो रहा है। शराबखाने की मालकिन भी अपने ग्राहकों के साथ बैठी शराब उड़ा रही थी।

'तुम्हारे पति का क्या हुआ ?'

'आज वह गया।'

एक तरकारी बेचने वाला शराब के नशे में चिल्ला रहा था, 'कौन कहता है कि इस लड़ाई की जरा भी जरूरत है ? पोलैंड वाले भाड़ में जायें !'

चारों ओर से लोगों ने उसकी हाँ में हाँ मिलानी शुरू की।

'अगर अंग्रेज लड़ना चाहते हैं तो लड़ें !'

'दुनिया जानती है कि तेस्सा को दस लाख फ्रांक मिले हैं।'

ल्युसियां ने इस बातचीत में कोई भाग नहीं लिया। वह शराब पीता रहा और मन ही मन कुढ़ता रहा। इसके बाद वह उठकर जेनी से मिलने चल दिया ताकि उससे बिदा हो ले और यदि अवसर मिले तो हजार दो हजार फ्रांक भी उससे झटक लाये। उसने तय किया कि कल दिन भर शराब पिलाई होगी। इसके अतिरिक्त फौज में भरती होने पर भी जेब में कुछ पैसे पड़े रहने चाहिये। एक सैनिक की मामूली तनखाह पर उसकी गुजर भला कैसे हो सकती थी।

जेनी उदास थी, किन्तु उसने बड़े आदर के साथ ल्युसियां का स्वागत किया। उसे यह जान कर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि ल्युसियां भी आजादी की रक्षा के लिए लड़ने जा रहा है। किन्तु पेरिस तो थोड़े ही दिनों के अन्दर नष्ट कर दिया जायगा और कला संग्रहालय लूव्र को गोलों से उड़ाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया जायगा। उसने ल्युसियां की गर्दन में अपनी बाँहें डाल दीं और बोली, 'हरएक को कुछ न कुछ करना पड़ेगा। मैंने तुम्हारे लिए कुछ गरम कपड़े खरीदे हैं......।'

जब ल्युसियां की नजर समूर वाले जाकेट पर पड़ी, तो वह बोला, 'अरे प्यारी जेनी, यह तो अफसरों के लिए है। मैं तो एक साधारण सैनिक हूँ। इसके

अलावा अभी तो सितम्बर का महीना है। पूरा जाड़ा पड़ने के पहले ही सारा मामला खत्म हो चुकेगा!'

'ल्युसियां गैस से बचने के लिए तुम्हारे पास मास्क है? शायद आज ही जर्मन वायुयान पेरिस के ऊपर उड़ेंगे। मैं एक मास्क लेने गई थी, किन्तु विदेशियों को नहीं मिलती। एक केमिस्ट ने मुझे एक पाउडर दिया और कह दिया कि गैस का आक्रमण होने पर मैं पाउडर को अपने रूमाल पर छिड़क लूँ। यह देखो, यह है पाउडर।''

'बोतल तो इसकी बड़ी सुन्दर है। 'कोटी' का इत्र क्यों नहीं लगाती? फैशनवालों की दुनिया कायम रहे। मैं समझता हूँ लड़ाई की खाइयों की जुएँ भी बड़ी सुन्दर होती होंगी।'

उसने फटी आवाज में गाना आरम्भ किया: 'पेरिस अभी पेरिस ही है।' जेनी ने कानों पर हाथ रख लिये। थोड़ी देर में कुछ गंभीर चेहरा बनाकर बोली, 'अच्छा ल्युसियां, सच बताओ लड़ाई पर जाते तुम्हें भय लगता है या नहीं?'

'नहीं, घृणा अवश्य उत्पन्न होती है!'

'किन्तु हम तो सच्चाई पर हैं?'

उसने शराबखाने में चार गिलास व्यर्थ ही नहीं पिये थे; जेनी की बातें सुनकर वह जोर से ठट्ठा मार कर हँसने लगा। उसका चेहरा, जो साधारण तौर से पीला रहता था, अंगारे की तरह लाल पड़ गया। वह बोला:

'सच्चाई? जरा रुको, अभी मैं तुम्हें समझाता हूँ।'

उसने चारपाई पर बिछी हुई चद्दर खींच ली और उसे अपने कंधों पर डाल लिया। इसके बाद जेनी का हैट सिर पर रख कर और हाथ बाँध कर कहने लगा:

'मेरे बच्चा, बोने और तेरसा पर खुदा का साया है! हम सभी उस महान् शहीद बेक की सहायता करने जा रहे हैं। उस महान् आत्मा को, जिसने संसार की सारी वस्तुओं को त्याग दिया है, स्वप्न में दिखाई पड़ा है कि तेशेन के चेक नगर में माता मेरी उसे बुला रही है। और व्यालोवेजिस्की के जंगल में उसने सेंट सेबस्तियन के साथ, जिसे संसारवाले मार्शल गोरिंग के रूप

में जानते हैं, व्रत रखा था। किन्तु शैतान अब बेक से डानजिन छीनना चाहता है। हे ईश्वर में श्रद्धा न रखने वालो, डरो! पोल तेस्सा प्रभु मसीह की कब्र को शैतान के पंजे से मुक्त कराने जा रहा है! ईश्वर उसे सफल करे!'

जेनी की समझ में कुछ भी न आया। उसे नहीं मालूम था कि यह बेक कौन है, और तेशेन कहाँ है? वह कभी अखबार नहीं पढ़ती थी और राज-नीति की उसे कोई बात नहीं मालूम थी। किन्तु इतना तो उसने अनुभव किया ही कि ल्युसियां के इस मजाक के पीछे एक दुख भरा दिल अवश्य है। दोनों चुपचाप कहवा पीते रहे। अन्त में जेनी ने डरते-डरते पूछा, 'तो तुम्हारे विचार में यह लड़ाई आजादी के लिए नहीं लड़ी जा रही?'

'कैसी आजादी?'

'मैं यह तो नहीं बतला सकती। मेरा मतलब सभी प्रकार की आजादी से है। जैसे यह कि तुम जो भी चाहो अखबार में लिख सको।'

उसने जँभाई ली। 'कल तक तो जोलियो पक्का लाल कम्युनिस्ट था, आज उसने अपना रंग सफेद कर रखा है; कल फिर हरा या नीला बना लेगा। मुझे तो सोच-सोच कर घृणा होती है।' उसने थोड़ी देर सोचने के बाद उत्तर दिया, 'तो इसका अर्थ तो यह हुआ कि बिना क्रान्ति किये काम नहीं चलेगा।'

ल्युसियां कुछ बिगड़ उठा, क्रान्ति! इस एक शब्द के पीछे उसे क्या-क्या मुसीबतें उठानी पड़ी थीं! उसने वर्षों 'संस्कृति भवन' की खाक छानी थी, अखबारों में लेख निकाले थे, पुस्तकें लिखी थी और अन्त में अपने पिता से भी लड़ाई मोल ली थी। और आज यह मूर्ख अमेरिकन स्त्री उसे फिर 'क्रान्ति' करने की आवश्यकता बता रही थी!

'जाओ, करो क्रान्ति! मैं तो चार बार कर चुका। मेरा जी तो भर चुका। अच्छा, उठो कपड़े तो उतारो। मुझे नींद आ रही है।'

खतरे की सीटी की आवाज़ सुनते ही उसकी नींद टूट गई। जेनी इस बुरी तरह काँप रही थी कि अपने गाउन की चौड़ी आस्तीन में भी बाँहें नहीं डाल पा रही थी। किन्तु ल्युसियां ने केवल करवट बदली, उसे जरा

भी परवाह न थी कि क्या होने जा रहा है! जेनी ने बहुतेरा उसे समझाया कि उठकर तहखाने में चला जाये। अन्त में किसी ने दरवाजा खटखटाते हुए आवाज दी, 'बाहर निकलो।'

'भाड़ में जाओ! ल्युसियाँ ने उत्तर दिया।'

'अरे, मैं हवाई हमले से बचाने वाला वार्डन हूँ!'

२

रोज रात को खतरे की सीटी बजती और पेरिसनिवासी नींद से उठ बैठते। कुछ लोग कहते अमुक मकान पर बम गिरते उन्होंने स्वयं देखा है। किन्तु तेस्सा कहता, खतरे की सीटी सिर्फ एहतियात के लिए बजायी जाती है। ज्यों ही जर्मन वायुयान सरहद पार करने लगते हैं; सीटी बजादी जाती है। इससे पेरिस वालों को हर मुसीबत का सामना करने की आदत पड़ जायगी। बहुत से लोग तो राजधानी छोड़ कर चले गये। धनी मुहल्लों के लोगों ने मकान खाली कर दिये और उनमें सन्नाटा छाया रहने लगा। नामंदी और ब्रिटेनी के समुद्रतट के स्थानों में लोगों की भीड़ की कोई हद न थी। सैनिक तो पूर्व की ओर लड़ाई के मैदान में भेजे जा रहे थे और धनी वर्ग अपनी जान बचा कर पच्छिम की ओर भाग रहा था।

मांतिनी का परिवार ओवर्ने चला गया। 'कितनी बढ़िया जगह है!' उसने कहा, 'आसपास सौ मील तक कोई फैक्टरी नहीं।' घरेलू मामलों का ठीक प्रबन्ध करने के बाद वह दूसरे जटिल मामले में पड़ा। उसने अपनी सारी पूँजी को अमेरिका भेजना आरम्भ किया। जब दुकेन ने इस बात की सूचना पाई तो उसने 'एक दुस्साहसी फ्रांसीसी' के शीर्षक से अखबार के लिए एक लेख लिखा। किन्तु सेंसर ने उसे छापने की आज्ञा न दी थी। नतीजा यह हुआ कि उसके लिए खाली दो कालमों में एक कैंची की तसवीर छाप दी गई। जब मांतिनी को दुकेन की इस हरकत का पता चला तो वह क्रोध से लाल होकर बोला, 'वह अपने को क्या समझ बैठा है? जो कुछ मेरी सम्पत्ति है उसी को तो मैं बचाना चाहता हूँ। यदि मैं तबाह हो गया तो फ्रांस तो कोई लाभ नहीं होगा!'

में जानते हैं, व्रत रखा था। किन्तु शैतान अब बेक से डानजिन छीनना चाहता है। हे ईश्वर में श्रद्धा न रखने वालो, डरो! पोल तेस्सा प्रभु मसीह की कब्र को शैतान के पंजे से मुक्त कराने जा रहा है! ईश्वर उसे सफल करे!'

जेनी की समझ में कुछ भी न आया। उसे नहीं मालूम था कि यह बेक कौन है, और तेशेन कहाँ है? वह कभी अखबार नहीं पढ़ती थी और राजनीति की उसे कोई बात नहीं मालूम थी। किन्तु इतना तो उसने अनुभव किया ही कि ल्युसियां के इस मजाक के पीछे एक दुख भरा दिल अवश्य है। दोनों चुपचाप कहवा पीते रहे। अन्त में जेनी ने डरते-डरते पूछा, 'तो तुम्हारे विचार में यह लड़ाई आजादी के लिए नहीं लड़ी जा रही?'

'कैसी आजादी?'

'मैं यह तो नहीं बतला सकती। मेरा मतलब सभी प्रकार की आजादी से है। जैसे यह कि तुम जो भी चाहो अखबार में लिख सको।'

उसने जँभाई ली। 'कल तक तो जोलियो पक्का लाल कम्युनिस्ट था, आज उसने अपना रंग सफेद कर रखा है; कल फिर हरा या नीला बना लेगा। मुझे तो सोच-सोच कर घृणा होती है।' उसने थोड़ी देर सोचने के बाद उत्तर दिया, 'तो इसका अर्थ तो यह हुआ कि बिना क्रान्ति किये काम नहीं चलेगा।'

ल्युसियां कुछ बिगड़ उठा, क्रान्ति! इस एक शब्द के पीछे उसे क्या-क्या मुसीबतें उठानी पड़ी थीं! उसने वर्षों 'संस्कृति भवन' की खाक छानी थी, अखबारों में लेख निकाले थे, पुस्तकें लिखी थी और अन्त में अपने पिता से भी लड़ाई मोल ली थी। और आज यह मूर्ख अमेरिकन स्त्री उसे फिर 'क्रान्ति' करने की आवश्यकता बता रही थी!

'जाओ, करो क्रान्ति! मैं तो चार बार कर चुका। मेरा जी तो भर चुका। अच्छा, उठो कपड़े तो उतारो। मुझे नींद आ रही है।'

खतरे की सीटी की आवाज़ सुनते ही उसकी नींद टूट गई। जेनी इस बुरी तरह काँप रही थी कि अपने गाउन की चौड़ी आस्तीन में भी बाँहें नहीं डाल पा रही थी। किन्तु ल्युसियां ने केवल करवट बदली, उसे जरा

भी परवाह न थी कि क्या होने जा रहा है! जेनी ने बहुतेरा उसे समझाया कि उठकर तहखाने में चला जाये। अन्त में किसी ने दरवाजा खटखटाते हुए आवाज दी, 'बाहर निकलो।'

'भाड़ में जाओ! ल्युसियाँ ने उत्तर दिया।'

'अरे, मैं हवाई हमले से बचाने वाला वार्डन हूँ!'

२

रोज रात को खतरे की सीटी बजती और पेरिसनिवासी नींद से उठ बैठते। कुछ लोग कहते अमुक मकान पर बम गिरते उन्होंने स्वयं देखा है। किन्तु तेस्सा कहता, खतरे की सीटी सिर्फ एहतियात के लिए बजायी जाती है। ज्यों ही जर्मन वायुयान सरहद पार करने लगते हैं; सीटी बजादी जाती है। इससे पेरिस वालों को हर मुसीबत का सामना करने की आदत पड़ जायगी। बहुत से लोग तो राजधानी छोड़ कर चले गये। धनी मुहल्लों के लोगों ने मकान खाली कर दिये और उनमें सन्नाटा छाया रहने लगा। नामंदी और ब्रिटेनी के समुद्रतट के स्थानों में लोगों की भीड़ की कोई हद न थी। सैनिक तो पूर्व की ओर लड़ाई के मैदान में भेजे जा रहे थे और धनी वर्ग अपनी जान बचा कर पच्छिम की ओर भाग रहा था।

मांतिनी का परिवार ओवर्नें चला गया। 'कितनी बढ़िया जगह है!' उसने कहा, 'आसेपास सौ मील तक कोई फैक्टरी नहीं।' घरेलू मामलों का ठीक प्रबन्ध करने के बाद वह दूसरे जटिल मामले में पड़ा। उसने अपनी सारी पूँजी को अमेरिका भेजना आरम्भ किया। जब दुकेन ने इस बात की सूचना पाई तो उसने 'एक दुस्साहसी फ्रांसीसी' के शीर्षक से अखबार के लिए एक लेख लिखा। किन्तु सेंसर ने उसे छापने की आज्ञा न दी थी। नतीजा यह हुआ कि उसके लिए खाली दो कालमों में एक कैंची की तसवीर छाप दी गई। जब मांतिनी को दुकेन की इस हरकत का पता चला तो वह क्रोध से लाल होकर बोला, 'वह अपने को क्या समझ बैठा है? जो कुछ मेरी सम्पत्ति है उसी को तो मैं बचाना चाहता हूँ। यदि मैं तबाह हो गया तो फ्रांस को कोई लाभ नहीं होगा!'

पालेत गैस के हमले से बहुत डरती थी। इसलिए उसने निश्चय किया कि मध्य फ्रांस में मोरिवाँ चली जाये, जहाँ उसकी चाची रहती थी। तेस्सा यह सुनकर घबरा गया। उसने सोचा कि ऐसे कठिन समय में अगर यह चली गई तो किसी स्त्री के प्रेम की सांत्वना भी न मिल पायेगी!

'तो तुम मुझे अकेला छोड़ जाना चाहती है?' उसने पालेत के निश्चय का विरोध करते हुए कहा।

'पोल, मैं कोई हीरोइन तो हूँ नहीं।'

'तुम्हें डरने का कोई कारण नहीं। यहाँ तक जर्मन विमान नहीं आयेंगे। यह भीतरी समझौता हो चुका है। यदि उन्होंने पेरिस को हाथ लगाया तो हम बर्लिन को भून देंगे। और इसमें उन्हें कोई लाभ भी नहीं।'

पालेत ने बड़बड़ाना शुरू किया, 'तुमने यह लड़ाई छेड़ी ही क्यों?'

'मैंने छेड़ी!' तेस्सा ने काँपती हुई आवाज में कहा, 'तुम यह कैसे कह सकती हो? तुम्हें मालूम होना चाहिये, मैं केवल एक चीज चाहता था और वह थी शान्ति। लेकिन हम करते ही क्या, जर्मनों के दिमाग खराब हो गये हैं।'

'कुछ भी हो, मुझे तो बड़ा डर लगता है। विशेषकर जब रात को बत्तियाँ गुल कर दी जाती हैं, और फिर आधी रात को खतरे की सीटी की आवाज......।'

उसकी आंसू भरी आँखों ने तेस्सा की नजरों में उसे और भी सुन्दर बना दिया था। उसने अपना सिर उसकी छाती से लगा दिया।

'मेरी प्यारी, जाओ नहीं! मेरी दशा बिल्कुल खराब है। तुम अन्दाज नहीं लगा सकती कि मेरे लिए कितना काम रहता है। अगले चन्द सप्ताह बड़े ही महत्वपूर्ण होंगे।'

'लेकिन तुम तो अभी कह रहे थे कि कुछ होने नहीं जा रहा है!'

उसने मुसकरा कर कहा, 'कितनी भोली हो! अरे ठीक तो कहा था कि कुछ होने नहीं जा रहा है। मैं तो देश के अन्दर की बात कर रहा हूँ। चेम्बर में बहुमत मेरे पक्ष में है, यह निश्चित है। लेकिन तुम जानती हो कि कम्युनिस्टों का सफाया करना कितना कठिन काम है? इतना आसान तो नहीं कि पुलिस

को हुक्म दिया और हो गया। बड़े पैमाने पर उसे करना पड़ेगा और बड़ी कोशिश करनी पड़ेगी। उसके लिए किसी नेपोलियन की आवश्यकता है। किन्तु हम उन्हें जड़ से उखाड़ फेंके बिना मानेंगे नहीं!'

अचानक वह दबी हुई हँसी हँसते हुए बोला, 'मैं तुम्हें एक बड़ी मजेदार बात बताऊँगा! अच्छा तुम्हीं बताओ, कल मेरे ऊपर क्या बीतनेवाली है? तुम अन्दाज नहीं लगा सकती। एक धार्मिक सभा में मुझे सरकारी प्रतिनिधि बन कर जाना है। क्या तुम सोच सकती हो कि मुझे वहाँ कैसे घुटने टेक कर सब के साथ प्रार्थना में शरीक होना पड़ेगा। क्या यह मजेदार बात नहीं?'

लेकिन पालेत छींकती ही रही।

बचपन के बाद से आजतक तेरसा कभी गिरजे में नहीं गया था। उसे धर्म से सम्बन्धित हर चीज में घृणा थी; जब कभी वह किसी को हँसी उड़ाना चाहता, तो कहता: 'उससे गिरजे में जलनेवाली अगरबत्ती की गंध आती है।' पादरियों को वह 'काले कौवे' कहा करता, जिससे कभी-कभी अमेली की धार्मिक भावनाओं को बड़ी ठेस लगती थी।

उसने मोटे तगड़े पादरी को देखा. उनके चेहरे पर लाल नसें उभरी हुई थीं। उसकी आँखों से उदासीनता टपक रही थी। यद्यपि वह बड़ा समझदार भी जान पड़ता था। निसंदेह दूसरों की तरह पादरी को भी चिन्ताएँ थीं। उसे पोप से, उसके बड़े-बड़े अधिकारियों से और फिर अपने ही गुट में अच्छे सम्बन्ध स्थापित रखना था। मनुष्य का जीवन भी एक प्रकार की राजनीति है। गिरजे के अन्दर दूसरे किनारे पर मोमबत्तियाँ जल रही थीं।

एक छोटी-सी घंटी बजी। हर एक घुटने के बल बैठ गया। तेरसा को हँसी आ गई। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे कोई तमाशा हो रहा है। किन्तु वह भी चुपचाप दूसरों के साथ घुटने के बल बैठ गया और फिर उन्हीं के साथ उठ खड़ा हुआ।

उसे इस सारे ढोंग से चिढ़ आने लगा। वह रह रहकर जँभाई लेने लगा। अचानक वह चौकन्ना हुआ। उसकी दाहिनी ओर लम्बा काला कपड़ा पहने एक युवती खड़ी थी। उसका माथा चौड़ा आगे निकला हुआ था, ओंठ उसके पतले और चमकीले थे। तेरसा को ऐसा लगा जैसे वह फ्लोरेंस की बनी कोई सुन्दर मूर्ति हो। उसे देखते ही तेरसा की इच्छाएँ जाग उठीं।

इतने में उसे ऐसा लगा कि ब्रेतील उसकी ओर ताक रहा है। तेस्सा काँप उठा। उसने झट ओंठ हिलाने शुरू कर दिये जैसे वह बड़ी भक्ति के साथ ईश्वर की वन्दना कर रहा है। बहुत से मूर्ख समझते थे कि ब्रेतील की चाल बेकार गई, क्योंकि वह जर्मनी के साथ समझौता कर लेने के पक्ष में था। किन्तु तेस्सा जानता था कि भविष्य यदि किसी का है तो वह ब्रेतील का है। 'जनवादी मोर्चे' को हर कोई गाली दे रहा था, जिसका स्पष्ट अर्थ यह था कि कुछ दिनों में सरकारी पक्ष को छोड़ कर संसद के सदस्यों का बहुमत दक्षिण-पक्ष के साथ हो जायेगा। इसके अतिरिक्त लड़ाई भी तो बराबर चलती ही नहीं रहेगी और हिटलर से समझौता करने के लिए ब्रेतील से बढ़कर कौन हो सकेगा ? इसलिए उस पाखंडी ब्रेतील से अच्छे सम्बन्ध स्थापित रखना ही ठीक था !

किसी प्रकार प्रार्थना समाप्त हुई और तेस्सा गिरजे की उस धुँधली रोशनी से निकलकर बाहर दिन के उजाले में आया। अखरोट के पेड़ मानों सोने के पानी में नहा रहे थे। स्त्रियाँ विशेष रूप से व्यस्त मालूम पड़ती थीं। हवाई-हमले से बचने के लिए मकानों की खिड़कियों पर तरह-तरह के नमूनों के कागज लगा दिये गये थे। तेस्सा ने मुसकराते हुए सोचा, वाह कैसे नये-नये नमूने निकाले गये हैं !

३

अक्टूबर का महीना आ गया। खूब पानी बरस रहा था। संसद-भवन में तेस्सा गरज रहा था, 'मैं बराबर कहता रहा था कि पोलैंड वाले एक महीना भी नहीं टिक सकेंगे ! सब चोर और शराबी हैं ! फिर भी हमारा कुछ नहीं गया। हमने उलटे कुछ पाया ही। हिटलर ने पूर्वी देशों की विनय से जर्मनीवालों को शांत कर दिया है। अब मैजिनोलाइन पर वह गर्मी नहीं दिखाई पड़ेगी। अगली १४ जुलाई के दिन सारे पेरिस में रोशनी होनी चाहिये और सबको खूब हँसना, खुशी मचाना, नाचना और गाना चाहिये।'

उस रोज आकाश से बमों के स्थान पर पर्चों की वर्षा हुई। धनी

और शानदार मुहल्लों में फिर से चहल-पहल दिखाई पड़ने लगी। मांतिनी ने अपने घरवालों को लिख भेजा कि वापस आ जायें, कोई खतरा बाकी नहीं रहा। उजाड़ देहात की वर्षा में भींगने से लाभ ही क्या? उनकी स्त्री, यह सुनकर कि गल्ले का राशन हो गया है, बहुत बिगड़ी।

कई रोज तक कहीं कहवा भी न मिल सका। श्रीमती मांतिनी की समझ में नहीं आता था कि क्या करे। अन्त में उसे कहना ही पड़ा, 'मैं तमाम दूकानों पर हो आई लेकिन कहीं भी कहवा न मिला। कहा यह जाता है कि पोलैंड वालों की बदौलत यह सब चीज़ें नहीं मिल पातीं! मुझे पूरा विश्वास है कि अंग्रेजों को पीने के लिये चाय बराबर मिलती है। उन्होंने किसी चीज पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया। यह सब दलादिये की करतूत है। वह कुछ भी नहीं, सिर्फ़ एक स्कूली मास्टर निकला, न जाने प्रधान मंत्री कैसे बन गया!'

अखबारों में समाचार निकलते, 'कल कहीं फ्रांस में, जेनरल सिकार्स्की ने फौजी परेड का निरीक्षण किया।' दूकानों के नीचे पटरियों पर गवैये लय के साथ गाते, 'प्रिये, तुम जहाँ कहीं फ्रांस में हो तुम्हें मेरा प्रेम पहुँचे!'

लड़ाई के शुरू होते ही ग्राँदेल ने यह इच्छा प्रकट की थी कि उसे तुरन्त मोर्चे पर भेज दिया जाय। वह बारबार कहता, 'मैं लड़ना चाहता हूँ!' उसकी जन प्रियता इतनी बढ़ी कि जब दुकेन ने खोये हुए कागज का मामला उठा कर उसे बदनाम करने का प्रयत्न किया, तो चारों ओर से माँग की जाने लगी कि 'व्यक्तिगत मामले को उठा कर इस समय राष्ट्रीय एकता भंग न की जाय!'

स्वयं ग्राँदेल ने इस बात को बिल्कुल नहीं छिपाया कि अन्तिम क्षण तक यह समझौता कर लेने के पक्ष में था। उसका कहना था, 'पहली सितम्बर की शाम तक सारा झगड़ा तय किया जा सकता था। टेलीफोन पर बाने और कियाने की बात हुई थी। मेरा कहना था कि चारों प्रधान मंत्री इकट्ठे होकर प्रश्न को हल कर लें। मेरे ग्रूपवाले सदस्य मेरा समर्थन कर रहे थे; किन्तु इसके बाद घटनाएँ इतनी तेजी से घटित हुई कि कुछ करते न बना। इतिहास निर्णय करेगा कि इसके लिए कौन अपराधी ठहराया जाय। किन्तु यह अवसर अब एक दूसरे की आलोचना करने का नहीं। लड़ाई का बिगुल बज चुका है और अब हमें प्राणों की बाजी लगाकर लड़ाई को जीतना है।'

ब्रेतील लड़ाई को एक नाटक से अधिक नहीं समझता था। उसने आदि से अन्त तक उसके सारे परिणामों को समझने की चेष्टा की किन्तु कोई सफलता न मिली। कभी तो वह मनमें कहता, जिस प्रकार हो लड़ाई को जीतना है, किन्तु दूसरे ही क्षण वह ठठ्ठा मारकर हँस उठता क्योंकि लड़ाई उस समय तक कैसी जीती जा सकती थी जब तक राज्य की बागडोर निकम्मे आदमियों के हाथों में थी! भला फ्रांस की विजय कैसे संभव थी जब तक कि पार्लियामेंट तोड़ न दी जाय और उसके भवन पर ताला न लगा दिया जाय? वह कहता, 'शत्रु के गोले की आग से निकलने पर ही फ्रांस लोहे की तरह मजबूत हो सकेगा!'

किसी को इस बात की खबर तक न थी कि साल भर तक ब्रेतील और आँदेल के बीच अनबन रही थी और अब फिर मेल हो गया था। संसद के सदस्यों तथा अन्य देशवासियों की दृष्टि में वह सदा एक दूसरे के साथी और सहायक रहे थे। इसलिए ब्रेतील के इस प्रस्ताव को सुनकर किसी को भी आश्चर्य न हुआ कि आँदेल को युद्ध सम्बन्धी उद्योगों के डायरेक्टर के पद पर नियुक्त कर दिया जाय।

देजेर को छोड़कर, शेष सभी व्यवसाइयों ने आँदेल का समर्थन किया। मांतिनी ने कहा, 'कम से कम इतना तो होगा ही कि वह देश में शान्ति स्थापित कर सकेगा। इतनी भारी लड़ाई लड़ना भला कैसे संभव हो सकता है, जब कि पीछे देश में अराजकता फैली हुई हो? मजदूर अपनी कोई सहूलियतें छोड़ने के लिए तैयार नहीं। शब्दों से वे मानने के लिए तैयार नहीं। उनके विरुद्ध तो कड़ी कारवाई करने की जरूरत है।'

एक महीना बीत गया। आँदेल ने जी तोड़े मेहनत की। कोई दिन न जाता जब वह ब्रेतील के सामने हाजिर होकर पूरी रिपोर्ट उसे न देता और उसके आदेश न लेता—'सारी खराबी के सिर्फ कम्युनिस्टों और देजेर के कारण है।' वह कहता, 'इस गन्दगी को दूर करना बड़े साहस का काम है! लेकिन कोई भी कदम उठाने के पहले इसे साफ करना ही पड़ेगा!'

सीन फैक्टरी में केवल एक तिहाई मजदूर काम पर रह गये थे। देजेर ने निश्चय किया कि आँदेल से इसका जवाब तलब किया जाय। वह क्रोध से लाल पीला होकर आँदेल के कमरे में दाखिल हुआ। हैट को उसने हाथ में

ही रखा, और एक ओर वह बातें करता जाता था, दूसरी ओर छड़ी हिलाता जाता था! ग्राँदेल मुसकराता रहा और मेज पर रखे कागजों को उलटता-पुलटता रहा। उसे देजेर की इस दशा को देख कर बड़ा आनन्द आरहा था। वह देजेर, जो किसी समय सर्वशक्तिमान था, जो ब्रायन और बांकूर का संरक्षक रह चुका था, आज उसके सामने खड़ा भीख मांग रहा था!

उसने ग्रांदेल से कहा, 'जब मजदूर ही नहीं रह जायेंगे तो कैसे अक्टूबर तक सारे आर्डर पूरे किये जा सकते हैं? अभी लड़ाई शुरू भी नहीं हुई और सारे होशियार मजदूर भरती करके लड़ाई के मोर्चे पर भेजे जा चुके हैं।'

'है तो बड़े दुख की बात,' ग्रांदेल ने उत्तर दिया, 'लेकिन किया क्या जाय। हम मजदूरों के साथ कोई विशेष रियायत तो कर नहीं सकते। हमारा देश कृषिप्रधान देश है। आखिर किसान क्या कहेंगे? क्या वे अपनी जान देने के लिए तैयार होंगे, वे यह देखेंगे कि दूसरी ओर मजदूर दूनी मजदूरी कमा रहे हैं? इस साधारण-सी न्यायोचित बात की ओर भी ध्यान न देते हुए तो लड़ाई जीती नहीं जा सकती।'

'जो लोग चालीस और पचास के बीच हैं, उनका क्या होगा? वे तो मोर्चे पर नहीं भेजे गये। मिस्त्री लोग अब भी बैरकों की खिड़कियाँ साफ करते रहते हैं।'

'हम मजदूरों के अन्दर फर्क नहीं कर सकते।'

'अच्छा यह बताओ, तुम्हें इंजनों की जरूरत है या नहीं? मैं यह जानना चाहता हूँ कि बिना हवाईजहाजों के लड़ाई कैसे जीती जा सकती है? अगर तुम्हें इंजन चाहिये तो हमारे मजदूर वापस करो। अभी कल ही सीन फैक्ट्री के दो सौ मजदूर गिरफ्तार किये गये हैं।'

'आप किसी भारी रोग को क्षणिक आराम देने वाले मरहम द्वारा तो अच्छा कर नहीं सकते,' ग्राँदेल ने उत्तर दिया। 'जनवादी मोर्चा बनाकर हमने जो पाप किया था उसी का आज हम प्रायश्चित कर रहे हैं।'

'जनवादी मोर्चे से इससे क्या सम्बन्ध?' देजेर ने जोर से छड़ी हिलाते हुए पूछा, जैसे वह ग्रांदेल को पीटने ही वाला हो। 'इसके अलावा तुम

खुद भी तो जनवादी मोर्चे के टिकट पर ही चुनकर पार्लियामेंट में भेजे गये थे।'

'श्रीमान जी, जहाँ तक मुझे मालूम है जनवादी मोर्चे को सफल बनाने में आप भी अपना रुपया पानी की तरह बहाने से बाज नहीं रहे थे।'

'हाँ, हाँ, मुझे भी याद है,' देजेर ने उत्तर दिया। 'मुझे सब पता है। वह फूजेवाला कागज...।'

ग्रांदेल टस से मस न हुआ। फिर भी मुसकराते हुए वह बोला, 'युद्धकाल में आपस के झगड़े बढ़ाने से कोई लाभ नहीं। इसलिए मैं कहता हूँ कि अब आप तशरीफ ले जा सकते हैं।'

ज्यों ही देजेर कमरे से बाहर निकला उसका हैट गिर पड़ा और उसे जोर की खांसी आयी। ग्राँदेल इस प्रकार बहाना किये बैठा रहा जैसे कि वह बड़े ध्यान से किसी रिपोर्ट को पढ़ रहा हो।

शाम को ग्राँदेल ने एक दावत दी। निमन्त्रणपत्रों पर लिखा हुआ था, 'सैनिकों के सम्मान में।' अतिथियों के सामने प्लेटों में तरह तरह का गोश्त रखा गया और उत्तम प्रकार की शराब की बोतलें खाली की गईं। अतिथियों का स्वागत करने वाली थी मूश। ल्युसियां से अनबन हो जाने के बाद काफी दिनों तक उसका स्वास्थ्य बड़ा खराब रहा और वह जलवायु-परिवर्तन के लिए आल्प्स जाकर कुछ दिनों ठहरी थी। सुन्दर अब भी वह थी, किन्तु साफ दिखाई पड़ रहा था कि अब उसका यौवन ढल रहा है! उसकी चाल-ढाल से साफ लगता था कि निराशा और दुख ने उस पर गहरा प्रभाव डाला है।

जब सारे अतिथि जा चुके तो ग्राँदेल ने अपनी जाकिट और वास्कट उतार डाली। सफेद चमकती हुई कमीज पर उसकी पतली काली पेटी बड़ी सुन्दर लग रही थी। उसने अपनी पत्नी से कहा, 'मालूम पड़ता है, कर्नल मोरो की तबीयत तुम्हारे ऊपर रीझ गई है। वह बड़ा आदमी है। मुझे आश्चर्य न होगा अगर वह थोड़े ही दिनों में सेना का प्रधान अधिनायक हो जाय।'

यह कहकर उसने एक जँभाई ली। दिन भर काफी काम करना पड़ा

था। उसने धीरे-धीरे अपनी पतलून उतारी और एकाएक बोला, 'कुछ भी हो, जीत हमारी होगी।'

४

मजदूरों की इस पकड़-धकड़ से मांतिनी भी प्रसन्न न था। वह कहता, "कम्यूनिस्टों को गिरफ्तार करना तो ठीक है; लेकिन बूढ़ों को भर्ती कर करके मोर्चे पर भेजने की नीति समझ में नहीं आती। मेरे यहाँ मजदूरों की भारी कमी है।' युद्धोद्योगों में मजदूरों की कमी का प्रश्न बहुत टेढ़ा हो गया था। संसद में भी विरोधी दल इसे काफी उछालने की कोशिश कर रहा था।

देजेर से बात करते समय, ग्रांदेल ने केवल ब्रेतील के शब्द दोहराये थे। ग्राँदेल को फ्रांस के किसानों से घृणा थी, उसे उनका भय था। वह उन्हें मनुष्य नहीं गाजर-मूली समझता था। दूसरी ओर, ब्रेतील का दृढ़ विश्वास था कि फ्रांस के सारे कष्टों का कारण यह है कि कारखाने बहुत हो गये हैं और नगरों की आबादी आवश्यकता से अधिक बढ़ गई है। नवयुवक लोग गाँव छोड़-छोड़कर नगरों में भाग रहे हैं। ब्रेतील का ख्याल था कि युद्ध शुरू होने पर किसान वर्ग सामने आयेगा; इसीलिए उसने ग्रांदेल को राय दी थी कि मजदूरों के साथ जरा भी रूरियायत करने की आवश्यकता नहीं। किन्तु अन्त में विवश होकर उसे ढिलाई करनी ही पड़ी। अक्टूबर में सरकार ने निश्चय किया कि चालीस साल से अधिक उम्रवाले लोग मोर्चे से वापस बुला लिये जायें ताकि युद्ध सम्बन्धी उद्योग-धन्धे चल सकें।

वापस होनेवालों में लेग्रे भी एक था। लड़ाई शुरू होते ही उसे दक्खिणी मोर्चे पर भेज दिया गया था। तूलूस के पास एक पुल पर, जिस पर से होकर किसी समय एक छोटी रेलवे लाइन जाती थी, उसे तैनात किया गया था। लाइन तो कब की उखड़ चुकी थी और अब पुल पर पीली झाड़ियाँ उगी हुई थीं। किन्तु सेना के नक्शे में अभी तक वह रेलवे लाइन दिखाई गई थी। दो महीने तक लेग्रे का काम केवल यह रहा था कि सबेरे से शाम तक घास और झाड़ियों और उनमें चरती हुई गायों को देखा करे।

जब वह फैक्टरी को वापस भेजा गया तो वहाँ उसके परिचित साथियों में से कोई भी न दिखाई पड़ा। मिशो और पियेरे दोनों लड़ाई के मोर्चे पर थे। शाम होते ही वह निकल पड़ता कि शायद रास्ते में उसका कोई पुराना साथी मिल जाय। वह उन कहवाखानों में जाता, जहाँ कभी उसके मित्र इकट्ठा हुआ करते थे, बन्द पुस्तकालय का चक्कर लगाता। उसे कोई नजर न आता; कुछ तो गिरफ्तार हो चुके थे और दूसरे लोग छिप गये थे।

लेग्रे बिल्कुल अकेला था। उसका मन कहीं न लगता। उसे कुछ भी पता न था कि आजकल पार्टी क्या कर रही है। यह उसके लिए ऐसा ही था जैसे किसी की आँखें जाती रहें। ऐसे अखबारों को, जिनमें मोटे-मोटे अक्षरों में कम्युनिस्टों को गद्दार कहा जाता वह देखते ही फेंक देता। ये अखबार यह अफवाह भी फैला रहे थे कि रूसी फौजें जर्मनों की सहायता के लिए सीग्रफीड लाइन पर आकर लड़ रही हैं और साम्यवादी नेता मॉरिस थोरे जर्मनी भाग गया है। तूलूस में उसे पता चला था कि कम्युनिस्ट समाचारपत्र 'ल्यूमानिते' गुप्त रूप से प्रकाशित होता है, किन्तु वह मिले कैसे यह लेग्रे की समझ में नहीं आता था। जिन आदमियों के साथ उसे रहना पड़ता था वे अपरिचित थे। वे उसे संदेह की दृष्टि से देखते और समझते कि वह पुलिस का भेदिया है।

इस अकेलेपन और बेकारी में वह चार दिन तक खोया-सा रहा। पाँचवें दिन पुलिस ने उसे आ पकड़ा।

रात उसे एक तंग कोठरी में गुजारनी पड़ी। वहाँ हर प्रकार के लोग बन्द थे—राजनीतिक कैदी और वेश्याओं के दलाल, जर्मन शरणार्थी और पोलिश यहूदी, नक्काल जो इसलिए पकड़ लिये गये थे कि उन्होंने दलादिये के बारे में कोई कहानी गढ़ी थी या तेस्सा की हँसी उड़ाई थी। बहुत से ऐसे नागरिक भी पकड़ लिये गये थे, जिन्होंने खुले आम कहा था कि अब दूध नहीं मिल सकेगा या अब सतरह साल के लड़के भी लड़ाई पर भेजे जायेंगे।

अन्य कम्युनिस्टों के साथ लेग्रे भी कैदखाने भेज दिया गया। कैदियों से भरी गाड़ी एक जंक्शन पर घंटे भर से अधिक रुकी। पुलिस ने लोगों को ट्रेन के पास आने से यह कह कर मना किया कि ये लोग लड़ाई के मैदान से

भाग निकले हैं। फौजी सिपाही और गाँवों की स्त्रियाँ उनकी ओर क्रोध भरी नजरों से देखतीं और कहतीं, 'पाजी कहीं के! दूसरों को कटा देना भले आता है!' किसी ने उन्हें 'डरपोक' कहा। यह सुनते ही लेग्रे ने मजदूरों का अन्तर्राष्ट्रीय गीत गाना शुरू किया, प्लेटफार्म पर खड़े लोग चकित होकर सुनने लगे। गाड़ी के अन्दर से आवाजें आने लगीं,—'हम भगोड़े नहीं! हम मजदूर हैं, कम्युनिस्ट हैं!' प्लेट फार्म पर खड़े सैनिकों ने भी गाने में उनका साथ दिया। पुलिस ने बहुत कोशिश की कि भीड़ को धक्का देकर पीछे हटाये किन्तु सब व्यर्थ हुआ। खिड़की से सिर बाहर निकाल कर लेग्रे ने चिल्ला कर कहा:

'साथियो, पिछले युद्ध में मैं घायल हुआ था। मेरे चेहरे पर अभी तक निशान बना हुआ है। उसे तो कोई मिटा नहीं सकता। इन लोगों ने मुझे हवाई जहाज बनाने वाले एक कारखाने से पकड़ा है। अब ये मुझे टट्टियाँ साफ करने के काम के लिए ले जा रहे हैं। बोने, तेस्सा, पलादी—ये हैं गद्दार! हम तो फ्रांस के लिए अपनी जान तक दे देंगे!'

उसने घूँसा तानकर सलाम किया—एक बार फिर सं० १६३६ का याद आ गई; जब बड़ी-बड़ी आशाएँ बँधायी गयी थीं, और उनमें से एक भी पूरी नहीं हुई थी! पुलिस उसे घसीट कर हटा ले गई। जब ट्रेन छूटी तो कैदियों और प्लेट फार्म पर खड़े सैनिकों तथा स्त्रियों ने एक दूसरे को घूँसे तान कर विदाई दी।

५

गिरफ्तार होनेवालों में से कई के नाम पहले से सूची में थे। कुछ ऐसे भी थे जिन्हें सन्देह पर पकड़ लिया गया था। कोई तो इसलिए पकड़ा गया था कि उसने मुट्ठी तानकर सलाम किया था, कोई इसलिए कि वह धीरे धीरे 'अन्तर्राष्ट्रीय गीत' गा रहा था, तो कोई इसलिए कि उसने अपने घर में क्रेमलिन की तसवीर लगा रखी थी। जब तेस्सा ने पुलिस की रिपोर्ट पढ़ी तो जोर से हाथ झटक कर बोला, ये कमबख्त कम्युनिस्ट हर जगह पहुँच गये! मछली मारने वालों का संघ, शतरंज खेलने वालों की सभा, पर्वतारोहियों की

सोसाइटी—ये सब कम्युनिस्ट पार्टी की शाखाएँ हैं। तेस्सा ने मन में कहा, अब मालूम हुआ कि इन लोगों ने कितना जोर पकड़ लिया है! अब मैं समझ कि कैसे इन लोगों ने बेचारी देनीजे को भी बहका लिया होगा। उफ, कितनी सीधी लड़की है!

ब्रेतील इस बात पर जोर दे रहा था कि संसद के कम्युनिस्ट सदस्यों को को गोली से उड़ा दिया जाय। तेस्सा यह कह कर उसे टाल देता, 'जरा जबान संभालकर बात करो। वे चाहे जो कुछ भी हो, यह क्यों भूल जाते हो कि वे भी जनता द्वारा चुन कर भेजे गये हैं! तेस्सा कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहता था, जो आगे के लिये उदाहरण बन जाय। उसे संसद के उन सदस्यों से, जो पकड़े जा चुके थे, एक ही पेशे के होने के नाते सहानुभूति थी। वह उन्हें बचाना चाहता था। उसने उनसे कहा भी कि अगर वे यह लिखकर दे दें कि तीसरे अन्तरराष्ट्रीय से उनका कोई सम्बन्ध नहीं तो उनकी सीटें उनसे नहीं छीनी जायेंगी। किन्तु जब उसे मालूम हुआ कि वे इसके लिये तैयार नहीं, तो वह लाल-पीला होकर बोला, सिरफिरे कहाँ थे! मैं जो कुछ उनके लिये कर सकता था, मैंने किया!'

अपने सारे जीवन में तेस्सा का 'इतना कड़ा परिश्रम कभी नहीं करना पड़ा था। शायद ही कभी उसे पालेत के यहां जाने के लिये घंटे भर का समय मिलता। थोड़े ही दिनों में वह इतना उकता गया कि उसके जी में आया सब कुछ छोड़ छाड़ घर बैठे। उसने सोचा 'बनने से फायदा ही क्या! अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ! और कब तक चल पाऊँगा। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपने मन से इन विचारों को निकाल बाहर किया। क्या क्लीमैंशो ने फ्रांस को उस समय नहीं बचाया था जब कि वह काफी बूढ़ा हो चुका था। उसने सोचा मै भी क्यों न क्लीमैंशो का स्थान लूँ! मेरी भी मूर्तिया नगर में जगह जगह लगी दिखाई पड़ेंगी।' एक बार उसने पालेत से कहा भी, 'अगर मेरे नाम पर किसी सड़क का नाम पड़े तो खराब तो नहीं लगेगा?'

जब उसे सूचना मिली कि जनरल द विस्से उससे मिलना चाहता है तो वह नाक भौं सिकोड़ने लगा। फिर भी जब वह आया तो उसे एक बड़ी आराम कुर्सी पर बिठाते हुए उसकी ओर सिग्रेटों का डिब्बा बढ़ाया और बोला "ये पार्याग सिग्रेट हैं; काफी अच्छी हैं। दूसरी बिल्टी आते आते काफी समय

लग जायेगा। आजकल जहाजों पर दूसरे प्रकार का माल लादा जाता है। अच्छा जनरल, यहां तक आने का कैसे कष्ट उठाया ?'

जनरल ने सिगार के टुकड़े को आधा फेंकते हुए कहा, 'परिस्थिति बड़ी चिन्ताजनक है। हर चीज की कमी है। जानते हैं एक एक बटालियन के पास कितनी मशीनगनें हैं, हवाई जहाजों को तो छोड़िये! मेरे पास सिर्फ दस बम वर्षक हैं। हाँ, हां सिर्फ दस आपको सुनने में गलतफहमी न हो। सिर्फ दस! और फिर न कोई बूट, न कम्बल! जाड़ा बिल्कुल सर पर आ गया है!'

तेस्सा ने मुंह बनाते हुए सिर हिला दिया और बोला, 'मुझे मालूम है। यह सब जनवादी मोर्चे का परिणाम है। तनखाह सहित छुट्टियां और न जाने क्या क्या। किन्तु चिन्ता की आवश्यकता नहीं, स्थिति शीघ्र सुधरेगी। हम अमेरिका से सामान खरीदने जा रहे हैं।'

'मैं एक सैनिक हूँ,' 'वह बोला, 'मेरा काम है उन आज्ञाओं का पालन करना जो मुझे दी जायें। किन्तु मैं अपनी जबान नहीं बन्द किये रह सकता जनरल पिकार कहता है कि सीगफ्रीड लाइन को लेने के लिये भारी तोपों की सन् १९४२ में जरूरत पड़ेगी। किन्तु आपने देखा नहीं पोलैंड में क्या हुआ? आपको मालूम है जर्मन सेना कितनी सुसज्जित है? यह हो सकता है कि वह मोर्चे के किसी भाग को तोड़कर घुस आने का भी प्रयत्न करें। और हालत यह है कि टैंकवेधी तोपों के बनाने की रफ्तार बढ़ने के बजाय घटती जा रही है। ऐसा क्यों है? इसलिए कि मजदूरों को पकड़ पकड़ कर जेलखानों में ठूंस दिया गया है। मैंने स्वयं उन्हें देखा है। वे जेलों में बोरे बनाते हैं। अच्छा ही है चाकोलेट के डब्बे नहीं बनवाये जा रहे हैं। मैं आंदेल से भी मिला था। वह कहता है—सन् १९४२ से पहले नहीं। मंत्री जी, भीषण दुर्घटना आने वाली है! कुशल मजदूरों को कारखानों से क्यों हटाया जा रहा है...?'

तेस्सा ने क्रोधित होकर कहा, 'यह आप बड़ा बुरा कर रहे हैं जो फूजे के बहकावे में आ जाते हैं। जेलों में केवल कम्युनिस्ट बन्द किये जा रहे हैं। रणनीति के मामले में मैं कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। कृपा करके राजनीति में आप हाथ न डालिये!'

सोसाइटी—ये सब कम्युनिस्ट पार्टी को शाखाएँ हैं। तेस्सा ने मन में कहा, अब मालूम हुआ कि इन लोगों ने कितना जोर पकड़ लिया है! अब मैं समझ कि कैसे इन लोगों ने बेचारी देनीजे को भी बहका लिया होगा। उफ, कितनी सीधी लड़की है!

ब्रेतील इस बात पर जोर दे रहा था कि संसद के कम्युनिस्ट सदस्यों को को गोली से उड़ा दिया जाय। तेस्सा यह कह कर उसे टाल देता, 'जरा जबान संभालकर बात करो। वे चाहे जो कुछ भी हो, यह क्यों भूल जाते हो कि वे भी जनता द्वारा चुन कर भेजे गये हैं! तेस्सा कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहता था, जो आगे के लिये उदाहरण बन जाय। उसे संसद के उन सदस्यों से, जो पकड़े जा चुके थे, एक ही पेशे के होने के नाते सहानुभूति थी। वह उन्हें बचाना चाहता था। उसने उनसे कहा भी कि अगर वे यह लिखकर दे दें कि तीसरे अन्तरराष्ट्रीय से उनका कोई सम्बन्ध नहीं तो उनकी सीटें उनसे नहीं छीनी जायेंगी। किन्तु जब उसे मालूम हुआ कि वे इसके लिये तैयार नहीं, तो वह लाल-पीला होकर बोला, सिरफिरे कहाँ थे! मैं जो कुछ उनके लिये कर सकता था, मैंने किया!'

अपने सारे जीवन में तेस्सा का 'इतना कड़ा परिश्रम कभी नहीं करना पड़ा था। शायद ही कभी उसे पालेत के यहां जाने के लिये घंटे भर का समय मिलता। थोड़े ही दिनों में वह इतना उकता गया कि उसके जी में आया सब कुछ छोड़ छाड़ घर बैठे। उसने सोचा 'बनने से फायदा ही क्या! अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ! और कब तक चल पाऊँगा। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपने मन से इन विचारों को निकाल बाहर किया। क्या क्लीमैंशो ने फ्रांस को उस समय नहीं बचाया था जब कि वह काफी बूढ़ा हो चुका था। उसने सोचा मै भी क्यों न क्लीमैंशो का स्थान लूँ! मेरी भी मूर्तिया नगर में जगह जगह लगी दिखाई पड़ेंगी।' एक बार उसने पालेत से कहा भी, 'अगर मेरे नाम पर किसी सड़क का नाम पड़े तो खराब तो नहीं लगेगा?'

जब उसे सूचना मिली कि जनरल द विस्से उससे मिलना चाहता है तो वह नाक भौं सिकोड़ने लगा। फिर भी जब वह आया तो उसे एक बड़ी आराम कुर्सी पर बिठाते हुए उसकी ओर सिग्रेटों का डिब्बा बढ़ाया और बोला 'ये पार्यांग सिग्रेट हैं; काफी अच्छी हैं। दूसरी बिल्टी आते आते काफी समय

लग जायेगा। आजकल जहाजों पर दूसरे प्रकार का माल लादा जाता है। अच्छा जनरल, यहां तक आने का कैसे कष्ट उठाया ?'

जनरल ने सिगार के टुकड़े को आधा फेंकते हुए कहा, 'परिस्थिति बड़ी चिन्ताजनक है। हर चीज की कमी है। जानते हैं एक एक बटालियन के पास कितनी मशीनगनें हैं, हवाई जहाजों को तो छोड़िये ! मेरे पास सिर्फ दस बम वर्षक हैं। हाँ, हां सिर्फ दस आपको सुनने में गलतफहमी न हो। सिर्फ दस ! और फिर न कोई बूट, न कम्बल ! जाड़ा बिल्कुल सर पर आ गया है !'

तेस्सा ने मुंह बनाते हुए सिर हिला दिया और बोला, 'मुझे मालूम है। यह सब जनवादी मोर्चे का परिणाम है। तनखाह सहित छुट्टियां और न जाने क्या क्या ।किन्तु चिन्ता की आवश्यकता नहीं, स्थिति शीघ्र सुधरेगी। हम अमेरिका से सामान खरीदने जा रहे हैं।'

'मैं एक सैनिक हूँ,' 'वह बोला, 'मेरा काम है उन आज्ञाओं का पालन करना जो मुझे दी जायें। किन्तु मैं अपनी जबान नहीं बन्द किये रह सकता जनरल पिकार कहता है कि सीगफ्रीड लाइन को लेने के लिये भारी तोपों की सन् १९४२ में जरूरत पड़ेगी। किन्तु आपने देखा नहीं पोलैंड में क्या हुआ ? आपको मालूम है जर्मन सेना कितनी सुसज्जित है ? यह हो सकता है कि वह मोर्चे के किसी भाग को तोड़कर घुस आने का भी प्रयत्न करें। और हालत यह है कि टैंकवेधी तोपों के बनाने की रफ्तार बढ़ने के बजाय घटती जा रही है। ऐसा क्यों है ? इसलिए कि मजदूरों को पकड़ पकड़ कर जेलखानों में ठूंस दिया गया है। मैंने स्वयं उन्हें देखा है। वे जेलों में बोरे बनाते हैं। अच्छा ही है चाकोलेट के डब्बे नहीं बनवाये जा रहे हैं। मैं आंदेल से भी मिला था। वह कहता है—सन् १९४२ से पहले नहीं। मंत्री जी, भीषण दुर्घटना आने वाली है ! कुशल मजदूरों को कारखानों से क्यों हटाया जा रहा है···?'

तेस्सा ने क्रोधित होकर कहा, 'यह आप बड़ा बुरा कर रहे हैं जो फूजे के बहकावे में आ जाते हैं। जेलों में केवल कम्युनिस्ट बन्द किये जा रहे हैं। रणनीति के मामले में मैं कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। कृपा करके राजनीति में आप हाथ न डालिये !'

'इससे राजनीति से क्या संबन्ध ? मैं तो वायुयानों और तोपों की बातें कर रहा हूँ।'

उस रोज शाम को तेस्सा ने देश के नाम एक भाषण ब्राडकास्ट किया। उसे माइक्रोफोन के सामने खड़े होते बुरा मालूम होता था, क्योंकि वहां सुनने वालों की भीड़ कहाँ थी—वे आँखें कहाँ थीं, जो उसके जोशीले भाषण सुनकर चमकने लगतीं या आँसुओं से भर उठतीं। जब ब्राडकास्टिंग स्टेशन के अधिकारी उसके पास पहुँचे तो उसने अपने पुराने दूत मारिस को बुला भेजा और उससे कहा : 'जब मैं अपना भाषण पढ़ने लगूं तो तुम मेरे सामने बैठे रहना। तुम्हें देखकर मुझे प्रेरणा मिलती रहेगी।'

मारिस मुसकरा कर उसके सामने जा बैठा। तेस्सा ने भाषण शुरू किया, 'हमने आखरी कदम उठा लिया है ! हमारी यह लड़ाई बीसवीं शताब्दी का धर्मयुद्ध है। हमनें आज जो तलवार उठायी है वह अपने उच्चतम नैतिक आदर्शों, ईसाई मानववाद की रक्षा के लिए, पाशविक यांत्रिक शक्तियों को चकना चूर करने के लिए। हमारी तलवार गजब की मार रखती है। यहां यह बतला देना शत्रु को अपने भेद खोल देना न होगा कि फ्रांस के आकाश में इतने वायुयान कभी नहीं उड़े थे जितने आज उड़ रहे हैं। हमारी भूमि पर इतने टैंकों की दहाड़ कभी नहीं सुनाई पड़ी थी जितनी आज। हम दिन और रात काम में जुटे रहते हैं ताकि हमारे पास लड़ाई का सामान अधिक अधिक हो जाय। हमारी सहायता के लिए हमारे मित्र अंग्रेज हैं और दूसरी ओर अटलांटिक के उस पार का अमेरिकन प्रजातंत्र। किन्तु हमारी वास्तविक शक्ति है हमारे उत्साह में, उस भ्रातत्वभाव में जो आज सारे राष्ट्र को एक कड़ी में बाँधे हुए है, उस एकता में जो आज सभी वर्गों, सभी पार्टियों के बीच स्थापित हो चुकी है, विजय के उस दृढ़ संकल्प में जो सब ने अपने मन में कर रखा है ! मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी तलवारें उस समय तक नहीं रुकेंगी जब तक कि हम मानव सभ्यता के इस भयानक शत्रु को विनाश के घाट नहीं उतार लेंगे !'

मारिस मारे डरके अपनी जगह से हिला तक नहीं। वह कुर्सी के डंडे पर बैठ उसी प्रकार नकली हंसी हंसता रहा जिस प्रकार लोग फोटो खिंचाते समय हंसते हैं।

६

सेना के उच्च अधिकारियों का हेडक्वार्टर अल्सेस के एक धनी व्यवसायी के देहाती बँगले में स्थित था। वह एक बड़ा मकान था जिसमें और कमरों के अतिरिक्त बिलियर्ड खेलने का कमरा भी था जहाँ शाम को सैनिक अफ़सर खेला करते थे। पुस्तकालय में वे नक्शों का अध्ययन किया थे। सेक्रेटरियों वाले कमरे में जहाँ पहले बच्चे खेला करते थे, हर समय टाइपराइटरों की आवाज सुनाई पड़ती थी। 'मिकी माउस' की एक तसवीर के नीचे, जो अब भी दीवार पर लटक रही थी, लूसी बैठती थी। वह एक स्टेनोग्राफर थी।

मकान मालिक तरह तरह की छोटी मोटी चीजें रखने का बड़ा शौकीन था। लिखने की मेज पर, जिसके सामने जनरल लेरिंदो बैठता था, पीजा के मीनार की शक्ल की एक दावात, कोपेनहेगन की मिट्टी की पेंगुइन चिड़िया, एक घड़ी, जिसके डायल से पेरिस, टोकियो और सानफ्रांसिस्को का समय मालूम होता था—इत्यादि चीजें रखी हुई थीं। जब जेनरल काम करने बैठता तो वह पेंगुइन को उठाकर एक किनारे रख देता। वह डरता था कि कहीं वह टूट न जाय। वह कोई नुक्सान होते हुए नहीं देख सकता था। यदि कहीं फर्श पर रोशनाई की एक बूंद गिर जाती या बगीचे की घास पर कोई सैनिक बूट पहन कर चलते हुए दिखाई पड़ जाता तो जह आग बबूला हो उठता था।

उस रोज खाने में स्ट्रासबर्ग की प्रसिद्ध मांस की टिकिया थीं। बेचारा जनरल हाथ मल मलकर रह जाता था; डाक्टरों ने उसे इस प्रकार की चीजें खाने को मना कर रखा था। अपने मन को समझाते हुए वह कहता, 'मुझे दूसरी चीजों से सलाद कहीं अधिक अच्छा लगता है। जब आदमी की उम्र अधिक हो जाती है तो वह साग-पात खाने का आदी हो जाता है। यह प्रकृति का नियम है।'

बहस छिड़ गई कि हिटलर भी तो शाकाहारी है। जनरल को यह सुनकर आश्चर्य हुआ। वह बार बार यही कहता रहा 'यह तो बड़ी दिलचस्प बात है।' इसके बाद मेजर लराय ने दिनकी खबरें सुनानी शुरू कर दी। मुख्य समाचार फिनलैंड के सम्बन्ध में था। हर आदमी आश्चर्य से रूसियों की ओर देख रहा था कि अब वे क्या करने वाले हैं।

खाकर उठते ही जनरल और कप्तान सैंगर सेना की स्थिति देखने चल पड़े। कार चलाने वाला प्रसिद्ध उद्योगपति म्युजे का लड़का था। वह एक खिलाड़ी नवयुवक था जिसे अपने पिता के प्रभाव के कारण हेडक्वाटर में जगह मिल गई थी। उसने हवा की रफ्तार से कार को चलाना शुरू किया। लेरिदो बराबर चिल्लाता रहा, 'इतनी तेज नहीं, इतनी तेज नहीं!'

शत्रु की सेना का निरीक्षण करने के लिए पहाड़ी के ढाल पर एक जगह चुनी गई थी, जो चारों ओर से पेड़ की टहनियों से ढँक दी गई थी। जनरल लेरिदो ने अपनी दूरबीन से देखा कि कुछ आदमी एक गढ़े के पास खड़े हैं। एकाएक उसे ख्याल आया कि हो न हो शत्रु वहीं छिपा है। इसके बाद उसे एक बड़ी चद्दर सी नजर आई, जिस पर लिखा हुआ था, 'फ्रांसवासियों, हम दोनों का शत्रु इंगलैंड हैं।' उसके दायें बायें हिटलर और जोन आफ आर्क की तसवीरें लगी हुई थीं। लेरिदो यह देख कर अपने मन में बड़ा कुढ़ा। उसने सोचा, कितना भद्दा प्रचार है! बजाय मैदान में उतरने के प्रचार से काम निकालना चाहते हैं, मानों लड़ाई न हुई कोई चुनाव हो गया। आगे उसे दिखाई पड़ा कि कुछ मकान हैं जिनकी छतें भूरी हैं और जिनसे धुआँ उठ रहा है; उन से हट कर कुछ दूर पर अंगूर के बाग हैं। इस दृष्य का वर्णन करना कठिन था। विचित्र प्रकार की लड़ाई थी। लगता था जैसे चाल चली जा रही है और जर्मन सेना नदी पार करने की चेष्टा कर रही है। सन् १९१६ में कुछ और ही बात थी। उसे पेरोन के खंडर, गिरे हुए मकानों के मलबे, बैलगाड़ियों पर लोगों का भागना और मुर्दों की हड्डियों का जगह पड़े मिलना अभी तक याद था। किन्तु अब वह सारी बातें कहाँ थीं। उन दिनों लोग गाते बजाते सिपाहियों की लाल वर्दी पहने लड़ाई पर जाते थे। अब तो मैजिनोलाइन बन गई थी।

लेरिदो कीचड़ भरे रास्ते पर चल रहा था। वर्षा हो चुकने के कारण

मिट्टी से सोंधी महक आ रही थी। जाड़े के मारे सूर्य का रंग भी पीला पड़ गया था। अचानक उसे सुनाई पड़ा कि कहीं से गाने की आवाज आ रही है—कोई शुबर्ट का बनाया हुआ गाना गा रहा था। उसने पूछा, 'यह क्या ?'

रेजीमेंट कमान्डर ने उत्तर दिया, 'यह लाउड स्पीकर बोल रहा है हम जर्मन प्रचार का खंडन कर रहे हैं। हमारे शत्रु भी ऐसा गाना बड़ी खुशी से सुनते है जिन से वे परिचित हैं। हम उन्हे बतलाना चाहते हैं कि हमारी जर्मन जाति से कोई लड़ाई नहीं।'

'अच्छी सूझी !' लेरिदो ने प्रशंसा करते हुए कहा।

'हमें यह भी राय दी गई है कि गाने के बीच बीच में हम जर्मन भाषा में शत्रु के सैनिकों से अपील करें। २७वीं डिवीजन में यह काम शुरू भी हो गया है। किन्तु मैं ने इसे उचित नहीं समझा।'

'तुम बिल्कुल ठीक समझे। लड़ाई इसलिए छेड़ी गई है कि लड़ी जाय। राजनीति में हाथ डालना हमारा काम नहीं उसके लिए राजनीतिज्ञों की कमी नहीं। क्या यहाँ दिन भर गाना बजाना चला करता है ?'

'आज सबेरे ७ बजे से लेकर ७-४० तक दोनों ओर से गोलाबारी भी हुई उनका तोपखाना......।'

'मुझे मालूम है, मुझे मालूम है। कोई क्षति तो नहीं हुई ?'

'तीन आदमी हताहत हुए। एक सार्जेन्ट को गहरी चोट आई।'

इसके बाद जनरल २७वीं डिवीजन के सदर मुकाम की ओर रवाना हुआ। वह यह जानना चाहता था कि सचमुच जर्मन राजनीतिक प्रचार कर रहे हैं। किन्तु उसे लाउडस्पीकर की सारी बात भूल गई जब उसने सुना कि उस रोज सबेरे एक जर्मन लड़ाकू जहाज अर्स्टाइन के पास आकर गिरा और चकनाचूर हो गया। वायुयानचालक तुरन्त ही मर गया। उसके पास जो कागजात मिले, उन से मालूम हुआ कि उसका नाम लेफ्टिनेंट कार्ल फॉन शिरो था।

लेरिदो ने हुक्म दिया कि खूब ठाटबाट के साथ जर्मन लेफ्टिनेंट का जनाजा उठाया जाय। 'यह काफी अच्छा प्रचार होगा,' उसने अपने आदमियों को समझाते हुए कहा। 'हम दुश्मन को दिखला देना चाहते हैं कि हम

मरने पर भी उसका कितना सम्मान करते हैं। मैं कर्नल मोरो को भेज रहा हूँ।' उसने क्षण भर कुछ सोचा और कहा 'अच्छा तो वह फॉन शिरा था? फॉन......निस्संदेह वह किसी बड़े घराने का आदमी था। इसका जर्मनी में बड़ा असर पड़ेगा। मैं खुद आने की कोशिश करूँगा।'

उसने अस्पाल का निरीक्षण किया और बैरकों में भी गया। जैसे ही सिपाहियों ने उसे आते देखा, उन्होंने झट ताश के पत्तों को अपने कोटों से ढँक दिया।

७

जाड़े की कड़ाके की सर्दी में सबेरे से ही पानी बरसना शुरू हो गया था। पीले भूरे आकाश को देखकर तबीयत घबड़ा उठती थी। पियेरे कीचड़ में लथपथ अपने जूतों को देखता। अकसर उसकी निगाह जूते के एक खास निशान पर ही जाकर रुकती, जैसे वह किसी चीज की खोज में हो। ३६ वीं रेजीमेंट के एक साधारण सिपाही की हैसियत से उसे कभी पानी में भीगना पड़ता, कभी लिज की फटकार या सार्जेन्ट की गालियाँ सुननी पड़ती। बीच बीच में तोपों की दहाड़ भी सुनाई पड़ जाती।

पिछले अगस्त के एक दिन की बात है; गर्मी जोर की पड़ रही थी। उस रोज सबेरे जब वह जागा था तो उसने बड़े आराम से हाथ-पांव ताने थे। एग्नेस काफी तैयार कर रही थी। दूदू फर्श पर खेल रहा था और उसका छोटा भूरा घोड़ा धूप में लटक रहा था। यह सब बीती हुई कहानी हो चुकी थी! घर छोड़ने के पहले पियेरे इधर उधर काफी मारा मारा फिरा था। एग्नेस ने देखा कि उसका स्वास्थ्य चूर-चूर हुआ जा रहा है, इसलिए उसने एक तरकीब सोच निकाली। वह बोली, 'पियेरे, चलो, हम लोग और कहीं चलें। चलो अमेरिका चलें। वहाँ हमें कोई न कोई काम मिल ही जायगा।'

किन्तु उसने सिर हिलाकर नहीं कह दिया और कहा, 'नहीं, यह ठीक नहीं होगा। क्या तुम समझती हो मैं अपनी जान बचाना चाहता हूँ? वह दिन जो बीत गये अब वापस नहीं आ सकते।' वह जनवादी मोर्चे के दिनों की बात सोच रहा था।

पियेरे यहाँ अकेला पड़ गया था। वह ब्रिटानी के ऐसे किसानों के बीच में जा पड़ा था जो बिल्कुल भोले भाले और डरपोक थे। उन्हें बतलाया गया था पियेरे एक अधर्मी और अराजकतावादी है, जिसने स्पेन में कितने ही गिरजे जला दिये थे। लेफ्टिनेंट एस्टेरेल, जो भद्दे नाटे कद का आदमी था, ब्रेताल के आदमियों में से था। वह कविता का बड़ा प्रेमी था और कहा करता था कि फासिस्टवाद में एक 'अद्भुत रहस्यपूर्ण विशेषता' है वह अपने आदमियों से घृणा करता था क्योंकि उनके कपड़ों से पसीने की बदबू आती थी। वह पियेरे से डरता था। दूसरे अफसरों को भी उसने पियेरे से सचेत कर दिया था।'

पियेरे ने जूल के साथ, जो उसकी कम्पनी में एक मात्र दूसरा पेरिस-निवासी था, मित्रता स्थापित की। फौजी खिदमत पर भेजे जाने के पहले, जूल एक गैस के कारखाने में काम करता था। वह बड़ा हँसमुख आदमी था। थोड़ी देर के लिए पियेरे सब कुछ भूल कर उसके साथ खूब हँसता। आज वही जूल इस संसार से उठ चुका था।

पियेरे के पत्र बहुत छोटे होते थे; उसकी समझ में नहीं आता था कि एग्नेस को लिखे तो क्या लिखे। वर्षा के बारे में? जूल के मजाकों के बारे में? या लेफ्टेनेन्ट एस्टेरेल के बारे में जो दिन भर वैलेरी की कविता पढ़ा करता और एक सिपाही का कोट भी छूते हुए डरता था? एग्नेस के पत्रों में उसके स्वास्थ्य के बारे में प्रश्न भरे रहते थे। फिर दूदू के खेलों की कहानियाँ होतीं। दोनों को एक दूसरे को बहुत कुछ लिखना था किन्तु दोनों ही जबान रोके थे। पियेरे को अक्सर एग्नेस की याद सताया करती।

लेफ्टिनेंट एस्टेरेल ने उसे बुला भेजा। और उसे एक किताब देते हुए हुक्म दिया, 'इसे कप्तान जेमिये तक पहुँचा दो।'

उसने किताब ले ली। लेफ्टिनेंट किसी तरह पियेरे को नीचा दिखाना चाहता था। वह कम्युनिस्ट था और केवल प्रोलितारी कवियों की रचनाएँ पढ़ता था। इसलिए उसे जरा दौड़ाना अच्छा होगा। जहाँ पर बन्दूकची टुकड़ी थी, वह स्थान वहाँ से चार मील की दूरी पर था। कप्तान जेमिये सौंदर्य-प्रेमी था, उसने पढ़ने के लिए कुछ किताबें माँगी थीं। कोई काम न होने के

कारण, उसने अपना समय एक कोष तैयार करने में लगाने का निश्चय किया था।

वह अँगूर के बागों के बीच से होता हुआ ढाल पर बढ़ता चला जा रहा था। दाईं ओर एक गिरजाघर था। मीनार पर से हवा का रुख बताने वाली चर्खी गिर चुकी थी। पियेरे ने बम के फटने से बना एक गढ़ा देखकर मन में सोचा, काफी नजदीक से गोले चलाये गये हैं! इसके बाद वह सड़क छोड़ कर दूसरे रास्ते पर मुड़ा।

उसने पुस्तक उस कमजोर आँखों वाले शर्मीले कप्तान के हवाले की, बन्दूकचियों के साथ बैठकर शराब के दो एक घूँट पिये और वापस चल पड़ा। वर्षा रुक गई थी। लाउडस्पीकर रोज से एक घन्टा पहले ही बोलना बन्द कर चुके थे। नीचे ढाल की ओर से मशीनगन चलने की आवाज आ रही थी किन्तु उसका जवाब देने वाला कोई नहीं मालूम पड़ता था। मोर्चे पर बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था।

अचानक इस सन्नाटे में बड़े जोर के धमाके की आवाज आयी। यह आवाज दिन में अक्सर दो एक बार सुनाई पड़ा करती थी, किन्तु पियेरे इस का आदी नहीं हो पाया था। धमाके का आवाज से हवा गूँजने लगा। निश्चित मालूम पड़ता था कि फ्रांसीसी सेना की ओर से इसका जवाब दिया जाएगा। पियेरे आगे सड़क की ओर बढ़ा और वहाँ बैठ गया। उसे इसी अवस्था में एक घन्टा बैठा रहना पड़ेगा। किन्तु शाम को तो एग्नेस का पत्र मिलने वाला था।

उसे दूसरे धमाके का शायद ही अनुभव हुआ। वह मुँह के बल गिर पड़ा। गोले का एक टुकड़ा आकर उसकी जाँघ के ऊपर लगा। आध घन्टे बाद कुछ तोपचियों ने आकर उसे उठाया!

उसने अपनी आँखें खोली तो सर के ऊपर बिजली की तेज रोशनी जलती हुई देखी और फिर आँखें बन्द कर लीं। धीरे-धीरे उसे पुस्तक ले जाने, तोपचियों से मिलने, शराब पीने और बम फटने की बात याद आई। उसने सोचा, हो न हो मैं घायल हो गया......हो सकता इसमें मेरी मौत हो जाये? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। तो फिर क्या मैं सो रहा हूँ?......। वह दाहिने करवट

लेना चाहता था, उसकी सदा ऐसे ही लेटने की आदत थी, लेकिन जरा कोशिश करते ही वह चीख उठा। उसने एग्नेस की सूरत याद करने की कोशिश की, किन्तु उसका प्रयत्न विफल रहा। वह अपने मन को ढांढ़स देने के लिए केवल उसका नाम दोहराता रहा। नर्स ने आकर उसका तकिया सीधा कर दिया। उसका चेहरा लम्बा था। उसे देखकर पियेर ने मन में सोचा: 'वह हममें से नहीं है।' इसके बाद उसे चादर के ऊपर कोई चमकता हुआ खिलौना सा नजर आया। वह लाल रँग का सैंड-बक्स था जिसपर चमकदार हरी धारियाँ बनी हुई थीं। वे शायद मछलियाँ थीं। या हो सकता है किसी लम्बी दाढ़ी वाले बौने की शकल बनी रही हो?......उसने देखा कि रेत सूख गई, धारियाँ धीरे धीरे टूट फूट गईं। यह देखते ही वह चिल्ला उठा, 'रेत सूख क्यों गई?' उसकी आवाज सुनते ही नर्स दौड़ी आई और आकर उसने भीगा हुआ कपड़ा उसके सिर पर रख दिया। वह फिर बेहोश हो गया।

बाहर बैंड बजने की आवाज आ रही थी। कल जो जर्मन विमानचालक मर गया था उसे तीसरी बटालियन सलामी दे रही थी। जनरल लेरिदो ने भाषण में कहा, 'एक बहादुर सैनिक के सामने आज हम अपना सिर झुकाते हैं। मातृभूमि के प्रति प्रेम...कर्तव्यपालन की भावना...!'

इसने में पिछले रोज से भी कहीं ज्यादा तेजी से पानी बरसने लगा जैसे वह पिछले दिन की कमी पूरी कर रहा था!

जैसी कि पियेरे को आशा थी, शाम को एग्नेस का पत्र पहुँचा। तीन दिन तक वह दफ्तर में पड़ा रहा; इसके बाद यह लिखकर वापस कर दिया गया कि 'पाने वाला मर चुका है।'

८

समाचारपत्रों पर कड़ा प्रतिबन्ध था। जोलियो चिल्ला रहा था कि उसका गला घोंटा जा रहा है। उसकी 'नई आवाज' के कालम के कालम सफेद रहते। यह लिखने की मनाही थी कि वास्जेजे के पहाड़ों में कड़ाके का जाड़ा

की लड़ाई थी। सिपाही ढेर के ढेर इंफ्लूएंजा से मर रहे थे। कल ही पार्लियामेंट घोषित किया गया था कि कि राईन के ऊपर रेलों के आने-जाने के बारे में जर्मनी से एक समझौता हो गया है। अब वोट लेने का समय आया तो किसी ने बताया कि बिल तो पार्लियामेंट में गर्मी में ही पेश हो चुका और अब तक राईन के पुल कब के उड़ाये जा चुके हैं। इस लड़ाई को लोगों ने 'आँख-मिचौनीवाली लड़ाई' का नाम दिया और अकसर कहा करते, 'इस आँख-मिचौनी को तुम कैसा पसन्द करते हो?' पसन्द सभी करते हैं। हाँ, उसके बारे में कोई कुछ लिख नहीं सकता था।

एक दिन बड़ी आश्चर्यजनक बात हुई। शाम को मांतिनी ने जोलियो को बुला भेजा। आज वह बड़ा प्रसन्न नजर आता था। बात भी बड़े ढंग से उसने की और उसने जो कुछ माँगा मांतिनी से निकाल कर दे दिया। इसके बाद उसने कहा, 'राजनीतिक पहलू ब्रेतील के हवाले कर दो। हमारा काम होना चाहिये। अखबार में लड़ाई की घटनाओं और बहादुरी के कारनामों को ज्यादा स्थान दो। अच्छे से अच्छे युद्ध-संवाददाताओं को मोर्चे की रिपोर्ट लेने भेजो।'

शत्रु का आखिर कहीं न कहीं पता चला ही। दो ही दिन बाद संवाददाता हेलसिंकी के लिए रवाना हो गये।

तेस्सा ने इटली के राजदूत को भोजन पर आमन्त्रित किया। उसने इटालियन खाने, पीडमांट की शराब, वेरोना की कला और मुसोलिनी की कुशाग्रबुद्धि की बड़ी प्रशंसा की।

रूस द्वारा फिनलैंड पर आक्रमण होने पर श्रीमती मांतिनी ने फिनलैंड-वालों के सहायतार्थ मंगलवार को चन्दा इकट्ठा करना तय किया। स्त्रियों ने फिनी सैनिकों के लिए मोजे और कपड़े बुनने शुरू कर दिये। ग्युजे ने मैनरहाइम की सहायता में १५ लाख फ्रांक दिये और बड़ी धूमधाम के साथ चेक फिनी मार्शल की पुत्री के हवाले किया।

फिनलैंड की विजय के लिये मादेलीन के गिरजाघर में प्रार्थना भी की गई। ब्रेतील ने उसमें विशेष रूप से भाग लिया। गिरजे से निकल कर वह सीधे 'नई आवाज' के दफ्तर पहुँचा। उसने जोलियो को भी यह कहकर

अचंभे में डाल दिया कि 'विलार के पास तुरन्त जाओ और उससे फिनलैंड पर कुछ लेख लिखा लाओ !'

मांतिनी विलार को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता था। वह कहा करता था, 'इसी शख्स ने मजदूरों की आदत बिगाड़ी है और उन्हें समुद्रतट के स्थानों की हवा खाने का आदी बना दिया है !' जोलियो, जिसे अब अपने नये मालिक की इच्छाओं का खयाल रखना पड़ता था, विलार से कतरा कर निकल जाता था।

आज ब्रेतील ही जोलियो को विलार के पास भेज रहा था ! इस बात से उस बौने सम्पादक को इतना आश्चर्य हुआ कि रास्ते भर वह बड़बड़ाता रहा। न जाने कैसा समय आ गया है ! दो दिन भी कोई चीज एक-सी नहीं रहती। कुछ समझ में नहीं आता। कोई कह नहीं सकता कि अगले क्षण किसके साथ हँसकर बोलना पड़ेगा और किसे गाली देना पड़ेगा।

विलार ने सोचा था अब ऐसी कोई चीज नहीं होने जा रही है, जिससे उसे अपना एकान्त छोड़कर फिर मैदान में आना पड़ेगा। किन्तु अब तो स्वयं उसे अपने को पहचानना कठिन हो रहा था। फिनलैंड की घटनाओं ने फिर से उसमें जोश भर दिया था। संसद में उसने बड़ी धुआंधार स्पीच दी। उस रोज उसका चश्मा उसी प्रकार उसकी नाक पर उठ और गिर रहा था जैसे बीस साल पहले उठा और गिरा करता था। शीघ्र ही उसके निकट युद्ध ने बड़ा महत्व पकड़ लिया। वह कहने लगा, 'ये कम्युनिस्ट रूसी साम्राज्यवाद की गुप्त सेना के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं !'

जब जोलियो ने ब्रेतील की इच्छा प्रगट की तो विलार ने उत्तर दिया, 'बड़ी खुशी से, मेरे मित्र, बड़ी खुशी से। यद्यपि मेरी आयु और स्वास्थ्य की दशा इसकी इजाजत नहीं देती, डाक्टर ने मुझे कोई भी काम करने को मना कर दिया है। किन्तु जहाँ कहीं कमजोरों की सहायता का प्रश्न उठेगा, तुम मुझे पीछे नहीं पाओगे। यह अच्छा ही हुआ कि ब्रेतील ने इस समय पार्टी-बन्दी को उठाकर अलग रख दिया है। अब हम सचमुच राष्ट्रीयता एकता स्थापित कर सकेंगे ?'

जब अखबार आया तो विलार ने देखा कि 'नई आवाज' में उसका

लेख निकला है। उसने ध्यानपूर्वक उसे पढ़ा और अपने सिर को हिला-हिलाकर उसके सुन्दर वाक्यों को दोहराया।

आरामकुर्सी में बैठकर उसने आराम करना शुरू किया। उसने सोचा, कोई भी जीते, मुझे क्या पड़ी है। फिनलैंड में चाहे जो हो मुझे क्या! कुछ न कुछ लोग तो दौड़ धूप करते ही हैं, कुछ मरते है, कुछ गलते हैं। जीवन इसी का नाम है। किन्तु वह स्वयं इन बातों से परे है। काफी परेशानियाँ वह उठा चुका है। अब आराम करने की जरूरत है।

इतने में 'नई आवाज' का एक फोटोग्राफर आ पहुँचा। वह बोला, 'क्षमा कीजियेगा इस कष्ट के लिए। हमें फिनलैंड के सिलसिले में पहले पृष्ठ पर आप के फोटो की जरूरत है। फोटो के नीचे हम लिखना चाहते हैं 'न्याय और स्वतन्त्रता की लड़ाई के एक वीर सैनिक।' विलार ने अपना चश्मा ठीक करते हुए चेहरे को जरा ऐसा बनाने की कोशिश की कि उससे साहस तथा उत्साह टपके।

६

तेस्सा अपनी बेटी को नहीं पहचान सका, जो दूकान से फैशनदार स्त्रियों को कपड़े निकाल-निकालकर दिखला रही थी। उसने बाल छोटे करा लिये थे और उन्हें काफी घुंघराले बना लिया था। उसके ओठों पर लाली लगी थी और वह एक छोटी सी हैट पहने थी।

देनीजे कपड़े तैयार करनेवाली एक दूकान में नौकर थी। यहाँ शाम को पहने जानेवाले कपड़ों का नमूना लड़कियाँ तैयार करती थीं। शो रूम में लम्बे-लम्बे शीशे लगे हुए थे। ग्राहक बहुत कम आते थे और दूकानदार को शिकायत थी कि व्यापार मन्दा है। कपड़े सीने की मशीनें बराबर चलती रहतीं, कपड़ों पर बिजली से लोहा किया जाता और लड़कियों की लम्बी उंगलियाँ रेशमी कपड़ों की सिकुड़नों को दूर किया करती। शोर इतना अधिक होता कि कान पड़ी आवाज मुश्किल से सुनाई पड़ती। पीछे वाले कमरे में यूजीन नामक एक लंगड़ा एक छोटे प्रिंटिंग प्रेस में अखबारों के पन्ने पर पन्ने लगा रहा था। यह कम्युनिस्ट पार्टी का गैर कानूनी प्रेस था। दूकानदार को

नये-नये फैशनों से कोई दिलचस्पी न थी। वह राजनीतिक पर्चे लिखता था और देनीजे उन्हें अपने दपती वाले बक्स में रखकर शहर के भिन्न-भिन्न भागों में पहुँचाया करती थी।

आज देनीजे को छुट्टी थी। वह तेजी से बेलवील की ओर जा रही थी। पता उसके पास था। उसे वहाँ मिशो से मिलना था। चार महीने एक दूसरे से अलग रहने के बाद आज पहली बार दोनों की भेंट होने वाली थी।

देनीजे बड़ी उत्सुकता से आगे बढ़ती जा रही थी। बड़ी मुश्किल से उसे वह गली मिली जिसमें से उसे जाना था। एक बूढ़ी स्त्री ने दरवाजा खोला। मिशो अभी तक वापस नहीं आया था।

'बैठो। मैं तुम्हारे लिए कुछ कहवा तैयार करती हूँ। तुम ठंडक के मारे सुकड़ रही हो ? मिशो अभी आता ही होगा।'

मिशो ने आते ही देनीजे को अपनी गोद में उठाते हुए धीमे से कहा, 'प्रिये, सच कहता हूँ तुम्हारी याद में मैं घुलघुल कर जान दे रहा था। और बताओ, क्या हाल है।'

जनवरी का वह छोटा दिन भी समाप्त होने को आया। कमरे की हल्की रोशनी ऐसी मालूम पड़ती थी जैसे हल्का नीला कुहरा पड़ रहा हो। बुढ़िया उन्हें अभी तक एक दूसरे से बहुत सी बातें करनी थीं।

'बड़ी गड़बड़ी मची हुई है। हमें बेल्जिमय की सरहद पर नियुक्त किया गया है। पहले से तो यह सोचा गया कि वहाँ किलेबन्दी की जाय किन्तु फिर इरादा बदल दिया गया। मैंने स्वयं कर्नल को चिल्लाते सुना—केवल पराजय वादी ही कह सकते हैं कि जर्मन यहाँ तक आ जायेंगे।' बार बार यही बात दोहराई जाती है। किन्तु यह पराजयवादी कौन हैं, यह कोई नहीं बतलाता। मैं तो कहता हूँ हमारे अफसर स्वयं पराजयवादी हैं। वे पूरी कोशिश इस बात की कर रहे हैं कि जर्मन हमें पीस डालें। हाँ, अगर कोई दूसरी सरकार होती तो कोई बात न थी। हम अब भी सरहद पर दुश्मन को रोके रह सकते हैं। मुझे डर है तो इस बात का कि हमारे अफसर पहले हमें जर्मनों से पिसवा डालेंगे और तब हम से कहेंगे कि हम उन्हें रोकें। सिपाही बराबर कम्युनिस्टों के बारे में पूछा करते हैं। जब मैं कुछ पर्चे लेकर पहुँचा, तो लोग उन्हें लेने के लिए मेरे ऊपर टूट पड़े। जहाँ तक अफसरों का सम्बन्ध है, वे सब फासिस्ट हैं और

नाज़ियों से सहानुभूति रखते हैं। यदि कोई अफसर फासिस्ट नहीं है तो केवल मेरा अफसर। बाकी सब यही कहा करते हैं कि जनवादी-मोर्चे, और कम्युनिस्टों की धोखेबाजी के कारण यह सब हुआ है। उन्हें अपनी ही सेना के आदमियों से डर लगता है। सिपाही मालूम पड़ता है किसी चीज का इन्तजार कर रहे हैं, यद्यपि उन्हें स्वयं नहीं मालूम कि किस चीज का। बारूद की कमी नहीं लेकिन उसमें आग लगानेवाली चीज नहीं है। पर अगर पेरिस में कुछ शुरू हुआ तो वे अवश्य उसका साथ देंगे।'

'यहां भी यही हाल है,' देनाइज बोली। 'फैक्टरियों में लोग बड़े असंतुष्ट हैं लेकिन जबान से कुछ निकालते नहीं। फिनलैंड की लड़ाई ने जरूर उन्हें हिला दिया है। वे कहते हैं : हम किसी तरह भी फिनी फासिस्टों के लिए वायु-यान नहीं तैयार करेंगे! हो सकता है कि वे हड़ताल करके बाहर भी निकल आयें। तभी कुछ शुरू भी हो सकता है।'

उसने देनीजे से विदेश के समाचार पूछे, विशेषकर यह कि सोवियत रूस से कोई समाचार आया कि नहीं। देनीजे ने सब कुछ अच्छी तरह समझाया।

मिशो सब कुछ सुन कर मुस्करा दिया और बोला, 'देखो, आज तुम कितना महत्वपूर्ण काम कर रही हो। तुम्हें वह दिन याद है जब पहले पहल मैं तुम्हें सभा में ले गया था?'

दो चौड़ी सड़कों के मोड़ पर जहाँ सन्नाटा था और अंधेरा छाया हुआ था, दोनों ने एक दूसरे से बिदाई ली। मिशो के जैकेट के अन्दर पर्चों का एक बन्डल और 'ल्यूमानिते' की प्रतियाँ छिपी हुई थीं! गाड़ी के छूटने में अभी तीन घंटे की देर थी। वह टहलता टहलता स्टेशन पहुँचा। सड़कों में अँधेरा कर दिये जाने के कारण, पेरिस अजीब-सा मालूम पड़ता था। कहीं कहीं वृक्षों की नंगी डालियाँ अंधेरे में से बाहर की ओर निकली दिखाई पड़तीं; किन्तु मकान नहीं दिखाई पड़ते थे। हाँ उनका थोड़ा बहुत आभास अवश्य हो जाया करता था जैसे दूर की पहाड़ियों का। किसी बच्चे के हँसने की आवाज आई; कोई स्त्री कह रही थी : 'मेरा दस्ताना गिर पड़ा है।'—बस की सीटी सुनाई पड़ी, कहीं कोई सुलगती हुई सिगरेट दिखाई पड़ी।......हर जगह अँधेरे में नीला कुहरा सा मालूम पड़ता, लोगों के धीरे-धीरे बोलने की भनभनाहट ऐसी सुनाई पड़ती जैसे समुद्र के अन्दर लहरें उठ रही हों।

मिशो को याद आ रहा था कि चलते समय कैसे 'उसने और देनीजे ने एक दूसरे से बिदाई ली थी—वे अपने हार्दिक कष्ट को एक दूसरे पर व्यक्त नहीं होने देना चाहते थे। देनीजे ने उससे कहा था : 'मैंने तुम्हारी जेब में कुछ सिगरेटें रख दी हैं।' उसने कहा था' अपनी गर्दन पर कुछ लपेट लो, नहीं तो सर्दी खा जाओगे।' न जाने अब कब दोनों मिलें ? और यह भी कौन जाने कि उसकी भेंट अब कभी होगी भी या नहीं ?

१०

आंद्रे को प्वातियेर भेजा गया था। वहां रोज यही अफवाह उड़ा करती कि उसकी रेजीमेंट मैझिनोंलाइन पर भेजी जा रही है, किन्तु इसकी पुष्टि न हो पाती। चार महीने इसी प्रकार बीत गये। कर्नल अक्सर नियोर के बड़े जमीं-दार की कोठी पर आता जाता था। उसने बूढ़े जेनरल ग्रांदमेजां के साथ बाकू की लड़ाई में भाग लिया था, और पुरातत्व विभाग के स्थानीय अधिकारी सदा उस से पूछा करते कि कहीं प्वातियेर पर हवाई हमला तो नहीं होने वाला है। अफसरों ने अपनी अपनी प्रेमिकाएँ नगर में ठीक कर रखी थीं। सैनिकों के ऊपर हर शराबखाने का कर्ज लद चुका था और कोई भी ऐसा वेश्यालय बाकी न रहा था, जिसकी हवा उन्होंने न खाई हो। रोज आँद्रे अपनी डायरी में से एक दिन काट दिया करता।

उसका मित्र लोरिये अकसर उससे कहता, 'यह जानना काफी मजेदार होगा कि एक दिन हमने पाया या खोया !'

वहाँ का जीवन जेल जीवन की तरह नीरस था। रोज वही कवायद-परेड मैदान साफ करना, और खाने को शलजम का शोर्बा। इसके बाद लोग शहर की हवा खाने निकलते, दूकानों में काम करने वाली-लड़कियों से दोस्ती गाँठते, सिनेमा में पुरानी फिल्मों को देखते और खूब शराब उड़ाते।

आंद्रे ने बहुत जल्द दोस्त पैदा कर लिये। पेरिस में वह अकेला अपने स्टूडियों में पड़ा रहा करता था। किन्तु यहाँ पर तो उसे आदमियों के साथ

रहना पड़ रहा था। खूब हँसी मजाक होता और किस्से-कहानी सुनने में आते। लोरिये से उसकी विशेष रूप से मित्रता हो गई। वह अविग्नों का रहने वाला एक गायक था, जो बड़ी आजाद तबीयत का आदमी था जो एक क्षण तो प्रेम भरी कविताएँ गाता और दूसरे क्षण कहने लगता : 'यह लड़ाई सौ वर्ष तक चलती रहेगी। कर्नल ने माता मेरी को मोम के हाथ और पैर भेंट चढ़ाये हैं ताकि वह घायल न हो!'

वाईवे, जो ब्रिटानी का रहने वाला था, ठंडी साँस भर कर कहता, 'यहाँ की भूमि काफी अच्छी है। बकरियों की भी कमी नहीं। मेरी तरफ बकरियाँ नहीं होतीं। न जाने किसे सूझी कि लड़ाई छेड़ दी जाये।'

निवेल किसी कहवाखाने में नौकर रह चुका था। लड़ाई के योग्य घोषित किये जाने के पहले उसे दो महीने अस्पताल में रहना पड़ता था। लाबौन, जो मुनीमी का काम करता था, वायुयानों से बहुत घबराता था। वह कहता 'अगर साधारण तोप या बन्दूक की मार हो तो मुझे इतनी परवाह नहीं लेकिन जब ऊपर से गोलियाँ बरसने लगती हैं तो फिर मुझ से बर्दाश्त नहीं हो सकता!' उसे इसी बात से काफी इत्मीनान था कि उसकी स्त्री लड़ाई के मैदान से बहुत दूर थी। वह सदा वेश्यालयों की हवा खाया करता। 'किसी दिन भी जान जा सकती है,' वह कहा करता, 'तो फिर जब तक अवसर मिले क्यों न आजादी की जिन्दगी बसर की जायें।' एक और कम उम्र, पतला दुबला लड़का था ब्रिबर। वह नगर की अँधेरी गलियों और एक पागल बाजे-वाले की दशा पर कविताएँ लिखा करता।

एक दिन आंद्रे ने लोरिये से कहा, 'कुछ समझने की कोशिश करना बेकार है सब इतना गड़बड़ है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। यही नहीं पता कि कौन किसके विरुद्ध लड़ रहा है। कोई अपनी जगह से हिलने तक को तैयार नहीं। उनकी बातें सुनने से लाभ ही क्या? कभी सच बात बत-लायी नहीं जायगी। एक दूसरे को धोखे में रखने की कोशिश रहती है।'

जब रेडियो पर गाना खत्म हुआ और खबरें सुनाई जाने लगीं, तो सब चिल्ला उठे, 'बन्द करो इस बकवास को!' वे यह सुनते सुनते तंग आ गये थे कि दलादिये मानव सभ्यता की रक्षा के लिए लड़ रहा है, मोर्चे पर कोई

महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई। और जर्मनों ने सतरह हजार टन के जहाज और डुबा दिये।

इसी बीच तेस्सा एक बार वहाँ आया। वह इसलिए आया था कि वियेन के इलाके में कुछ जमीन खरीदे ले। पहले तो वह जो कुछ कमाता था खर्च कर डालता था, किन्तु आजकल उसके पास इतना धन इकट्ठा हो गया था कि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे क्या करे। जिन जिन कम्पनियों से उसका संबन्ध था उनका कारबार खूब जोरों पर था। अगर वह चाहता हो अपना धन अमेरिका में लगा देता, किन्तु तब उसे केवल संख्याओं से सरोकार रह जाता। इसके अतिरिक्त कुछ ठीक भी नहीं था। उसे शेयरों में या डालर के स्थायित्व में विश्वास नहीं रह गया था। उसने सोचा जमीन ही ऐसी चीज है जो बदलती नहीं। एक बड़ी जायदाद खरीद कर देहात में बंगला बनवाना कहीं अच्छा होगा।

मकान के सामने एक जलपरी की नंगी मूर्ति थी। उसके हाथ में काँसे का एक बर्तन था, जिसके किनारों से बर्फ के छोटे छोटे टुकड़े लटक रहे थे। जलपरी भी ठंडक के मारे जमी हुई मालूम पड़ती थी।

मार्कीज ने सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया और बोली, 'मैं पड़ोसी की हैसियत से आपका स्वागत करती हूँ। बड़ा ही अच्छा हुआ जो आपने प्लातू को चुना!'

भोजनवाले कमरे में उसे बहुत से लोग मिले, जिनमें स्थानीय ताल्लुकेदार, पुरातत्वविभाग के अधिकारी और सैनिक अफसर थे। साथ में उसका पुराना प्रतिद्वन्दी आँदमेजां भी था जो चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था: 'उन्हें अवश्य एक सबक सिखा देना चाहिये! मेरी समझ में नहीं आता कि ये अंग्रेज क्या कर रहे हैं! क्यों नहीं काले सागर में घुस कर सब ठीक कर दिया जाता!'

दूसरे रोज तेस्सा कार से पेरिस के लिए रवाना हो गया। बटालियन की ओर से उसे सलामी दी गई। आंद्रे ने ल्युसियाँ को अकसर अपने पिता के बारे में बातें करते सुना था, किन्तु उसने कभी तेस्सा को अपनी आंखों से नहीं देखा था। इस अवसर पर वह उसे देखकर चकित रह गया। वह किसी

शिकारी चिड़िया की तरह लगता था। तेस्सा ने गार्ड आफ आनर का निरीक्षण किया और अपनी लम्बी नाक को दस्ताने से पोंछा।

फौज भर में तेस्सा के आने की धूम मच गई। सब को पता चल गया था कि उसने एक जायदाद खरीदी है। बाइवे ने साँस भर कर कहा, 'इस कुत्ते ने यहां भी अपना दखल जमा लिया। मालूम होता है उसे खबर मिल गई कि यहाँ की जमीन अच्छी है! पैसा बहाने में उसने कोई कसर नहीं रखी। सुना है, आसपास में जमीन की कीमत तीन फ्रांक से बढ़कर बारह फ्रांक हो गई है!'

११

लोग मजाक में ल्युसियाँ से पूछते कि वह तेस्सा का कोई सम्बन्धी तो नहीं है। वह उत्तर देता, 'नाम मिलता जुलता जरूर है!' फिर भी उस नाम का ध्यान रखना आवश्यक था। मेजर ने सावधानी से काम लिया और ल्युसियाँ को अस्पताल में अर्दली का काम दिया ताकि गोलियों की मार से जहाँ तक हो सके वह दूर रहे।

जो कभी मठ था अब वह पागलखाने की तरह इस्तेमाल किया जा रहा था। ल्युसियाँ का काम था कि पागलों की देखभाल करे और जो खाने से इन्कार करें उन्हें नाक से रबर की नली द्वारा खुराक पहुँचाये। अपने बिस्तर पर एक सार्जेन्ट बंधा पड़ा था: वह हर एक को अपनी संगीन भोंकने की कोशिश करता था। बेरा नामक एक नवयुवक सिपाही गला फाड़ फाड़ कर चिल्ला रहा था। वह हर चीज को देखकर डर जाता था, चाहे वह बाल झाड़ने का ब्रश हो, या थूकदान या डाक्टर का चश्मा! दूसरा बीमार बराबर नंगे सिपाहियों की तसवीरें बनाता रहता और उनकी छाती स्त्रियों की रखता। मर्साई का एक आदमी जिसका दिमाग खराब हो गया था, सबेरे से शाम तक युद्ध विज्ञप्तियों के ये वाक्य दोहराता रहता, कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई!......कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं हुई......!'

एक दूसरा आदमी ल्युसियाँ से साफ साफ कहता, 'मैं तो जानबूझ कर यह जाल रचाये हूँ। पहले तो मैंने सोचा था कि जिगर की बीमारी का बहाना

बनाने से काम चल जायगा। मैंने एकदम पन्द्रह अंडे पी डाले, फिर भी कुछ न हुआ। मुझे मोर्चे पर भेज ही दिया गया। तब मैंने सोचा गाय की तरह बोलना आरंभ करूँ। कृपा करके यह भेद किसी से बतलाइयेगा नहीं!' ल्युसियाँ ने कंधा हिला कर उत्तर दिया, 'मुझे क्या गरज पड़ी है? जितना चाहो गाय की तरह रंभाओ!'

अर्दली खूब ताश खेलते और बराबर वेश्याओं के घरों की हवा खाते। अस्पताल के उन क्वार्टरों के ताकों में, जहाँ कभी सन्तों और ऋषि-मुनियों के चित्र रखे रहते थे अब शराब की बोतलें भरी पड़ी थीं। ल्युसियाँ को चूल्हे के पास बैठकर आग तापने में बड़ा आनन्द आता था। वह अपने मन में सोचता: अब मैं समझा कि क्यों प्राचीन काल में लोग अग्नि की पूजा करते थे!

जेनी ने लिख भेजा था कि वह अमेरिका वापस जा रही है। उसने बहाना बनाया कि अमेरिकन राजदूत उसके फ्रांस छोड़कर चले जाने पर जोर दे रहा है। उसने लिखा था, 'अब या तो पेरिस में और या न्यूयार्क में भेंट होगी। ल्युसियाँ ने पत्र पढ़ते ही गुस्से में आकर उसे आग में फेंक दिया। अब उसे पता चला चला कि जानेत के प्रति उसके हृदय में कितना प्रेम था। लोग कहते हैं समय दुश्मन होता है। किन्तु ऐसा नहीं। समय ऊपर की भूसी छुड़ा देता है; बनावटी दुख और क्षणिक भावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। नीचे केवल सच्ची भावनाएँ बच रहती हैं। वह जेनी के लिए इतना ही गैर था, जितनी कि वह उसके लिए गैर थी।

नये वर्ष के आते ही ल्युसियां ने दर्खास्त दी कि उसे मोर्चे पर भेज दिया जाय। उसने सोचा हर समय मौत का भय सामने रहने से यह उदासीनता जाती रहेगी, क्यों यहाँ अस्पताल का जीवन बड़ा नीरस था और हर वक्त पागलों की गालियाँ सुननी पड़ती थीं। गोलों के फटने से बराबर कोई न कोई मरता, किन्तु सेना वाले इसके आदी हो चुके थे और जँभाई लेकर कहा करते 'यह तो तकदीर का खेल है। न जाने किसकी मौत आ जाय!'

फरवरी के महीने में एक रोज सवेरे जब कि चारों ओर बर्फ से पृथ्वी ढंकी हुई थी और ऊपर सूर्य चमक रहा था, जनरल पिकार के साथ पार्लियामेंट के कुछ सदस्यों का एक मंडल सेना की स्थिति का निरीक्षण करने आया।

पिकार ने पूरी योजना तैयार कर रखी थी कि कैसे लड़ाई लड़ी जायेगी। उसने सीरिया वाली फौज का नाम 'बाकू फौज' रखा था। किन्तु फिनलैंड की घटनाओं के कारण उसे अपना ध्यान उत्तर की ओर लगाना पड़ा। उसने तेस्सा को राय दी, 'हमें अवश्य ही वहां एक शक्तिशाली सेना भेजनी चाहिये। जर्मनों का मुकाबला तो हम कर नहीं सकते। इसके अतिरिक्त हम करना भी नहीं चाहते। और सेना को बिना कोई काम दिये यों ही पड़े रहने देना भी खतरे से खाली नहीं। कम्युनिस्ट अपना काम कर रहे हैं। बसन्त के आते ही गड़बड़ी मचने का भय है। अब केवल फिनलैंड में लड़ाई जीत कर ही हम परिस्थिति को संभाल सकते हैं!'

जब वे लोग एक सैनिक चौकी के पास से होकर गुजरे तो ल्युसियाँ ने उन्हें सलामी दी। उसे पहले तो बड़ी चिन्ता हुई कि कहीं ब्रेतील उसे पहचान न ले किन्तु ब्रेतील बात करने में मगन था और फिर उसकी आदत भी नहीं थी कि साधारण सैनिकों को गौर से देखता।

ल्युसियाँ को अपने पिछले दिनों की याद आ गई। सदस्य लोग कमर झुका झुकाकर चल रहे थे, जैसे उनके ऊपर से गोलियाँ सनसनाती हुई निकल रही हों, उनके इस दिखावे पर भी ल्युसियाँ को हंसी न आई। उसे अनुभव हो रहा था कि 'शर्म के मारे गर्दन झुकना' किसे कहते हैं। ठीक है, उसका पिछला जीवन बड़ा ही शर्मनाक था। वह उस निर्दयी पर भला कैसे विश्वास कर सकता था? यह अन्दाजा लगाना कठिन न था कि ब्रेतील पिकार से क्या बात कर रहा है—दोनों यह षड़यंत्र रच रहे थे कि क्या तरकीब की जाये कि फ्रांस को मुंह की खानी पड़े। वे सन् १६३६ का बदला चुकाना चाहते थे। उन्हें फौजों को सीरिया और फिनलैंड भेजना था इससे कोई मतलब नहीं कि कहाँ। और वह हिटलर को भी घुसने देने के लिए तैयार थे। ल्युसियां को अब याद आया कि कैसे उसका पिता भी जब हड़तालियों से बिगड़ता तो बकने लगता,' 'इनसे तो जर्मन भी अच्छे होंगे!' सब एक थाली के बैंगन थे!

शाम को ल्युसियां और आल्फ्रेड आग जलाकर उसके पास जा बैठे। वे चुप थे और ठंड से सिकुड़े जा रहे थे। इतने में आल्फ्रेड ने कहना शुरू किया, 'राष्ट्र संघ के प्रस्तावों के बाद...।'

ल्युसियां बीच में बोल उठा, 'सब बेकार की चीज है। उनका महत्व

खाली शब्दों में अधिक नहीं, जिनके पर्दे में हर क़िस्म की धोखेबाजी, व्यक्तिगत स्वार्थों और आपसी वैमनस्य को छिपाने की कोशिश की जाती है! तुमने ब्रेतील को देखा नहीं? कितना शुद्ध और पवित्र आत्मा बनता है! दिखलाता ऐसा है मानो मरकर सीधे स्वर्ग ही में तो जायेगा! 'देशभक्त' तो वह है ही! जरा जब वह लारेन की चर्चा करने लगे; तब देखो किस बुरी तरह हिचकियाँ लेने लगता है! किन्तु वह यह अच्छी तरह जानता है कि ग्रांदेल जर्मन भेदिया है, फिर भी उसे बचाता रहता है। क्या तुम समझते हो यह पिकार लड़ाई की तैयारी कर रहा है? हर्गिज नहीं! वह और ही कोई षड्यंत्र रच रहा है। वह फासिस्ट प्रतिक्रान्ति करने के फेर में है। मशीनगनें आई कहाँ से? डजेल्डार्फ से ही तो। और उसे रुपया किसने दिया? एक जर्मन ने जिसका नाम किलमान था। बड़ी लम्बी और दुखपूर्ण कहानी है। राष्ट्र संघ की बातें मुझसे न करो।'

बहुत देर तक ल्युसियां ब्रेतील उसके अनुयाइयों, मांतिनी के घर में होने वाली मीटिंगों और देश के साथ उसके 'उसके विश्वासघात पर बोलता रहा। उसने केवल यह नहीं बतलाया कि किलमान का पत्र उसके हाथ कैसे लगा। वह यह भेद नहीं खोलना चाहता था कि वह तेरसा का लड़का है; वह समझता था यह और भी लज्जाजनक बात होगी। आल्फ्रेड के चेहरे से मालूम पड़ रहा था कि वह उदास है। अन्त में वह बोला, 'अगर यह सच है तो हमें यह सब दूसरों को भी बतलानी चाहिये। इन बदमाशों को निकाल बाहर किया जाये तभी देश की रक्षा हो सकती है!'

ल्युसियां ने मुसकराते हुए कहा, 'ठीक वही बात जेनी भी कहा करती थी! वह एक अमेरिकन थी। मैं उसके साथ, या यों कहो उसके धन के साथ रहा करता था। वह भी मुझसे यही कहती कि 'तब तो क्रान्ति कर देना चाहिये!' लेकिन वक्त कहाँ है? हमने सन् १९३६ में क्या किया? उसे फिर से दोहराने से कोई लाभ नहीं। हमें तुरन्त पीस डाला जायेगा और ब्रेतील फ्रांस का 'गलेतियर' (डिक्टेटर) बन जायगा। या फिर हो सकता देश में खूब गड़बड़ी मचने दी जाये, यहाँ तक कि सारा देश वीरान हो जाय और फिर जब हजार-दो हजार वर्ष के बाद तुम्हारे जैसा कोई पुरातत्ववेत्ता आकर खुदाई करे और कहे, 'वाह क्या कहना! उस युग में सभ्यता कितने उच्च

शिखर पर थो !' खैर, इतनी अच्छा है कि हम तब तक नहीं रहेंगे । उफ़ ! कितनी सर्दी है ! मैं तो सच कहता हूँ । मेरी तबीयत उकता गई !'

१२

जोलियो ने, साल का नया दिन अपनी स्त्री और उसके भाई के साथ बिताया, जो फौज में डाक्टर था और तीन दिन की छुट्टी पर आया था । वे लोग घूमते घूमते एक रेस्तरां में पहुँचे और वहाँ उन्होंने शैम्पेन की दो बोतलें खाली कीं । कुछ लड़कियों ने उनके उपर नीले और बैंगनी कागज की गोलियाँ बना कर फेंकीं । आल्फ्रेड ने लज्जा से आंखें नीची कर लीं और कहा, 'बम फेंके जा रहे हैं !' जोलियो ने शराब का दौर शुरू करते हुए कहा, 'विजय की कामना के साथ, ईश्वर करे हमारे सैनिक अगले साल का नया दिन बर्लिन में मनायें !'

जोलियो के इन खर्चीले तरीकों को देखकर आल्फ्रेड को कुछ असमंजस सा हुआ । लेकिन मेरी ने अपने भाई की ओर स्नेह पूर्ण दृष्टि से देखते हुए धीमे से कहा, 'काश, तुम लड़ाई से सही सलामत वापस आओ तो कितनी अच्छी बात हो !'

जोलियो ने कहा 'बिल्कुल ठीक । इस साल के अन्त तक हर जर्मन तोप के मुकाबले कर हमारे पास पाँच भारी तोपें होंगी ।'

'मैं नहीं कह सकता, 'आल्फ्रेड बोला, 'मुझे इन चीजों का कोई ज्ञान नहीं । किन्तु 'सिरम' की बड़ी कमी है । मुझे तो डर है कि कहीं जर्मन धोखे में ही हमारे ऊपर न चढ़ आयें, पिछली लड़ाई में 'टिटनेस' की बीमारी फैली थी......।'

जोलियो ने उसे बीच में ही रोक दिया ! वह बीमारी या मौत की कोई बात नहीं सुन सकता था ।

दूसरे दिन आल्फ्रेड चला गया । जोलियो ने फिर कभी उसका उल्लेख नहीं किया । मेरी अक्सर आँसू बहाया करती कि कहीं उसका भाई मारा न गया हो । जोलियो ने उसे बहुत कुछ समझाया कि डाक्टर लोग सेना के

बिल्कुल पीछे रहते हैं और उन्हें कोई खतरा न हीं रहता, किन्तु उस पर कोई असर न पड़ता। वह कहा करती, 'किन्तु अगर अचानक कहीं......?

जोलियो का जीवन सदा की तरह बड़ी दौड़ धूप का था। उसके दिमाग में आज कल टेढ़े मेढ़े फिनी नामों की पूरी सूची गूँजा करती थी। रात को जब वह ऊँघते ऊँघते सो जाता तो स्वप्न में उसे दिखाई पड़ता कि बर्फ से जमे हुए आदमी आकाश से लटक रहे हैं।

वह लालची न था, वह चाहता था कि हर एक को उसका उचित हिस्सा उसने अपने एक दर्जन मित्रों को स्टाकहोम और फिनलैंड भेजा। अपने चचेरे भाई मारियस को, जो मसोई का रहने वाला था, उसने बुलाकर कहा, 'जाओ एक बढ़िया नाटक तैयार करो। उसमें मैंनरहाइम का भी उल्लेख हो। उसकी आमदनी फिनलैंड वालों की सहायता में दे देना काफी पैसा आयेगा।'

दो सप्ताह के अन्दर ही अन्दर नाटक खेला गया। नगर के प्रतिष्ठित लोग देखने आये। मारियस ने जोजेफीन मांतिनी की ओर गौर से देखते हुए पार्ट अदा करना शुरू किया महिलाएँ बार-बार ताली बजाती रहीं जो कुछ भी इकट्ठा हुआ वह फिनलैंड तो जाने से रहा। हाँ, उससे मारियस की जेब जरूर गरम हुई।

अखबार की बिक्री तेजी पर थी, किन्तु जोलियो प्रसन्न न था। उसे न मालूम किस चीज का भय लगा रहता था। दिन में दो बार उसे लड़ाई के मोर्चे से युद्ध-विज्ञप्ति मिलती कि 'कोई विशेष घटना नहीं हुई!' पेरिस वाले पैसे कमा रहे थे और खूब मौज उड़ा रहे थे।

'जरा देखो तो सही,' जोलियों कहता, 'लोग मकान और कारें इस तरह खरीद रहे हैं जैसे रोजमर्रा की चीजें खरीद रहे हों!'

रूर का सबसे बड़ा धनी थाइसेन पेरिस पहुँचा। फोटोग्राफरों ने उसे घेर लिया, और चतुर सुन्दरियों ने उस पर अपनी मुसकान की वर्षा शुरू कर दी। 'नई आवाज' में उसके छोटे से कुत्ते का फोटो भी छपा। जोलियो जनता था कि ब्रेतील उससे गुप्त रूप से बातें चला रहा था : फोटो लेने तक ही बात सीमित न रही। ब्रेतील ने फोन पर आदेश दिया कि तुरन्त अखबार में

थाइसेन के जीवन की घटनाएँ प्रकाशित की जायें। उसने कहा, 'हमें इन्हीं चीजों की तो आवश्यकता है! इनसे आपस का मेलजोल बढ़ता है।'

जोलियो चटपट थाइसेन से मिलने के लिए चल पड़ा। उसे बहुत देर तक इन्तजार करना पड़ा। इतने में एक आदमी जिस के चेहरे से घृणा टपक रही थी, बाहर निकला। जोलियो ने झट सिर झुका कर सलाम किया और मुसकराते हुए स्वतंत्रता और राष्ट्रों की एकता पर बोलना शुरू किया। किन्तु थाइसेन ने बड़े रूखेपन से कह दिया, 'क्षमा कीजियेगा। इस समय मैं बहुत व्यस्त हूँ।'

उसने जोलियो को अपना हस्तलिखित जीवन चरित्र दे दिया और फिर अन्दर चला गया। जब जोलियो ने उसे देखा तो उसकी नजर एक जगह पर पड़ी जहाँ लिखा था, 'उस साल बसन्त में मैंने हिटलर के साथ मिलकर कम्यु-निस्टों के विरुद्ध कार्रवाई करने की योजना तैयार की......।'

जोलियो थका-माँदा घर पहुँचा। मेरी को रोते देख कर वह बोला: 'आल्फ्रेड की जरा भी चिन्ता न करो। लड़ाई नहीं हो रही है, और न होने जा रही है। क्या बतलाऊँ तुमने उस जर्मन को देखा नहीं! उसके लिए हिट-लर का हुक्म है कि कैद कर लिया जाय। किन्तु अभी-अभी वह तेस्सा से भेंट करने गया है। कल हम उसका जीवन चरित्र प्रकाशित कर रहे हैं। मांतिनी ने मुझसे कहा है—हमारा पुराना सम्पर्क फिर से स्थापित हो रहा है। समझीं इसका क्या अर्थ है? मेरी, रोओ नहीं! आल्फ्रेड को कुछ नहीं होगा। सिवाय फिनलैंड के लड़ाई नहीं नहीं हो रही है।

उसकी स्त्री ने मुंह से रुमाल हटाते हुए धीमे से कहा, 'आल्फ्रेड मारा जा चुका!'

तब जाकर कहीं जोलियो की नजर उस बड़े पीले लिफाफे पर पड़ी जो मेज पर पड़ा हुआ था।

१३

तेस्सा एक उबला हुआ अंडा खा रहा था कि इतने में उसे एक तार मिला। उसकी आँखों के सामने तार के ये शब्द नाचने लगे, 'संधि की बातचीत—स्टाकहोम—फिनी प्रतिनिधिमंडल।' उसे बहुत गुस्सा आया। जब जरा होश ठीक हुआ तो उसने फोन पर दलादिये से कहा, 'सारा बना बनाया खेल बिगड़ गया!'

दलादिये ने उत्तर दिया कि वह रेडियो पर भाषण करने जा रहा है, जिस में वह फिनलैंडवालों को राय देगा कि वे लड़ते जायें। एक सेना उनकी सहायता के लिए भेजी जा रही है।

तेस्सा ने सिर हिला कर कहा, 'ऊंहूँ! देर हो गई, मित्र! अब वे तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अब कोई और तरकीब सोचनी चाहिये।'

दलादिये ने कहना शुरू किया कि यूरोप के छोटे राष्ट्रों की स्थिति बड़ी शोचनीय है। तेस्सा ने चिढ़कर बीच में ही कहा, 'इसमें क्या शक है। उनकी दशा सचमुच शोचनीय है। अब हमारा मंत्रिमंडल एक सप्ताह भी नहीं टिक सकता।'

यह कह कर उसने गिनना शुरू किया कि इस समय कितने वोट किस पक्ष को मिल सकते हैं। हिसाब लगाने से पता चला कि बहुमत विरुद्ध होगा। संसार में न्याय ऐसी कोई चीज नहीं। तेस्सा ने फिनलैंडवालों को हजारों गालियां सुनायीं। उन्हें जंगली, असभ्य और न जाने क्या क्या कह डाला।

जैसा उसने सोचा था ठीक वही हुआ: सरकारी पक्ष का समर्थन करने-वाले अल्पमत में थे। रेनो सामने आया। तेस्सा उससे घृणा करता था रेनो ने तेस्सा से अनुरोध किया कि वह अपने स्थान पर बना रहे।

'सोचकर बताऊँगा,' तेस्सा ने उत्तर दिया। 'मुझे अपने साथियों से राय लेनी पड़ेगी।'

वह सीधे दलादिये से मिलने पहुँचा। दलादिये इस समय शराब के नशे में चूर था। उससे घूर कर तेस्सा को देखा और कहा, 'रेनो के आने से सब कुछ चौपट हो गया। मैं तो उसकी आंख में धूल झोंक कर अपनी जगह बना रहूँगा, और अन्त तक!'

तेस्सा उससे और कुछ न कहला सका। फिर उसने ब्रेतील के पास जाने का निश्चय किया। क्योंकि भविष्य इस समय उसी के हाथ में था! यदि ब्रेतील ने उसे विरोधी पक्ष में सम्मिलित हो जाने की राय दी तो वह तुरन्त अपना पद त्याग देगा। उसे थोड़ा इन्तजार करना और साहस से काम लेना होगा।

ब्रेतील तेस्सा से कहा, 'रेडिकलों के मेरे पास आने पर तुम्हें आश्चर्य नहीं होना चाहिये। हम राष्ट्रीय एकता को मजबूत बना रहे हैं। वायस ग्रांदेल के साथ मिलकर काम कर रहा है। वैसे मेरी राय है कि सब कुछ ठीक ही चल रहा है।'

उसके ऊँचे स्वर से तेस्सा को आश्चर्य हुआ, उसने कहा, 'मेरी समझ में तो सब कुछ चौपट हुआ जा रहा है। फिनलैंडवालों ने अपने साथ हमें भी डुबोया! जहां तक रेनो का संबन्ध है वह कुछ भी कर सकता है!'

'मैं भी उसका कोई प्रशंसक नहीं,' ब्रेतील ने उत्तर दिया। 'वह अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली है। वह चाहता है कि फ्रांस अंग्रेजों का एक उपनिवेश बन जाय। किन्तु वह एक तितली से, गर्मी के आने के पहले ही गायब हो जाती है, अधिक नहीं। इस बीच हमें चाहिये कि हम उससे जितना भी अपना मतलब निकाल सकें निकाल लें। वह तुरन्त गैमेलां को निकाल बाहर करेगा, यह तो अच्छा ही होगा। उसके स्थान पर हमें पिकार को रखा देना चाहिये। उसे अपना रंग जमाने के लिए भी तो कुछ करना पड़ेगा। और पहली ही छलांग में वह नीचे आ रहेगा।'

'उसने मुझे मंत्रिमंडल में स्थान देने का वादा किया है। किन्तु मैं तो लेने से इनकार करना चाहता हूँ।'

'अरे, ऐसा हर्गिज न करना! तुम्हें देश के हित को सामने रखना पड़ेगा। हमारा एक आदमी मंत्रिमंडल में अवश्य होना चाहिये!'

जब जोलियो के पास नये मंत्रिमंडल के सदस्यों को नामों की सूची पहुँची तो वह बोला, 'देखो तो भला! तीस मंत्रियों में में सोलह ऐसे है जो वकील हैं। फिर भी इसे 'युद्ध मंत्रिमंडल कहा जाता है!'

विदेश की खबरें आने लगीं। उन्हें पढ़ते ही जोलियो का रंग उड़ गया। 'बड़ा अपशकुन है,' वह बाल उठा। 'एटना पहाड़ से आग और लावा निकलने लगा यह बड़ा ही अशुभ लक्षण है! अभी तक तो यही शिकायत की जा रही थी कि फिनलैंड का मौका हाथ से निकल गया। अब तो मुझे यह डर है कि कहीं मराकशी सेना मर्साई पर न चढ़ाई कर दे!'

तीन सप्ताह बीत गये। एक रोज सवेरे जोलियो को खबर मिली कि नार्वे के तट से कुछ हटकर बारूद को सुरंगें बिछायी जा रही थीं। उसने तुरन्त ही ब्वारिये को फोन पर बुलाकर कहा, 'मैं तुम्हें बधाई देता हूँ कि तुम्हें दूसरा भी आर्डर मिल गया। रेनो भी रूसी भालुओं से टक्कर लेना चाहता है। अब नार्वे के नक्शों की जरूरत पड़ेगी। केवल इस बात का ध्यान रखना कि दाम गिरने न पायें।'

मांतिनी ने एक भारी भोज दिया—शायद तेस्सा के सम्मान में दक्षिण पक्ष की ओर से इतना बड़ा भोज कभी नहीं दिया गया था। अतिथियों में ब्रेतील, लवाल, फ्लांदी, ग्रांदेल, म्युजे और जनरल पिकार सभी थे।

स्त्रियों में इस विषय पर बहस छिड़ी हुई थी कि छुट्टी बिताने के कौन-सा स्थान सब से अधिक उचित होगा। श्रीमती पिकार की राय ब्रांयकां के पक्ष में थी।

'मुझे मालूम है वह इटली की सरहद के पास है,' उसने कहा, किन्तु मेरे पति का कहना है कि मुसोलिनी हर्गिज लड़ाई नहीं छेड़ेगा। मैं तो इस तूफान से दूर रहकर आराम करना चाहती हूँ। वहाँ बड़ा ही शान्तिपूर्ण वातावरण हैं।'

श्रीमती म्युजे ने कुछ सप्ताह ब्वारिज में गुजारने का इरादा जाहिर किया। वहाँ बड़े ही दिलचस्प लोग मिलते थे—और फिर अटलांटिक का तट था।

श्रीमती मांतिनी, जिसके पाउडर से पुते कंधे उसके निचले कपड़ों में से निकले पड़ते थे, मेहमानों की खातिरदारी कर रही थी। 'मंगलवार का

दिन भी कितना खराब दिन है कि न मांस मिले, न कबाब, न कोई शराब। किन्तु ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि हमारे देशवासी फिर भी शोर गुल नहीं मचाते।' जनरल की ओर मुड़कर वह बोली, 'मैं आप को यह बढ़िया शराब पेश करती हूँ। यह मेरे भाई के यहाँ से आई है। मालूम होता है, आप किसी विचार में मग्न हैं?'

'नहीं, नहीं। वाह क्या कहना! सचमुच यह शराब बहुत ही बढ़िया है।'

'कोई समाचार मिला?'

'ऐसी कोई चीज नहीं जिसे सुनकर मन प्रसन्न हो। मैं लड़ाई की बाबत कह रहा हूँ,' जनरल ने ठंडी सांस भरकर कहा। 'कहा जाता था कि बर्जेन-ओसलो सड़क बन्द कर दी जायगी; लेकिन जर्मन सेना के बढ़ते हुए तूफान के आगे कुछ टिकता नहीं। उत्तरी भाग के अतिरिक्त कुछ रह नहीं गया। परिस्थिति......।'

तेस्सा केवल अन्तिम शब्द सुन पाया था। वह तुरन्त बोल उठा, 'परिस्थिति काफी सुधर गई है। मुझे आशा थी कि काफी बड़ा बहुमत हमारे पक्ष में होगा, यद्यपि सब नहीं साथ देंगे, किन्तु पार्लियामेंट ने एकमत होकर जिस तरह समर्थन किया उससे तो मुझे कुछ कम आश्चर्य न हुआ। हमारे आदमियों की राजनीतिक सूझ की जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। हम सचमुच आज सारे देश की इच्छाओं और आशाओं के केन्द्र बने हुए हैं। है न, जनरल?'

'यह नार्वे वाली चाल अंग्रेजों को सूझी थी,' उसने फिर कहा। 'हमसे इससे कोई मतलब नहीं। एडमिरल दार्ला नाराज है। उसका कहना है कि इससे हिटलर की स्थिति और अच्छी हो जायगी।'

ब्रेतील ने दाँत पीस कर कहा, 'अरे ये अंग्रेज! सन् १६१६ में मैं उन्हें सोम के मोर्चे पर देख चुका हूँ। वे रोज सबेरे खाइयों में भी हजामत जरूर बनाते थे। देखना है, उत्तर के जंगली ठंडे प्रदेश में वे क्या करते हैं!'

जोजेफाइन मांतिनी ने तेस्सा के पास आकर धीमे से पूछा, 'ल्युसियां कहाँ है?'

तेस्सा की समझ में न आया कि वह क्या जवाब दे। आज पहली बार

किसी ने उससे उसके पुत्र के बारे में पूछा था। उसने बिना कुछ सोचे ही कह दिया, 'वह गायब हो गया है!' किन्तु उसे तुरन्त ऐसा लगा कि उसका उत्तर बिल्कुल अस्पष्ट था। इसलिए अपने को सही करते हुए उसने फिर कहा, 'शायद वह मर चुका, बेचारा ल्युंसियां!' यह कहते-कहते उसकी आवाज में कँपकपी आ गई।

जोजेफाइन को इतना धक्का लगा कि उसने रोना शुरू कर दिया। तेस्सा को भी लगा कि उसकी आँखों में आँसू आ गये, किन्तु उसने झट उँगलियों से उन्हें पोंछ कर नाक छिनक दी।

मांतिनी वहाँ आ पहुँचा। तेस्सा ने तुरन्त ज्यों की त्यों सूरत बना ली। क्योंकि अपने मन की भावनाओं का वहाँ परिचय देना उसे ठीक न मालूम हुआ। उसने कहना शुरू किया, 'हिटलर ने एक दूसरी गलती और की। अब वह उत्तर के जंगलियों से लड़ने चला है। अच्छा है, इतनी देर में हमारा काम काफी बन जायगा। दलादिये ने तय किया है कि पाँच लाख किसानों को फौज से छोड़ दिया जाय। हमारे लिए आवश्यक हो गया है कि अनाज का भी कोई इन्तजाम हो। बिना गल्ले के तो हम रह नहीं सकते। दूकेन और फूजे को हायतोबा मचाने दीजिये। हम संसारवालों को दिखला देंगे कि फ्रांस में मुकाबले की कितनी ताकत है।'

मांतिनी ने उसकी बात से सहमत होते हुए सर हिला दिया। वह बिल्कुल ठीक कह रहा था। उसने तेस्सा को गले लगते हुए जोर से कहा, 'तुमने यह बहुत ही अच्छा किया जो प्वातू में जमीन खरीद ली। यह जगह फ्रांस के बीचोबीच है, सरहद से बिल्कुल दूर। मेरी सारी जायदाद सेवाय में है और सच पूछो तो मुझे बड़ा खतरा रहता है। तुम जानते ही हो कि इटली वाले कितने अजीब होते हैं, उनका कुछ ठीक नहीं। लेकिन तुम तो चैन की नींद सो सकते हो। प्वातू तक कोई नहीं पहुँच सकता, मैंने सदा ब्रेतील से कहा है कि तुम में सचमुच एक राजनीतिज्ञ की बुद्धि है!'

१४

जब म्युजे को पता चला कि दलादिये की जगह रेनो आ गया, तो उसने ग्रांदेल से कहा, 'पहली मई तक मुझे एक सौ अस्सी बमवर्षक वायुयान तैयार करके देने थे। लेकिन अब हालत बदल चुकी है। तुम जाकर मन्त्री से कह दो कि अभी और भी बहुत सी जाँच-पड़ताल बाकी है!'

'मैं समझा,' ग्रांदेल ने मुसकरा कर कहा, 'रेनो का कोई ठिकाना नहीं। कहीं वह सचमुच की लड़ाई में हमें न झोंक दे। वह अल्पाइन सेना को नार्विक क्यों भेजना चाहता था? मुझे तो आशा है कि वह जल्द ही निकाल बाहर किया जायगा। एक करारी हार काफी होगी। जर्मन अपने भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। सुनने में आता है कि उसने देजेर को बधाई का संदेश भी भेजा है। आसार अच्छे ही हैं! देजेर की दोस्ती उसको महँगी पड़ेगी।'

देजेर, जिसकी कभी तूती बोलती थी, अब लोगों के लिए मजाक की चीज बन गया था। कार्टून खींचने वाले उसकी तरह-तरह की तस्वीरें बनाकर पैसा कमाते थे। और ब्रेतील ने जोलियो को आदेश दे रखा था, 'देजेर का मामला बराबर उठाये रहो'। लिखते रहो कि अन्तरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में उसका बड़ा भारी स्थान है। वह तोपें तैयार कराता है और करोड़ों का मालिक है। वह लड़ाई को अन्त तक लड़ने के पक्ष में है। तुम जितना चाहो उसे बदनाम कर सकते हो। तेस्सा ने वादा किया है कि सरकार तुम्हारे इन लेखों पर प्रतिबन्ध न लगायेगी।'

मांतिनी ने भी जोलियो को हुक्म दिया कि देजेर के खिलाफ़ जेहाद बोल दिया जाय।

कभी देजेर की बड़ी ऊँची स्थिति थी, किन्तु ज्यों ही वह कुछ डाँवांडोल होनी शुरू हुई, वैसे ही हर एक यह समझ बैठा कि बस अब वह खत्म हो गया। लोग कहने लगे 'उसका दिवाला पिट गया!' यद्यपि उसकी अब भी

बहुत सी फैक्टरियाँ थीं और बहुत से कारोबार में उसके हिस्से थे। कोई भी यह जानने की कोशिश नहीं करता कि आखिर उसका कारोबार कैसा चल रहा है। सोन फैक्टरी के इन्जीनियर कहते, 'डायरेक्टरों की वार्षिक मीटिंग होने तक काम चलाने के लिए उसे कोई नौकरी करनी पड़ेगी।' यहाँ तक कि उसके पुराने माली को भी संदेह था कि उसके मालिक का दिवाला निकल चुका। अब वह अपनी तनखाह पेशगी ले लिया करता था।

देजेर की शराब पीने की आदत बढ़ती गई। उसने अपनी बीमारी के बारे में जानेत से कुछ नहीं बतलाया। जब वह अपने मित्रों से मिलता तो मजाक में कहता, 'पहले मुझे अपना परिचय देने दो—मैं हूँ एक आस्ट्रियन यहूदी करोड़पति, जिसका माली भी पेशगी तनखाह माँगता है!' जब वह लोगों से बोलने की कोशिश करता तो वे मुँह फेर लेते। बीमारी और चिन्ताओं ने उसके चेहरे की सारी रौनक छीन ली थी; उसकी खाल लटक आई थी और देखने में वह बड़ा भद्दा मालूम पड़ने लगा था।

जानेत को उस पर बड़ी दया आती थी। यह ऐसी भावना थी, जो दोनों का सिर नीचा कर देती थी। कई बार उसने बड़ी कोशिश करके देजेर पर बिगड़ना चाहा, और यह सोचकर कि देजेर को भी गुस्सा आ जायेगा। किन्तु देजेर केवल एक बूढ़े कुत्ते की तरह उसकी ओर करुणा भरी आँखों से देखता बैठा रहता। तब वह अपनी बाहें उसके गले में डाल देती और कुछ प्रेमपूर्ण शब्द कहती। वह चुपके-चुपके 'जानेत' का नाम दोहराता, जैसे वह अपनी रक्षा के लिए किसी मंत्र का उच्चारण कर रहा हो। वह जानता कि जानेत की बदौलत ही वह अब तक जीवित है। उसे न जाने कितनी बार मौत से भय लगा, इसलिए नहीं कि उसमें कोई कष्ट होता है बल्कि इसलिए कि उसके बाद क्या होगा। कभी कभी तो वह सोचता कि अपने साथ वह जानेत की जिन्दगी भी तबाह कर रहा है। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह जानेत से अलग रहेगा। किन्तु यह निश्चय कुछ सप्ताह चला। एक दिन बड़ी रात बीते उसने जानेत को फोन किया और फिर घबराया हुआ दौड़कर उसके पास जा पहुँचा। अन्दर पहुँचते ही जानेत ने उसके कड़े भूरे बालों को उँगलियों से सहलाया, और उसकी बड़ी-बड़ी भयभीत आंखों से आँसू निकलकर गालों पर बहने लगे।

1

पहली मई के रोज अचानक कार्ल्टन बार में म्युजे से देजेर की मुठभेड़ हो गई।

'मुझे तो पता चला था कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं ?'

'नहीं तो, मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ।'

'तन्दुरुस्ती बड़ी चीज है; विशेषकर हम लोगों की उम्रवालों के लिए। जानते हो आज कौन सा दिन है ? पहली मई। और ऐसा मालूम पड़ता है जैसे किसी को इसका पता भी नहीं। तुम्हें याद है, परसाल इस दिन हम लोगों को कितनी चिन्ता थी ? यह डर लगा था कि कहीं हड़तालें और प्रदर्शन न हों। अब तो इस दिन का कोई महत्व ही नहीं रह गया। जैसे सब दिन वैसे यह भी। कोई भी बुराई बिना किसी अच्छाई के नहीं होती। मानते हो न ?' म्युजे ने देजेर को कम्युनिस्टों का पक्षपाती समझने की इतनी आदत डाल ली थी कि वह अब सचमुच ही इस बात को ठीक समझने लगा था। किन्तु देजेर ने अनमने ढंग से उत्तर दिया, 'चारों ओर सन्नाटा है। मैं भी चुपचाप ही हूँ।'

एक सप्ताह बाद देजेर जानेत से मिला। वह उसकी ओर देखे बिना आगे बढ़ गई, और मुसकराती रही। उसने सोचा अब यह बिना मेरे काम चलाने की कोशिश कर रही है। अच्छा है, इसी समय इससे सम्बन्ध तोड़ दिया जाय।

उसने अकसर जानेत पर जोर डाला था कि वह अपना मकान बदल दे, किन्तु उसने बराबर इनकार किया था। वह अब भी बोनापार्ट सड़क से दूर एक छोटी होटल के एक कमरे में रहती थी। देजेर को वहाँ की मालकिन याद थी, जो काफी मोटी तगड़ी, सांवले रंग की थी और सदा पाउडर पोते रहती थी, होटल की चक्करदार सीढ़ियों को, जिन पर उसे हाँफते हुए और कदम-कदम पर डरते हुए चढ़ना पड़ता था, वह भली भाँति पहचानता था। रास्ते में कहीं पेशाबखाने की बदबू आती, कहीं खाना पकने की और कहीं सस्ते इत्र की। जानेत का कमरा तंग और लम्बा था। पचास वर्ष से चूल्हे के पास वाली अलगनी पर काँसे की एक मूर्ति रखी हुई थी, जिसमें एक पुरुष एक स्त्री का चुम्बन ले रहा था। वहाँ पहले एक कलाकार रह चुका था, जो पेशे से शायद दफ्तरी थी, किन्तु किसी सुन्दरी के मोह जाल में फँस गया था।

देजेर ने जानेत से धीरे से कहा, 'अब हमें एक दूसरे से मिलना छोड़ देना चाहिये।' वह यह निश्चय करके आया था कि आज वह यह अवश्य कहेगा, किन्तु उसे डर था कि कहीं जानेत कारण न पूछ बैठे या उसकी ओर देखने लगे, और उसका दृढ़ संकल्प भी जाता रहे। किन्तु जानेत ने मुँह फेर-कर कहा, 'अच्छा, ठीक है।' उसने अपने मन में सोचा : अब कुछ नहीं बाकी रहा, धोखा भी नहीं रह गया। चलो, अच्छा ही हुआ। देजेर को भी अपनी इस शान्ति पर आश्चर्य हो रहा था। साफ उसकी मौत हो रही थी, फिर भी उसमें कोई भय न था।

मई का महीना था। रात गर्म थी। रात के अंधेरे में आकाश में असंख्य तारे जगमगा रहे थे। अखरोट के पेड़ की पत्तियों में हवा से सरसराहट पैदा हो रही थी। पासवाले गिरजाघर के घंटे में हर पन्द्रह मिनट के बाद बजते थे।

'अब कोई प्रेमी और प्रेमिका नहीं रही', वह बोली, 'केवल तारे हैं, वृक्ष हैं और कविताएँ हैं। देजेर हम और तुम दोनों बूढ़े हो चुके।'

'तुमने तो जिन्दगी का मजा भी नहीं उठाया। मैं तुम्हारे रास्ते में बाधक रहा, अब मैं नहीं रहूँगा। मैं तुम्हारे लिए रास्ता साफ किये दे रहा हूँ—और अब मैं अधिक जीवित नहीं रहूँगा......।'

ये अन्तिम शब्द उसके मुँह से उसकी इच्छा के विरुद्ध निकल गये। वह अपने ही ऊपर नाराज हो रहा था क्योंकि इससे जानेत को फिर उस पर दया आ जायगी—वह सोचेगी कि मैं उससे बिनती कर रहा हूँ। देजेर को अच्छी तरह मालूम था कि प्रेम धन से नहीं खरीदा जा सकता, और वह तो आँसू बहाकर भी नहीं खरीदना चाहता था। बिना उसकी भावनाओं की ओर ध्यान दिये जानेत बोली, 'मैं भी जीवित नहीं रहना चाहती। कभी मैंने अवश्य चाहा था, किन्तु आशा पूरी न हुई। और तुम्हारा क्या हाल है?'

'मुझे मौत से डर लगता है, यानी मेरी समझ में यह नहीं आता कि मरना किसे कहते हैं।'

वह जाने के लिए तैयार हुआ ही था कि इतने में तोपों ने गरजना शुरू किया। ऐसा मालूम पड़ने लगा जैसे शिकारी कुत्तों का एक झुंड का झुंड

टूट पड़ा हो और भूँक रहा हो। रात के नीले मखमली आकाश में सर्चलाइट शत्रु के जहाजों को ढूँढ़ने लगी, और खतरे की सीटी बड़ी जोर से और डरावने ढंग से बजने लगी।

१५

मेजर लेराय का चेहरा नीला पड़ गया। उसका जबड़ा इस प्रकार हिल रहा था मानो वह अपने आप कुछ बड़बड़ा रहा है।

'मेरी समझ में नहीं आता,' जनरल लेरिदो ने कहा, 'पुलों का इससे क्या सम्बन्ध ?'

'जनरल मोके ने यही कहा है......मैंने टेलीफोन पर बात की है।'

'ऐसी बातें करने के लिए जनरल मोके का 'कोर्टमार्शल' होना चाहिये। दुश्मन पुलों से केवल साठ मील की दूरी पर है। मैं समझता हूँ यह केवल एक बहाना है, इसलिए और भी कि हमारी सेनाएँ कैटो-वर्वें की ओर से बेल्जियम में घुस गई हैं। लेकिन मान लो कि बड़ी से बड़ी दुर्घटना भी हो—हमारे ऊपर हमला बोल दिया जाय तब भी मास नदी के मोर्चे तक पहुँचते-पहुँचते जर्मनों को एक महीना लग जायगा, और वह भी तब जब कि वे काफी तेजी से बढ़ें। फिर हमारे जवाबी हमले भी तो होंगे ? ७वीं फौज एँटवर्प तक जा पहुँची है। इसे तुम क्या कहोगे—आत्मरक्षा या प्रत्याक्रमण ? जब कि शत्रु पर हर तरफ से आक्रमण जारी हो, उस समय केवल मूर्ख ही पुलों को उड़ा देने की राय दे सकते हैं। समझे मेजर ? अब यह सब बकवास छोड़ो।'

'किन्तु मैं......।'

'तुम ?...पिछली लड़ाई में तुम लगातार पेरिस में ही तो बैठे रहते थे। पहली आवश्यकता है कि दिमाग में किसी प्रकार की परेशानी न आने दी जाये। लड़ाई अब बहुत पेचीदा सूरत अख्तियार कर गई है। आशा भी यही थी। किन्तु हमें पहले की तरह शान्तिपूर्वक काम करते रहना चाहिये। विजय का यही रहस्य है। अच्छा, अब यह तो बतलाओ आज की क्या खबरें हैं ?'

लेराथ ने अपने आपको काबू में रखते हुए कहा, 'ल फिगारो' के सैनिक-विशेषज्ञ का कहना है कि शत्रु को नैमूर-ऐंटवर्प की लाइन पर रोका जा सकता है !'......इतना कहते ही उसका जबड़ा फिर से काँपने लगा। 'जनरल साहब, मेन चालीस मील की दूरी पर हैं, साठ नहीं।' वह बोला। 'उन्होंने मार्श पर कब्जा भी कर लिया है।'

'ऐसा मालूम पड़ता कि तुम सैनिक अफसर नहीं बल्कि पार्लियामेंट के कोई सदस्य हो, जिसे लड़ाई का कुछ पता नहीं। पहली बात तो यह है कि इस समाचार की पुष्टि नहीं हुई। दूसरी बात यह कि अगर दुश्मन के अगले दस्ते मार्श पहुँच भी गये हैं, तो भी इससे कुछ सिद्ध नहीं होता। जाओ, कर्नल को भेज दो।'

लेरिदो ने एक भारी नक्शा खोला। इतने में मोरो आ पहुँचा; सदा की तरह उसके चेहरे से आज भी शक्ति टपक रही थी। 'कितना सुहावना दिन है,' वह बोला। 'मैं अभी टैंकों को देखकर आ रहा हूँ। यहां बड़ी अच्छी जगह है : जंगल हैं, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं।'

लेरिदो ने बहुत सोचने के बाद नक्शे पर किसी स्थान की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इस स्थान पर बहुत से रास्ते आकर मिले हैं। इसलिए परेशान होना व्यर्थ है। मैंने मोर्चे की लाइन पर भी नीली पेंसिल से निशान लगा रखा है। तुम्हारी सूचना भी यही है ?'

नाटे कद वाले लेरिदो के सामने कर्नल दैत्य-सा जान पड़ता था। वह जनरल से बड़े शिष्टाचार से पेश आता था। उत्तर में उसने कहा, 'मोर्चा यह नहीं। आपने तो मार्श-लिब्रामाँ वाली लाइन पर निशान लगाया है। यह स्थिति सबेरे थी; अब तो चार बज चुके हैं।'

'तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि दुश्मन बराबर बढ़ता चला आ रहा है ?'

'बढ़ता ही नहीं बल्कि दौड़ता हुआ आ रहा है !'

क्षण भर के लिए लेरिदो को कुछ न सूझ पड़ा कि अब वह क्या करे। उसने अपनी आँखें मूँद लीं। उसके गाल नीले और मांस से भरे थे। दूसरे ही क्षण वह फिर चौकन्ना हो बैठा और बोला, 'उन्हीं का नुक़सान होता जा

रहा है। यह टेढ़ी लाइन बढ़ती जा रही है और उसके दोनों तरफ हमारी सेनाएँ हैं। अब यह हमारा काम है कि हम पता लगायें कि दुश्मन कहाँ पर सब से अधिक कमजोर है। जनरल पिकार से बात करना जरूरी है। अच्छा हुआ, जो तुम भी आगये। हमारे मेजर का तो दिमाग खराब हो गया है। यही हाल मोके का भी है। मेरी समझ में स्थिति इतनी खराब नहीं है कि कोई परेशानी हो। तुम्हारी क्या राय है, कर्नल ?'

'जनरल पिकार शायद ही रिजर्व सेनाओं झोंकने के लिए तैयार हो। इस लड़ाई के प्रति उसका क्या रुख है, यह तो आप को मालूम ही है !'

'हां, लेकिन परिस्थिति भी तो बदल चुकी। दुश्मन अब आगे बढ़ रहा है। हमें कोई न कोई कदम उठाना ही पड़ेगा।'

'मुझे तो लगता है कि अब हम कुछ भी नहीं कर सकते। जर्मनों ने कम से कम सात सौ टैंक मैदान में उतार दिये हैं। और हमारी रक्षा पंक्ति कमजोर है। ४७ मिलीमीटर वाली तोपों के लिए गोले तक नहीं हैं।'

'यह तो विस्तार की बात हुई। 'फील्डगन' भी ती इस्तेमाल की जा सकती हैं। मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे ऊपर भी वही असर पड़ गया है जो सब के ऊपर है। अगस्त सन् १९१४ को भूल गये ? उस समय परिस्थिति आज से कहीं अधिक खराब थीं। मुझे वह दिन नहीं भूलेगा जब हमें शालेराय से भी भागना पड़ा था। बन्दूकचो बन्दूक छोड़कर घोड़ों पर सवार होकर भागे थे। किन्तु एक ही दो सप्ताह बाद हमने जर्मनों को खदेड़ कर एन नदी के किनारे तक पहुँचा दिया। फॉन क्लुक अपने दायें बाजू की ठीक तौर से रक्षा नहीं कर पाया था। इसीलिए उसको यह हार उठानी पड़ी। किन्तु इस बार जर्मन एक तंग कतार में होकर आगे बढ़ रहे हैं, जो सरासर मूर्खता है। उनके यातायात के मार्गों पर हम आसानी से आक्रमण कर सकते हैं।'

घंटों वह यही बात करता रहा कि लड़ाई में क्या क्या चालें चली जाती हैं, कैसे कभी एक ओर कभी दूसरे पक्ष का पलड़ा भारी होता नजर आता है और फ्रांसीसी पैदल सेना की क्या विशेषताएँ हैं। कर्नल खिड़की के पास खड़ा सामने के पहाड़ी ढालों और उन पर बने शतरंजी रंग के खेतों को देखता रहा।

इतने में एक धमाके की आवाज़ ने लेरियो को चौंका दिया, उसने कागज पर एक निशान बनाया और गुस्से के मारे उसके नथने फूल उठे। इतने में बिना खटखटाये हुए मोरे अन्दर दाखिल हुआ और बोला, 'हमें नीचे जाना पड़ेगा !'

तहखाने में काफी ठंडक थी। ताकों पर धूल में लिपटी हुई रखी बोतलें बड़ी रहस्यमय मालूम पड़ती थीं। शराब की महक आ रही थी। अफसरों ने जँभाई ली और लेट गये। मोरो शराब के एक पीपे पर बैठकर मुस्कराने लगा।

'दुश्मन इस स्थान को ताक कर गोले फेंक रहे हैं। मेजर लेराय ने कहा।

मोरो ने सर हिलाकर उसका समर्थन किया और बोला, 'उसके जासूस बड़े होशियार हैं। ज्यों ही हम कहीं डेरा डालते हैं वैसे ही वे हमें बधाई का संदेश भेजते हैं। सबेरे हमें यहाँ से हट कर और किसी स्थान को चले जाना पड़ेगा और, किसी भी नये स्थान पर पहुँच कर मुझे गजब की नींद आती है !'

लेरियो नक्शे में देख कर कमरे में टहल-टहल कर कुछ सोचने लगा। उसे चिन्ता हो गई, किन्तु वह मोरो पर प्रकट नहीं होने देना चाहता था कि उससे गलती हो गई।

'मैंने तुम से कह दिया था, कर्नल, कि यह पागलपन के सिवा कुछ नहीं' वह बोला। 'वह घेरे को चौड़ा भी नहीं कर रहे हैं।' यह कह कर थोड़ी देर तक वह चुप रहा, फिर बोला, 'अब मैं समझता हूँ कि मांदमें और नूजाँ के बीच के पुल उड़ा देना जरूरी हैं। क्या मोरे से तुम्हारा सम्पर्क स्थापित है ?'

'सबेरे तक तो था। किन्तु मालूम होता है अब उसने नूजाँ छोड़ दिया है।'

'तब बेहतर होगा कि कप्तान सैंगर को भेजो, इस बीच कोशिश यह करो कि हवाई जहाजों द्वारा पुल नष्ट कर दिये जायें, यदि सफ़रमैना वहाँ तक न पहुँच पाये।'

एक घंटे बाद मेजर को पता चला कि घर से निकलते ही किसी ने सैंगर और उसके ड्राइवर को गोली से उड़ा दिया। किसान चिल्लाते हुए दौड़ते आ रहे थे—'जर्मन आ पहुँचे !'

लेरिदो ने जोर से बिगड़ कर कहा, 'सब झूठ! मैं अभी जा कर देखता हूँ।'

सैंगर को किसने मारा, इसका पता न चला। जब लेरिदो ने दोनों की लाशें कार में रखी देखीं तो उसने झट फौजी सलामी दी और चुप खड़ा हो गया।

'आप मुझे जाने का हुक्म देते हैं?' कर्नल मोरो ने पूछा।

सब खड़े इस बात का इन्तजार कर रहे थे कि देखें लेरिदो किसको भेजता है। वह फिर अपनी कार में जा बैठा और वहाँ से बोला, 'कोई नहीं जायेगा। जनरल मोके बच्चा तो है नहीं। वह स्वयं समझ सकता है कि ऐसे समय पर क्या करना चाहिये। पुल हवाई जहाज द्वारा नष्ट कर दिये जायेंगे। आओ बैठो, कर्नल।'

'तो क्या हम लोग वापस जा रहे हैं?'

'नहीं। हम रेटेल जा रहे हैं। हमें अपनी जान खतरे में डालने की जरूरत नहीं। बिल्कुल साफ बात है।' उसने कप्तान सैंगर के खुले हुए मुँह को याद किया और अपने ओंठ चाटने लगा। 'हालत इतनी खराब है कि कुछ कहते नहीं बनता!' वह बोला।

उनकी कार धीरे-धीरे चल रही थी क्योंकि सड़क पीछे भागनेवाले टैंकों, लारियों और घोड़ों से भरी थी। लेरिदो को कुछ इत्मीनान हुआ।

'अन्त में,' उसने कहा, 'उन्हें महसूस करना ही पड़ा कि बिना नयी सहायता के जर्मनों की बाढ़ रोकी नहीं जा सकती।'

ज्योंही वे शार्लवील के पास पहुँचे, कुछ सैनिकों ने चिल्लाकर उनकी कार रोक ली। जब उन्होंने जनरल को उसमें बैठे देखा तो सन्न रह गये।

'क्या हुआ?' लेरिदो ने पूछा।

किसी ने पीछे से कहा, 'जर्मन आ पहुँचे!'

इतने में सब ने एक साथ चिल्लाता शुरू किया, 'वे छतरियों से उतर रहे हैं......उन्होंने स्टेशन मास्टर को मार डाला!......छतरी बाज!...... उन्होंने दो अफसरों को गोली से उड़ा दिया......!'

लेरिदो ने आगे झुककर उन्हें चुप हो जाने का आदेश दिया और पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

सैनिक चुपचाप खड़े रहे।

मोरो ने मुसकरा कर कहा, 'साफ जाहिर है कि ये लोग सेना से भाग रहे हैं।'

इतने में पीछे से किसी ने आवाज दी, 'हाय जनरल! क्या तुम भी भागे जा रहे हो?'

लेरिदो ने अपने गुस्से को काबू में करते हुए कहा, 'चुप रहो!' उसने उस सैनिक की ओर देखा, जिसने उसका इस प्रकार अपमान किया था; वह घायल था। उसके आस-पास की जमीन खून से तर थी। लेरिदो ने तुरन्त आर्डर देकर म्युजे से, जो कार चला रहा था, कहा, 'इसे जख्मियों के अस्पाल तक पहुँचाना है!'

घायल सैनिक ड्राइवर के पास बिठा दिया गया। वह आँख बन्द किये चुपचाप पड़ा था।

म्युजे हार्न पर हार्न बजा रहा था। भागनेवाले शरणार्थियों से सड़क ठसाठस भरी थी। बहुत से अपने जानवरों का भी साथ लिये जा रहे थे। कार को उन जानवरों के बीच से होकर चलना पड़ता था। इसके अतिरिक्त बैलगाड़ियों की भी दोहरी कतार चल रही थी।

लेरियो ने तंग आकर कहा: 'इस तरह से तो हम कभी पहुँच ही नहीं पायेंगे। यह तो सरासर भगदड़ है!'

म्युजे ने कार रोककर कुछ सुनना शुरू किया। जनरल ने खिड़की से सिर निकाल कर देखा कि सिर पर कुछ बमवर्षक विमान मँडरा रहे हैं।। शरणार्थी और सैनिक तितर-बितर होकर जंगलों और खेतों की ओर भागे। कार को आगे बढ़ाना असंभव था। सड़क गाड़ियों और जानवरों से भरी पड़ी थी। जनरल ने अपनी कार सड़क के एक किनारे पर कर दी। कर्नल जमीन पर लेट गया और म्युजे ने भी उसकी नकल की। लेरिदो ने इसे अपनी शान के खिलाफ समझा। वह ठाठ के साथ खड़ा ऊपर की ओर देख रहा था। ऊपर नौ हवाई जहाज मँडरा रहे थे।

'ये उड़ तो बड़े कायदे से रहे हैं!' उसने कहा।

एक बम पासवाले जंगल में गिरा। जब वे कार में फिर सवार होकर

चले, तो जनरल ने देखा कि छः या सात साल की एक लड़की को लोग स्ट्रेचर पर लादे लिये जा रहे हैं। बम के एक टुकड़े से उसके पाँव कट गये थे। लेरिदो ने नाक छिनक कर कर्नल से धीमे से कहा, 'कितना भयानक दृष्य है!'

इसके बाद उसने घायल सैनिक की ओर देख कर कहा, 'क्या हाल है इसका?' सैनिक चुप रहा। थोड़ी ही देर में म्युजे बोला, 'यदि आप कहें तो मैं इसे निकाल बाहर करूँ? यह मेरी ही ओर झुका पड़ता है। यह मेरे कान में रुकावट डालता है।'

'पागल तो नहीं हो गये! कहीं घायल को भी फेंका जा सकता है!'

'यह ठंडा हो चुका है।

सैनिक का शरीर इस प्रकार हिल रहा था कि पीछे से देखने पर लगता था जैसे ऊँघ रहा है। कार एक रेलवे स्टेशन पर जाकर रुकी—म्युजे रेडियेटर में पानी भरना चाहता था। प्लेटफार्म पर चारों तरफ बम रखे हुए थे। लेरिदो ने कार से बाहर निकल कर उन्हें देखा और कहा, '४७ मिलिमीटर वाली तोपों के लिये गोले! तुम कह रहे थे कि गोले हैं ही नहीं? यहाँ कैसे पड़े हैं? कितना खराब इन्तजाम है!'

उन्होंने घूम-फिरकर सारे स्टेशन को देखा भाला, किन्तु कोई दिखाई नहीं पड़ा। टेलीग्राफ आफिस में एक सिपाही नंगे पैर फर्श पर बैठा कुछ चबा रहा था। जनरल की शक्ल देखते ही वह घबरा गया और अपने जूते पहनने लगा।

'तुम किस रेजिमेंट में हो?' लेरिदो ने पूछा।

'१७३ वीं में। मेरे पैरों में छाले पड़ गये हैं, और इसलिए मैं पीछे रह गया हूँ।'

'तुम्हारी राइफल कहाँ है?'

सैनिक ने कोई उत्तर नहीं दिया।

'स्टेशन-मास्टर कहाँ है?'

'सब भाग गये हैं। सुनता हूँ, जर्मन नजदीक आ गये हैं। वे मोटर-साइकिलों पर आ रहे हैं।' वह बच्चों की तरह रोने लगा। लेरिदो ने चिढ़कर भौं सिकोड़ ली।

रेडियेटर में पानी भरा गया और कार आगे चली। जनरल ने कुछ भी नहीं कहा। जब रेटेल के पास पहुँचे, तो वह अचानक मोरो से बोला, 'लड़ाई में हमारी हार हो चुकी। मैं नहीं जानता पार्लियामेंटवाले क्या सोच रहे हैं! वे सभी पहले दर्जे के अवसरवादी और लापरवाह हैं। उन्हें किसी भी चीज का पता नहीं और रेनो उनका अध्यक्ष है। अब तो सब कुछ हाथ से निकल चुका। हम जो कुछ भी कर सकते थे वह हमने किया। जैसा कि रोमन लोग कहा करते थे—अब दूसरे लोगों को चाहिये कि वे कुछ और अच्छा कर दिखायें!'

१६

जिस गाँव में बटालियन स्थित थी, वह दुनिया की भीड़भाड़ से बहुत दूर था। किसान ईंधन की जगह झाड़ियाँ जलाते और चिमनियों के धुएँ में सूअर का गोश्त भूनते। मोटी-मोटी गायें फौजी लारियों की ओर इस तरह खड़ी ताकतीं जैसे प्राचीन काल की देवियाँ हों। खेतों में दूब उगी थी और पेड़ों के नीचे बैंगनी रंग के फूल खिले हुए थे।

आँद्रे को पेरिस की कोई चिन्ता न थी। एक नार्मन किसान का बेटा होने के नाते उसे देहात के उस जीवन में ही आनन्द आता था। बीते हुए जीवन की घटनाएँ भी उसे धुँधली होकर दिखाई पड़ती थीं—जानेत की मुसकराहट, उसकी अधूरी तसवीरें, भूरे रंग के मकान और सीन का स्वच्छ और निर्मल जल।

अब लड़ाई अचानक छिड़ गई थी और अधिकारियों और सिपाहियों दोनों में से कोई भी उसके लिए तैयार न था। चार दिन बीत गये और सब कुछ ज्यों का त्यों चलता रहा। रेडियो पर खबरें आती रहीं: 'फ्रेंच सेनाएँ हालैंड की सरहद तक पहुँच गईं। जर्मन आक्रमण के समाचार से राष्ट्रपति रूजवेल्ट को बड़ा क्रोध आया,' आदि आदि।

दोपहर के समय जर्मन बमवर्षकों ने आकर गाँव के गिरजे और कुछ मकानों पर बम गिराये। एक स्त्री की जान गई। लोग भाग-भाग कर तंग सड़कों में जमा होनेलगे और चिल्लाने लगे, 'जर्मन हमारे आदमियों को

मारे डाल रहे हैं।' गाँववाले बमों के गिरने से नहीं घबराये थे किन्तु जब उन्होंने शरणार्थियों की भीड़ की भीड़ देखी तो उनमें भी हलचल मच गई। स्त्रियों ने रोना पीटना शुरू कर दिया, सारा माल असबाब टूटी फूटी गाड़ियों पर लादा जाने लगा, मर्दों ने अपने सुअरों को मार डाला और खेती-बारी के पालतू जानवरों को इधर-उधर भगा दिया। एक किसान ने अपने घर में आग भी लगा दी; बड़ी मुश्किल से उसे सिपाहियों ने बुझाया। शरणार्थियों के बीच में कहीं-कहीं फौजी सिपाही भी थे, जो अपनी राइफलें फेंककर भाग खड़े हुए थे। लोग कह रहे थे कि जर्मन सिर्फ पाँच मील दूर हैं।

रात होने को आई। दूसरे गाँव में रोज की तरह आज भी कुत्ते भूँक रहे थे, बूढ़े खर्राटे ले रहे थे और छोटे बच्चे रो रहे थे। किन्तु इस गाँव में न कोई कुत्ता रह गया था, न बच्चे और बूढ़े ही। बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। रात भी छोटी थी। सबेरे चार ही बजे तड़का हो गया और सूर्य की किरणें फूटी ही थीं कि आकाश में हवाईजहाज उड़ते दिखाई दिये। बटालियन के १०६ आदमी हताहत हुए।

सिपाही फिर पहाड़ी से नीचे की ओर भागने लगे। 'कोई गोला नहीं!' वे चिल्ला रहे थे। 'बृहस्पतिवार के बाद कोई गोला नहीं भेजा गया। सुनने में आता है कि पेट्रोल भी नहीं है।...न जाने क्या सोचा जा रहा है?...चन्द कौड़ियों के लिए हमें बेच दिया गया!'

जर्मन टैंक रेलवे स्टेशन की ईंटों की इमारत के पास से होकर गुजरे। उन्होंने पहाड़ी का चक्कर लगाया। अब चारों ओर से गोली चलने की आवाज आने लगी थी। उस पहाड़ी पर जमे रहने से फायदा ही क्या हुआ? दायीं तरफ जर्मन आ गये थे, पीछे भी और आगे भी। और बायीं तरफ? कौन जाने उधर क्या था? उधर हमारी ही तीसरी बटालियन होनी चाहिये। किन्तु बायीं तरफ भी लोग भाग रहे थे...अब क्या किया जाय: छोड़कर भाग खड़े हों? नहीं! अब यह पहाड़ी कहीं अधिक मूल्यवान थी। यह कोई परायी चीज नहीं रह गई थी; अखबारों की भाषा में उसे केवल एक 'स्थान' कहकर नहीं टाला जा सकता था। जीवन में अब वही सब कुछ थी। आंद्रे ऐसा महसूस कर रहा था कि मशीनगन के पास जहाँ वह लेटा हुआ था वहीं उसका जन्म हुआ था। दूसरे भी यही महसूस कर रहे थे। गिवर धीरे-धीरे भुनभुना

रहा था—इस बार कोई कविता नहीं, बल्कि गालियाँ। वह मारे गुस्से के जला जा रहा था।

बमवर्षक एक बार फिर आये। इस बार उन्होंने निवेल की जान ली। वह हँसमुख 'वेटर' चल बसा! अब कड़वी-मीठी शराब की बातें करनेवाला कोई नहीं रह गया था। दूसरी रात भी आई और आकाश में वही नामवाले और बिना नाम के तारे निकले। सिपाही सूखी रोटियाँ दाँतों से काट-काटकर खा रहे थे। वे थककर इस तरह चूर हो गये थे कि इन्तजार कर रहे थे किसी तरह सवेरा हो, लड़ाई शुरू हो और मौत उन्हें इस कष्ट से छुटकारा दे।

साढ़े चार बजे, फ्रेस्सिने ने मशीनगन चलने का हुक्म दिया।

जर्मनों को इसकी आशा न थी कोई मुकाबला करना पड़ेगा। उन्होंने सोचा फ्रांसीसी कभी के मैदान छोड़कर भाग गये होंगे। जर्मनों ने सड़क के किनारे एक गढ़े में छिपकर पनाह ली। बीस मिनट के बाद उन्होंने पहाड़ी की चोटी की ओर ताक कर गोलियाँ चलाना शुरू किया। पहली बार की गोलियाँ सनसनाती हुई निकल गईं।

किन्तु इसके बाद ही पहाड़ी के ऊपर गोले बरसने लगे। उनके फटने से ढेरों मट्टी हवा में उड़ जाती थी। बीच-बीच में लोग चिल्ला उठते थे। सूर्य की किरणें सीधी आँखों पर पड़ रही थीं; उनके दिमाग में बस एक बात थी। वह यह कि मरते दम तक उस पहाड़ी से हटने का नाम नहीं लेंगे।

आंद्रे को घुटनों के ठीक ऊपर तेज दर्द मालूम हुआ। उसने मुड़कर देखना चाहा कि क्या बात है। काफी देर तक वह आँखें मलता रहा; इसके बाद उसे नींद मालूम पड़ने लगी। जब उसने आँख खोली तो उसे लोरिये का चेहरा खून से लथपथ नजर आया। उसने सोचा, 'कोई बात नहीं! बस, जर्मन पास न फटकने पायें!' वे उसे घसीट कर एक ओर ले गये। 'गिवर, कार्नू की जगह लो', किसी ने कहा। आंद्रे काँटेदार घास में अपना सिर झुकाये पड़ा था। जर्मनों ने फिर आक्रमण शुरू किया।

जब उसकी आँख खुली तो रात हो चुकी थी। उसके चारों ओर पुआल पड़ा हुआ था। पहले तो उसने सोचा मैं वह किसी खेत में सो गया था।

अपने पिता से वह पूछ रहा था, 'इतनी जल्द क्यों फसल काटी जा रही है ?' तब उसे याद आया कि वह तो घायल हो गया था। लोरियर उसकी बगल में पड़ा था।

आंद्रे ने फिर जब आँखें खोलीं तो अपने को एक चारपाई पर लेटा हुआ पाया। कोई उसके पास आकर खड़ा हो गया। आंद्रे ने धीरे से सिर हटाकर देखा और बोला, 'कौन ? वाइवे ? अरे मैंने तो समझा था कि तुम मारे गये !'

'मैं ? कहाँ की बात करते हो ! लेकिन तुम बोलो मत। नर्स ने कहा है। वह तो मुझे अन्दर आने ही नहीं देती थी।'

'अच्छा, यह तो बताओ, हमारे आदमी आखिर तक डटे रहे या नहीं ?'

'हाँ। हमारे टैंकों ने फिर गाँव पर कब्जा कर लिया। केवल चार टैंकों ने। सात बजे। इसके बाद ही हेडक्वार्टर से हुक्म आया कि हम लोग पीछे हट जायें।'

'क्या मतलब ?'

'जनरल पिकार का हुक्म था। फ्रेस्लिने ने पढ़ते ही झट अपना रिवाल्वर निकालकर हुक्म लानेवाले को गोली मार दी, जिससे उसका भेजा निकल पड़ा। वह था तो बड़ा अच्छा आदमी किन्तु घबराया हुआ था। मैं उसकी और निवेल की याद में दीया जलाऊँगा। अफसोस तो यह है कि फिर पहाड़ी को छोड़कर हट जाना पड़ा।'

आंद्रे को भी इसका अफसोस रहा। उसे सड़क के किनारे के वृक्ष, पहाड़ी के नीचे वाले मकान और काँटेदार घास की याद आ गई। यहाँ की जमीन अच्छी है...।' उसे जमीन...जानेत...सभी कुछ याद आये।

'वाइवे, जाना मत ! हरगिज मत जाना, सुनते हो न ?'

१७

सरासर गद्दारी की गई है...जैसी गलतियां की गई हैं, उनके लिए मौत की सजा भी काफी नहीं ! याद रखो—हमारे सैनिक लड़ाई के मैदान में लड़कर अपनी जानें दे रहे हैं। हम कायरों और गद्दारों को मिटा देंगे ! अगर किसी

चमत्कार से फ्रांस बचाया जा सकता है; तो चमत्कार जैसी चीज पर भी मैं विश्वास करने को तैयार हूँ !'

जब रेनो ने अपना भाषण समाप्त किया तो सिनेट के सदस्यों ने धीरे से ताली बजायी। उनमें सभी पुराने, अनुभवी राजनीतिज्ञ थे। वे महसूस कर रहे थे कि मन्त्रिमण्डल अब टूटने ही वाला है। गैलरी में फूजे बैठा रो रहा था। समाचारपत्रों के संवाददाता, कल्पना-जगत् में रहनेवाले इस दढ़ियल सदस्य को रोते और रूमाल से आंसू पोंछते देखकर हँस रहे थे।

तेस्सा कार में बैठा ही था कि फूजे ने उसका हाथ थाम लिया और बोला, 'मैं तुमसे तुरन्त कुछ बातें करना चाहता हूँ। रेनो ने ठीक कहा है कि देश के साथ सरासर गद्दारी की गई। उसकी स्पीच बड़ी साहसपूर्ण और स्पष्ट थी; स्पीच क्या थी कोड़े की मार थी। अब आवश्यकता यह कि जान लड़ा दी जाय...'

थकी सूरत बनाये हुए, नाक छिनककर तेस्सा ने उत्तर दिया, 'अब वक्त हाथ से निकल चुका है। मैं कोई रहस्यवादी तो हूँ नहीं कि चमत्कारों में विश्वास करूँ ! कल जर्मनों में अरास और एपीन पर कब्जा किया था। आज वे समुद्रतट तक जा पहुँचे। सेना तो घिर चुकी !'

'वहां पर चालीस डिवीजन हैं। यह घेरा तोड़ा जा सकता है।'

'तोड़ेगा कौन ? बेल्जियमवालों का तो कोई भरोसा है नहीं ! बादशाह लियोपोल्ड तो जर्मनों का समर्थक है, यह सभी को मालूम है। आज अंग्रेजों ने भी बापोम से डनकर्क को दो डिवीजनें हटा ली हैं। बेगां जेनरल गोर्ट से क्यों नहीं मिलना चाहता था—यह बात अब समझ में आ गई। संक्षेप में यह कि सब खत्म हो चुका; केवल चिल्लाना ही चिल्लाना रह गया है !'

'इस प्रकार की बातें कैसे करते हो ? अभी अभी तो रेनो ने कहा था कि कायरों को मौत के घाट उतार दिया जायेगा। तुम पहले आदमी हो जिसे गोली से उड़ा देना चाहिये !' फूजे इतनी जोर से चिल्लाया कि उसके मुँह से थूक निकल कर तेस्सा ऊपर जा गिरा। उसकी दाढ़ी हिल रही थी।

तेस्सा ने निश्चय किया कि फेरोने से, जो वकील था और जिसने कम्युनिस्टों के मुकदमें लड़े थे, सम्पर्क स्थापित किया जाय और उससे कहा जाय कि वह आकर भेंट कर जाय।

उसके आने पर तेस्सा ने उससे कहा, 'मुझे मालूम है, बहुत से कम्युनिस्टों से तुम्हारा परिचय है। कृपा करके इस पत्र को पहुँचाने से इनकार न करो।'

'किसके पास ?'

तेस्सा ने लज्जित होकर कहा, 'मेरी पुत्री के पास। यह बड़ा ही आवश्यक पत्र है। जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी पहुँचाओ—इससे मेरे किसी निकटतम व्यक्ति के जीवन-मरण का प्रश्न संबन्धित है।'

'बहुत अच्छा' फेरोने ने उत्तर दिया। इसके बाद हल्की मुसकराहट के साथ उसने इतना और कहा, 'अगर आपकी पुलिस ने मेरा पीछा न किया तो शाम तक पत्र पहुँच जायगा।'

तेस्सा ने पत्र में लिखा था :

'देनीजे

'मुझे तुम से कुछ बहुत ही आवश्यक बातें करनी हैं। कोई व्यक्तिगत मामला नहीं, बल्कि एक ऐसा प्रश्न, जिसका महत्व सारे फ्रांस के लिए है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि कल सबेरे ६ बजे अवश्य आ जाओ। मैं फिर बतला देना चाहता हूँ कि कोई व्यक्तिगत हित की बात नहीं। मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे आने की किसी को भी खबर नहीं होने पायेगी।

—तुम्हारा दुखी पिता।'

शाम को उसे मंत्रिमंडल की एक बैठक में शरीक होना पड़ा। उसने अन-मने ढंग से रेनो की रिपार्ट सुनी। उसमें कहा गया था वेगों लौट आया है। परिस्थिति निस्संदेह बड़ी गंभीर है, फिर भी हम प्रत्याक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। ५वीं डिवीजन अरास के पास तक पहुँच गई हैं। अंग्रेजों ने हमला पहले ही शुरू कर दिया है। तेस्सा अपने ही विचारों में खोया हुआ था। जब बैठक समाप्त हो गई तो वह रेनो को एक ओर लेजाकर बोला, 'तुम्हारी राय में यदि मास्को से समझौते की बातचीत शुरू की जाय तो कैसी रहे ?'

'इधर पिछले कुछ दिनों के अन्दर परिस्थिति इतनी नाजुक हो गई है कि मैंने अपना समय सैनिक प्रश्नों को हल करने में लगाना शुरू कर दिया है। कूटनीति संबन्धी सारे काम मैंने बो दुइन के हवाले कर दिये हैं,' रेनो ने उत्तर दिया।

तेस्सा ने घर जाकर नींद लाने वाली दवा पी। सवेरे आठ बजे उसकी आँख खुली। वह नाश्ता कर ही रहा था कि उसे खबर दी गई कि एक महिला कुछ निजी मामले में उससे बातें करना चाहती है। वह तुरन्त चिल्ला पड़ा, 'उसे फौरन अन्दर लाओ!'

वह यह भूल गया कि अपनी ही पुत्री को उसने बुला भेजा है। उसने इस तरह बात शुरू की जैसे किसी देश के राजदूत से बात कर रहा हो।

देनीजे ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में आपकी बात को कोई गंभीरता-पूर्वक लेगा भी नहीं। जेलों में इस समय चौंतीस हजार कम्युनिस्ट बन्द हैं। सब से पहले तो इन कैदियों को छोड़िये और मंत्रिमंडल छोड़कर निकल जाइये। राज्य की बागडोर जनता के हाथों में सौंप दीजिये।'

'देनीजे, इस समय पार्टी के झगड़े भूलकर तुम मेरी मदद करो। मैं सच-मुच फ्रांस को बचाना चाहता हूँ, और इसलिए देश के नाम पर......।'

'बस रहने दीजिये। पहले 'माँ के नाम' पर कहा जाता था और अब देश के नाम पर! किन्तु फ्रांस फिर भी फ्रांस है!' वह बोलते-बोलते रुक गई। उसे शरणार्थियों और सैनिकों का ख्याल आ रहा था। उसका गला रुंध गया। यह सोच कर कि कहीं तेस्सा उसकी कमजोरी न देख ले, वह कमरे से बाहर निकल आयी।

तेस्सा की सारी तरकीब बेकार साबित हुई। वह शहर से बाहर चला गया, ताकि वहाँ जाकर अपने मन को शान्त करे। बड़ा सुहावना दिन था। बेला, चमेली और तरह-तरह के दूसरे फूल खिले हुए थे, और चारों ओर उन की महक फैल रही थी। तेस्सा का मन ठीक हुआ। उसने सोचा—दुनिया भाड़ में जाय, यहाँ तो बसन्त का आनन्द आ रहा है।

वापसी पर उसने 'ब्वाद विनसेन' में देखा कि कुछ सैनिक टैंकों को नष्ट करने के लिए बड़ी-बड़ी खाइयाँ खोद रहे हैं। तेस्सा थोड़ी देर तक रुककर उनसे बातें करता रहा और तब इत्मीनान के साथ बोला, 'हाँ! जर्मनों को पेरिस देखने का मौका नहीं मिलेगा! पेरिस शेर की तरह अपनी रक्षा करेगा!'

१८

शाम को पेरिस एक सुनसान जंगल सा मालूम पड़ता था। छोटे-छोटे नीले लैम्प तक बुझा दिये जाते थे। राह चलने वालों को रोक कर उनकी जाँच-पड़ताल की जाती थी। अफवाह गर्म थी कि नगर में बहुत-से जर्मन जासूस और छतरीबाज सैनिक घुस आये हैं। रू शेर्श मिदी में एक बूढ़ा ग्वाला पकड़ा गया था। कहा जाता था कि वह हवाईजहाजों को सिग्नल देता था। लोग इस बात के लिए कसम खाने को तैयार थे कि पेरिस में, कुछ नहीं तो कम से कम ४० हजार जर्मन सैनिक अपनी वेशभूषा बदले हुए मौजूद हैं। मैन्डेल ने ब्रेतील के तीन अनुयाइयों को पकड़ने का हुक्म दिया। उनके पास से इटली-वालों के बहुत से पतों की एक सूची और पेरिस का एक नक्शा, जिसमें विमान-वेधी तोपों की स्थिति दिखाई गई थी, बरामद हुआ था। ब्रेतील उनके पकड़े जाने की खबर सुनते ही आगबबूला हो उठा और चिल्लाने लगा 'सीधे-साधे फ्रांसीसियों को क्यों पकड़ा जाता है?' दूसरे ही रोज सबेरे वे तीनों छोड़ दिये गये। ब्रेतील की स्त्री रोकर कहती; 'हाय, जर्मन यहाँ आजायेंगे!' किन्तु ब्रेतील उसे समझाकर कहता, 'कौन जाने? शायद मार्शल पेतां फ्रांस को बचा लें......!'

सड़कों पर शरणार्थियों की भीड़ दिखाई पड़ने लगी। वे रेलवे स्टेशनों के आसपास घूमते-फिरते और कभी-कभी आँख उठा कर पेरिस की शानदार इमारतों को अनमने ढंग से ताकते। नगर की भीड़भाड़ और शोरगुल का उन पर कोई प्रभाव ही नहीं मालूम पड़ता था। कारों के शोफर हार्न पर हार्न बजाते और रास्ते से न हटने पर गालियाँ भी देते किन्तु सब व्यर्थ होता। लगता था जैसे उनके कानों में और कहीं की भयानक आवाज़ें गूँज रही थीं।

थकी-माँदी स्त्रियाँ सड़कों की पटरियों पर बैठी होतीं। लोग उन्हें चारों ओर से आ-आकर घेरकर खड़े हो जाते और पूछते कि वे कहाँ से आई हैं।

पेरिसनिवासी अब भी समझते थे कि लड़ाई बड़ी दूर है; क्योंकि अखबारों में अभी तक नार्वे की लड़ाई की ही चर्चा चल रही थी। केवल शरणार्थियों की बातें सुन-सुनकर लोग कभी-कभी घबरा उठते। वे कहते, 'जर्मन हमारे आदमियों को भूने डाल रहे हैं; बड़ी कठिनाई से हम यहाँ तक पहुँच पाये हैं!' पुलिस भीड़ को, जो इन शरणार्थियों की बातें सुनने के लिए इकट्ठा हो जाती, जाकर हटा देती। भयंकर कहानियाँ सुनने से लाभ ही क्या था?

विलार को न तो पेतां की बुद्धिमानी पर, न वेगां की नीति और न चमत्कारों में कोई विश्वास था। वह अपना तमाम कीमती माल असबाब बाँधने में लगा हुआ था। सवेरे तड़के ही से उसके फ्लैट में हथौड़े चलने की आवाज आने लगती। मजदूर उसके मकान के अन्दर आते-जाते दिखाई पड़ते। उसे अपनी कीमती तसवीरों के अतिरिक्त अब किसी चीज में भी दिलचस्पी नहीं रह गई थी। वह खड़ा होकर तसवीर के हर चौखटे को सन्दूक में रखे जाते हुए, ध्यानपूर्वक देखता। अखबार भी वह यूँ ही देख लिया करता करता। वह समझता था कि अब तो सब कुछ हाथ से निकल चुका है; नाटक के दुखान्त को देखने के लिए रुकने से लाभ ही क्या!

दरवाजे पर किसी ने खटखटाया और तेस्सा ने अन्दर प्रवेश किया। उसकी हजामत बढ़ी हुई थी और चेहरा मुरझाया हुआ था। तेस्सा को इस हालत में देख कर विलार बड़ा ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि इससे मालूम पड़ता था कि तेस्सा के बुरे दिन आ गये थे। उसने सोचा: 'अच्छा है, अब यही भुगते!'

तेस्सा ने कहना आरंभ किया, 'जब मार्शल पेतां को मंत्रिमण्डल में लिया गया था तो हमने यह समझा था कि अपने सारे झगड़े आसानी से निपट जायेंगे। किन्तु परिस्थिति दिनोंदिन और भी गंभीर होती जाती है। मुझे तुम से कुछ बड़ी भयानक खबर बतानी है। बेल्जियम के राजा ने हथियार डाल दिये!'

विलार ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया, 'उसने अपने विचार से ठीक ही किया। कुछ परिस्थियों में हथियार डाल देना ही सब से बड़ी बहादुरी होती है।'

'लेकिन तुम्हें मालूम है कि, अगर कहीं हमने भी इसी प्रकार की बहादुरी

का प्रदर्शन किया, तो हिटलर हमारे ऊपर कितनी कड़ी शर्तें लायेगा ? हो सकता है, वह अल्सेस मांगे और लील पर भी कब्जा कर ले !'

'तुम्हें पहले ही इस बारे में सोच लेना चाहिये था। मैं अधिक न कह कर इतना तो कहूँगा ही कि तुम लोगों ने फ्रांस की हार को रोकने के लिए कुछ नहीं किया। जिस समय म्युनिख की सन्धि हुई उसी समय फ्रांस की हार के बीज बोये जा चुके थे। किन्तु फिर भी तुम मंत्रिमण्डल में घुसे बिना माने नहीं !'

तेस्सा का ध्यान अब और किसी तरफ था; वह सैद्धान्तिक वाद-विवाद के लिए तैयार न था। अचानक उसका ध्यान उन ट्रंकों और बंधे हुए बिस्तरों की ओर गया जो कमरे में इधर-उधर पड़े थे।

'क्या तुम जा रहे हो,' उसने पूछा।

विलार के चेहरे से ऐसा लगने लगा जैसे उससे कोई जबाब नहीं बन पड़ रहा है। अन्त में वह बोला, 'हाँ, व्यक्तिगत रूप से मैं स्वयं ठहर रहा हूँ ! मैं अन्तिम साँस तक रुकूँगा। किन्तु ये सब तसवीरें मैं भिजवाये दे रहा हूँ। मुझे इन्हें भी खतरे में डालने का कोई अधिकार नहीं। ये फ्रांस की चेतना की प्रतीक हैं। राजनीतिक प्रणालियाँ तो बदलती रहती हैं किन्तु कला की महान् कृतियों को इस प्रकार बमों के हवाले नहीं किया जा सकता !'

वह तेस्सा के साथ-साथ हाल तक गया। जब वह तेस्सा को विदा करने लगा, तो तेस्सा को कुछ बुरा मालूम हुआ उसने कहा, 'मैं सचमुच पेरिस में ठहरने जा रहा हूँ चाहे कोई भी मुसीबत आये। मेरे पास तो तसवीरों का संग्रह नहीं। मुझे फ्रांस की भी तो चिन्ता है !......'

१६

आंदेल के कहने के अनुसार युद्ध सम्बन्धी कारखानों की रक्षा का कार्य अल्सेस-निवासी, वायस को सौंपा गया, और उसने बड़ी मुस्तैदी से अपना काम शुरू किया। उसको आदेशानुसार पुलिस ने अपने गुप्तचर फैक्टरियों में भेजे ताकि मशीनों की तोड़फोड़ करनेवालों पर कड़ी निगाह रखी जाय। ये गुप्तचर कुछ भी नहीं जानते थे कि लड़ाई का कौन-सा सामान कैसे तैयार किया जाता

'बिलकुल ठीक। लेकिन मैं सारी मशीनें यहाँ से हटाना नहीं चाहता। यह बड़ा ही कठिन काम हो जायेगा और उससे कोई लाभ भी नहीं।'

क्लोदे के साथियों ने उसे सावधान कर दिया। फैक्टरी के फाटक बन्द कर दिये गये। साथियों की मदद से वह एक ऊँची दीवार चढ़कर-भाग निकला। उसने सोचा कि अपने अन्य साथियों को भी सावधान कर दिया जाय। वह पियर यूजीन के कहवाखाने में जा पहुँचा, जहाँ उसके साथी अक्सर जमा हुआ करते थे। कहवाखाने में दो कमरे थे। बाहरवाले कमरे के सामने एक काउन्टर था जहाँ ग्राहक बियर पीते और कहवाखाने के मालिक पियर-यूजीन से गप उड़ाते। वह जानता था कि उसके पीछे वाले कमरे में कम्युनिस्टों की बैठक हुआ करती है। वह कभी किसी बाहरी आदमी को उस कमरे में नहीं घुसने देता था। पूछने पर वह उत्तर देता, 'बिलियर्ड रूम इस समय खाली नहीं है।' उधर बिलियर्ड की मेज के चारों तरफ भिन्न-भिन्न जिलों से आये हुए प्रतिनिधि पार्टी के आदेशों पर बहस करते और यदि कोई बाहरी आ टपकता तो तुरन्त बिलियर्ड खेलने लगते।

जब क्लोदे अन्दर पहुँचा तो उसने देखा कि नोम फैक्टरी का जूल भी वहाँ मौजूद है। इसके बाद दूसरे लोग भी आने लगे। जिसे देखो वही गिरफ्तारियों की चर्चा कर रहा था : पुलिस ने कई सौ मजदूरों को पकड़ लिया था।

थोड़ी ही देर बाद देनीजे भी आ पहुँची और उसने चार आदमियों के मुकदमे का हाल सुनाया, 'उन्हें तोड़फोड़ के कामों के अपराध में गोली से उड़ा दिये जाने की सजा दी गई है। उन में सब से छोटे की उम्र अठारह वर्ष की रही होगी। फेरोने ने उनके मुकदमे की पैरवी की थी। मैं अभी-अभी उससे बातें करके आई हूँ। वह कहता है कि मुकदमा सरासर बनाया हुआ है, अदालत में जाकर यह बात खुल गई। इसके पीछे वायस का हाथ मालूम पड़ता है।'

'वह बड़ा ही भयंकर आदमी है,' क्लोदे ने कहा। 'जब हम लोग उससे भेंट करने गये तो उसने घूर कर मेरी ओर देखा। वह अवश्य ताड़ गया होगा कि मैं कौन हूँ। मैं भी समझ गया कि वह कैसा आदमी है। देनीजे यह लोग कर क्या रहे हैं। आज शासन की बागडोर हिटलर के जासूसों के हाथ में है!'

थोड़ी देर में देनीजे बाहर गई, किन्तु दूसरे ही क्षण फिर वापस आकर बोली, 'क्लोदे मैंने तुम्हारे लिए एक कमरा लिया है। वहाँ कोई तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता।'

उस रोज शाम को वायस ने जाकर दिन भर की खबरें ग्राँदेल को सुनायीं, "लगभग सब ठीक ही गुजरा। हमने फैक्टरियों से ऐसे लोगों को, जो गड़बड़ी मचा सकते थे, पकड़कर बन्द कर दिया है। जितनी जल्दी हम शहर खाली करना शुरू कर दें उतना ही अच्छा है। अच्छा ही हुआ जो मुकदमे के दौरान में कोई गड़बड़ी नहीं हुई। उनके सारे इरादों पर ठंडा पानी पड़ गया होगा!'

२०

शाम को सूरज निकल आया और समुद्र के ऊपर छाया हुआ कुहरा हलके नारंगी रंग का मालूम पड़ने लगा। चारों तरफ बालू के ढेर खड़े थे। घासों की सूखी बेलें, जो कहीं-कहीं बालू के ढेरों पर चढ़ी हुई थीं, ऐसी मालूम पड़ती थीं, मानों उनमें जमकर पत्थर की लकीरें बन गई हैं। निकट में ही समुद्र हिलोरें मार रहा था—ज्वार का पानी खिसकना शुरू हो गया था। पानी में बमों के फटने से पानी बल्लियों ऊपर तक उछलता और ऊँची-ऊँची लहरें उठने लगतीं। लेकिन इसमें बावजूद बालू और पानी की यह दुनिया बिल्कुल जीव-रहित मालूम पड़ती थी।

ल्युसियां को लगता था कि अगर उसका वश चले तो समुद्र पर छाये कुहरे के पर्दे को फाड़ कर फेंक दे, बालू के ढेरों को फूँककर उड़ा दे और समुद्र का पानी खौल दे। ब्रिटिश मशीनगन चलाने वाले कहीं नजदीक ही थे, किन्तु यह नहीं मालूम था कि कहाँ। उसने अपनी सारी गोली-बारूद खर्च कर डाली थी। उसके पास इस समय केवल एक दस्तीबम बच रहा था। वह बड़े प्रेम से उसे देखता, उसके निकट उस बम का मूल्य वही था जो प्यासे के लिए पानी की आखरी बूँद का होता है।

ग्यारह रोज तक लड़ाई होती रही। उसने नक्शे की ओर नजर उठाकर तक नहीं देखा। सद्रमुतट आ गया था—इसका अर्थ था कि लड़ाई समाप्त हो चुकी! उसके साथी उसे बुला रहे थे। समुद्र में दूर अंग्रेजों के जहाज खड़े

है। हाँ, अपने मूर्खतापूर्ण प्रश्नों से, झगड़े-टंटे और धमकियों से मजदूरों को अप्रसन्न जरूर कर देते थे।

म्युजे के जहाज बनानेवाले कारखाने में इनका बर्ताव विशेष रूप से निन्दनीय रहा। वहाँ एक दिन उन्होंने एक स्त्री को केवल इसलिए पकड़वा दिया कि उसने कहीं कह दिया था, 'अच्छे बहादुर हो! जाकर जर्मनों से क्यों नहीं लड़ते! वे बोवे तक आ गये हैं। यहाँ मजदूरों के कामों में रुकावटें पैदा करने से क्या फायदा!' पुलिस की रिपोर्ट में लिखा गया कि उसने एक बेंच को तोड़ने की कोशिश की।

दिन की छुट्टी के समय कारखाने के सामने वाले मैदान में मजदूरों की एक सभा हुई। हिटलर की ज्यादतियों, पुलिस के गुप्तचरों और फ्रांस के आसन्न पतन के बारे में भाषण हुए।

गैरकानूनी कम्युनिस्ट संगठन की जान इस समय ताले बनानेवाला एक मिस्त्री क्लोदे था। उसने फैक्टरी में जनवरी से काम करना शुरू किया था, किन्तु बहुत ही जल्द वह मजदूरों में लोकप्रिय बन गया था। क्षय का रोगी होने के कारण उसे फौज में नहीं भेजा गया था। उसकी चमकदार आँखों को देखकर यह धोखा होता था कि उसका दिमाग बड़ी उलझन में पड़ा है। इसमें सन्देह न था कि उसके मन में एक आग-सी लगी हुई थी; किन्तु उसके जोर-जोर और ठहर-ठहर कर साँस लेने से ही मालूम हो जाता था कि वह रोगी है।

क्लोदे हवाई किले बनाया करता, रात-रात भर वह किताबें पढ़ा करता. कभी तोल्स्तोय और फ्लोबेर, कभी शोलोखाफ और कभी मालरों। पाँच साल हुए जब कि वह अकसर 'संस्कृति-भवन' में आया-जाया करता था। वहीं ल्युसियाँ से उसकी भेंट हुई थी। एक दिन उनमें आपस में काफी लम्बी बात-चीत भी हुई थी। ल्युसियाँ ने लगातार उससे 'शाश्वत क्रांति' की बात की और क्लोदे ने उत्तर दिया, 'आप मेरे पूज्य हैं। आप सब कुछ जानते हैं। किन्तु इतना ही काफी नहीं। मेरे विचार में कवि के लिए ईमानदार होना आवश्यक है।'

दो वर्ष हुए जब उसने स्पेन जाने की कोशिश की थी, किन्तु फ्रांस और स्पेन की सीमा पर ही उसे रोक लिया गया था और वापस पेरिस भेज दिया.

गया था। उस समय वह 'सीन' फैक्टरी में काम करता था। 'तुम हमारे मुख्य प्रचारक हो,' लेग्रे उससे कहा करता था। क्लोदे जानता था कि कैसे लोगों को अपने विचारों का कायल बनाया जा सकता है।

लड़ाई के शुरू में क्लोदे पकड़ लिया गया और उसे चार महीने जेल में बिताने पड़े। किन्तु डाक्टरी परीक्षा के बाद उसे छोड़ दिया गया। उसे आशा नहीं थी कि उसे कहीं काम मिलेगा, किन्तु किस्मत ने उसका साथ नहीं छोड़ा था। म्युजे के कारखाने में खराद का काम करने वालों की भरती हो रही थी। वह ले लिया गया और थोड़े ही दिनों में उसने वहाँ अपना एक गुप्त संगठन तैयार कर लिया। अब मजदूर हर समय उसे घेरे रहते थे। वे कुछ न कुछ उसकी जबान से सुनना चाहते थे। वह कहता, 'क्या रेनो दलादिये से बेहतर है? ये सभी हम लोगों को धोखा देंगे!...

मजदूरों ने अपना एक प्रतिनिधिमण्डल नियुक्त किया। उन्होंने यह एलान करने का निश्चय किया कि हम उत्पादन बढ़ाने के लिए तैयार हैं, सिर्फ हमारे बीच से पुलिस के गुप्तचर हटा लिये जायें।

जब प्रनिनिधिमण्डल वायस के सामने पहुँचा तो वह क्लादे की ओर देख कर मुसकराते हुए बोला, 'आप लोगों को धन्यवाद! मैं जानता हूँ, पेरिस के मजदूर कितने बड़े देशभक्त हैं। हर नया हवाई जहाज हमारी जीत की घड़ी को और निकट लायेगा। जहाँ तक कि पुलिस के गुप्तचरों का संबन्ध है, वे इस लिये भेजे गये हैं कि कारखानों में छिपे हुए कम्युनिस्टों को ढूँढ़ निकालें। आशा है, आप लोग मेरी बात समझ गये होंगे?' वायस की नीली आखें क्लोदे की आँखों से मिलीं और क्लोदे ने तुरन्त मुँह फेर लिया।

जब म्युजे फैक्टरी के मजदूर चले गये तो दूसरे आये। तमाम बड़ी फैक्टरियों ने इच्छा प्रकट की कि मजदूर और अधिक घंटे काम करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते कि पुलिस के गुप्तचर उनके बीच से हटा दिये जायें।

वायस म्युजे से यह कहने गया कि ११४ मजदूर बर्खास्त कर दिये गये हैं। म्युजे ने नाम पढ़ते ही कहा, 'ये सब तो होशियार मजदूर हैं। खैर, कोई बात नहीं। अच्छा यह तो बताओ कि शहर खाली कैसे करोगे?'

'हम मजदूरों को यहाँ से बाहर भेज देंगे। इस बीच जितने ही कम मजदूर यहाँ रह जायें उतना ही अच्छा है!'

होंगे और उस पार उनका देश है। वह यहाँ से जाना भी नहीं चाहता था। उसने दिन अंग्रेजों के साथ बिताया था और शाम होते ही चला आया था। अब वह इस रेतीले किनारे पर अकेला था।

जिस दिन से लड़ाई शुरू हुई थी उसने मौत को बुलाने की बड़ी कोशिश की थी। वह मशीनगन की गोलियों की बौछार में से होकर निकला, टैंकों के पास तक हाथ में बम लिए खिसकता-खिसकता पहुँचा और एक जर्मन गश्ती टुकड़ी पर उसने एक बेलजियन मकान की छत से बम फेंका। लेकिन फिर भी ऐसा लगता था जैसे मौत भी उससे जान बूझकर दूर भाग रही थी।

वह अखबार तक नहीं पढ़ता था। एक दिन उसकी नजर कागज के एक टुकड़े पर पड़ी, जिसमें कुछ टमाटर बँधे थे। उसमें लिखा हुआ दिखाई पड़ा, 'जान आफ आर्क दन्ता, जो पूर्ण रूप से सुसज्जित है, हमारी सहायता करेगा।' उसने अखबार के पड़े टुकड़े को उठाकर फेंक दिया और कुछ बोला तक नहीं। उसके साथी कहा करते थे कि फ्रांसवालों के साथ 'गद्दारी' की गई। कुछ तो जर्मनों पर आरोप लगाते, कुछ अंग्रेजों पर और कुछ अपने ही सैनिक अधिकारियों पर।

पिछले दस दिनों में केवल एक चीज से वह प्रभावित हुआ था। वह थी जेनतुई से उसकी अचानक भेंट। जेनतुई को पेरिस में भला कौन नहीं जानता? बड़े-बड़े लोग उस पर जान देते थे, वह किसी-किसी उल्लेखनीय विशेषता का धनी नहीं था, किन्तु वह जानता था कि लोगों को कैसे हँसाया जाता है। वह आराम का जीवन बिताने और अपने धन को पानी की तरह बहाने का आदी था। अब वह टैंक चला रहा था। आठ फ्रांसीसी टैंक आगे बढ़ते-बढ़ते दुश्मन के निकट जा पहुँचे थे। किन्तु वहाँ पहुँचकर उन्हें रुक जाना पड़ा, क्योंकि उनका पेट्रोल खत्म हो चुका था। शाम तक में उन्होंने दुश्मन को मार कर भगा दिया। सबेरे तड़के मदद के लिए सेना आ पहुँची। पाँच टैंक जल चुके थे। जेनतुई किसी प्रकार जीवित बच निकला।

समुद्रतट के निकट छोटे-छोटे फौजी दस्ते दुश्मन को दूर रखने की कोशिश कर रहे थे। उस स्थान को खाली करके पीछे हट जाने का वह अन्तिम दिन था। बालू के टीलों के आसपास कभी-कभी दुश्मन से मुठभेड़ हो जाया

करती थी, सिपाही बालू पर खिसकते-खिसकते एक दूसरे के पास तक जा पहुँचते और तब बमों से, गोलियों और संगीनों से लड़ने लगते। इतने में सूर्य की किरणें कुहरे को पार करती हुई पृथ्वी तक पहुँचती और मालूम होता कि कुहरे के बादल हवा में टँगे हुए हैं।

ल्युसियां खिसकता हुआ बालू के एक टीले पर जा पहुँचा और वहाँ चुपके से लेट गया। कुछ दूर पर उसे समुद्रतट की भींगी हुई बालू दिखाई पड़ रही थी। आधे नंगे आदमी खिसक-खिसक कर समुद्रतट तक पहुँचे और पानी में कूद पड़ते। कई को गोलियों का शिकार होना पड़ता। पानी में इस प्रकार फेन उठता जैसे कोई भारी मछली ऊपर आई हो। दूर पर बमों के फटने से पानी बल्लियों उछलता हुआ दिखाई पड़ता था। अपने को बचा ले जाना बड़ी हिम्मत का काम था। जो जरा कुछ अधिक निडर और साहसी थे, वे बालू के आखिरी टीलों पर खड़े दुश्मन का अपनी राइफलों से मुकाबला कर रहे थे। जर्मन हवाई जहाज उड़-उड़ कर सारे समुद्रतट को बमों से ढंक दे रहे थे। इतने में अँधेरा होने लगा और समुद्र का जल ठंडा और गन्दा मालूम पड़ने लगा।

ल्युसियां ने देखा कि घास के अन्दर लोहे की टोपी पहने कोई खिसक रहा है। नीचे जर्मन सैनिक आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे, बिना कुछ सोचे, ल्युसियां ने उचक कर अपने हाथ का बम फेंका और जोर से चिल्लाया। बालू के टीलों में धड़ाके की आवाज हुई, जो चारों ओर गूँज उठी। फिर क्या था तोपखानों का मुँह खुल गया। इतने में एक जर्मन ल्युसियां की ओर दौड़ा। ल्युसियां भी रेत में लड़खड़ाता हुआ उसकी ओर दौड़ा। दोनों एक दूसरे के ऊपर ऐसे गिरे जैसे गले मिल रहे हों।

बाद में ल्युसियां को यह याद नहीं कि उसने उस जर्मन पर कैसे काबू पाया। इतना जरूर याद था कि उसे जान छुड़ाना मुश्किल हो गया था— जर्मन मजबूती के साथ उसकी गर्दन पकड़े था! उसका हाथ था तो पतला-दुबला किन्तु उसकी नसें उभरी हुई थीं और उसमें बड़ी ताकत थी।

अब वह आखरी हथगोला भी नहीं रह गया था। ल्युसियां समुद्रतट की ठंडी भींगी हुई बालू पर भागने लगा—समुद्र पीछे हट गया था। ऐसा

मालूम होता था वह तट तक नहीं पहुँच पायेगा। किन्तु किसी तरह पहुँचकर वह पानी में कूद पड़ा और तैरने लगा। वह अपने को बचा नहीं रहा था, बल्कि जल्दी-जल्दी उस स्थान की ओर बढ़ रहा था, जहाँ गोले आकर फटते थे। बड़ा जोर लगाने के कारण उसका मुँह आधा खुला हुआ था और उसके सिर के बालों में आग-सी लगी मालूम पड़ती थी।

मौत ने फिर उससे मुँह मोड़ लिया; वह तैरते-तैरते एक ब्रिटिश मोटर बोट तक जा पहुँचा। उसे ऊपर उठा लिया गया। उसे पहनने को एक पाजामा दिया गया और गरम होने के लिए ह्विस्की की एक बोतल। वह उसे पीता जाता और कस्में खाता जाता। इतने में एक अंग्रेज ने, जिसके चेहरे पर बच्चों की-सी मुसकराहट थी, पास में आकर टूटी-फूटी फ्रेंच में कहा, 'अब हमें लड़ाई जीतनी ही होगी!'

२१

तेस्सा जब जागा तो फिर उसे स्फूर्ति मालूम पड़ने लगी थी। उसने जोलियो से बातचीत करते हुए बड़े इत्मीनान से कहा, 'वे वेगां लाइन से टकरा कर स्वयं अपना सिर फोड़ लेंगे। तुम यह लिखो कि वास्तव में लड़ाई तो अब शुरू हुई!'

'यह लिखना तो बहुत आसान है,' उसने कहा। किन्तु प्रश्न यह नहीं। आप भले ही मुझ पर हँसे किन्तु मैंने आपसे यह कभी नहीं छिपाया कि मैं बहुत-सी चीजों में भी विश्वास करता हूँ जिन्हें आप मिथ्या और भ्रामक कहेंगे। मैं आपको विश्वास दिला कर कहता हूँ कि जर्मनों को फ्रांस के अन्दर जानबूझ कर बुलाया गया है! न जाने कितनी बार सुनने में आ चुका है कि जर्मन आने ही वाले हैं! और लीजिये, वे आ भी गये!'

'क्या बूढ़ी औरतों जैसी बातें करते हो! यह मान कर क्यों नहीं चलते कि जर्मन नहीं आये। लड़ाई तो सोम नदी के किनारे हो रही है।'

'हो सकता है। मैं वहाँ नहीं गया हूँ। एक बात मैं बिल्कुल अच्छी तरह जानता हूँ कि कल उन्होंने मर्साई पर बम फेंके। इसका क्या अर्थ है, समझे?

मर्साई फ्रांस के दूसरे सिरे पर है। कौन सोच सकता था कि ऐसा होगा? अब सब कुछ खत्म हो चुका। निश्चय जानो कि इटलीवाले आज या कल या परसों ही आक्रमण कर देंगे। सोम के मोर्चे को हम लेकर चाटेंगे?'

इसके बाद तेस्सा ब्रेतील से मिलने गया। ब्रेतील चुपचाप अपनी मेज के सामने बैठा था। वह इस प्रकार अकड़ा हुआ बैठा था और उसके चेहरे से इतनी कठोरता टपक रही थी जैसे वह फोटो खिंचाने बैठा हो।

उस रोज सबेरे अपनी पत्नी से उसका झगड़ा हो गया था। उसने रोकर कहा था, 'हाय, अब जर्मन पेरिस ले लेंगे। नाश हो तुम्हारा! तुम तो यही चाहते थे।' अपने राजनीतिक विरोधियों के आक्रमणों का ब्रेतील पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। वह समझता था कि दुकेन और फूजे का तो काम ही यह था कि वे दूसरे के सिर सारा दोष मढ़ते फिरें। उसने पहले से उन्हें आगाह कर दिया था कि जर्मनी से लड़ना भारी पड़ेगा! किन्तु अपनी पत्नी को वह क्या उत्तर देता, जो अपने बेटे को याद कर चिल्ला रही थी, 'तुमने उसे मरवा डाला! तुम और न जाने कितने आदमियों का खून कराओगे!'

जब तेस्सा पहुँचा तो ब्रेतील भूल चुका था कि सबेरे पत्नी से उसका क्यों झगड़ा हुआ था और उसने कौन-कोन से कायरतापूर्ण निश्चय किये थे। वह इस समय ठंडा पड़ चुका था।

'सबके सब पागल हो गये हैं!' तेस्सा ने जोर-जोर से कहना शुरू किया। 'वह लंगूर रेनो मेडागास्कर जाने को कहता है। और जर्मन रूएन की ओर बढ़ रहे हैं। हमें कुछ न कुछ करना चाहिये! यह आखिरी मौका है।'

'मैंने तुम्हें पहले आगाह नहीं कर दिया था?

'मुझे आगाह कर दिया था? वह कैसे? मन्त्रिमण्डल में जाने की राय मुझे किसने दी थी! तुम्हीं ने तो! और आज तुम अपना हाथ खींचे ले रहे हो? वाह, खूब रही! मुझे पता है कि तुम्हारे आदमी मेरे दुश्मन हैं। किन्तु इसका कारण केवल गलतफहमी है। मैं चाहूँगा कि तुम उन्हें समझा दो। पार्लियामेंट में मैं तुम्हारी ही सहायता से तो पहुँचा था? ऐसे नाजुक मौके पर तुम अपने किसी मित्र को इस प्रकार तो नहीं छोड़ सकते!

'तुम बेकार ही जोश में भरे जाते हो,' ब्रेतील ने उत्तर दिया। 'मैं तो यह कह रहा था कि मैंने तुमसे पहले ही बतला दिया था कि जर्मनों को रोकने की कोशिश बेकार है। किन्तु राष्ट्रवादी क्षेत्रों में तुम्हारा बड़ा सम्मान है। यहाँ भी अपना ही घर समझो। किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। आओ हम परिस्थिति पर एक नजर डालें और देखें कि सरकार में कौन-कौन लोग होने चाहिये।'

'आज ही तो मन्त्रिमण्डल का पुनः संगठन हुआ है।'

'यह तो एक पेवन्द पर दूसरे पेवन्द के लगा देने की बात हुई। मैं नई सरकार की बातें कर रहा हूँ। चन्द ही दिनों में सन्धि की बातचीत करने का प्रश्न उठेगा। ऐसी अवस्था में देश में एक मजबूत सरकार का होना जरूरी है। हो सकता है कि कम्युनिस्ट हमारी किसी कमजोरी का फायदा उठाना चाहें। मार्शल के रहते हुए शासन की बागडोर आसानी से अपने हाथों में आ जायगी। उसका नाम 'वर्दुन का हीरो' भी तो काफी आकर्षक है। आध घंटे के अन्दर सब कुछ ठीक किया जा सकता है।'

'और रेनो?'

'वह भाग खड़ा होगा। या, हम उसे अपना राजदूत बनाकर अमेरिका भेज देंगे। इस प्रकार बूढ़े मार्शल को अपना नेता बना लेंगे। फिर लवाल तो रहेगा ही, और मैं भी हूँगा। हम पुराने मन्त्रियों में से भी दो एक को लेंगे।'

'मेरी समझ में तो बोदुइन को अलग रखना चाहिये।'

'बिल्कुल ठीक। वह इटली वालों में अधिक जनप्रिय है। इसके बाद प्रूवोस्त है। वह व्यवसाइयों का प्रतिनिधित्व करेगा। म्युजे उसे बड़ा योग्य समझता है। मैंने तुम्हारा नाम भी सूची में रखा है।'

तेस्सा को यह सुनकर कितना इत्मानान हुआ इसे वह छिपा न सका। किन्तु दिखाने के लिए कहने लगा, 'मेरा क्या? मैं तो अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ! नवयुवकों में से किसी को रखना अधिक उचित होगा।'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। ब्रेतील की स्त्री बगलवाले कमरे में पड़ी रो रही थी। उसकी हिचकियों की आवाज सुन-सुनकर ब्रेतील को क्रोध आ रहा

था। अन्त में तेस्सा ने ख़ामोशी को तोड़ते हुए पूछा, 'तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या जर्मन पेरिस तक जल्द ही पहुँच जायँगे ?'

'अब तो दिनों की कौन कहे, घंटों की बात है......।'

जब तेस्सा ब्रेतील के यहाँ से चला तो उसका दिमाग बड़ा परेशान था। उसे यह जानकर अब कोई खुशी नहीं रह गई थी कि नये मन्त्रिमण्डल में उसे भी जगह मिलेगी। दुनियाँ उसे रहस्यपूर्ण और अपने विरुद्ध दिखाई पड़ने लगी थी। उसने सोचा, अगर कहीं रेनो को पता चल गया कि मैंने ब्रेतील से क्या बातचीत की है तो क्या होगा ? मैंडेल कुछ भी कर सकता है। कहीं वह मुझे पकड़वाकर गोली न मरवा दे। लोग मुझे गद्दार कहेंगे, और मजा यह कि जर्मन मुझे कम्युनिस्टों से कम खतरनाक नहीं समझते। राजनीति भी कितनी गन्दी चीज है। वह सैनिक ही मजे में हैं—वे कम से कम यह तो जानते हैं कि दुश्मन कहाँ है। मेरे दुश्मन तो हर जगह हैं।

उसे अपनी जिन्दगी में इतना डर पहले कभी नहीं लगा था। वह किसी तरह भाग कर अपने दफ्तर के फाटक तक पहुँचा और कमरे की जगमग करती रोशनी को देखकर उसकी जान में जान आई।

इतने में विमानवेधी तोपें गरजने लगीं। वह दौड़कर खिड़की तक गया किन्तु फिर लौट आया। जर्मन पेरिस के पास आ गये थे। वे उसे कम्युनिस्ट समझते थे। उधर मजदूरों में यह अफ़वाह फैली हुई थी कि उसने हिटलर से सन्धि कर ली है। जिसे देखो वही उसके विरुद्ध था। वे यदि उसे पा जायँगे तो गोली से उड़ा देंगे, या सता-सताकर जान ले लेंगे। यह धमका कैसा हुआ ? जरूर पास में ही कहीं बम फटा। शायद वह उसके दफ्तर पर फेंकना चाहते थे। पाँच सौ पौंड वजन का बम ! यदि कहीं वह मारा गया तो कोई यह भी नहीं बता सकेगा कि यह उसकी लाश है। कुछ न कुछ तुरन्त करना चाहिये। उसे किसी प्रकार अपनी जान बचानी चाहिये।

वह कमरे में इधर से उधर दौड़ता रहा और यह नहीं तय कर पाया कि क्या करे। वह बैठता और फिर दूसरे ही क्षण उठकर खड़ा हो जाता। उसे कुछ ठंडक-सी मालूम पड़ने लगी। अन्त में उसने अपने सेक्रेटरी के लिए घंटी बजायी, और उसके आते ही तुरन्त हुक्म दिया, 'कार तैयार करो। यह ध्यान रखना कि पेट्रोल काफी हो ! मैं कहीं देहात में चला जाना चाहता हूँ।'

'तुम बेकार ही जोश में भरे जाते हो,' ब्रेतील ने उत्तर दिया। 'मैं तो यह कह रहा था कि मैंने तुमसे पहले ही बतला दिया था कि जर्मनों को रोकने की कोशिश बेकार है। किन्तु राष्ट्रवादी क्षेत्रों में तुम्हारा बड़ा सम्मान है। यहाँ भी अपना ही घर समझो। किसी प्रकार की चिन्ता करने की जरूरत नहीं। आओ हम परिस्थिति पर एक नजर डालें और देखें कि सरकार में कौन-कौन लोग होने चाहिये।'

'आज ही तो मन्त्रिमण्डल का पुनः संगठन हुआ है।'

'यह तो एक पेवन्द पर दूसरे पेवन्द के लगा देने की बात हुई। मैं नई सरकार की बातें कर रहा हूँ। चन्द ही दिनों में सन्धि की बातचीत करने का प्रश्न उठेगा। ऐसी अवस्था में देश में एक मजबूत सरकार का होना जरूरी है। हो सकता है कि कम्युनिस्ट हमारी किसी कमजोरी का फायदा उठाना चाहें। मार्शल के रहते हुए शासन की बागडोर आसानी से अपने हाथों में आ जायगी। उसका नाम 'वर्दुन का हीरो' भी तो काफी आकर्षक है। आध घंटे के अन्दर सब कुछ ठीक किया जा सकता है।'

'और रेनो?'

'वह भाग खड़ा होगा। या, हम उसे अपना राजदूत बनाकर अमेरिका भेज देंगे। इस प्रकार बूढ़े मार्शल को अपना नेता बना लेंगे। फिर लवाल तो रहेगा ही, और मैं भी हूँगा। हम पुराने मन्त्रियों में से भी दो एक को लेंगे।'

'मेरी समझ में तो बोदुइन को अलग रखना चाहिये।'

'बिल्कुल ठीक। वह इटली वालों में अधिक जनप्रिय है। इसके बाद प्रूवोस्त है। वह व्यवसाइयों का प्रतिनिधित्व करेगा। म्युजे उसे बड़ा योग्य समझता है। मैंने तुम्हारा नाम भी सूची में रखा है।'

तेस्सा को यह सुनकर कितना इत्मानान हुआ इसे वह छिपा न सका। किन्तु दिखाने के लिए कहने लगा, 'मेरा क्या? मैं तो अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ! नवयुवकों में से किसी को रखना अधिक उचित होगा।'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। ब्रेतील की स्त्री बगलवाले कमरे में पड़ी रो रही थी। उसकी हिचकियों की आवाज सुन-सुनकर ब्रेतील को क्रोध आ रहा

था। अन्त में तेस्सा ने खामोशी को तोड़ते हुए पूछा, 'तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या जर्मन पेरिस तक जल्द ही पहुँच जायँगे ?'

'अब तो दिनों की कौन कहे, घंटों की बात है......।'

जब तेस्सा ब्रेतील के यहाँ से चला तो उसका दिमाग बड़ा परेशान था। उसे यह जानकर अब कोई खुशी नहीं रह गई थी कि नये मन्त्रिमण्डल में उसे भी जगह मिलेगी। दुनियाँ उसे रहस्यपूर्ण और अपने विरुद्ध दिखाई पड़ने लगी थी। उसने सोचा, अगर कहीं रेनो को पता चल गया कि मैंने ब्रेतील से क्या बातचीत की है तो क्या होगा ? मैंडेल कुछ भी कर सकता है। कहीं वह मुझे पकड़वाकर गोली न मरवा दे। लोग मुझे गद्दार कहेंगे, और मजा यह कि जर्मन मुझे कम्युनिस्टों से कम खतरनाक नहीं समझते। राजनीति भी कितनी गन्दी चीज है। वह सैनिक ही मजे में हैं—वे कम से कम यह तो जानते हैं कि दुश्मन कहाँ है। मेरे दुश्मन तो हर जगह हैं।

उसे अपनी जिन्दगी में इतना डर पहले कभी नहीं लगा था। वह किसी तरह भाग कर अपने दफ्तर के फाटक तक पहुँचा और कमरे की जगमग करती रोशनी को देखकर उसकी जान में जान आई।

इतने में विमानवेधी तोपें गरजने लगीं। वह दौड़कर खिड़की तक गया किन्तु फिर लौट आया। जर्मन पेरिस के पास आ गये थे। वे उसे कम्युनिस्ट समझते थे। उधर मजदूरों में यह अफ़वाह फैली हुई थी कि उसने हिटलर से सन्धि कर ली है। जिसे देखो वही उसके विरुद्ध था। वे यदि उसे पा जायँगे तो गोली से उड़ा देंगे, या सता-सताकर जान ले लेंगे। यह धमका कैसा हुआ ? जरूर पास में ही कहीं बम फटा। शायद वह उसके दफ्तर पर फेंकना चाहते थे। पाँच सौ पौंड वजन का बम ! यदि कहीं वह मारा गया तो कोई यह भी नहीं बता सकेगा कि यह उसकी लाश है। कुछ न कुछ तुरन्त करना चाहिये। उसे किसी प्रकार अपनी जान बचानी चाहिये।

वह कमरे में इधर से उधर दौड़ता रहा और यह नहीं तय कर पाया कि क्या करे। वह बैठता और फिर दूसरे ही क्षण उठकर खड़ा हो जाता। उसे कुछ ठंडक-सी मालूम पड़ने लगी। अन्त में उसने अपने सेक्रेटरी के लिए घंटी बजायी, और उसके आते ही तुरन्त हुक्म दिया, 'कार तैयार करो। यह ध्यान रखना कि पेट्रोल काफी हो ! मैं कहीं देहात में चला जाना चाहता हूँ।'

जब साढ़े आठ बजे जोलियो एक खुशखबरी सुनाने आया तो उसे बतलाया गया कि मिनिस्टर साहब देहात चले गये हैं। जोलियो फिर कोई और प्रश्न पूछे बिना वहाँ से चल दिया। वह भागता हुआ सीधे घर पहुँचा और अपनी पत्नी से बोला, 'मेरी! हमें अभी चल देना चाहिये। वह धूर्त पहले ही चलता बना। ओफ! कितना बदमाश है। आज ही सबेरे वह मुझसे अपने बाग के फूलों और पौधों की तारीफ कर रहा था। कहावत है कि जब जहाज डूबने लगता है तो चूहे भी उसे छोड़कर भागने लगते हैं। लेकिन यहाँ तो जहाज का कप्तान ही भागा जा रहा है। चूहों को तो पीछे छोड़ा जा रहा है। वे जिन्दा रहें या भाड़ में जायें। लेकिन उसे मालूम होना चाहिये कि आजकल के चूहे भी बड़े सयाने होते हैं! चलो चलो, प्रिये, उठ खड़ी हो!'

२२

जानेत रात भर चलती रही। अँधेरे में लोगों के पैरों की आहट, बच्चों के रोने और दूर पर गोले छूटने की आवाज आती रही। सबेरा होते ही, दूसरों के साथ वह भी थक कर कुचली हुई घास पर बैठ गई। वह थोड़ी देर बाद सो गई, कई घन्टे बाद एक धमाका होने से उसकी नींद टूटी। वह उछल पड़ी; कुछ दूर पर धुएँ का बादल सा दिखाई दिया! लोग जमीन से इस प्रकार चिपके पड़े थे, जैसे यह उसके धरातल के ही अंग हों। बाद में एक छोटी लड़की, जिसका पेट फट गया था, लादकर उधर से ले जायी गयी। थकावट के मारे जानेत के पैर मन-मन भर के हो रहे थे। फिर भी वह बीस मील और चली। अब उसके पैर मारे दर्द के फटने लगे थे और प्यास के मारे गला सूखा जा रहा था। जब अपने साथियों के साथ वह एक गांव में पहुँची तो वहाँ बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था; सब लोग घर छोड़कर भाग गये थे। मुसाफिर एक दूकान के बाहर इकट्ठे हुए; किसी ने चिल्लाकर कहा। 'देखते क्या हो, तोड़ दो इसे! आज दो दिन से मेरे बच्चों को कुछ भी खाने को नहीं मिला।'

दूकान लूट ली गई। सारी बोतलें और कनस्टर लोगों के हाथ में आये। एक बूढ़ी स्त्री ने अपने ऊपर मुरब्बा उड़ेल लिया। एक मजदूर ने जानेत को

कुछ बिस्कुट और अचार दिया। जानेत डरती थी कि अपने साथियों से, जिनके साथ वह इतनी दूर तक आई थी, पीछे न रह जाय। वह खाती जाती और दौड़कर अपने साथियों के साथ-साथ चलने की कोशिश करती।

अगले गाँव में अभी तक कुछ किसान बाकी थे। एक मकान के दरवाजे पर एक पुरुष और एक स्त्री खड़ी थी। जानेत ने एक गिलास पानी माँगा।

'यह पेरिस नहीं!' स्त्री ने बिगड़कर उत्तर दिया। 'मुझे कुएँ से लाना पड़ता है। पहले एक फ्राँक दो!'

जानेत बैठे-बैठे ऊँघ रही थी। अतीत की स्मृतियाँ एक के बाद एक उसके दिमाग में आ रही थीं, सब से अधिक उसे जुलाई की वह रात याद आई जबकि आँद्रे के साथ वह तंग गली में एक रोज जा रही थी, फिर चर्खी का चमकदार नीला काठ का बना हाथी, लालटेन, और छायादार अखरोट के पेड़ के नीचे उनका एक दूसरे को चूमना...।

सबेरा होते ही लोग उठे और कराहते हुए अपने रास्ते पर चल दिये। सूर्य के प्रकाश में जगमगाते हुए उस गिरजे के अन्दर केवल वह बूढ़ी स्त्री रह गई।

दोपहर के लगभग एक पहाड़ी के ऊपर से जानेत को फल्युरां दिखाई पड़ा। उसके पास के तालाब का चमकता हुआ पानी सामने नजर आ रहा था। 'चलो किसी तरह जान बची!' उसने मन में सोचा। अब उसे केवल ल्वायर के उस पार पहुँचना था और उसके लिए जीवन का सारा आनन्द तैयार था।

आस-पास बिल्कुल जली हुई या यों ही छोड़ दी गई मोटर कारें पड़ी थीं! पेड़ के पेड़ नष्ट कर दिये गये थे, न जाने कितने की धज्जियाँ उड़ गई थीं। कहीं-कहीं टेलीग्राफ के तार के टुकड़े पड़े मिलते थे। जानेत एक घोड़े की लाश से टकरा गई। घोड़े के बड़े-बड़े पीले दाँत बाहर निकले हुए थे, ऐसा जान पड़ता था कि वह मुसकरा रहा है। सड़क के किनारे एक घायल स्त्री बैठी थी। एक दूसरी स्त्री भी उसी के बगल में बैठी अपने हाथों से मुँह ढँके थी। स्पष्ट था कि गायन नगर बिल्कुल नष्ट कर दिया गया था। कूड़े के ढेर में कड़ाहियाँ, किताबें, सैनिकों के झोले और न जाने कौन-कौन

सी चीजें पड़ी थीं। एक दीवार पर जो अब भी उसी तरह खड़ी थी, एक चमकता हुआ बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था, 'ल्वायर के महल—फ्रांस के मोती!'

जानेत के लिए मलबे के ढेर से होकर निकलना कठिन हो गया। धूप बड़ी कड़ी थी। पत्थरों के नीचे से बड़ी दुर्गन्ध आ रही थी। कई लाशें उनके नीचे दबी पड़ी थीं। कहीं किसी का सिर निकला दिखाई पड़ता, कहीं स्त्रियों के जूते पहनने हुए पैर और कहीं किसी बूढ़े के हाथ। जानेत पागलों की तरह बढ़ती ही चली गई। उसने किसी तरफ ध्यान न दिया; केवल नदी की ओर बढ़ती रही।

एकाएक वह रुक गई और जोर से चीख उठी। पुल को तो उड़ा दिया गया था! उसने पास ही एक पत्थर पर बैठकर उसी प्रकार मौत के आने का इन्तजार करना आरम्भ किया जैसे कई दिनों पहले ट्रेन के आने का किया था। उसका दिमाग बिल्कुल शून्य था। उसे अपने सामने न कुछ दिखाई पड़ रहा था और न किसी प्रकार के विचार उसके मन में उठ रहे थे, और जब जर्मन वायुयानों ने उड़कर सड़क पर, जहाँ शरणार्थी चल रहे थे, मशीन-गनों से गोली बरसाना शुरू किया तो भी जानेत अपनी जगह से हटी तक नहीं। अगर दूसरे लोग उसके पास तक आ न पहुँचते तो शायद वह सबेरे तक ऐसे ही बैठी रहती। समान रूप से भाग्य के मारे होने के कारण, उनमें एक दूसरे के प्रति सहानुभूति की भावना पैदा हो गई थी। वे अपना खाना एक दूसरे को खिलाते, घायलों को ले चलने में भी मदद करते। अगर कभी किसी बूढ़ी का कुत्ता पीछे रह जाता तो उसे भी जाकर ले आते।

किसी ने जानेत से कहा, 'नदी में वहाँ पर कुछ नावें हैं।' यह सुनते ही वह उठ खड़ी हुई और लोगों के साथ चल पड़ी।

नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचते ही, वह जी खोलकर हँसी और पेड़ों से कहने लगी, 'जान बची, किसी तरह!'

उसने एक पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया, यद्यपि उसमें इतनी भी शक्ति बाकी नहीं रही थी कि एक कदम आगे रख सके।

'जानेत!' किसी ने पीछे से आवाज दी।

उसे यह महसूस करने में थोड़ा समय लगा कि मैले-कुचैले कपड़े पहने सामने खड़ा सैनिक ल्युसियां ही था। उसने जानेत का हाथ पकड़ लिया और जोर से हँसने लगा। उन्हें एक दूसरे से मिले चार साल हो चुके थे। एक बार और उसने जानेत को एक थियेटर में देखा था, लेकिन तब वह नजर बचाकर निकल गया था। आज वह मारे खुशी के पागल था। ऐसे समय पर जानेत का मिल जाना कितनी खुशी की बात थी! इतने हजार लोग के बीच में उसे पा जाना सौभाग्य नहीं तो क्या था। उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो उसने कभी जानेत से अपना प्रेम तोड़ा ही नहीं था।

'ल्युसियां!' उसने कहा, 'क्या हो गया! कितना भयंकर दृष्य है! नदी के उस पार जर्मनों ने न जाने कितनी स्त्रियों, कितने पुरुषों को मारा, और अभी-अभी एक लड़के को भी। मेरी समझ में कुछ नहीं आता।'

ल्युसियां ने दांत निकालते हुए उत्तर दिया, 'सिर्फ इस एक सड़क पर कम से कम बीस हजार शरणार्थी मारे जा चुके हैं। और इस तरह की न जाने कितनी सड़कें हैं! ऊपर उत्तर की ओर मैंने अपनी आँखों से देखा कि क्या हुआ। हम सैनिक शरणार्थियों की भीड़ के मारे एक कदम नहीं चल पाते थे। तुम समझी नहीं। वास्तव में षड्यंत्र ही यह रचा गया था। उन्होंने सेना को तो दुश्मन के जाल में फँसा दिया और स्वयं भाग खड़े हुए। वे तो हमें पीस डालना चाहते थे। मेरा पिता भी उन्हीं लोगों में से था। कितनी बार उसने मुझसे कहा—जर्मन फिर भी कहीं बेहतर होंगे! यह उन्हें 'बेहतर' आदमी मिल गये!'

उसने दुखित होकर जानेत का हाथ सहलाया। 'अभी तुम्हें चलते रहना पड़ेगा,' वह बोला। 'बम बरसने ही वाले हैं, देखती नहीं हो, कितने सैनिक हैं। और अफसर कितने? केवल तीन। बाकी सब भाग निकले। कहा जाता है हमें इस पहाड़ी की रक्षा करनी पड़ेगी। मुझे तो विश्वास नहीं होता। लगातार यही सुनता आया हूँ। हम लोग खाइयाँ खोदकर हुक्म का इन्तजार करते थे। इतने में हुक्म मिलता कि पीछे हट जाओ। जर्मन आते और बमों से हमें भून डालते। चलो, उठो, जानेत!'

'ल्युसियां, क्या तुम यहीं ठहरोगे?'

'मैं ? कभी मैं डनकर्क में था। अब तो अच्छा है कि किसी तरह मैं मारा जाऊँ।'

'किन्तु मुझे तो डर लगता है। ल्युसियाँ, मैं तो जीवित रहना चाहती हूँ।'

उसने उसे एक चुम्बन लेने दिया और अपने रास्ते चल दी। पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर वह रुक गई। डूबता हुआ सूर्य बहुत बड़ा और बिल्कुल लाल दिखाई दे रहा था। वहाँ से नीचे के खंडहर अब नहीं दिखाई पड़ते थे; मालूम पड़ता था संसार में सुख और शान्ति है। दूर ल्आग्रर नदी अपने चौड़े छिछले पेटे में नागिन की तरह लहराती बह रही थी। बीच-बीच में बने हुए छोटे-छोटे टापू झाड़ियों से ढँके हुए थे। जानेत के पास भी दो पेड़ दरबानों की तरह चुपचाप खड़े उसकी रखवाली कर रहे थे। उनकी काली पत्तियाँ आकाश की पृष्ठभूमि में बड़ी अच्छी मालूम पड़ रही थीं। दूर के पेड़ नीले मालूम पड़ते।

फिर वही हवाईजहाजों की घरघराहट सुनाई पड़ी। वह ईश्वर पर भरोसा करके घास पर लेट रही। जैसा कि पहले दूसरों ने किया था, वह भी घास में मुंह छिपाकर लम्बे लेट गई। घास से बड़ी ही अच्छी महक आ रही थी— उसे अपने बचपन के दिन याद आ गये जब वह वसन्त ऋतु के आनन्द लूटा करती थी। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था। घरघराहट और तेज हो गई। वह पड़ी सोच रही थी, 'यहाँ अवश्य कहीं 'थाइम' के पौधे उगे हुए हैं क्योंकि उनकी सुगन्ध आ रही है......।'

मरते समय उसे अधिक कष्ट नहीं हुआ। उसके कपड़ों और पास की घास पर खून ही खून था। उसके चेहरे से शान्ति टपक रही थी। इतने में हवा चलने लगी और उसके लम्बे घुंघराले बाल उड़ने लगे। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें आकाश की ओर मानो टिमटिमाते हुए तारों को देख रही थीं।

२३

मन्त्रिमंडल की बैठक में तेस्सा ने यह प्रस्ताव रखा कि जर्मनों से समझौते की बातचीत शुरू की जाय। रेनो बीच में बोल उठा, 'लेकिन हमने औरों से वादे

जो किये हैं ? मेरे ख्याल में राष्ट्रपति रूजवेल्ट के उत्तर का इन्तजार करना चाहिये।'

अचानक जनरल पिकार आ पहुँचा। उसने बैठक में आने की आज्ञा मांगी थी, क्योंकि उसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना देनी थी। पिकार, जो साधारण तौर से बड़े शान्त स्वभाववाला था, इस समय बुरी दशा में था। वह कुछ खिलखिलाया और तेस्सा ने तुरन्त देख लिया कि उसके दांत गायब हैं। यह कैसे हुआ ? पहले तो तेस्सा को पता ही नहीं चला कि जनरल कुछ बोल रहा है। पिंकार बार-बार कह रहा था, 'हाँ-हाँ, कम्युनिस्टों ने क्रान्ति कर दी ! उनकी भीड़ 'एलिसे पैलेस' को घेरे हुए है। कई जगह आग लग चुकी है......।'

तेस्सा ने मारे डर के आँखें बन्द कर लीं। उसे बमों का डर नहीं था। वह तो यहाँ तक समझ चुका था कि किसी न किसी दिन वह गिरफ्तार हो जायगा। इसमें भी डर की बात थी जरूर, किन्तु उसने सोचा 'कुछ भी हो, जर्मन लोग सभ्य होते हैं। वे एक राजमन्त्री के साथ अपराधी जैसा व्यवहार नहीं करेंगे !' अगर वह किसी से डरता था तो कम्युनिस्टों से। देनीजे से बात-चीत करने के बाद उसे विश्वास हो गया था कि कम्युनिस्ट दिल से उससे घृणा करते हैं। यदि उनके हाथ में शासन की बागडोर आ गई तो वे उसकी जान लिये बिना नहीं रहेंगे। फ्रांस का यह कितना बड़ा दुर्भाग्य होगा जिस दिन जर्मन पेरिस में दाखिल होंगे। वह शोक का दिन होगा। फिर भी कम्युनिस्टों से तो जर्मन ही भले हैं।

मैंडेल ने पेरिस से सम्पर्क स्थापित किया और आध घंटे बाद उसने घोषणा की, 'पेरिस में बिल्कुल शान्ति है।' पिकार ने उसके इस बयान को काटना चाहा, किन्तु अन्त में बड़े इतमिनान से साथ मुसकराता हुआ बोला, 'निस्संदेह ! जनरल देन्ज मेरा मित्र है। वह सेना के सबसे बड़े नेताओं में से है। उसने पुलिस को हुक्म दे दिया है कि अगर कोई भी जर्मनों का मुकाबला करके व्यर्थ झगड़ा पैदा करना चाहे तो उसे तुरन्त गोली से उड़ा दिया जाय !'

तेस्सा कह रहा था, 'अब तूर छोड़ देना चाहिये।' दूसरा दिन भी खत्म हो गया। जर्मन पचास किलोमीटर और बढ़ आये थे। बड़ा भयानक दिन

था— १४ जुलाई का दिन। तेस्सा ने हमेशा यह सोचा था कि १४ की संख्या उसके लिए घातक है। अमेली भी १४ तारीख को ही मरी थी। वह नाई की दुकान पर था जब कि उसे सूचना मिली कि जर्मनों ने पेरिस ले लिया है। वह इस सूचना के लिए पहले से तैयार था, शाम को वह बोर्दो चला गया।

ब्रेतील ने तेस्सा को स्पेन के राजदूत से बात करने के लिए भेजा, ताकि यह मालूम किया जा सके कि जर्मन क्या शर्तें लगाना चाहते हैं। ब्रेतील ने उसे अच्छी तरह समझा दिया था कि इस बातचीत पर बहुत कुछ निर्भर है। तेस्सा को इस बात का गर्व था कि वह इतने महत्वपूर्ण काम के लिए भेजा जा रहा है, किन्तु साथ ही वह कुछ दुखी भी था। उसने स्पेनी राजदूत को काफी खुश करने की कोशिश की। जब राजदूत ने बोर्दो की शराब की प्रशंसा शुरू की तो तेस्सा ने बड़ी चालाकी से तुरन्त कहा, 'हमने आपके यहाँ की 'रायोजा' शराब पी है, वह बोर्दो से किसी प्रकार कम नहीं।'

भुना हुआ गोश्त खाने के बाद तेस्सा मतलब की बात पर आया। उसने पूछा कि बर्लिन के अधिकारी कौन-कौन सी शर्तें रखना चाहते हैं। स्पेनी राजदूत ने गोलमोल शब्दों में उत्तर दिया—विस्तार में जाने की कोई आवश्यकता न थी, केवल आपस में एक दूसरे से सहानुभूति होनी चाहिये। विजयी पक्ष का मतलब फ्रांस को नीचा दिखाना नहीं था। जब उसने विस्तार की चीजें बतलानी शुरू की, तो तेस्सा सन्न रह गया।

राजदूत के साथ भोजन कर चुकने के बाद, तेस्सा ब्रेतील से भेंट करने गया। उसने पहुँचते ही कहा, 'जर्मनों का दिमाग खराब हो गया है! ऐसी-ऐसी शर्तें हैं, जो कभी सुनने में भी नहीं आयीं। मैं तो साफ-साफ कहूँगा वे हमारे लिए अपमानजनक हैं! मेरी समझ में रेनो ठीक ही कह रहा था—हमें फ्रांस छोड़कर मेडागास्कर चला जाना पड़ेगा।'

जब उसने देखा की जर्मनों की मांगें सुनने पर ब्रेतील को कोई आश्चर्य नहीं हुआ तो वह ठंडा पड़ गया और बोला, 'कुछ भी हो, हमें गम्भीरतापूर्वक प्रश्न पर विचार करना चाहिये। इतनी भयंकर बातें तो नहीं हैं, जितनी पहली नजर में मालूम पड़ती हैं। अच्छा यह होगा कि अभी शर्तें किसी को बतलायी न जायें। पहले हम लोग उन पर हस्ताक्षर कर दें और तब छपने को दें। नहीं

तो कम्युनिस्ट बड़ा बेजा फायदा उठायेंगे और दगाल भी। हाँ, वह आजकल बोर्दों में है। मैं जानना चाहता हूँ कि वह, वहाँ क्या कर रहा है। अगले चन्द दिन हमारे लिए बड़े नाजुक होंगे। इसके बाद सब कुछ ठीक से चलने लगेगा।'

शाम को रेनो ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। तेस्सा ने मार्शल पेतां को जोरों की बधाई देते हुए कहा, 'आपको एक विजयी का सम्मान प्राप्त है।' मार्शल ने धीमी, खोखली आवाज में उसको धन्यवाद दिया।

बहुत रात गये तेस्सा ने जोलियो को नये मन्त्रिमंडल के सदस्यों के नाम लिखाये। बोर्दों में पहले से ही 'नई आवाज' का एक छोटा संस्करण निकलने लगा था।

घंटे महीनों की तरह कट रहे थे। जर्मनों को क्या पड़ी थी कि जल्दी जवाब दें। वे तो बराबर बढ़ते चले आ रहे थे। दिन में दो बार तेस्सा उठकर जर्मनों के हाथ में जाने वाले स्थानों पर नक्शे में निशान लगा देता था—आर्लियन, शेरबूर्ग, रेने, दिजां, बेलफोर। चौथे दिन उसने नक्शा उठाकर भिजवा दिया। 'बस मुझे यह बतला देना कि कौन के नगर बच रहे !' उसने तंग आकर मोमारे से कहा।

तेस्सा ने यह भी सोचना शुरू कर दिया कि जर्मनों का मुकाबला किया जाय। बहुत देर तक नक्शे का अध्ययन करने और जनरल लेरिदो से राय लेने के बाद उसने देश के नाम यह सन्देश रेडियो पर भेजा, 'सैनिक तथा नाविक साथियों! विराम सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं हुए हैं। हमारी लड़ाई जारी है। अन्य मित्र राष्ट्रों के साथ मिलकर आप लोग जल, थल और आकाश में हर जगह देश के स्वाभिमान की रक्षा करें !'

जर्मनों का उत्तर अभी तक नहीं आया था। वे अब बोर्दों की ओर बढ़ रहे थे।

सबेरे तड़के धड़ाकों की वजह से तेस्सा की आँख खुल गई। जर्मन हवाई-जहाज बहुत नीचे होकर शहर पर उड़ रहे थे। एक घंटे बाद उसे सूचना दी गई कि सात सौ आदमी हताहत हुए। विवश होकर उसे अस्पताल में घायलों को देखने जाना पड़ा। घायल बच्चों को देखकर और 'ईथर'

की महक में साँस लेने से उसका दिमाग चकरा गया। वह बोला, 'हम तो उन्हें तार भेजें, और वे बमों से हमें जवाब दें!' बोर्दो के मेयर मार्के ने और भी मुसीबत ढा दी। उसने माँग की कि राजधानी वहाँ से हटा ली जाय ताकि शहर को बचाया जा सके। फिर क्या था, चारों ओर भगदड़ मच गई। तेस्सा ने सारा दिन स्पेनी राजदूत के यहाँ बिताया। शाम को बड़े गर्व से उसने जोलियो को बुलाकर सूचित किया : 'अब तुम जनता को शान्त करो। जर्मनों ने मार्शल से वादा कर लिया है कि अब वे शहर को हाथ नहीं लगायेंगे!'

जब तेस्सा को खबर मिली कि तूर के लोग जर्मनों का मुकाबला कर रहे हैं तो उससे रहा न गया। उसने सोचा—क्या पागलपन है! हिटलर को और नाराज करने से क्या लाभ? इसलिए उसके कहने पर सरकार ने फ्रांस के सभी शहरों को 'खुला' घोषित कर दिया।

तेस्सा ने रेडियो पर दूसरा भाषण दिया। उसकी आवाज मारे जोश के कांप रही थी—'हमें आशा है, हमारे शत्रु हमारे साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। फ्रांसनिवासी सदा वास्तविकता को पहचान कर चलते रहे हैं। हम सत्य को सत्य कहने के लिए तैयार हैं। यदि आज हम अपनी तलवार म्यान में वापस करने पर मजबूर हैं तो भी हमारी आत्मा अजेय है! लेकिन आज की लड़ाई में टैंक आत्मा से भी अधिक बलवान होते हैं!'

वह इतना कहकर बैठ रहा; थकावट के मारे उसके चेहरे से पसीना टपक रहा था। अचानक वायस आ टपका। तेस्सा को उसके आने पर बड़ा आश्चर्य हुआ—बिना सूचना दिये इसे कैसे अन्दर आने दिया गया! मालूम होता है सब लोग भूल गये हैं कि तेस्सा एक मन्त्री है और अब बोर्दो राजधानी है!

वायस ने कागज का एक टुकड़ा आगे बढ़ाते हुए कहा, 'इस पर अपने हस्ताक्षर कर दें!'

'यह है क्या?'

वायस ने समझाया, 'बहुत से विमानचालक उड़कर इंगलैंड चले जाना चाहते हैं। ऐसा करने से रोकने के लिए उन्हें पेट्रोल देना बन्द कर दिया जाय।'

'लेकिन मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं, तेरेसा ने कहा। 'जनरल के पास जाओ!'

वायस के चेहरे पर एक शरारत भरी हँसी आ गयी। उसने कहा, 'जब भी जनरल की आवश्यकता पड़ती है, वह मिलता नहीं। और मामला बड़ा जरूरी है। मैं कहता हूँ, इस किस्म का तकल्लुफ करने से कोई फायदा नहीं। अब इसमें किसी को दिलचस्पी नहीं रह गई कि कौन किस चीज का मंत्री है। यदि एक भी विमान निकल गया तो उसकी ज़िम्मेदारी आपके सिर होगी!'

२४

जुलाई का महीना खत्म हो रहा था, किन्तु फिर भी लिमूजीन के मैदान इतने हरेभरे थे कि मालूम पड़ता था मई का महीना है। ल्युसियां घंटों बैठा हरियाली की ओर देखता रहा। इससे उसकी आँखों को बड़ा सुख मिलता था। इसके बाद उठकर वह फिर से अपनी राह पर चल पड़ा। उसे कुछ भी पता न था कि वह कहाँ जा रहा है। वह वहीं वृक्ष की छाया में लेट कर कब का सो गया होता, किन्तु भूख के मारे चैन कहाँ थी? वह इधर गाजरें और जड़ें खा खाकर काम चला रहा था।

ल्युसियां सूख कर काँटा हो गया था। केवल एक सप्ताह पहले तक वह ८७ वीं रेजीमेंट का एक सैनिक था। किन्तु अब तो कोई सेना ही नहीं रही थी और वह सिर्फ एक आवारा रह गया था। एक छोटे से गाँव में उसने अपने पिता को रेडियो पर विराम-सन्धि की घोषणा करते सुना। एक बूढ़ी, जो पास ही में खड़ी थी, बोली, 'चलो, सब खत्म हुआ। अच्छा ही है!' यह कहकर वह अपने सूअर को हाँककर चलती बनी। वहां खड़े सैनिक हजारों गालियाँ सुना रहे थे, किन्तु ल्युसियां अपने पिता की आवाज ही सुनता रहा। यह उसके पिता की आवाज थी! उसे बचपन की बहुत-सी बातें याद आ गईं।

वह आगे चल पड़ा। सड़क से कुछ दूर पर एक फार्म था। मकान की खिड़कियाँ बिल्कुल बन्द थीं। किसान रात को बाहर झांकते डरते थे। सिवा कुत्तों के और किसी की आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। ल्युसियां ने चिल्लाकर कहा, 'ऐ बदमाशो, मुझे खाने के लिए कुछ दो!' किसी ने कोई जवाब

नहीं दिया; कुत्तों ने और जोर से भूकना शुरू किया। ल्युसियां थोड़ी देर इन्तजार करने के बाद पासवाले छोटे नाले की ओर बढ़ा। उसने थोड़ा-सा गर्म पानी, जिसमें कीचड़ की बदबू आ रही थी, पीया और तब जाकर एक सायबान में, जहाँ जानवर बाँधे जाते थे, लेट गया। एक स्त्री की आवाज ने उसे जगा दिया। वह धीमे-धीमे पुकार रही थी, 'सैनिक! सैनिक!' ल्युसियां ने देखा कि एक लड़की उसके सामने खड़ी हुई है। वह अपने रात के कपड़ों पर मर्दाना ओवरकोट पहने थी। चांदनी रात थी। ल्युसियाँ को लड़की बहुत ही पसन्द आई। वह उसके लिए रोटी का एक बड़ा टुकड़ा और कुछ मक्खन लायी थी।

'जब तक मालकिन सो नहीं गई मैं जागती रही,' उसने बताना आरम्भ किया। 'वह मक्खन बाहर ही रखकर भूल गई थी; बाकी सामान उसने गोदामवाले कमरे में बन्द करके ताला लगा दिया था। मैंने तुम्हें आँगन में खड़े देखा था। मेरा मालिक कोई खराब आदमी नहीं है लेकिन आजकल रोज इतने सैनिक इधर से गुजरते हैं कि...। वह कहता है कि अगर तुम लोगों को खिलाना शुरू करें, तो हम लोग स्वयं भूखों मर जायें।'

ल्युसियां कुछ नहीं बोला। उसने अपना चाकू निकाला और मक्खन की टिकिया काटकर जल्दी जल्दी खाने लगा। लड़की खड़ी उसकी ओर टकटकी लगाये देख रही थी। वह बहुत देर तक खाता रहा, पेट तो उसका भर गया था किन्तु हाथ अब भी नहीं रुकता था, अन्त में थकावट और नींद की झोंक में उसने ऊपर आंख उठाकर लड़की से पूछा, 'तुम उसकी लड़की हो?'

'नहीं, नौकरानी।'

उसने लड़की से बैठने के लिए इशारा किया। लड़की ने उसकी बात मान ली; उसका सिर ल्युसियां के कन्धे तक पहुंचता था। चुपचाप उसने अपनी बायीं बांह उसकी गर्दन में डाल दी, सावधानी से उसका सिर झुकाया और उसका चुम्बन ले लिया। उसे ऐसा मालूम पड़ा जैसे वह पानी पी रहा है। लड़की ने भी आवेग के साथ उसका चुम्बन लिया और जब दोनों घास पर एक साथ लेट गये, तो उसने धीमे धीमे कहा, 'सैनिक! ओ सैनिक!...'

तड़का होने को आया। लड़की को चिंता हुई। उसने धीमे से कहा, 'कहीं मालकिन जाग न गयी हो!'

मार्शल पेताँ को सेना की कोई चिन्ता न थी। एक दिन पहले उसने फ्रांसीसी राष्ट्र के नाम एक वक्तव्य निकला था, जिसमें उसने कहा कि मैं किसी को धोखे में नहीं रखना चाहता। काँपते हुए स्वर में उसने बार बार कहा, 'अपनी रक्षा के लिए आप लोग राज्य की शक्ति पर निर्भर न रहिये। वह आप की कोई सहायता नहीं कर सकता। अब आनेवाली सन्तानों पर भरोसा कीजिये। धर्म और गृहस्थ जीवन के आदर्शों पर उनका पालन-पोषण कीजिये। बड़े होने पर वे ही आपको मुक्ति दिलायेंगे!'

दूसरे दिन ल्युसियां एक पहाड़ की घाटी में जा पहुँचा। वहाँ पेड़ों के बीच में स्थित एक मकान की चौकोर खिड़की से रोशनी आती दिखाई पड़ी। उसने दरवाजा खटखटाकर आवाज दी, 'एक सैनिक के लिए कुछ भोजन मिलेगा?' किसी ने कोई उत्तर न दिया। मकान एक बूढ़े का था जिसका नाम था सरजे। उसने अपनी स्त्री को इसलिए भूखों मार डाला था कि वह पादरी के सामने अपने पापों को स्वीकार करने गयी थी। वह शेर की तरह बलवान था और हाथ से तांबे के सिक्कों को मरोड़ सकता था। वह अपनी मांद में छिपे एक भालू की तरह था। वह एक नवजवान और सीधी-सादी औरत के साथ रहता था, जिसे डाँट पड़ते ही बेहोशी-सी आ जाती थी, शरीर के अंग काँपने लगते और मुँह से फेन आने लगता। किस्मत का मारा ल्युसियां उसी सरजे के दरवाजे जा पहुँचा।

उसने दरवाजे पर जोर से धक्का मारा और चिल्लाकर कहा, 'मुझे कुछ रोटी दो!' दूसरी खिड़की से गोभी और लहसुन की महक आ रही थी: नौकरानी शोरबा तैयार कर रही थी। जिस खिड़की से रोशनी आ रही थी वहाँ बिल्कुल सन्नाटा मालूम पड़ता था। खाने की महक से ल्युसियां तड़प उठा। उसके मन में एक भयानक इच्छा उत्पन्न हुई। भले ही उसे गाली देकर निकाल दिया जाये किन्तु चुप रहने का क्या अर्थ है? वह अभी तक लड़ाई किन लोगों के लिए लड़ता रहा था?

उसने दरवाजे से अन्दर झांका। जालीदार पर्दे के पीछे उसे एक बूढ़े का चेहरा दिखाई पड़ा। जिसे देखकर ल्युसियां को ब्रेतील की याद आ गई।

सरजे ब्रेतील से काफी भिन्न था, किन्तु क्रोध में ल्युसियां को यही लगा कि समाने ब्रेतील बैठा है। उसने थोड़ा पीछे हटकर चिल्लाना शुरू किया, 'दरवाजा खोल, बदमाश ! वरना अभी मैं तुझे गोली से उड़ा दूँगा !'

सामने वाली खिड़की की ओर, जहां से खाना पकने की महक आ रही थी, उसने गोली चलाने का विचार किया ही था कि इतने में बन्दूक चलने की आवाज हुई और ल्युसियां चक्कर खाकर जमीन पर आ रहा।

उसकी जबान से एक शब्द भी न निकला। अब सरजे ने चिल्लाना शुरू किया और वह भी बड़ो जोर से। अगर पास में कहीं दूसरे मकान होते तो लोग उसकी चिल्लाहट सुनकर अवश्य दौड़ पड़ते। किन्तु मकान तो उस घाटी में वही एक था।

सरजे अपनी राइफल, जिसे वह कभी सूअर का शिकार करने के लिए इस्तेमाल करता था, फेंककर दौड़ता हुआ ल्युसियाँ के पास पहुँचा। उसकी मृत्यु तुरन्त ही हो गई थी। उसके चेहरे पर चन्द्रमा का प्रकाश पड़ रहा था। उसकी आँखें बिल्ली की आंखों की तरह चमक रही थीं और बाल ऐसे लाल थे जैसे उनमें आग लगी हो। वह किसी कहानी के हसीन डाकू की तरह लग रहा था और सरजे की लालटेन की रोशनी में उसकी वर्दी पर जमा हुआ खून गाढ़े रंग जैसा जान पड़ता था।

नौकरानी डरते-डरते लाश तक पहुँची और उसे देखकर चीख पड़ी, 'कितना सुन्दर चेहरा है !' दूसरे ही क्षण उसे मूर्छा आ गई। 'चुप रहो !' सरजे ने गुर्राकर कहा। वह उठकर चली जाना चाहती थी किन्तु सरजे ने रोक लिया। वह उठा और एक अजीब सी, भावनाहीन आवाज में बोला, 'डाकू ! यह है कौन ? एक सैनिक। फ्रांस का ही एक निवासी...।'

लड़की को काटो तो खून नहीं, क्योंकि उसने देखा कि दूसरे ही क्षण उसका स्वामी लाश के बगल में ही गिरकर चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा।

'पियरा ! हाय, मेरे बच्चे !'

सवेरे रिपोर्ट दर्ज कराई गई। सरजे ने उस पर हस्ताक्षर करके पुलिस वालों से कहा, 'अब मुझे ले चल सकते हो।' किन्तु पुलिसवालों के पास स्वयं ही इतना काम था कि वे और अधिक परेशानी मोल नहीं लेना चाहते

थे। उन्होंने ल्युसियां के जेबों की तलाशी ली लेकिन कोई कागज न मिला। रिपोर्ट में उन्होंने लिख दिया : 'एक अजनबी आदमी, सैनिक लिबास में !'

सार्जेन्ट ने जमीन पर थूकते हुए कहा, 'डाकू है, डाकू !'

२५

देनीजे क्लेमैंस के फ्लैट में छिपकर रहती थी। इसीलिए उस बुढ़िया ने पेरिस नहीं छोड़ा था। उस तंग, टेढ़ी-मेढ़ी गली में न नगारों की आवाज पहुँच पाती और न किसी के गानों की। इतना सन्नाटा छाया रहता कि तबीयत घबरा उठती। कितनी बार देनीजे ने वहाँ से कहीं और चले जाने का इरादा किया किन्तु बुढ़िया ने जाने न दिया।

वह कहती, 'अभी रुको, शहर खाली पड़ा है। तुम्हें देखते ही जर्मन भांप जायेंगे !' उसे खाना पकाने में बड़ा आनन्द आता; उसे ऐसा मालूम पड़ता जैसे वह अपने ही मृतक बेटे जानों की सेवा कर रही है।

दिन भर की खबरें भी वही लाकर देती। 'दवील के घरवाले वापस लौट आये हैं; रूसो और उसकी स्त्री भी। उनका कहना है कि बहुत से लोग वापस आ रहे हैं। दवील बड़ा नाराज था; वह मुझ से पूछ रहा था कि कम्युनिस्ट कहाँ है। मैंने कह दिया वे कहीं छिपे होंगे। उनका पता चलाना आसान काम नहीं। लेकिन वह ऐसे लोग नहीं जो अपने को दुश्मन के हवाले कर दें। भला मैं और क्या कहती ? वह इतने से संतुष्ट नहीं हुआ। लोग कहते हैं, अब आशा ही क्या ? जर्मनों के आधीन कोई भी नहीं रहना चाहता। अच्छा, लो, यह थोड़ा सा शोर्वा। आज गोश्त नहीं है। थोड़े दिन में और भी कुछ नहीं मिला करेगा। जर्मन सारा माल खींचकर बाहर भेज रहे हैं। उनके पास मार्क नोटों की कमी तो है नहीं; बस, छाप-छापकर अपने सैनिकों को देते जाते हैं। मैंने देखा कि कुछ लोग ढेर के ढेर सामान लिये जा रहे हैं। जो भी उन्हें मिल जाता है उसे नहीं छोड़ते कहवा, मोजे, बूट-जूते सभी कुछ। जितना भी खा सको खाओ। कौन जाने कितनी जल्दी

हमें भूखों मरना पड़े। किन्तु तुम्हें अपनी शक्ति बनाये रखनी है। दनील ठीक ही कह रहा था कि अब सब की आशाएँ कम्युनिस्टों पर ही केन्द्रित हैं!'

जब शहर में गड़बड़ी शुरू हुई थी, तभी पार्टी की ओर से देनीजे को आदेश मिला था कि वह पेरिस में रहकर काम जारी रखेगी और गैस्ताँ के द्वारा पार्टीवालों के सम्पर्क में रहेगी। जर्मनों के आने से एक दिन पहले वह उस पते पर पहुँची जो उसे दिया गया था। आँखों में आंसू भरे एक बूढ़ी स्त्री ने दर्वाजा खोलते हुए कहा था, 'गैस्ताँ को जर्मन पकड़ ले गये। मैं भी कहीं पैदल जा रही हूँ।' देनीजे एक एक करके सभी साथियों के घरों पर पहुँची, सबके यहाँ ताले पड़े थे। पता नहीं चलता था कि वे चले गये या छिपे हुए हैं।

मिशो का क्या हाल हुआ होगा। शायद वह यह भी जाने बिना मर जायगी कि वह जीवित है या मर गया और यदि जीवित है तो कैसा है। यदि दोनों एक ही साथ रहते तो कितना आनन्द आता। किन्तु अब भेंट नहीं हो सकती थी। उसकी जिन्दगी उजाड़ हो चुकी थी। फिर जर्मन पेरिस में पहुँच चुके थे, यद्यिपि पहले पहल विश्वास नहीं होता था कि ऐसा हो भी सकता है। अफसोस! मिशो का कोई पता न था। शायद वह मारा गया होगा या जर्मनों के यहाँ कैद होगा। उफ! जर्मनों के हाथों में पड़कर जीवित रहना कितना भयानक था! पूरी फौज की फौज उनके हाथों में पड़ गई थी।

अचानक उसे याद आया कि क्लाद ने कहा था कि वह भी पेरिस छोड़कर नहीं जायेगा। उसे खोज निकालना चाहिये। देनीजे को उसका पता याद था, उसी ने तो क्लाद के लिए मई की गड़बड़ी के बाद कमरा किराये पर लिया था। शायद अब भी वह वहीं होगा।

चलते समय, क्लेमैंस ने देनीजे को प्रेमपूर्वक छाती से लगाया मानो वह एक लंबी यात्रा पर जा रही थी। उसने कहा, 'अपने ओठों पर और लाल रंग लगा लो। इस तरह की स्त्रियों को जर्मन छूते भी नहीं।'

देनीजे को पेरिस के दूसरे सिरे पर पहुँचाना था। ज्यों ही पहली बार उसकी नजर एक जर्मन पर पड़ी वह ठिठक गई और लगभग भाग खड़ी हुई। उफ, कितना भद्दा चेहरा था! उसकी कमीज की बाहों पर स्वस्तिक का

चिन्ह बना था। उसने सोचा—इस प्रकार घबरा जाने से तो काम नहीं चलेगा। अब मुझे ही तो सब कुछ करना है! यह विचार आते ही वह चल पड़ी और रास्ते भर यही सोचती गई कि क्लोदे मिलेगा भी या नहीं।

वह शहर की बड़ी छायादार सड़क तक पहुँच गई! न चाहते हुए भी उसकी नजर पड़ ही गई। बड़े कहवाखानों के चबूतरों पर वेश्याओं को साथ लिये जर्मन अफसर बैठे थे। स्त्रियां उस प्रकार के कपड़े पहने थीं जैसे लोग समुद्रतट पर नहाने के समय पहनते हैं। पैर खुले हुए थे। सब हँस रहे थे, और शैम्पेन के गिलास पर गिलास खाली कर रहे थे। दूकानों में जर्मन भाषा के कोश और पेरिस-गाइड मौजूद थे। दूकानदार सैनिकों को ईफेल टावर के छोटे नमूने, जेवरात, पोस्टकार्ड साइज की तसवीरें और भद्दे भद्दे फोटो के उपहार पेश कर रहे थे। उनका व्यापार जोरों पर चल रहा था। फ्रांक के बदले वे अब जर्मन मार्क लेने लगे थे।

उस सुनसान शहर में जहाँ दुश्मन का कब्जा हो चुका था, लोगों को कीड़े-मकड़ों की जिन्दगी बितानी पड़ रही थी। लोग अपनी तसवीरें और कमीजें आदि बेच रहे थे। यहां तक कि अपनी इज्जत भी बेंच रहे थे। देनीजे का मन घृणा से भर उठता। वह सोचती, 'यही पेरिस है?'

शहर पर जैसे किसी ने जादू कर दिया था! दूकानें खुली पड़ी थीं, उनमें खिलौने, टाइयाँ, पानी पीने के बर्तन उसी प्रकार सजे रखे थे जैसे सदा रहते थे। एक छाता जिसे कोई भूल गया था, एक बन्द दरवाजे के सहारे खड़ा था। एक छज्जे पर गमले में जेरानियम का पौधा सूख रहा था। एक खिड़की से एक पिंजरा लटका हुआ था जिसमें एक पक्षी मरा पड़ा था।

देनीजे ने दीवार पर एक पोस्टर चिपका देखा। उसमें दिखाया गया था कि एक जर्मन सैनिक एक बच्चा लिये खड़ा है और एक स्त्री पास में खड़ी मुसकरा रही है। नीचे लिखा हुआ था 'फ्रांसीसी जनता का रक्षक!' उसके पास में ही एक थियेटर का इश्तिहार था, जो टुकड़े टुकड़े हो चुका था।

देनीजे किसी तरह क्लोदे के घर तक पहुँच गयी। उसने घंटी बजायी। किसी ने उत्तर नहीं दिया। उत्तर दे ही कौन सकता था? अन्तिम घड़ियों में अपनी इच्छा के विरुद्ध भी बहुत से लोग भीड़ के साथ हो गये थे और अपने

प्राणों की रक्षा के लिये घरबार छोड़कर चल दिये थे। ऐसे में हो सकता है क्लोदे भी गिरफ्तार हो गया हो। जर्मन मकानों में घुस-घुसकर देख रहे थे। देनीजे ने दरवाजे पर कान लगा कर सुना। कोई आवाज नहीं आ रही थी।

किन्तु अन्दर सिटकिनी पर हाथ धरे, क्लोदे खड़ा सोच रहा था, 'अन्त में जर्मन यहाँ भी आ ही गये!' थोड़ी देर तक उसने दरवाजा नहीं खोला—जितनी देर और स्वतंत्रता की हवा में साँस ली जा सके उतनी ही देर गनीमत है। किन्तु दरवाजा खोलते ही उसकी नजर देनीजे पर पड़ी और वह चिल्ला उठा, 'तुम!'

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। फिर क्लोदे ने कहना शुरू किया, 'देखती हो, क्या हो गया! मैं तो इसकी आशा भी नहीं करता था कि जर्मन पेरिस तक आ जायेंगे!'

देनीजे ने नजर उठाकर उसकी ओर देखा। उसके गाल तो सूख रहे थे किन्तु आंखों में चमक अब भी वैसी ही थी। बड़ा ही गन्दा कमरा था। मेज पर रोटी का एक टुकड़ा था, एक नोटबुक जिसमें कविताएँ लिखी थीं और एक पुस्तक 'अग्निदीक्षा'।

'अब हमें कुछ न कुछ करना चाहिये,' देनीजे बोली। 'तुम्हारे सम्पर्क में कुछ लोग हैं?'

'नहीं। हमारे आदमियों में से केवल जुलियन बाकी रहा है। किन्तु उस का पता नहीं। मैं तो समझा था कि वह यहाँ आयेगा; लेकिन शायद वह बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं। अब जर्मनों की हम पर कड़ी निगाह हैं। वे हमारी तलाश में है। हमारे पास छापे की मशीन, कागज, रोशनाई सब कुछ है। लेकिन होने से ही क्या लाभ। लिखा क्या जाय?'

उसने जोर जोर से खाँसना शुरू कर दिया। देनीजे कुछ नहीं बोली। उसने सोचा क्लोदे की इस बात में कोई तत्व नहीं है। वह अच्छा वफादार साथी था, उसमें साहस भी कम न था, किन्तु उसे पार्टी का इतना ज्ञान न था जितना देनीजे को था। फिर ऐसा भी कोई दूसरा न था, जिससे सम्पर्क स्थापित किया जाता।

वह खिड़की के सहारे बैठे थी। सामने सड़क में बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ था। उसे बीते हुए दिन याद आ गये, जब इसी सड़क पर प्रदर्शन-कारियों के बड़े-बड़े जुलूस निकलते थे।

'क्लोदे, मुझे थोड़ा पानी दो।'

उसने समझा देनीजे कोई कविता लिख रही है; वह दबे पाँव कोने तक गया किन्तु देनीजे शब्दों की खोज में थी। विचार दिमाग में जरूर थे किन्तु याद नहीं पड़ते थे। उसने उस वाक्य को फिर से सोचा जो उसे सड़क पर याद आया था, 'यह है पेरिस!' फिर क्या था, एक एक करके सभी चीजें याद आने लगीं—'क्रान्ति की जन्मभूमि...कम्यून का नगर...फ्रांस का गौरव......' आदि आदि।

उसे ऐसा मालूम पड़ा सैनिकों की, जिन्हें पूछनेवाला कोई नहीं रहा था, आवाज उसके कानों में आ रही है, सड़कों पर लड़ाई के कैदियों से पत्थर कुटवाये जा रहे हैं, नात्सी उनकी हँसी उड़ा रहे हैं और शरणार्थियों की कतार की कतार चली जा रही है। यह आवाज थी फ्रांस की जनता की। और भी बहुत सी आवाजें थीं। वह अकेले नगर के लोगों के दुख भरे शब्दों को, उनके रोने-चिल्लाने को, उनकी आशापूर्ण बातों को सुन रही थी। वह इस प्रकार कलम चला रही थी मानो कोई उसे लिखा रहा था।

क्लोदे ने एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसका लेख पढ़ा और अपनी आँखें पोंछ लीं। उसका चेहरा रंग गया था। उसके हाथ में नीली स्याही लगी थी।

'देनीजे, तुमने इतना लिख कैसे डाला?'

'बस, चुप रहो!'

गश्त करने वाले जर्मनों के भारी जूतों की आवाज सुनाई पड़ने लगी थी। एक कार पर लगे लाउडस्पीकर द्वारा एलान किया जा रहा था, 'अपने अपने घरों में चले जाओ! समय हो गया! घरों में चले जाओ। समय हो गया!'

ब्रेतील ने कारण बतलाये और तर्क तथा न्याय के नाम पर अपील की। किन्तु जर्मन जनरल शोम्बर्ग टस से मस नहीं हुआ। वह अपनी गोल, नीली आंखों से ब्रेतील की ओर देख कर, 'नहीं, नहीं' कहता जाता और मुँह से सिगार का धुआँ उड़ाता जाता था। मालूम होता था जैसे उसके कोश में 'नहीं' के अलावा और कोई शब्द न था।

जनरल फॉन शोम्बर्ग समझता था कि फ्रांसवालों का विश्वास करना ठीक नहीं। वह जोलियो को पसन्द करता था। कभी कभी वह किसी ऐक्ट्रेस के साथ भोजन करता। वह अकसर कहा करता, 'छुट्टी बिताने के लिए फ्रांस अच्छी जगह है और पेरिस एक सुन्दर कहवाखाना है!' वह ब्रेतील को गंभीर स्वभाव का फ्रांसीसी, अर्थात् मूर्ख समझता था।

ब्रेतील को जब बोर्दों में जर्मन शर्तों का पता चला था तभी उसको काफी परेशानी हुई थी। उसने सोचा था कि वह ताश के खेल की तरह अपने पत्ते छिपाये रहेगा और अपनी चतुरता से सारा काम निकाल ले जायेगा। किन्तु उस पर बौछार पड़ने लगी थी। ब्रेतील को जर्मनों की इस शर्त पर विशेष रूप से आश्चर्य हो रहा था कि विराम-सन्धि के बाद रेडियो पर कोई ब्राडकास्ट न किया जाय। कंधा हिला कर उस समय उसने कहा था, 'जर्मन लोग चाहते हैं कि फ्रांस गूंगा बन जाय।'

पेतां ने ब्रेतील को पेरिस इसलिए भेजा था कि कुछ आवश्यक बातें तय हो जायें। अनधिकृत क्षेत्र में लाखों आदमी भूखों मर रहे थे। किन्तु जर्मन अपने अधिकृत क्षेत्र में शरणार्थियों को घुसने देने के लिए तैयार न थे। कैदियों से वे परिश्रम कराते थे और घायलों को यों ही खुले में पड़े रहने देते थे।

ब्रेतील ने सब कुछ जनरल फान शोम्बर्ग को, जो बहुत ध्यानपूर्वक सुन रहा था, समझाया। किन्तु जब ब्रेतील ने पूछा, 'आप मुझसे सहमत हैं ?' तो जनरल ने बिल्कुल लापरवाही के साथ कह दिया, 'नहीं !'

'मुझे दुख है कि मैं तुम्हारी इच्छा नहीं पूरी कर सका,' अन्त में जनरल ने कहा। 'हम दोनों के दृष्टिकोण भिन्न हैं। तुम एक कूटनीतिज्ञ की तरह बहस करते हो और मैं सबसे पहले एक सैनिक हूँ। मेरे लिए फ्रांस एक पराजित देश है। यह ठीक है कि हम उदारता ही दिखायेंगे, लेकिन तुम्हारी दरखास्तों में मुझे कोई बात ऐसी नहीं दिखाई पड़ती जिस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा सके।' उसने ब्रेतील की ओर नजर उठा कर देखा और फिर कहा, 'नहीं साहब, नहीं हो सकता !'

ब्रेतील, 'वफादारों' का नेता, जिसने न जाने कितने आदमियों को मौत के घाट उतरवा दिया था, एक लोरेन निवासी जिसका लोरेन छिन चुका था, लम्बा हड्डी का ढाँचा, काला हैट पंहने चला जा रहा था। सब कुछ खत्म हो चुका था। न कोई 'वफा' थी और न कोई 'वफादार' ही रह गया था। फ्रांस की एक मुट्ठी मिट्टी भी तो अपनी नहीं रही थी। सड़कों पर जर्मनों की भीड़ लगी थी, जो अपनी भाषा में बातें कर रहे थे, 'सासेज', बूट, मोजों, गुड़ियों और नववधुओं के लिए अनेक प्रकार की भेंट के पैकेट बाँध रहे थे, जर्मनी के नाम पर दावतों पर दावतें उड़ा रहे थे और जरूरत के समय के लिये सामान इकट्ठा कर रहे थे। ब्रेतील ने मन में सोचा : इन लोगों ने फ्रांस का मांस खा डाला और खून पी लिया।

एक स्त्री गला फाड़-फाड़कर 'नई आवाज' के ताजे संस्करण की प्रतियाँ बेच रही थी। अखबार तो अब भी खरीदा जा सकता था। ब्रेतील ने एक खरीदा और खोल कर पढ़ने लगा, 'सहयोग का सिद्धान्त सफलतापूर्वक कार्यान्वित हो रहा है।' फान शोम्बर्ग के पास जाने के पहिले कल उसने यह लेख लिखाया था। कोई बात नहीं, कल वह लिखेगा कि सहयोग का सिद्धान्त सफल रहा है। शरणार्थियों की दशा बहुत अच्छी है, जेलखाने में कैदियों के दिन भी ठीक तरह कट रहे हैं और जर्मनों के बूटों के नीचे पड़ा फ्रांस आराम की नींद सो रहा है। जोलिया होगा सम्पादक और ब्रेतील उसका लेखक।

वह इधर-उधर घूमता रहा। यहाँ तक कि लाउडस्पीकरों द्वारा लोगों को मकानों के अन्दर चले जाने का हुक्म होने लगा क्योंकि समय हो गया था।

अपने मकान में, जहाँ उसके अतिरिक्त और कोई नहीं रहता था, सोफे पर कपड़े और डोरे फैले देखकर ब्रेतील ने जोर से जँभाई ली। इसके बाद उसने सोचा कुछ काम ही किया जाय। उसने कागज के एक पन्ने पर ऊपर पवित्र 'क्रास' का चिन्ह बनाकर उस पर लिख दिया 'थकी हुई मानव आत्मा।' फिर कलम वहीं रखकर मकान में इधर-उधर टहलने लगा। बच्चों वाली कुर्सी के सामने पहुँचकर वह रुक गया। बिना कुछ सोचे फिर लौटकर और मेज पर बैठकर लिखने लगा :

'हिज एक्सेलेन्सी हर जनरल फान शोम्बर्ग,

'इंगलैंड और दगाल के समर्थकों के तोड़फोड़ के कार्यों को ध्यान में रखते हुए मैं यह आयश्यक समझता हूँ कि जर्मन अधिकारी कोई ऐसा कदम उठायें जिससे देशवासियों की अशान्ति कुछ कम हो। उदाहरण के मैं विनय करूँगा कि बड़े घरानेवालों को पेरिस वापस आने दिया जाय।

'अपनी ओर से मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि ब्रिटिश एजेन्टों, कम्युनिस्टों और दगाल के समर्थकों को नष्ट करने में मैं हर प्रकार से सहयोग देने को तैयार हूँ। मैं कमांडेंट के दफ्तर को एक सूची ऐसे फ्रांसीसियों की भेज रहा हूँ जिन पर निगाह रखने की आवश्यकता है...'

वह बड़ी देर तक लिखता रहा। उसकी छाया बांस की एक लम्बी पतली छाया की तरह, मेज के ऊपर पड़ रही थी।

२७

सबेरे का समय था। गर्मी काफी पड़ रही थी। आंद्रे बहुत देर तक अपने स्टूडियो में रहा। बाहर निकलते उसे डर लगता था। कल उसने सुना था कि लोरिये मारा गया। उन्होंने 'यहूदी' बताकर उसको पकड़ लिया, उसकी आंख की काली पट्टी नोंचकर फेंक दी और खड़ा करके गोली से उड़ा दिया!

वह इधर-उधर घूमता रहा। यहाँ तक कि लाउडस्पीकरों द्वारा लोगों को मकानों के अन्दर चले जाने का हुक्म होने लगा क्योंकि समय हो गया था।

अपने मकान में, जहाँ उसके अतिरिक्त और कोई नहीं रहता था, सोफे पर कपड़े और डोरे फैले देखकर ब्रेतील ने जोर से जँभाई ली। इसके बाद उसने सोचा कुछ काम ही किया जाय। उसने कागज के एक पन्ने पर ऊपर पवित्र 'क्रास' का चिन्ह बनाकर उस पर लिख दिया 'थकी हुई मानव आत्मा।' फिर कलम वहीं रखकर मकान में इधर-उधर टहलने लगा। बच्चों वाली कुर्सी के सामने पहुँचकर वह रुक गया। बिना कुछ सोचे फिर लौटकर और मेज पर बैठकर लिखने लगा :

'हिज एक्सेलेन्सी हर जनरल फान शोम्बर्ग,

'इंगलैंड और दगाल के समर्थकों के तोड़फोड़ के कार्यों को ध्यान में रखते हुए मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि जर्मन अधिकारी कोई ऐसा कदम उठायें जिससे देशवासियों की अशान्ति कुछ कम हो। उदाहरण के मैं विनय करूँगा कि बड़े घरानेवालों को पेरिस वापस आने दिया जाय।

'अपनी ओर से मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि ब्रिटिश एजेन्टों, कम्युनिस्टों और दगाल के समर्थकों को नष्ट करने में मैं हर प्रकार से सहयोग देने को तैयार हूँ। मैं कमांडेंट के दफ्तर को एक सूची ऐसे फ्रांसीसियों की भेज रहा हूँ जिन पर निगाह रखने की आवश्यकता है...'

वह बड़ी देर तक लिखता रहा। उसकी छाया बांस की एक लम्बी पतली छाया की तरह, मेज के ऊपर पड़ रही थी।

२७

सबेरे का समय था। गर्मी काफी पड़ रही थी। आंद्रे बहुत देर तक अपने स्टूडियो में रहा। बाहर निकलते उसे डर लगता था। कल उसने सुना था कि लोरिये मारा गया। उन्होंने 'यहूदी' बताकर उसको पकड़ लिया, उसकी आंख की काली पट्टी नोंचकर फेंक दी और खड़ा करके गोली से उड़ा दिया!

आंद्रे तमाम रात स्टूडियो में इधर से उधर घूमता रहा और अपने मन में सोचता रहा कि उस पहाड़ी की रक्षा करने से लाभ ही क्या हुआ? वह दोस्ती पैदा ही क्यों की गई थी? उन्होंने उसे तो छोड़ दिया था किन्तु लोरिये को कहीं पकड़ ले गये!

आंद्रे ने अपना कोना क्यों छोड़ा था? वह सड़कों पर क्यों निकल पड़ा था? बात यह थी कि सब कुछ होते हुए भी, उसके प्यारे शहर का आकर्षण उसके लिए इतना जबरदस्त था कि उसे वह रोक नहीं सकता था। इतनी लज्जाजनक चीजों के होते हुए भी पेरिस बड़ा सुन्दर था। उसकी मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं किन्तु उसकी आंखें जो कुछ देख रही थीं उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकती थीं। सेंट लुई के टापू के धुएँ से काले मकान, धुँधला आकाश, 'सीन' का रहस्यपूर्ण जल—ये सभी चीजें उसे आकर्षित कर रही थीं और उसके मन को शान्ति प्रदान कर रही थीं। वह सोचता था: 'इसके अतिरिक्त हमने बहुत-सी दूसरी चीजें देखी हैं!'

वह चलता हुआ शातेले तक जा पहुँचा। उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह अभी तक इस सन्नाटे का आदी नहीं हो पाया था। मोटरें कहीं देखने को भी नहीं थीं। लोगों ने हँसना छोड़ दिया था। वे बराबर बड़ी धीमी आवाज में बातें करते। जर्मन सैनिक दूकानों और रेस्तरां में इस प्रकार जा घुसते जैसे चढ़ाई कर रहे हों। स्त्रियों के चेहरे पीले पड़ गये थे। हर एक यही कोशिश करता था कि दूसरे की नजर उस पर कम से कम पड़े। मालूम पड़ता था आदमी नहीं हैं, कीड़े मकोड़े हैं! पेरिस का केवल ढाँचा ही ढाँचा बच रहा था; उसमें कोई जान न थी। किन्तु पेरिस था कहाँ, वह तो कोई गैर शहर मालूम पड़ता था!

नगाड़े की आवाज सुनकर उसके रोंगटे खड़े हो गये। उसे यह ध्यान नहीं रह गया था कि वह 'प्लास द ल ओपेरा' तक पहुँच गया। हरी वर्दी पहने जर्मन बैंड बजाने वाले थियेटर की सीढ़ी पर बैठे बाजा बजा रहे थे। जर्मनों के चलने में कुछ ऐसी चीज थी, जिसे देखकर बड़ा दुख होता था, वैसे ही जैसे दूकानों की महराबों के नीचे जर्मनों के चलने की आवाज: जीवन भी सैनिकों की बूट की आवाज के साथ चल रहा था। जर्मन अफसर

भड़कीले कपड़ों में सजी लड़कियों के साथ कहवाखानों के चबूतरों पर बैठे मौज कर रहे थे।

आंद्रे एक दीवार के सहारे खड़ा हो गया। उसने समझने की कोशिश की कि सामने क्या हो रहा है; किन्तु दिमाग ने काम ही न दिया। उसके ऊपर फिर मुर्दनी छा गई। न जाने कितनी शक्लें उसके सामने आयीं और गयीं—कभी एक आँख पर चश्मा लगाये हुए एक अफसर दिखाई पड़ा, कभी कोई फव्वारा जिसमें एक जलपरी बनी होती और हौज खाली होता, कभी घास से ढँका मैदान और कभी कोई पहाड़ी...

'धोखे की शिकार, मैं मौत के मुँह में जा रही हूँ!' जानेत की यह पंक्ति उसे याद आ गई। उन दिनों ये केवल एक विज्ञापन के शब्द थे। कोई भी नहीं जानना चाहता था कि रात के अँधेरे में एक अकेली स्त्री आँसू बहा रही थी और उसके साथ, सड़कों की धूल और मरनेवालों के खून से लथपथ, फ्रांस भी रो रहा था।

कुछ देर बाद वह अपने स्टूडियो में खिड़की के पास खड़ा था। उसके सामने 'रू शेर्श-मिदी' की सड़क थी। जर्मन सैनिक उस पर मार्च कर रहे थे। उस दिन जोजफीन ने कहा था, 'अब मैं रेस्तरां को फिर से खोलने जा रही हूँ। आखिर किसी तरह जिन्दा तो रहना ही है!' उसने आंद्रे की खामोशी को अपने लिए अपमानजनक समझा था। उसने सोचा, जरूर जर्मनों के लिए वह मसालेदार गोश्त तैयार करेगी। मोची उनके बूट-जूतों में तल्ले लगायेंगे। हो सकता है, फूलवाली मालिन मर जाय, लेकिन उसके स्थान पर और कोई पैदा हो जायगा और वह किसी एक आँखवाले जर्मन अफसर को फूलों का गुलदस्ता भेंट करेगा। इसके अतिरिक्त, किया ही क्या जा सकता है! नहीं तो फिर छत से लटककर जान दे देनी पड़ेगी।

आंद्रे की आँखें दीवार पर बने काले धब्बे पर गड़ी हुई थीं। जब उसने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी, तो कुछ असमंजस में पड़ गया, मानो उसे किसी ने कुछ बुरा कर्म करते हुए पकड़ लिया हो। अगर जर्मन हुए?...' उसने सोचना शुरू किया। किन्तु इतने ही में एक जर्मन स्टूडियो में आ घुसा। हरी वर्दी को देखकर आंद्रे मुसकरा दिया।

'बेहतर तो यह होगा,' उसने कहा, 'मुझे लेते चलो ! मैं अपने साथ कुछ भी नहीं ले चलूँगा !'

'तुमने मुझे पहचाना नहीं ?' जर्मन ने कहा। 'मैं किसी समय मदाम क्रोड के यहाँ रहता था। मुझे तुम्हारे बनाये हुए प्राकृतिक दृश्य बहुत ही पसन्द आये थे। हम दोनों की उस 'सिगरेट पीने वाले कुत्ते' की दूकान पर भेंट हुई थी।'

जर्मन ने हाथ मिलाना चाहा, किन्तु आंद्रे ने अपना हाथ नहीं बढ़ाया।

'मुझे याद है,' उसने उत्तर दिया। 'तुम्हें मछलियों से दिलचस्पी थी। क्या नाम था वह...मुझे तो वह शब्द ही भूल गया !'

'इचथियोलाजिस्ट !'

'ठीक ! ठीक ! तुमने कहा था पेरिस नष्ट कर दिया जायगा। शायद उन दिनों मछलियों की अपेक्षा गुप्तचरों के कार्य में तुम्हें ज्यादा दिलचस्पी थी। तुम्हें बर्लिन के सारे भीतरी रहस्य मालूम थे। अब तुम्हें इतमीनान हुआ ? सही तो यह है कि तुम पेरिस को नष्ट नहीं कर सके।' वह खिसक कर जर्मन के और निकट जाकर बोला, 'लेकिन क्या तुम समझते हो कि पेरिस तुम्हारे कब्जे में आ गया है ? नहीं महाशय, ऐसी बात नहीं। यह सिर्फ तुम्हारा भ्रम है। पेरिस निकल गया ! तुम कहोगे वह फिर वापस आयेगा। लेकिन मैं इसे नहीं मानता। जोजफीन ने रेस्तरां जरूर खोल दिया है और लोग वहाँ आते भी हैं। लेकिन पेरिस—वास्तव में पेरिस—नहीं लौटा। वह लौटेगा ही नहीं ! वह जीवित ही कहाँ ? कहीं भी नहीं। अच्छा, बहुत-सी बातें हो चुकीं; अब मुझे अपने साथ ले चल सकते हो !'

'कहाँ ?'

'मैं नहीं जानता। तुम्हें मुझसे अधिक मालूम होगा। कमांडेंट के दफ्तर में ले चलो। दीवार के सहारे खड़ा करके उड़ा दो, या खाई में धकेल दो—जहाँ जी चाहे ले चलो !'

जर्मन कुछ नहीं बोला। आंद्रे ने उसे जलीकटी सुनाना जारी रखा। अन्त में वह जर्मन बोला, 'तुम्हें कहीं भी ले जाना मेरा काम नहीं।

भी नहीं मालूम कि मैं कैसे तुमसे मिल पाया। तुम्हें याद होगा कि मैंने कई बार तुमसे मिलने की आशा प्रकट की थी। आज लेफ्टिनेन्ट ने मुझे एक बुरा जर्मन कहा। कितनी भद्दी बात है! हो सकता है, कल वे मुझे गोली मार दें!'

'अच्छा, ऐसा है?' आंद्रे की आवाज से न आश्चर्य प्रकट हुआ और न सहानुभूति ही प्रकट हुई। उसने क्रोध में कँधे हिला दिये। वह तो मौत के इन्तजार में था और आनेवाला जर्मन उसका पुराना परिचित मछलियों का विशेषज्ञ निकला, जिसकी अपनी खुद की कई शिकायतें थीं—'मेरी समझ में नहीं आता कि मैं किस प्रकार समझाऊँ। मैं क्या चीज नापसन्द करता हूँ? पेरिस में अपने देशवासियों को देखना! मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे स्टूडियो में मुझे यह वर्दी पहन कर आना पड़े।'

'ओह! तो आप सौन्दर्यप्रेमी भी हैं। लेकिन, मस्यो, आपको नहीं मालूम कि मैं फ्रांस का निवासी हूँ!'

'मैं इस चीज को महसूस करता हूँ। वास्तव में यही चीज है, जो मुझे कुछ बोलने से रोकती है। मैं समझा था कि हम दोनों की एक संस्कृति है। लेकिन नहीं, हमारे बीच एक गहरी खाई है। समझ में नहीं आता उसे कैसे पाटा जाय।'

'और न मेरी समझ में आता है,' आंद्रे ने और नर्म होकर कहा। 'उसे अपने खून से भरना पड़ेगा। बिना खून बहाये यह काम नहीं हो सकता!'

'क्या पहले ही काफी खून नहीं बह चुका जो—।'

'बहुत काफी। किन्तु ठीक काम के लिए नहीं। अच्छा अब जाइये।'

'मैं भी समझता हूँ कि मुझे यहाँ से चल देना चाहिये। ये सारी बातें बेतुकी हैं। यहाँ मेरा आना ही मूर्खतापूर्ण था। अब मैं तुमसे एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न करता हूँ। मैं नहीं जानता कि क्यों, लेकिन इस प्रश्न ने मुझे काफी परेशान किया है। प्रश्न है तो व्याकरण का ही। इस सड़क का नाम है 'शेर्श-मिदी' यानी 'मैं दोपहर का इन्तजार करता हूँ!' यह नाम क्यों पड़ा?'

'यहाँ के रहनेवाले किसी समय इस नाम से मशहूर थे। वे इसी फेर में रहते थे कि कहीं दोपहर का खाना मुफ्त में मिल जाय। ठीक तुम्हारे हिटलर

बेचारी सड़क का कोई अपराध नहीं। यह लोग बड़े मजे से खिड़कियाँ बन्द करके, परों से भरी हुई रजाइयों के अन्दर पड़कर सोते थे। सड़क बेचारी तो रात का इन्तजार करती थी। और अब! अब तो तुम्हारी जातिवाले आ धमके हैं!'

'क्या तुम सोचते हो मैं इससे प्रसन्न हूँ?' जर्मन बोला। 'इस तरह से हम सदा तो नहीं चल सकते। हर मनुष्य हम से घृणा करता है। कल मैं 'रू मांज' पर चला जा रहा था। इतने में एक स्त्री उधर से निकली। किन्तु ज्यों ही उसने मेरी शक्ल देखी, वह भाग खड़ी हुई जैसे मैं यमदूत हूँ! मैंने खुद कभी किसी की जान नहीं ली। लेकिन, खैर, इससे क्या मतलब? मैं कह सकता हूँ कि सारा कसूर हिटलर का है। यह कह देना भी बड़ा आसान होगा। लेकिन बात ऐसी नहीं। अपराध मेरा भी है। हमें परिणामों के निकालने में हिचकना नहीं चाहिये। अच्छा, नमस्कार!'

'अच्छा, नमस्कार! हो सकता है, कल तक आप और भले हो जायें। लेकिन तब तक मैं जीवित नहीं रहूँगा। शराफत का सबूत अब खून बहाकर देना पड़ेगा। आजकल हम लोग ऐसे ही समय से होकर गुजर रहे हैं। कुछ भी समझ सकना असम्भव हो रहा है। आप यहाँ क्यों आये थे? नहीं, नहीं, यह सब व्यर्थ की बातें हैं। हाँ, अगर आप कम्युनिस्ट होते तो दूसरी बात थी। उन्होंने यहाँ करीब-करीब सफलता पा ली थी। लेकिन आजकल फ्रांस की बागडोर तो तेस्सा और आप के लेफ्टिनेंट जैसे लोगों के हाथ में है। लेकिन आप करेंगे ही क्या? आप अकेले हैं। इसी प्रकार मैं भी। और हम दोनों मिलकर दो नहीं होते, बल्कि कुछ नहीं रह जाते। जीवन की धारा ही हमारे विरुद्ध है!'

जर्मन बाहर चला गया और थोड़ी देर में आंद्रे सब कुछ भूल गया, जैसे कोई आया ही नहीं था। वह कई बार स्टूडियो में एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमा। खिड़की से सूर्यास्त की किरणें आ रही थीं। खिड़की के सामने उसकी बनायी हुई एक तस्वीर टँगी थी—एक चर्खी, अखरोट का एक पेड़, एक लालटेन और कुछ दूर एक छाया दिखाई दे रहा था। १४ जुलाई का दिन भी था। जानेत उस समय भी मुसकरा रही थी। पेरिस में अब भी नाच-गाना

हो रहा था, लोगों की चहल-पहल थी, और झंडे फहरा रहे थे। यह एक दूसरा जीवन था। यह तस्वीर बड़ी अच्छी तरह पेंट की गई थी और उसकी सबसे अच्छी तस्वीर थी। और पेरिस अभी बाकी था। अजायबघर और उनकी तस्वीरें भले ही बरबाद कर दी जायें—लेकिन पेरिस फिर भी बना रहेगा।

आंद्रे मुस्करा रहा था। उसने खिड़की के पास जाकर बाहर की ओर देखा। 'शेर्श मिदी' गली के सारे मकानों के रोशनदान बन्द थे और सदा की भाँति मकानों के सामनेवाले हिस्सों पर काली लकीरें पड़ी थीं। एक मकान के सबसे ऊपरी कमरे की खिड़की से एक सूखा हुआ फूल लटक रहा था। भूखों मरती बिल्लियाँ इधर-उधर मारी-मारी फिर रही थीं, फूलवाली रो रही थी, एक नवजात शिशु चिल्ला रहा था। 'रू शेर्श-मिदी'...'मैं दोपहर का इन्तजार कर रहा हूँ!'...'मैं अवश्य दोपहर का इन्तजार करूँगा,' उसने सोचा। 'और मुझे दोपहर का, दिन का प्रकाश मिलकर रहेगा—प्रकाश और आकाश में रंगों की क्यारियाँ—पेरिस, दिन का पेरिस......' उसे लाउडस्पीकरों की यह चेतावनी नहीं सुनाई दी—'अपने अपने घरों के अन्दर चले जाओ! समय हो गया!'

समाप्त